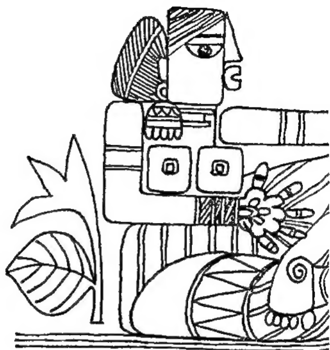
नदी तीरे



नदी के तीर

गुरुदत्त



सरस्वती विहार

२१, दयानन्द मार्ग, दरियागंज

नई दिल्ली-११०००२

मूल्य : सोलह रुपये (16 00)

पहला सस्करण 1977

_ गुरुदत्त

प्रकाशक · सरस्वती विहार, दरियागज, दिल्ली

मुद्रक आई० पी० सी० प्रेस, दिल्ली-110032

NADI TEERE (Novel) by Gurudutt

नदी तीरे

•

प्रथम परिच्छेद

बात सन् १९१९ ईसवी की थी। प्रथम जर्मन युद्ध समाप्त हो चुका था। यद्यपि युद्धभूमि हिन्दुस्तान से दूर यूरोप और पूर्वी एशिया रही थी, इसपर भी इस देश में भी युद्ध का प्रभाव हुआ था। व्यापारी-जन को लाभ हुआ था और लाखों सैनिक इस भीषण युद्ध में जाकर लड़े थे।

युद्ध से वापस आए लोग सामान्य जनता में युद्ध की बातें बताते थे, जिनसे सुनने वाले चकित हो देखते रह जाते थे।

ऐसा ही एक सैनिक युद्ध से जीवित लौटा था और लाहौर में बजाज हट्टा की एक दुकान पर खड़ा कपड़ा खरीद रहा था। वह उस समय भी सैनिक वर्दी पहने हुए था। दुकानदार एक उन्नीस-बीस वर्ष का युवक सैनिक को स्त्रियों के पहनने योग्य कपड़े दिखा रहा था। सैनिक ने बीवी की सलवार, कुर्ते और ओढ़ने के लिए दुपट्टे का कपड़ा खरीदा। युवक ने पूछ लिया, "युद्ध से लौटकर आए हो जवान ?"

"हां भैया! डेढ़ वर्ष के वेतन का बकाया मिला है और घर जा रहा हूं।"

"कहां के रहने वाले हो ?"

"जिला गुजरात में भिड ग्राम का। वहां छोटी बहनें हैं, भाई हैं, माता पिता हैं और पत्नी है। सबके लिए कुछ न कुछ ले जा रहा हूं।"

"युद्ध से बच आए हो। यहां तो कहा जा रहा था कि जर्मनी के सिपाही बहुत बहादुर थे और हिन्दुस्तानियों को वे गाजर-मूली की भांति कतरकर रख देते थे।"

इसपर सैनिक हंस पड़ा और बोला, "यह ठीक नहीं है। शत्रु को कतरने में हम और जर्मन लगभग एक जैसे ही थे। जर्मनी वालों के पास हथियार कुछ अच्छे थे। इसपर भी जब हाथापाई का अवसर आता था तो हमारा पक्ष प्रबल सिद्ध होता था। भैया! लड़ने में हम किसीसे कम नहीं थे।"

इतना कहते-कहते वह सैनिक कांप उठा और दुकानदार ने यह देखा तो पूछ लिया, "क्या बात है? कांप किसलिए गए हो?"

'भैया! कुछ मत पूछो। उस समय जाने क्या हो गया था हम सैनिकों को! हम एक-दूसरे पर इस प्रकार टूट पड़ते थे, मानो कोई खूंखार हिंसक पशु हो।"

दुकानदार ग्राहक द्वारा खरीदे कपड़े एक कागज में लपेट और रस्सी से बांध सैनिक के सामने रख बोला, 'बीस रुपये दस आने।"

सैनिक ने दस-दस रुपये के तीन नोट सामने रखे तो दुकानदार ने एक दस का नोट वापस कर दिया, अर्थात् दस आने छोड़ दिए।

सैनिक ने कपड़ों का बण्डल उठाया और डिब्बी बाजार की ओर घूम गया। सम्भवत वह अपने छोटे भाई-बहनों के लिए कुछ खिलौने खरीदने गया था।

युवक दुकानदार जाते हुए सिपाही को देखता रह गया। अब दुकानदार ग्राहक से प्राप्त दस दस के दो नोट पीछे दुकान के भीतर बैठे एक प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति को देने लगा तो उस व्यक्ति ने नोटों को अपने सामने रखी एक सन्दूकची में रखते हुए कहा, 'जगन्नाथ! इसे दस आने छोड़ दिए?"

"हां पिताजी! चित्त तो करता था कि बीस रुपये भी लौटा दूं।"

"किसलिए?"

"उसने अपने देश के लिए बहुत ही बडा कार्य किया है। उसका यह जान-जोखिम का काम प्रशसा के योग्य है।"

"तो जो सब प्रशसा के योग्य हैं, उन सबको रुपये लौटाते रहोगे ?"

"तो पिताजी, यहा बैठे कमाई किसलिए कर रहे हैं ?"

"कमाई कर रहे हैं तुम्हारी होने वाली बीवी के आभूषण बनवाने के लिए।"

"पिताजी ! मेरा विवाह नहीं होगा।"

"बकवास बन्द करो ! मुझे पता चला है कि तुम लडकी को देखने गए थे।"

"हा पिताजी ! और उसे नापसन्द कर आया हू।"

"वह हमसे भी अधिक धनवान की बेटी है।"

"तो यह विवाह करने मे कारण है ?"

"तो और क्या कारण होता है ?"

जगन्नाथ के पिता का नाम लाला फग्गूमल था। पजाब की राजधानी लाहौर के बजाज हट्टे मे एक बडी-सी दुकान का वह स्वामी था। दुकान के ऊपर ही मकान मे वह परिवारसहित रहता था। युद्धारम्भ से कुछ ही पहले फग्गूमल ने हालैण्ड से पचास हजार मारकीन के थान खरीदे थे और माल कराची बन्दरगाह पर उतरते-उतरते यूरोप मे युद्ध आरम्भ हो गया था और एकदम मारकीन का भाव पाच रुपये प्रति थान बढ गया था।

फग्गूमल ने बैंक से प्रबन्ध कर रुपये का भुगतान कर माल गोदामों मे रखवा ताला बन्द कर दिया। समय व्यतीत होने के साथ दाम और बढ गए। सन् १९१७ म तो मारकीन का दाम बीस रुपये प्रति थान बढ गया था। पिता तो अभी और लोभ मे बैंक वालो को सूद देता चला आता था, परन्तु पुत्र जो अब सज्ञान हो दुकान पर बैठने लगा था,

पिता से बोला, "पिताजी ! माल गोदाम मे पडा-पडा सड जाएगा। उसे अब बेच डालना चाहिए। साथ ही युद्ध अब समाप्त होने वाला है। तब कपडे का दाम गिरेगा।"

"कैसे कहते हो कि युद्ध बन्द होने वाला है ?"

"देखिए पिताजी ! जर्मन अकेला है और दूसरी ओर अंग्रेज हैं, फ्रांस और इटली हैं। अब अमेरिका भी मित्रराष्ट्रों की ओर सम्मिलित हो गया है। इसका सम्मिलित होना तो ऐसे ही होगा, जैसे दो लडते-लडते थकी सेनाओ मे से एक को तरोताजा सेना की सहायता मिल जाए। ऐसे में दूसरी ओर की थकी सेना भाग खडी होनी है।"

"नही, यह नहीं हो सकता।" पिता का उत्तर था, परन्तु पुत्र ने हठ करके सब माल बेच डाला और लाला के माल का दो लाख का दस लाख हो गया। सूद और गोदामो का भाडा देने के उपरान्त नकद सात लाख बैंक बैलेंस मे वृद्धि हो गई।

उस दिन से जगन्नाथ के विवाह के लिए सम्बन्ध आने लगे थे। एक अन्य बजाज लाला केशवदास, जो किनारी बाजार मे रेशमी माल बेचता था, की लडकी से जगन्नाथ की सगाई निश्चित हो गई। सगाई का शकुन भी आ गया था। एक दिन जगन्नाथ को किसी मित्र ने बताया कि लडकी सर्वथा कुरूप है तो वह उसे देखने की लालसा करने लगा। उसे पता चला कि लडकी विक्टोरिया स्कूल, गुमटी बाजार मे दसवीं श्रेणी मे पढती है। वह अपने उसी मित्र को साथ लेकर मध्याह्नोत्तर चार बजे स्कूल के बाहर जा खडा हुआ। जगन्नाथ का मित्र दामोदरदास केशवदास के पडोसी का लडका था और केशवदास की लडकी उसे बहुत अच्छी प्रकार जानती थी। दोनो एक-दूसरे के घर आते-जाते थे। दामोदर ने केशवदास की लडकी लक्ष्मी को स्कूल से निकलते देखा तो उसके साथ-साथ चलते हुए बोला, "लक्ष्मी बहन ! घर जा रही हो ?"

"हां भैया ! क्यो, क्या बात है ?" लक्ष्मी ने देखा कि दामोदर के

साथ एक सुन्दर युवक उसके मुख पर बड़े ध्यान से देखते हुए चल रहा है।

लक्ष्मी को सन्देह हुआ। उसकी बहनें अपने जीजा की रूप-रेखा वर्णन करती रहती थीं और वह उनके वर्णन से सन्देह करने लगी थी कि दामोदर के साथ उसका होने वाला पति ही हो सकता है।

"भैया !" लक्ष्मी ने पूछा, "तुम कहा से आ रहे हो ?"

"मैं तो अपनी दुकान से घर जा रहा था कि यह मेरे मित्र साथ हो लिए और तुम्हे स्कूल से छुट्टी हुई तो मैंने सोचा कि लक्ष्मी बहन को घर तक पहुचा दू।"

"पर मैं तो नित्य यहा से अकेली ही घर चली जाती हू।"

"परन्तु आज विशेष बात है। यह लाला फग्गूमलजी के बडे लडके हैं जगन्नाथ। मेरे परम मित्र हैं। इस कारण मैंने समझा कि लक्ष्मी बहन को अपने साथ ले चलना चाहिए।"

जगन्नाथ का तथा उसके पिता का नाम सुन लक्ष्मी सब समझ गई। उसने कह दिया, "भैया ! यह ठीक नहीं है। माजी नाराज होंगी।"

'नहीं होंगी।" परन्तु लक्ष्मी ने सामने की ओर देखते हुए मौन हो चलना आरम्भ कर दिया।

केशवदास का मकान गुनटी बाजार मे ही था। इस कारण लक्ष्मी को बहुत दूर तक साथ-साथ चलने की यन्त्रणा सहन करनी नहीं पडी। मकान आया तो उसने एक बार जी भरकर जगन्नाथ की ओर देखा और फिर हाथ जोड नमस्कार कर मुस्कराई और अपने मकान पर चढ गई।

दामोदर जगन्नाथ को अपने घर ले गया। दोनों मित्र दामोदर की मा के बनाए पकौडे खाने लगे।

उसी रात जगन्नाथ ने अपनी मां से कह दिया था, "मा ! मैं यहा विवाह नहीं करूगा।"

मा ने पूछ लिया, "कहा नहीं करोगे ?"

"लाला केशवदास की लडकी से।"

"क्यों ?"

"मा ! वह कुरूप है। उसका रग मैला है, मुख पर चेचक के दाग हैं और आखें भी बेडौल हैं।"

"और कहा विवाह करोगे ?"

"मैं विवाह कहीं भी नही करूगा।"

"क्यो ? पत्नी से बात करने को चित्त नहीं करता ?"

"नही मा, मैं तो विवाह ही नही करूगा।"

मा ने जगन्नाथ के पिता से बात कही तो उसने पूछा, "इसे कैसे पता चल गया है कि लडकी कुरूप है और रग की मैली है तथा मुख पर चेचक के दाग हैं ?"

"अवश्य लडकी को देख आया मालूम होता है।"

"देखो राधा !" फग्गूमल ने अपनी पत्नी को कहा, "मैंने बिना तुम्हें देखे तुमसे विवाह किया था। मेरे पिताजी ने मा को देखे बिना ही उससे विवाह कर लिया था। अब यह घर मे नई रीति मुझे पसन्द नहीं।"

"परन्तु जमाना बदल रहा है। देखो न, यह लडकी को देखने जा पहुचा है।"

"अब तो विवाह की तिथि निश्चित हो गई है। तनिक इसके सामने लडकी की प्रशसा कर दिया करो। बस, बात बन जाएगी। एक बार बीवी की चटक लगी तो फिर काम बन जाएगा। सुना है कि सवा लाख रुपया मिलने वाला है।"

मुहूर्त निकलवाया जा चुका था और केशवदास के घर तो हलवाई भी बैठ चुके थे। फग्गूमल के घर मे भी तैयारियां हो रही थी।

जगन्नाथ को दामोदर के साथ अपनी होने वाली पत्नी को देखे अभी तीन-चार दिन ही हुए थे कि सैनिक से दस आने कम लेने पर

बातचीत होते-होते विवाह की चर्चा चल पड़ी।

दुकान पर कुछ अधिक बातचीत हो नहीं सकी। अन्य ग्राहक आने लगे थे, परन्तु जगन्नाथ ने जो यह कहा था कि उसका विवाह नहीं होगा, यह उसके पिछले तीन-चार दिन के विशेष चिन्तन का परिणाम था।

अगले दिन प्रातः का अल्पाहार लेते हुए रसोईघर में बैठे हुए उसने मां को कहा था, "मां! पिताजी से कह दो कि मेरा विवाह यहां न करें।"

"तो कहां होगा?"

"अभी कहीं नहीं। पहले इनसे मुक्ति पा जाएं तो पीछे विचार कर लिया जाएगा।"

"बहुत कठिन है। उन्होंने सगाई पर एक सहस्र रुपये से अधिक व्यय किया है और तुम्हारे विवाह पर वे बीस-पच्चीस सहस्र रुपया व्यय करने वाले हैं। वे तुम्हें भी नकद एक लाख से ऊपर देने वाले हैं। इसके अतिरिक्त देखा न, सगाई के दिन सब बिरादरी के लोग एकत्रित हुए थे। पांच सौ से अधिक लोग थे। इतना कुछ होने पर कैसे अब पीछे हटा जा सकता है?"

जगन्नाथ यह बिरादरी की बात नहीं समझा। वह मन में विचार करता था कि विवाह उसका होना है और बिरादरी वाले कौन हैं बीच में हस्तक्षेप करने वाले।

वह मन में विचार करता था कि यह सब बन्धन है। पिता धन का लोभी है, मां बिरादरी और रिश्तेदारों की बात करती है और ये सब नहीं जानते कि सुन्दर बीवी पाना मेरा अधिकार है। हम धनवान हैं तो अपने मन की पत्नी क्यों नहीं पा सकते?

दामोदर एक दिन आया और पूछने लगा, "जगन! विवाह कब हो रहा है?"

जगन्नाथ को लगा कि वह नींद से जाग पड़ा है। उसे चेतना हुई

कि उसके साथ अन्याय हो रहा है। इस कारण अकस्मात् सोते से जागने के समान वह विस्मय में मित्र का मुख देखता रह गया। उसने देखा कि दामोदर उसके मुख पर प्रश्न-भरी दृष्टि से देख रहा है। जगन्नाथ ने उत्तर दिया "कल बताऊंगा।"

"किसीसे सम्मति करने वाले हो क्या ?"

"हां।"

"किससे ?"

"यह भी कल बताऊंगा।"

दामोदर ने केवल यह कहा, "उनके घर में तो आज हलवाई बैठ गए हैं।"

"किसलिए ?"

"बिरादरी में मिठाई जो बांटेंगे।"

जगन्नाथ की हंसी निकल गई, परन्तु उसने कहा कुछ नहीं।

अगले दिन दामोदर पुनः जगन्नाथ के घर आया। फग्गूमल मकान के द्वार पर खड़ा था। दामोदर ने पूछा, "जगन भैया ऊपर हैं क्या ?"

"मैं तुमसे पूछने जा रहा था कि वह कहां है। वह घर पर नहीं है।"

इसपर दामोदर फग्गूमल का मुख देखता रह गया। फग्गूमल हाथ में दुकान की चाबियां लिए दुकान खोलने जा रहा था। दोनों गली से निकल दुकान पर आ गए। मकान का द्वार गली में था और मकान के नीचे दुकान बाज़ार में थी।

२

फग्गूमल के लड़के के भाग जाने की चर्चा नगर-भर में फैल गई। इस घटना की सूचना केशवदास के घर पर भी पहुंची। हलवाई उठवा दिए गए। घर-भर में शोक छा गया और इस परिवर्तित स्थिति का

परिचय लक्ष्मी को भी हुआ । हलवाई आने बन्द हुए तो उनकी भट्ठी ठण्डी हो गई । जब से विवाह की तैयारी आरम्भ हुई थी, लक्ष्मी स्कूल नहीं जाती थी ।

उसने दो दिन से सबको चिन्ता और शोकमुद्रा मे अपनी ओर देखते पाया और फिर मुख मोड दूसरी ओर निकल जाते देखा तो बात हुई । बात लक्ष्मी और उससे दो वर्ष छोटी बहन मोहिनी मे हुई । मोहिनी ने ही कहा, ' लक्ष्मी ! तुम्हारा विवाह नही हो रहा ।"

"क्यों ?"

"जीजाजी अपना घर छोड लापता हो गए हैं ।"

' मैं पहले ही जानती थी ।"

"अच्छा ! कैसे जानती थी ?"

लक्ष्मी ने बताया नहीं । कुछ देर बहन का मुख देख बोली, "कौन-सी कक्षा मे पढती हो ?"

"तो दीदी ! तुम जानती नहीं ? आठवीं श्रेणी की परीक्षा देने वाली हू ।"

' तो अभी दो वर्ष ठहरो । जब तुम दसवीं श्रेणी मे होगी तो तुमको पता चल जाएगा ।" लक्ष्मी ने बहन को टाल दिया ।

इसपर भी वह मन मे विचार करती थी कि पडोस का दामोदर भैया मिले तो पता करेगी, परन्तु कई दिन व्यतीत हो गए और दामोदर नहीं मिला ।

एक दिन उसने मा से कहा, "मा ! अब मैं फिर स्कूल जा सकती हू क्या ?"

"किसलिए ? स्कूल में क्या है ?"

"जो एक महीना पहले था ।'

' परन्तु तब तो तुम्हे वहा जाने से रोक दिया था ।"

वह तो इस कारण कि घर में हलवाई बैठ गए थे ।" उसने यह कहना उचित नहीं समझा कि उसके विवाह का प्रबन्ध हो रहा था ।

"अब फिर बैठने वाले हैं।"

"अच्छा !" लक्ष्मी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया।

"हां। उसी कारण से, जिससे पहले बैठे थे।"

"तो लाला फग्गूमलजी का लड़का घर लौट आया है ?"

"नगर में बस फग्गूमल और उसका लड़का ही रह गए हैं क्या ?"

"तो कोई और मिल गया है ?"

मां हंस पड़ी और बोली, "हां। देवी के सामने बलि चढ़ाने के लिए बकरा। पड़ोस में माता मालिन है न। उसका एक लड़का एक छोटी-सी दुकान गुमटी बाजार में मनियारी की करता है। वही मिल गया है।"

"भैया दामोदर ?"

"हां। वह यहां आता-जाता रहा है। तुम दोनों ने एक-दूसरे को देखा-भाला है। एक बात और है। जगन्नाथ से तुम्हारे विवाह का प्रस्ताव करने तुम्हारे पिता गए थे और अब दामोदर की मां आई है। पहले फग्गूमल शर्तें करता था और अब हम शर्तें करते हैं। मालिन सब मान रही है।"

"मां ! दामोदर तो भाई है न !"

"पहले सब भाई-बहन ही होते हैं। पण्डित जिससे विवाह करा दे, वह पति हो जाता है।"

"नहीं मां ! यह नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"मैं जानती नहीं क्यों। इसपर भी मेरा मन कहता है कि यह नहीं होगा।"

मां परेशानी में लड़की का मुख देखती रह गई। कुछ विचारकर बोली, "तुम्हारे पिताजी से बात करूंगी।"

"हां। पिताजी को कह दो।"

अगले दिन दस बजे से पूर्व ही लक्ष्मी भोजन कर अपनी पुस्तकें

ठीक कर स्कूल को चल दी। मा ने पूछा, ' कहा जा रही हो ?"

' मा ! मैं पढ़ूगी। पहले ही एक महीना पीछे रह गई हू।"

इतना कह वह घर से निकल स्कूल को चल दी। स्कूल से नाम कट चुका था। इस कारण वह सीधी मिस शारदा ऐण्ड्रयूज, मुख्याध्यापिका के कमरे के बाहर जा खडी हुई। दरवाजे के पास खडी हो उसने पूछा ' बहनजी ! मैं भीतर आ सकती हू क्या ?"

शारदा ने सिर उठाया और एक लडकी को पुस्तको का थैला कन्धे से लटकाए खडे देख कहा, "आ जाओ। क्या बात है ?"

"मेरा नाम स्कूल के रजिस्टर से कट गया है। मैं पुन प्रवेश पाना चाहती हू।'

' क्यो कट गया है ?"

"मैं एक महीने तक स्कूल से बिना छुट्टी लिए अनुपस्थित रही हू।'

"बीमार थी क्या ?"

"जी नही। मेरा विवाह होने वाला था। अब नहीं हो रहा। इस कारण पुन दाखिल होना चाहती हू।"

"विवाह क्यों नहीं हो रहा ? क्या लडके वाले बहुत दहेज मागते हैं ?"

लडकी इतना कुछ तो साहस पकडकर कह गई, परन्तु अपनी कुरूपता के विषय मे कह नहीं सकी। वह लज्जा से मुख नीचे कर खडी रही। मिस शारदा लडकी के मुख पर देखती हुई कल्पना करने लगी थी कि अवश्य लेन-देन की बात पर सगाई टूटी होगी। उसे अपने विवाह की बात स्मरण आ गई थी।

शारदा एक ऐसे वकील की लडकी थी, जिसका काम चलता नहीं था। उसे शराब पीने की लत पड गई थी और क्लब में जाकर जुआ खेलने की भी। पिता सनी हिन्दू था और लडकी एक ईसाई लडकियो

के कालेज में पढ़ती थी। उसका भी उद्धार एक ईसाई कालेज की प्रिंसिपल ने किया था। उसने लड़की से पूछा, "शारदा ! तुम बी० ए० में पढ़ती हो और जाति की खत्री हो। हिन्दुओं में विवाह की आयु से तो तुम बड़ी हो गई हो। तब तुम्हारा विवाह क्यों नहीं हो रहा ?"

"मैडम ! यह किस्मत का खेल है।" इतना कहते-कहते शारदा का भी मुख लाल हो गया था।

शारदा को स्मरण था कि उसका मुख लाल क्यों हो गया था। वह उत्कट इच्छा करने लगी थी विवाह की। उसके कालेज की प्रिंसिपल एक अमेरिकन स्त्री को ठीक ही समझ आया था। उसने कहा, "तुम ईसाई हो जाओ और तुम्हारा आज रात ही विवाह हो सकता है।"

शारदा बी० ए० में पढ़ती थी। इस कारण उसने पूछ लिया, "मैडम, किससे विवाह कर दोगी ?"

"किसी पुरुष से।"

"और यह व्यभिचार नहीं होगा ? बिना प्रेम के विवाह तो व्यभिचार होता है।"

"नहीं। बिना परमात्मा की स्वीकृति के विवाह व्यभिचार होता है और परमात्मा की स्वीकृति पादरी दिलवा देता है।"

"कैसे ?"

" 'होली स्क्रिपचर' (पवित्र धर्मग्रंथ बाइबल) के शब्द पढ़कर, ब्लैसिंग (आशीर्वाद) मांगकर।"

शारदा हंस पड़ी और बोली, "मैडम! यह बात नहीं। मेरी सगाई हो चुकी है, परन्तु विवाह में बाधा यह है कि लड़के वाले पांच हजार नक्द 'डाउरी' (दहेज) मांगते हैं। वे मेरे पिता दे नहीं सकते।"

"यही तो कह रही हूं कि तुम्हारा विवाह 'डाउरी' के बिना हो जाएगा।"

"परन्तु मैडम, किससे ? किसी दो टांग वाले जानवर से न ? मैं उसे देख और पसन्द कर ही विवाह करूंगी।"

"तुम ईसाई हो जाओ। देखा-देखी पीछे हो जाएगी।"

"और विवाह पीछे होगा। ठीक है न ?"

"हां।"

शारदा को उसी समय कालेज के साथ लगे गिरजाघर में ले जाकर बपतिस्मा दिला दिया गया। नाम के साथ 'ऐण्ड्रयूज़' शब्द जोड़ दिया गया और उसको वहां से जबलपुर केन्द्रीय 'मिशन सेण्टर' में भेज दिया गया। वहां प्रायः छोटी जाति के लोग, जो ईसाई धर्म को स्वीकार किए हुए थे, रहते थे। हां, वहां भी स्कूल और कालेज तो था।

शारदा को कुछ ऐंग्लो-इण्डियन युवक भी दिखाए गए, परन्तु सबके सब मद्य का सेवन करते थे। एक वहां रेल का स्टेशनमास्टर था। बत्तीस वर्ष की आयु का व्यक्ति उसे मिलने आने लगा। एक दिन उसने विवाह का प्रस्ताव किया तो शारदा ने कह दिया, "मिस्टर जोन्स ! आपके मुख से शराब की बदबू आती है।"

"डीयर ! यह खुशबू है। आपको अभ्यास न होने से खुशबू बदबू समझ आ रही है।"

"किस बात का अभ्यास ?"

"पुरुष की संगत का। संगत से पहले इसका सेवन एक विशेष लुत्फ देता है।"

"तो आपको इस बात का अनुभव है ?"

जोन्स हंस पड़ा। इसके उपरान्त शारदा को अपने पिता की शराब पीने की लत और फिर कमाई कम तथा घर का खर्चा अधिक का अनुभव स्मरण आ गया। वह समझी थी कि धन के अभाव से बचने के लिए ही तो वह ईसाई हुई थी, और यदि पिता के घर का चलन यहां भी चलना है तो ईसाई होना व्यर्थ हो गया। उसने विवाह न करने का ही निश्चय कर लिया।

पीछे उसने एम० ए० और बी० टी० की परीक्षा पास की और कटनी में एक स्कूल में 'टीचर' का काम करने लगी।

लाहौर से चले आने के पन्द्रह वर्ष उपरान्त वह 'क्वीन विक्टोरिया गर्ल्स स्कूल' मे मुख्याध्यापिका नियुक्त हुई थी। आज अपने सामने विवाह की बात पर एक लडकी के हुए लाल मुख को देखकर अपने ईसाई होने की बात स्मरण कर कहने लगी, "और तुम्हारे पिता दहेज नही दे सकते ?"

"नही मैडम, यह बात नही। मेरे पिता इतने धनवान हैं कि वह लडके के माता-पिता का पेट भर सकते हैं, परन्तु ।"

इस बात के कहने पर उसे पुन झिझक अनुभव हुई कि वह कुरूप होने के कारण पति को पा नही सकी।

परन्तु मुख्याध्यापिका को अपने मुख पर देखते पा वह बोली, "बहनजी, रुपये-पैसे की बात नही। मेरे मुख और रूप की बात है।"

"ओह !" मिस शारदा को समझ आ गया। उसने कहा, "परन्तु हिन्दुओ मे तो लडकी विवाह से पूर्व दिखाई ही नही जाती।"

"यह एक अन्य दुर्घटना है। हमारे पडोस मे एक विधवा का लडका रहता है। वह हमारे घर मे आता-जाता था। मुझे बचपन से जानता था और सदा मुझे बहन लक्ष्मी कहकर सम्बोधन किया करता था।

"एक दिन वह उस लडके को लेकर मुझे छुट्टी के समय स्कूल के बाहर मिला। मुझे उसने अपने साथी के पिता का नाम बताया तो मैं समझ गई कि वह मुझे दिखाने के लिए मेरे मगेतर को लाया है। उसके उपरान्त ही दोनो घरो मे सम्बन्ध बिगडने लगे और लगभग बीस दिन हुए हैं, वह घर से भाग गया है। यह स्पष्ट है कि मैं उसे पसन्द नही आई, परन्तु हमारे उसी पडोसी की मा मुझे अपनी वहू बनाने का प्रस्ताव कर रही है। मैं उस लडके को भाई समझती हू। इस कारण मैं मा को यह कह कि मैं उससे विवाह नही करूगी, पुन पढने चली आई हू।"

"बिना मा की स्वीकृति के ?"

"मा तो कुछ भी पढ़ी नहीं। इस कारण वह पढ़ाई के विषय में हां अथवा न कुछ नहीं कह सकती। मैंने अपनी पुस्तकें निकालीं और यहां चली आई हूं।"

"और स्कूल की फीस तथा दाखिले की फीस और अन्य खर्चा कहां से दोगी?"

"इतना कुछ तो मेरे पास है।"

"ओह! घर से चुराकर लाई हो?"

"नहीं बहनजी! मुझे मेरे पिताजी दस रुपये महीना पॉकेट खर्च देते हैं और मेरे पास बहुत रुपये जमा हैं।"

"परन्तु तुम अभी अल्पवयस्क हो। तुम अपने माता-पिता की इच्छा के बिना पढ़ नहीं सकोगी।"

"अल्पवयस्क क्या होता है?"

"तुम्हारी आयु अभी कम है। तुम्हें अपने माता पिता का कहा मानना चाहिए।"

"मैं मां को बताकर आई हूं। उसने मना नहीं किया।"

"तो ठीक है।" मुख्याध्यापिका ने अपनी मेज पर रखे 'रैक' में से एक फार्म निकाला। उसपर लड़की का नाम, पिता का नाम लिखकर नीचे हस्ताक्षर कर लड़की को कहा, "यह क्लर्क बहनजी को दिखा दो और दाखिला दे श्रेणी में जा बैठो।"

सब गिनती करने पर क्लर्क बहनजी ने छः रुपये दस आने दाखिला, शेष पढ़ाई की फीस और बिना छुट्टी के अनुपस्थित रहने के दिनों का जुर्माना गिनकर ले लिया और लड़की का नाम श्रेणी के रजिस्टर में लिख चपरासी बहन के साथ उस श्रेणी में बैठने के लिए भेज दिया।

अभी आधे समय का अवकाश हुआ ही था कि केशवदास, लक्ष्मी का पिता, स्कूल की मुख्याध्यापिका से मिला और शारदा ने चपरासी भेज लक्ष्मी को बुला भेजा।

लक्ष्मी आई और अपने पिता को वहां बैठे देख विस्मय में खड़ी रह गई।

शारदा ने कहा, "लक्ष्मी! तुम्हारे पिता कहते हैं कि तुम अपने माता-पिता से पूछे बिना स्कूल आ गई हो।"

लक्ष्मी कुछ उत्तर नहीं दे सकी। इसपर शारदा ने लाला केशवदास से कहा, "यदि इसका विवाह नहीं होना तो इसे पढ़ने दो।"

केशवदास ने कहा, "बहनजी! इसका विवाह तो हो रहा है।"

"नहीं पिताजी!" लक्ष्मी ने साहस पकड़ कहा, "मौसी मालिन के पुत्र से विवाह नहीं होगा। वह मुझे बहन कहता है और मैं उसे भाई ही मानती हूं।"

"यह बात यहां बहनजी के सामने नहीं हो सकती। घर पर चलकर करो।"

शारदा अपनी कानूनी स्थिति समझती थी। उसे तो घर से भगाकर जबलपुर भेजा गया था। वह स्वयं इसे ठीक उपाय नहीं समझती थी। उसमें और उसके कालेज की मैडम में अन्तर था और उसमें तथा लक्ष्मी में भी अन्तर था।

इस कारण उसने लक्ष्मी को यह सम्मति दी, "देखो बेटी! तुम्हारा नाम स्कूल में दर्ज तो हो गया है। मैं तुम्हें एक मास की छुट्टी देती हूं। तुम घर जाकर अपने माता-पिता से निश्चय कर लो।

"मैं समझती हूं कि तुम्हारे माता-पिता तुम्हें स्कूल पढ़ने भेज देंगे। तुम एक महीने में सब निश्चय कर आ जाना।

"तुम्हारी पढ़ाई में जो कमी आ गई है, वह मैं तुम्हें स्वयं पढ़ाकर पूरी करा दूंगी।"

अब केशवदास ने कहा, "लक्ष्मी, चलो! शेष बात तुम्हारी मां के सामने होगी।"

लक्ष्मी अपनी श्रेणी के कमरे में गई। वहां से अपनी पुस्तकों का थैला उठा पिता के साथ घर आ गई।

३

घर पर मा कमरा बन्द कर लेटी हुई थी। वह समझ रही थी कि स्कूल की मुख्याध्यापिका एक ईसाई स्त्री है और वह लडकी को कही छुपाकर ईसाई बना लेगी।

इसी कारण उसने लक्ष्मी के पिता को दुकान से बुलवाकर लडकी के स्कूल भेजा था। जब लक्ष्मी पिता के साथ घर पर आई तो मां की जान मे जान आई। वह खाट से उठ लडकी की पीठ पर हाथ फेर प्यार देते हुए बोली, "तो तुम आ गई ? ईश्वर का धन्यवाद है।"

"तो मा, तुम मुझे रावी नदी मे डूब गई समझ रही थी ?"

"नही, यह बात नही। वह तुम्हारी मुख्याध्यापिका ईसाई है न। उसके विषय मे यह विख्यात है कि वह इस शहर के एक खन्ना की लडकी है। वह घर से भागकर ईसाई हो गई थी। उसके पिता इत्यादि का देहान्त हुआ तो वह लाहौर मे आ नौकरी करने लगी है। उसकी बचपन की सहेलिया उसके विषय में अजीब-अजीब बातें बताती हैं।"

"परन्तु मा, मैं उनसे पूछकर दाखिल होने नही गई थी।"

"तो किससे पूछकर गई थी ?"

"अपने मन से। मैं अब पढूगी। मेरी दसवी श्रेणी की परीक्षा अप्रैल मास मे होगी। मैं वह पास करना चाहती हू।"

"और विवाह ?"

"वह अब नही होगा।"

"क्यों ?"

"मा ! सगाईके समय मुझसे केसर घिसवाकर तिलक जो किसीने लगवाया था। बस, मेरा विवाह हो गया। पण्डितजी ने भी मेरे घिसे केसर से मेरी ओर से तिलक लगाया था। अब किसी अन्य को तिलक कैसे लगा सकती हू ?"

मा और पिता दोनो मुख देखते रह गए। मा को एक बात सूझी

और बोली, "परन्तु वह तो भाग गया है।"

"पर मैं तो भागी नही।"

"अब वह नहीं आएगा।"

"आ जाएगा। इस जन्म मे नही तो अगले जन्म मे ही।"

"परन्तु मालिन का लडका दामोदर तो कहता है कि वह तुम्हारी सूरत देख भाग गया है।"

"और मालिन का पुत्र क्यो नही भाग गया?"

"उसको तो तुम्हारे पिताजी ने पाच हजार नकद का लोभ देकर विवाह के लिए तैयार किया है।"

"तो पिताजी एक बहन का भाई से विवाह कर देंगे?"

इसपर केशवदास और उसकी पत्नी सरस्वती लडकी का मुख देखते रह गए।

लडकी ने तरल आखो से मा की ओर देख कहा, "मा! मैं पढ़ूंगी।"

"पढकर क्या करोगी?"

"जिसको तिलक दिया है, उसकी प्रतीक्षा करूगी।"

अब पिता ने डाट के भाव मे कहा, "नही! उस भगोडे से अब तुम्हारा विवाह नही होगा।"

"तो पिताजी, मेरा विवाह नही होगा। यदि आपने कुछ ऐसा किया तो मैं भूखी रहकर मर जाऊगी।"

"तो मर जाओ!" केशवदासने क्रोध मे कह दिया, "कहना सहज है। जब भूख लगेगी तो अपने-आप खा लोगी।"

"तो आपको चिन्ता नही करनी चाहिए।" लक्ष्मी ने भी विद्रोह का भाव प्रकट करते हुए पिता के मुख पर देखते हुए कह दिया, "जब भूख नही सह सकूगी तो रसोईघर मे जा खा लूगी।"

अगले दिन केशवदास के मकान के नीचे फिर भट्ठी गरम होने लगी और हलवाई बिरादरी मे बाटने के लिए मट्ठियां बनाने लगे।

परन्तु लक्ष्मी अपना अनशन करती हुई लेट गई। पिता तो कह रहा था कि मरने दो, मगर वह मरेगी नहीं। एक-दो दिन में रात को चोरी चोरी उठ खाने रसोईघर में जा पहुंचेगी।

दो दिन तक हलवाई लगे रहे, परन्तु लक्ष्मी भोजन न करने से दुर्बल हो खाट पर लेट गई और भूख हड़ताल मे उचित विधि-विधान न रखने से वह तीसरे दिन ही अचेतनता और मस्तिष्क की विकृति के लक्षण प्रकट करने लगी।

लक्ष्मी की मा सरस्वती उसकी खाट के समीप ही भूमि पर अपना बिस्तर लगाए बैठी हुई थी।

लड़की की हालत खराब देख हलवाई फिर उठवा दिए गए। तीसरी रात लक्ष्मी अचेत हो गई।

अब मा ने विचार बदला और उसने पति को बुलवाकर गगाजल लड़की के मुख म डाला तो लड़की ने आखें खोली। मा ने कहा "लक्ष्मी! होश करो।"

"मा! तुमने मुझे स्वर्ग मे जाते हुए मेरी टाग पकड घसीटकर वापस इस नरक मे खींच लिया है।"

मा की आखो मे आसू भर रहे थे। लड़की ने बहुत ही धीमी आवाज म कहा "मा! मुझे मरने दो।"

वह पुन अचेत हो गई। मा ने पुन गगाजल मुख मे डालना आरम्भ कर दिया। इस बार चेतन होने मे अधिक देर लगी।

"मा!" लक्ष्मी ने पुन धीमी आवाज म कहा, "मुझे मरने भी नही दोगी?"

"मैं तुम्हारी बात मान रही हू। हलवाई उठवा दिए हैं।"

लक्ष्मी ने प्रश्न-भरी दृष्टि से पिता के मुख पर देखा तो उसने कहा "लक्ष्मी! देख लो, जीवन-भर कुवारी रहना भूखी रह मरने से अधिक कठिन है।"

लक्ष्मी इसमें कठिनाई नही समझती थी। वह मन में विचार

करती थी कि दामोदर की मा मालिन और स्कूल की मुख्याध्यापिका शारदा बताएगी कि दोनो मे कौन-सी बात सरल है। इसपर उसने कह दिया, 'दोनो मे जो सुगम मार्ग होगा, उसे ग्रहण कर लूगी। इसके लिए अभी अवसर नही है।"

मा ने धान की खील को जल में उबालकर कपडे मे निचोड लिया और उस पानी को चम्मच से एक-एक चम्मच कर लडकी के मुख मे डालने लगी। अगले दिन मध्याह्न तक वह पतली-पतली दाल लेने लगी थी और तीसरे दिन वह स्कूल जाने की तैयारी करने लगी। सरस्वती ने कह दिया, 'अभी दो दिन ठहरो। शरीर मे कुछ शक्ति आ जाए तो चली जाना। मैं भी तुम्हारे साथ चल तुम्हारी बडी बहनजी से मिल लूगी।"

"मा ! किसलिए ?"

"मैं उनसे पूछूगी कि वह किस प्रकार विवाह किए बिना रह रही हैं।"

एक सप्ताह-भर फिर स्कूल से अनुपस्थित रहकर लक्ष्मी अपनी मा के साथ स्कूल की हेड मिस्ट्रेस शारदा के कमरे में जा पहुची। शारदा ने लक्ष्मी को अपनी मा के साथ देखा तो मुस्कराते हुए पूछ लिया,' तो आप इसकी मा हैं ?"

"जी। मुझे भय था कि आप इस लडकी को बिना माता-पिता के साथ आए स्कूल मे प्रवेश नही होने देंगी। इसलिए इसे पुन स्कूल मे भरती कराने आई हू।"

"इस बार इसका नाम काटा नहीं। मैंने इसे एक मास की छुट्टी दे रखी है।"

"तो आप जानती थीं कि यह क्या करने वाली है ?"

"नहीं बहनजी ! क्या किया है इसने ?"

"इसने खाना-पीना छोड दिया था। इस जैसी हठी लडकी मैंने पहले कभी नहीं देखी।"

"तो अब आपने इसकी बात मान ली है ?"

"और करते भी क्या ! लड़की को तिल-तिल करते दम तोड़ते नहीं देखा गया।"

"मैं समझती हू कि आपने ठीक ही किया है। यह अभी विवाह के योग्य है भी नहीं। क्या आयु है इसकी ?"

"इस फाल्गुन मास में यह पन्द्रह वर्ष की पूरी हो जाएगी।"

"इसका विवाह अभी छ. वर्ष तक मत करिए। तब यह विवाह के गुण समझने लगेगी। उस समय यदि इसकी इच्छा हुई तो विवाह हो जाएगा।"

सरस्वती ने लक्ष्मी को अपनी श्रेणी में जा बैठने के लिए कहा। वह गई तो शारदाजी से पूछने लगी, "बहनजी ! एक बात पूछू। बताएंगी ?"

"हा। यदि बताने में कुछ हानि न समझ आई तो बताऊंगी।"

"आपकी अब क्या आयु है ?"

"मैं इस समय पैंतीस वर्ष की हू।"

"और आपने विवाह नहीं किया ?"

"मुझे सब मिस शारदा कहते हैं बहनजी ! मिस का अर्थ कुवारी लड़की ही होता है।"

"आप अच्छी, सुन्दर स्त्री हैं। स्वस्थ भी प्रतीत होती हैं। तब आपसे किसीने विवाह के लिए नहीं कहा ?"

शारदा से ऐसे प्रश्न प्रायः स्त्रिया पूछा करती थी और अब वह इस विषय पर ऐसे बात करती थी, जैसे किसी साड़ी-जम्पर की बात हो।

उसने कह दिया, "कई मिले हैं, जिन्होंने विवाह का प्रस्ताव किया है। मुझे उनमें से कोई भी पसन्द नहीं आया। प्राय. सबके सब दोष-पूर्ण दिखाई दिए थे।

"जीवन मेंएक ऐसा भी मिला था, जिससे मैंने विवाह का प्रस्ताव किया था, परन्तु उसने कह दिया कि उसकी सगाई मुझसे कई गुणा

अच्छी लड़की से हो चुकी है।

"मैंने उसे उलाहने के रूप में कहा था, 'उस स्वर्ग की अप्सरा को दिखाइए तो धन्यवाद करूंगी।'

"उसने कहा था कि अवश्य दिखाएगा। परिणामस्वरूप उसने अपने विवाह पर मुझे आमन्त्रित किया। मैं गई और देखा कि उसकी पत्नी मुझसे शरीर में बहुत घटिया है। मैंने उस लड़की से पूछा था, 'कितना पढ़ी हो बहन ?'

"उस लड़की ने बताया, 'पांचवीं श्रेणी तक आर्य कन्या पाठशाला में पढ़ी हूं।'

"मैंने नाक चढ़ा उस युवक की ओर देखा तो वह हँस पड़ा। उसने कहा, 'शारदाजी! यह आपकी सहेली बन गई है। इससे मिलती रहिएगा तो धीरे-धीरे आपको भी इसके सौन्दर्य का ज्ञान हो जाएगा।'

"बहनजी, वह स्त्री मेरी परम सखियों में है। वह अब पांच बच्चों की मां है और मुझे उसपर ईर्ष्या होती है।"

"तो उसके पति से आपका सम्बन्ध बन गया है ?"

"नहीं, वह मुझसे राखी बंधवाया करता है। जबलपुर में रहता है। श्रावणी पर लाहौर आया करता है और राखी बंधवा दस रुपये का नोट दे जाया करता है।"

सरस्वती मुख देखती रह गई। अब शारदा ने कह दिया, "मैं लड़की का दृढ़ संकल्प देख प्रसन्न हूं। यदि इसे मेरे घर भेजा करिएगा तो इसकी पढ़ाई की कमी दूर करा दूंगी।"

"आप कहां रहती हैं ?"

"अनारकली बास मण्डी में एक मकान चालीस रुपये महीने पर लिया हुआ है।"

"वहां अकेली रहती हैं ?"

"मेरे साथ मेरी नौकरानी है। उसे मैं मां कहती हूं। वह मुझे अपनी बेटी ही मानती है। उसका नाम सोनी है।"

"वह भी ईसाई है ?"

"नही, वह ईसाई नही है, परन्तु वह किसी मजहब को मानती नही। कम से कम मैं नही जानती। वह मास, अण्डा इत्यादि नही खाती। उबली सब्जिया और नमक-मिर्च लगाकर साथ डबलरोटी खाती है। मैं तो कभी-कभी एक आध अण्डा ले भी लेती हू, परन्तु वह नही लेती।"

"आपके घर मे कोई पुरुष नहीं रहता ?"

"सोनी का पति रहता है। वह साठ वर्ष की आयु का भला व्यक्ति है।"

सरस्वती शारदा की बात सुन उसपर विस्मय करती हुई घर लौट आई।

४

सरस्वती को एक दिन शारदा के घर पर जाना पड़ा। यह लक्ष्मी के कहने पर ही था। लक्ष्मी ने उस दिन कहा था, "माताजी ! मेरे विवाह के झगडे मे मैं डेढ मास तक कुछ पढ नही सकी। बडी बहनजी मुझे स्कूल मे मेरी कमी पूरी कराने का यत्न करती रहती है, परन्तु उनको स्कूल के प्रबन्ध-न्याय से बहुत कम अवकाश मिलता है। आज उन्होने कहा है कि यदि अच्छे अक लेकर मैट्रिक की परीक्षा पास करनी है तो उनके घर पढने जाया करू।

"मैंने बहनजी से कहा था कि माताजी इसके लिए स्वीकृति नही देंगी। इसपर वह बोली कि आप तो बहुत ही बुद्धिशील प्रतीत हुई थी। मैं आपसे पूछकर आ जाया करू।"

'वह कहा रहती हैं ?"

'वह कहती थी कि यदि कल आप चार बजे स्कूल पहुच जाए तो वह हमे अपने तागे मे अपने घर ले जाएगी।"

"तो उन्होंने अपना तांगा रखा हुआ है ?"

"नहीं। उन्होंने एक तांगे वाले से ठेका किया हुआ है। उसे चालीस रुपये महीना वह देती हैं। तांगे वाला सुबह उनको स्कूल ले आता है और सायंकाल उनको घर ले जाया करता है।"

"अच्छा, तुम्हारे पिताजी से पूछकर आऊंगी।"

"परन्तु मां ! तुम अपनी सहेलियों के घर तो पिताजी से पूछे बिना ही चली जाती हो !"

"पर वह मेरी सहेली नहीं है।"

"तो बना लो।"

"कैसे बना लूं ?"

"मैंने भी एक सहेली बनाई है।"

"सत्य ! कौन है वह ?"

"मां ! वह है निर्मला बैनर्जी। एक बंगाली लड़की है। मेरी ही श्रेणी में पढ़ती है। मैंने कहा, 'मैं तुम्हारी सहेली बनूंगी।'

"'बन सकती हो।' उसने कहा, 'पहले कुछ 'प्रेजेण्ट' करना होगा।'"

"वह क्या होता है ?" सरस्वती ने पूछ लिया।

"मां ! कुछ अपनी यादगार देनी होती है।"

"तो तुमने उसे क्या दिया है ?"

"अपना रेशमी दुपट्टा, जो आसमानी रंग का पिछले मास पिताजी ने लाकर दिया था, वह मैंने उसे दिया है।"

"परन्तु पिताजी ने तो वह तुम्हें दिया था !"

"तभी तो अपना समझ मैंने उसे दे दिया है।"

"और वह तुम्हारी सहेली बन गई है ?"

"हां। अब वह कहती है कि उसकी मां मुझे अपने घर बुलाएगी और वह मुझे अपनी लड़की बना लेंगी।"

"यह तो ठीक नहीं होगा।"

क्यों ?"

"वह मछली खाती होगी।"

"मैंने यह पूछा नहीं।"

"बंगाली सब खाते हैं।"

"परन्तु मैं नहीं खाऊंगी। वह कहती थी कि अगले महीने उसका जन्मदिन है और वह मुझे अपने साथ अपने घर ले जाएगी।"

"पिताजी से पूछकर जाना होगा।"

लक्ष्मी मौन हो मुख देखती रह गई।

अगले दिन सरस्वती ठीक मध्याह्नोत्तर चार बजे क्वीन विक्टोरिया गर्ल्स स्कूल मेजा पहुंची। उसने एक कपड़े के थैले में कुछ कागज़ में लपेटा हुआ था। लक्ष्मी ने मा को स्कूल के द्वार पर खड़े देखा तो मा के मुख पर देखने लगी। मा ने कह दिया, "मैं तुम्हारी बहनजी के घर चलने के लिए आई हूं।"

"तो आओ। मैं बहनजी से कह देती हूं।"

वह मा को लेकर स्कूल की मुख्याध्यापिका के कमरे में जा पहुंची। शारदा वहां नहीं थी। चपरासी बहनजी ने बताया कि वह कार्यालय में गई हैं। अभी आएगी।

शारदा आई तो लक्ष्मी की मा की ओर देखने लगी और बोली, "बहनजी! यह लड़की बहुत ही प्रखर बुद्धि रखती है और मैं समझती हूं कि यदि परीक्षा तक यह मुझसे गणित सीख ले तो अवश्य वजीफा पा जाएगी।"

सरस्वती ने हाथ जोड नमस्ते कर कहा, "मैं इसे आपके घर तक छोड़ने आई हूं और पढ़ाई के उपरान्त इसे घर ले जाऊंगी।"

"तो नित्य आया करेंगी ?"

"यह आपसे पढ़ने में लाभ समझती है। इस कारण मुझे इसके साथ आना ही पड़ा करेगा।"

"तो इसे मैं ले तो अपने साथ ही जाया करूंगी, परन्तु क्या यह

अनारकली बाजार से अकेली घर नही आ सकेगी ?"

"आ अथवा न आ सकने की बात तो यह ही बताएगी, परन्तु मैं तो इसे अकेली सायकाल आने नही देना चाहती।"

शारदा विस्मय मे मुख देखती रह गई। वह समझ रही थी कि ये लोग ससार के पुरुषो पर अथवा अपनी लडकी पर विश्वास नही करते, परन्तु इसमे बहस करने की बात नही थी। यह तो स्वभाव और सस्कारो का विषय था और ये दोनो बातें अभ्यास से उत्पन्न होती हैं। इस कारण उसने कहा, "तो दोनो चलिए। मेरे साथ तागे पर चलिएगा और वहा से इसे लाने और लौटने की बात आप जानें और आपकी लडकी जाने।"

तीनों अनारकली बाजार बास मण्डी के पीछे हस्पताल की ओर एक मजिले कोठीनुमा मकान मे जा पहुची। तीन कमरे थे, एक टट्टी, गुसलखाना और गोदाम पृथक् थे। मकान के आगे दस फुट चौडा और तीस फुट लम्बा खुला स्थान था, जिसमे घास लगी थी और फूलों के गमले रखे थे।

सरस्वती इसे देख अपने मकान से तुलना कर ईर्ष्या अनुभव करने लगी थी। उनका अपना मकान हवेली कहलाता था। तीन मजिला था, परन्तु इस छोटे से मकान के मुकाबले मे वह कबाडखाना ही लगा था।

शारदा मा-बेटी को लेकर एक कमरे मे, जो ड्राइगरूम की भाति सजा हुआ था, जा बैठी। उसके वहा पहुचते ही उसकी सेविका सोनी आई और हाथ जोड सरस्वती को नमस्ते कर अपनी मालकिन से पूछने लगी, "बीबीजी ! चाय लाऊ ?"

'हा। तीनो के लिए।"

"तो यह नौकरानी है ?" सरस्वती ने पूछ लिया।

"हा बहनजी ! यह है सोनी और इसका घरवाला है रामू। दोनों निस्सन्तान हैं। इन्होंने मेरे साथ जीवन-भर रहने का सकल्प

लिया हुआ है। मैं जब जबलपुर में थी तो ये दोनों मिले थे। तब ये वहा के होस्टल के वार्डन की सेवा में थे। पीछे जब मैं कटनी के स्कूल मे हेड मिस्ट्रेस हुई तो ये मेरे साथ ही चले आए। तब से ये मेरे साथ ही है। दस वर्ष हो चुके हैं।"

सोनी चली गई थी। अब सरस्वती ने कहा, "कल जब लक्ष्मी ने मुझे आपके घर आने की बात कही तो इसने कहा कि मैं इसके साथ आपका घर देखने आ सकती हू। तब मैंने कहा था कि इसके पिताजी से पूछकर चलूगी। इसपर इसका कहना था कि मैं अपनी सहेलियो के घर तो पिताजी से पूछे बिना जाती हू। इसपर मेरा यह कहना था कि आप मेरी सहेली नही हैं।

"लक्ष्मी बोली, 'तो तुम बहनजी की सहेली बन जाओ। फिर तुम पिताजी से पूछे बिना जा सकोगी।'"

यह कह सरस्वती तो हसने लगी और शारदा मुस्कराती हुई लक्ष्मी का मुख देखते हुए बोली, "लक्ष्मी! तुम तो बहुत ही समझदार लडकी हो।"

"बहनजी! यह तो माताजी की सुविधा के लिए कहा था, जिससे इनको पिताजी से नित्य न पूछना पडे।"

अब तो शारदा भी हस पडी और सरस्वती की ओर देखकर बोली, 'तो आप मेरी सहेली बनेंगी?"

"जी। इसीलिए मैं आपको कुछ अपनी यादगार देने के लिए लाई हू।"

"ओह! क्या लाई है?"

सरस्वती ने अपने थैले मे से एक कागज मे लपेटा हुआ बण्डल निकाला उसपर बधा धागा खोल बण्डल खोल दिया। उसमें एक रेशमी साडी थी।

"कितने की लाई हैं यह?"

"यह मेरे पिछले जन्मदिन पर लक्ष्मी के पिता ने मुझे दी थी।

वह मैंने अभी प्रयोग नहीं की। वैसे ही रखी हुई थी। जब लक्ष्मी ने कहा कि सहेली बनने के लिए कुछ यादगार देनी चाहिए तो मुझे इसकी याद आ गई।"

'यह तो बहुत कीमती प्रतीत होती है।"

'आपके सहेली बनने के लिए सस्ती ही है।"

शारदा ने साड़ी ली और उसे खोलकर देखा। रेशम पर छपी हुई थी। एकाएक शारदा उठी और सरस्वती को उठा गले लगा बोली,"मैं तो इस तरीके से सहेली बनती हू। अब आप हुई मेरी बहन और लक्ष्मी हुई मेरी लड़की। यही मतलब है न लक्ष्मी का ?"

सरस्वती शारदा के व्यवहार से प्रसन्न थी। उसे यह देख समझ आया कि यह अध्यापिका बहुत ही धनी स्त्री प्रतीत होती है। उसने पूछा, 'बहनजी, यह आपका मकान तो बहुत ही सुन्दर और साफ-सुथरा बना है।"

'यह इस सोनी और इसके घरवाले रामू की करनी से ही है। ये यहीं रहते हैं और दिन-भर इसे सवारने में लगे रहते है।"

"आप इन्हें क्या वेतन देती हैं ?"

"दोनों को चालीस रुपये महीना और रोटी, कपड़ा तथा रहने का स्थान।"

"और इस मकान का भाड़ा ?'

"वह भी चालीस रुपये। मकान में फर्नीचर मेरा अपना है।"

"और तांगे वाले को क्या देती हैं ?"

"उसे भी चालीस रुपये महीना।"

"बहुत खर्चा बाध रखा है ! क्या वेतन मिलता है आपको ?"

"साढ़े पाच सौ रुपया महीना और पचास रुपया मकान का भत्ता।"

"तो आपको बचता क्या होगा ?"

"बचाकर क्या करना है मैंने ? देखिए बहनजी ! एक सौ बीस

रुपया रईसीपन का खर्चा। मेरा मतलब है, तागा, मकान और नौकरी का खर्चा। बीस रुपया महीना बाग और फुलवारी का। पानी और बिजली पन्द्रह रुपया महीना। रोटी एक सौ रुपया महीना। कपड़ा इत्यादि पर पचास रुपया महीना। बीमा एक सौ रुपया महीना और बैंकों में जमा पचास रुपया। फिर भी मेरी जेब में एक सौ रुपया से ऊपर बचता है। उसमें से कुछ न कुछ बच ही जाता है। वह भी मैं महीने के अन्त में बैंक में भेज देती हू।"

'कभी बीमार हो जाए तो?"

"तब बैंक से निकलवा लेती हू। मुझे आभूषण पहनने का शौक नहीं। कपड़े साफ-सुथरे, सादे और टिकाऊ पहनती हू।"

सरस्वती मुख देखती रह गई।

सोनी चाय और पकौड़े बनाकर ले आई। तीन प्याले और एक केतली चाय थी। सरस्वती मुस्कराई और बोली, 'हमारे घर में इन मिट्टी के बर्तनों में चाय नहीं पी जाती। यद्यपि मैं पी लेती हू। मेरी एक सहेली है। वह आनरेरी मैजिस्ट्रेट रायसाहब उद्यानकराय की पत्नी हैं। उनके यहा जब जाती हू तो इन ठीकरों में पी आती हू।"

शारदा ठीकरों की बात सुन हस पड़ी। हसते हुए बोली, "बहन, इस ठीकरे का दाम आपके पीतल के कटोरे से अधिक है।" शारदा ने सरस्वती के प्याले में चाय का पानी डालते हुए कहा।

"कितने का आता है यह?"

"यह प्याला और इसके नीचे यह प्लेट दो रुपये के हैं। पीतल का कटोरा बारह आने से डेढ़ रुपये तक में मिलता है। वैसे तो बढ़िया प्याला और उसके नीचे की प्लेट दस-दस रुपये में भी मिलते हैं, परन्तु मैं इतनी महगी क्राकरी नहीं खरीद सकती। ये टूट भी जाते हैं। महीने में एक-दो अवश्य टूट जाते हैं।"

'परन्तु आप इतने महग बर्तनों में चाय क्यों पीती हैं?"

"पीने में मजा आता है। साथ ही इनमें किंचित् भी मैल रह जाए

तो दिखाई दे जाती है और साफ की जा सकती है। पीतल के बर्तनों में यह नहीं हो सकता। एक बात और है। इनमे गरम चाय पीते हुए हाथ और मुख जलने नहीं।"

"हां! यह तो गुण है।"

"बस, इसीलिए मैं ये ठीकरे प्रयोग करती हूं।"

उस दिन सरस्वती एक घण्टा-भर, जब तक शारदा लक्ष्मी को ऐलजेबरा के फार्मूले समझाती रही, बैठी रही और मन मे बैठी यही विचार करती रही कि उसका भी जीवन है और इस पैंतीस वर्ष की कुमारी का भी जीवन है। दोनो मे कौन सुखी है?

पति का सुख उसे मिलता था, जो शारदा को प्राप्त नहीं था; परन्तु उसके बदले मे वह इसको अपने से अधिक सुखी और जीवन से सन्तुष्ट पाती थी। वह अपने पति की आर्थिक स्थिति और इस स्त्री की आर्थिक स्थिति मे भी तुलना करती रहती थी। उसके पति ने घर की तिजोरी में भी नकदी और आभूषण रखे हुए थे। वह जानती थी कि एक लाख रुपये से अधिक की स्वर्ण मोहरें और नोट तिजोरी में रखे थे। इनके अतिरिक्त आभूषण थे, जो उसकी परसास अर्थात् सास की सास के समय के थे। उसके मुकाबले मे वह शारदा को देख रही थी कि न तो उसके कान मे और न ही नाक मे कोई आभूषण है। गले और हाथों मे भी कुछ नहीं था।

यह तुलना उसके अपने मन मे सन्तोष उत्पन्न कर रही थी। वह उसकी आर्थिक स्थिति नहीं जानती थी, और पूछने मे सकोच अनुभव करती थी।

वह शारदा के घर साढे चार बजे पहुची थी और पाच बजे से छः बजे तक पढाई हुई थी। सरस्वती लडकी को लेकर पैदल ही अपने मकान पर गुमटी बाजार मे साढे छ बजे से पहले ही पहुच गई थी।

उनके घर मे भी एक बैठकघर था। शारदा के मकान के ड्राइंग-रूम से बहुत छोटा, और उसमें भी एक कोने में सबके बिस्तर लपेटे हुए

रखे थे। भूमि पर दरी और उसपर सफ़ेद चादर बिछी थी। एक बड़ा-सा तकिया भी दीवार के साथ लगा था।

सरस्वती और लक्ष्मी बैठी तो सरस्वती ने पूछा, "तो तुम नित्य बहनजी के घर पढ़ने जाया करोगी?"

"माजी! बहनजी कहती हैं कि मैं वजीफा लूंगी तो फिर कालेज में पढ़ सकूंगी।"

"और वहां पढ़कर क्या करोगी?"

"बहनजी की भांति अध्यापिका बनूंगी।"

"कहां बनोगी? यहां कोई और स्कूल तो है नहीं।"

"सुना है कि सरकार एक स्त्रियों का कालेज खोल रही है। वहां की बड़ी अध्यापिका बनूंगी।"

"और तुम विवाह नहीं करोगी?"

"माताजी! दोनों बातों में विरोध नहीं है। शारदा बहनजी ने विवाह इसलिए नहीं किया कि उनको मनपसन्द का कोई पति नहीं मिला।"

"तो पति भी पसन्द किया जाता है? यह कोई आम-खरबूज़ों की भांति पसन्द करने की वस्तु है क्या?"

"मैं क्या जानूं? वह कहती थीं कि इतना पढ़ने-लिखने के उपरान्त वह यही समझी हैं अपने मन की बात करने से बहुत सुख मिलता है।"

"और मन कुएं में डूब मरने को कहे तो कुएं में कूद पड़ना चाहिए?"

"मां! यह तुम बहनजी से पूछना। तब वह तुम्हें बताएंगी। मुझे तो यही कहती हैं कि पहले पढ़ो, पीछे बात करना।"

"अच्छा, देखो! तुम बहनजी के साथ उनके घर चली जाया करो और मैं [illegible] बजे तुम्हें लेने के लिए वहां पहुंच जाया करूंगी।"

"और यदि तुम न आईं तो मैं वहां ही बैठी रहा करूंगी?"

"यह भी तुम्हारे पिताजी से कहूंगी कि वह मुझको भी चालीस रुपये महीने का एक तांगा कर दें।"

"तब तो बहुत खर्चा हो जाएगा।"
'तुम्हारे पिताजी से पूछूगी कि उनकी आय कितनी है।"

५

उस रात दुकान बन्द कर जब लाला केशवदास घर आया तो भोजन करते हुए शारदा की बात सरस्वती ने बताई। लक्ष्मी और उसके बहन-भाई भोजन कर चुके थे। लक्ष्मी और उससे छोटा भाई सुन्दर-दास तथा उसकी छोटी बहन मोहिनी इस समय स्कूल का काम करने लगे थे। सबसे छोटा भाई मक्खन तो अपनी खाट पर जा सो रहा था। रसोईघर मे पति-पत्नी ही थे। रसोई बनाने के लिए कोई नहीं था। बरतन साफ करने और घर-भर मे बुहारी देने के लिए एक स्त्री आती थी। रसोई का काम सरस्वती ही करती थी।

पति भोजन कर रहा था और पत्नी उसी समय रोटियां सेंकती हुई पति को गरम-गरम दे रही थी। सरस्वती ने रोटी बेलते हुए कहा, "मैं आज लक्ष्मी की बड़ी मास्टरानी के घर गई थी।"

"क्यो ?"

"लक्ष्मी वहा उससे पढ़ने गई थी और मैं उसे घर लाने के लिए गई थी।"

"उसका घर कहा है ?"

"अनारकली मे एक मोहल्ला है बांस मण्डी। जहा हस्पताल रोड से मेल होता है, वहा कोने पर एक मंजिली कोठी है। उसमें वह रहती है। लक्ष्मी और मैं बहनजी के साथ ही उसके तांगे मे गई थीं। पीछे मैं लक्ष्मी को लेकर यहा साढ़े छ बजे पहुच गई थी।"

'तब तो बहुत थक गई होगी ?"

"वहा उसने चाय पिलाई थी और साथ पकौड़े खाने को दिए थे।"

"परन्तु वह तो ईसाई है।"

"हां, परन्तु उसका घर और वह स्वयं बहुत साफ हैं। उसने चीनी के बरतनों में चाय पिलाई थी। बहुत अच्छा लगता था। फिर लाला उदानाथ रायजी के घर में भी तो वैसे ही बरतन प्रयोग होते हैं।"

"वह तो बहुत बड़ा आदमी है।"

"आपसे तो कुछ ठिगने कद का है।"

"मैं धन-दौलत की बात करता हूं। वह रईस आदमी है। शहर में उसकी जायदाद है और उसको किराये की बहुत आमदनी है।"

"कितनी होगी ?"

"मैं ठीक-ठीक तो नहीं जानता, परन्तु हज़ार, दो हज़ार रुपया तो ज़रूर होगी।"

"परन्तु लालाजी ! उस मास्टराइन को साढ़े पांच सौ रुपया महीना वेतन मिलता है और वह एक सौ रुपया महीना अपने बीमा का देती है।"

"तो फिर क्या हुआ ? मैं समझता हूं कि हमारी आय डेढ़-दो हज़ार की है। पिछले वर्ष बैसाखी पर आय का चिट्ठा बनाया था। सब खर्चा, टैक्स इत्यादि देकर पच्चीस हज़ार से ऊपर नकद आय हुई थी।"

'यही तो कह रही हूं कि वह साढ़े पांच सौ लेने वाली हमसे अच्छे मकान में रहती है। दो नौकर रखे हुए हैं एक तांगा रखा हुआ है। मकान बहुत ही साफ सुथरा है। बैठने की जगह हमारे बैठकघर से बहुत बड़ी, सजी हुई और बहुत साफ-सुथरी है।"

"परन्तु उसकी तिजोरी में कितना जमा है ?"

"तिजोरी उसके घर में नहीं है। उसका सब कुछ बैंक में जमा है।"

"जो कुछ भी हो, इतना नहीं हो सकता, जितना हमारा है। यदि लक्ष्मी का विवाह होता तो दस पन्द्रह हज़ार व्यय करता। उसका तो न कोई बाल-बच्चा है और न किसीका विवाह होना है और कुछ खर्चा भी नहीं।"

'देखिए जी, मैं यह चाहती हूं कि आप भी अब एक खुले मकान में

चलकर रहें। आपके पिता बताया करते थे कि रात के समय मस्ती दरवाज़े के बाहर डाके पड़ते थे, परन्तु अब तो लोग नगर के बाहर कोठियों में रहते हैं। चोर-डाकू बहुत कम हो गए हैं।"

"बहुत कठिन है। यह जो तुम्हारी तिजोरी में रखा है, इसे लेकर मैं नगर-दीवार के बाहर नहीं रह सकता।"

"तो यह सब बैंक में जमा करा दो। फिर घर में नहीं रहेगा।"

"कुछ दिन हुए, मैं किसी काम से उग्रशंकररायजी के घर गया था। वह भी कह रहे थे कि अब तो नगर के भीतर रहते हुए दम घुटता प्रतीत होता है।"

"यही तो कह रही हूं। मुझे शारदा मास्टराइन से ईर्ष्या होने लगी है।"

"अच्छा, विचार करेंगे।"

"इसमें विचार करने की बात क्या है? चोरियां तो नगर के भीतर भी होती हैं। हम यहां सावधान रहते हैं, वहां भी रहेंगे।"

"खर्चा बहुत बढ़ जाएगा। कोठी होगी तो चौकीदार, माली, सफाई करने का नौकर और खाना बनाने का नौकर इत्यादि एक लम्बा-चौड़ा अमला रखना पड़ेगा। घर की एक गाड़ी रखनी होगी।"

"तो कुछ तिजोरी हलकी हो जाएगी। यही कह रहे हैं न आप? फिर क्या हुआ? तिजोरी में पड़े-पड़े उनपर ज़ंग लग रहा है।"

"मास्टराइन की बीमारी तुमको और लक्ष्मी को लग रही है।"

"यह बीमारी तो प्रतीत होती नहीं। बीमारी में तो मनुष्य अचेत और ओजविहीन हो जाता है। लक्ष्मी की बहनजी का मुख तो मुझसे भी अधिक चमकता है। वह बहुत चुस्त और चपल भी है।"

"परन्तु उसके चरित्र पर तो लोग सन्देह करते हैं।"

"तो स्कूल वालों ने उसे नौकर किसलिए रखा हुआ है? चरित्र-हीन तो मास्टराइन नहीं हो सकती।"

"लोग उसके और स्कूल के मैनेजर राधाकृष्ण खन्ना की बात

करते हैं।"

"देखने मे तो वह बहुत ही भली प्रतीत हुई है।"

"सब दिखावा है।"

"परन्तु मैं तो दिखावा नही कर रही।"

"तुम चार बच्चों की मा की ओर कौन देखेगा ?"

सरस्वती ने मुस्कराते हुए कहा, "कुछ तो देखते ही हैं।"

"अच्छा ! कौन-कौन देखते हैं ?"

"एक तो आप ही हैं। जिस दिन नही मानती, आप झगड़ा करने लगते हैं। आपको तो चार बच्चो की मा पर भी दया नही आती।"

केशवदास हंस पड़ा और बोला, "हा, यह बात तो है, परन्तु हमारा तो विवाह हो चुका है।"

"विवाह मे तो यही हुआ है न कि मैं आपके साथ सयुक्त हो गई हू, परन्तु पति-पत्नी-कर्म तो विवाह होने पर भी नही हो सकता। दोनो भिन्न-भिन्न बातें हैं।"

"और दोनो मे अन्तर नही जानतीं तुम ?"

"जानती हू, परन्तु कौन-सा जीवन ठीक है, कह नही सकती। देखिए जी, मैं लक्ष्मी की बहनजी की सहेली बन आई हू।"

"कैसे ?"

"वह जो पिछली दीवाली पर आपने मुझे साड़ी दी थी, मैंने वह बहनजी को भेंट मे दे दी है और वह मुझसे कसकर गले मिली।"

"और गले मिलने का स्वाद आया ?"

"कम से कम बुरा प्रतीत नहीं हुआ।"

"तो तुम मेरी भी सहेली बन जाओ।"

"आपकी तो पहले ही हू। तभी तो आप गले लगाते हैं।"

केशवदास इस प्रकार की बातो से उत्तेजित हो उठा था। इससे वह पत्नी को प्रसन्न करने के लिए तैयार हो गया।

जब सरस्वती भोजन करने लगी तो केशवदास रसोईघर मे ही

बैठा रहा। यह इस बात का लक्षण था कि सरस्वती से पत्नी-कार्य लिया जाने वाला है।

अगले दिन सरस्वती ने पति के दुकान पर जाने के समय कह दिया, "मैं चाहती हूं कि आप भी मेरे लिए एक तांगे का प्रबन्ध कर दें, जैसा लक्ष्मी की बहनजी ने किया हुआ है।"

"पता करूंगा। मैं उशनाकरायजी से इस विषय में बात करूंगा।"

"मैं नित्य सायं साढ़े पांच बजे लक्ष्मी को लेने उसकी मास्टराइन के मकान पर जाया करूंगी।"

"और बच्चे घर पर अकेले रहा करेंगे ?"

"उनका प्रबन्ध भी करना होगा।"

दुकान खोलने का समय हो गया था और केशवदास चल दिया। दुकान पर मुनीमजी और एक माल बेचने वाला व्यक्ति बाहर खड़े हुए थे। कभी किसीके घर कपड़े दिखाने जाना होता था तो वही व्यक्ति जाया करता था। लाला ने दुकान खोली और गद्दी पर जा बैठा।

आज केशवदास को नगर के बाहर एक बड़ा-सा मकान बनवाने का जुनून सवार हो रहा था। इस कारण मध्याह्नोत्तर वह आनरेरी मैजिस्ट्रेट साहब के घर सम्मति करने जा पहुंचा।

उशनाकराय केशवदास का एक दूर का सम्बन्धी भी था और वैसे भी वह उसके प्रशंसकों में था। लालाजी के घर और बाहर के कामों में वह सहायक हुआ करता था।

इसका एक परिणाम यह भी हो रहा था कि जिन लोगों को मैजिस्ट्रेट से कुछ काम होता था, वे लाला केशवदास की सिफारिश के लिए इच्छुक रहते थे।

आज वह तीन बजे के लगभग मैजिस्ट्रेट साहब के घर पहुंचा तो वह कचहरी से घर लौटे थे। उशनाकराय का स्वभाव था कि वह सप्ताह में दो दिन अदालत करता था। उस दिन वह ठीक दस बजे कचहरी में जा बैठता था और ठीक दो बजे काम बन्द कर देता था।

कभी वह इसके उपरान्त डिप्टी कमिश्नर से मिलने चला जाया करता था। प्राय वह तीन बजे घर पर लौट आता था। उस समय मैजिस्ट्रेट साहब से अकेले में बातचीत हो सकती थी।

मजिस्ट्रेट अभी घोडागाडी से उतरा तो सामने केशवदास को खडा देख बोला, 'केशवदासजी, कैसे आना हुआ है ?"

"आज आपसे एक निजी बात करने आया हू।"

"तो भीतर आ जाओ।"

दोनों मैजिस्ट्रेट के मकान के बैठकघर में जा पहुचे। उशनाकराय ने आवाज दे दी, "ऐ रामू ! देखो, लालाजी आए हैं। चाय ले आओ।"

केशवदास ने मतलब की बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, 'रायसाहब ! लक्ष्मी की मां कहती है कि हमें शहर से बाहर एक कोठी में चलकर रहना चाहिए।"

'क्यो ? यह बात उसके मस्तिष्क मे कैसे आई है ?"

'कल वह क्वीन विक्टोरिया गर्ल्स स्कूल की बडी मास्टराइन के घर गई थी और उसके यहा चाय भी पी आई। वह वहा की बीमारी अपने साथ ले आई है।"

'पर भैया ! स्त्रियों की बात तो माननी ही चाहिए। मैं भी तो तुम्हारी भाभी के कहने पर ही मैक्लोड रोड पर कोठी ले रहा हू।"

'तो भाभी भी शारदा मास्टराइन की कोठी देख आई है ?"

"तुम्हारी भाभी उस बदकार औरत के घर नही जा सकती।"

'मैंने तो सुना था कि स्कूल वालों ने उसको एक नेक स्त्री समझ ही नगर की लडकियो को उसके हवाले किया है।"

'स्कूल की कमेटी का मैनेजर मिस्टर खन्ना महाबदमाश है। सब वकीलो म वह एक मशहूर गुण्डा है।"

एक मैजिस्ट्रेट की एक वकील के विषय में सम्मति को झूठ कहना बहुत कठिन था। इस कारण केशवदास ने बात बदल दी। उसने कहा, 'यदि आपकी बगल मे ही कोई स्थान मिल जाए तो बहुत अच्छा

रहेगा।"

"खाली जगह तो वहा बहुत है। हा, यदि आप चाहें तो एक कोठी बिकाऊ है। मेरा कोठी के मालिक से सौदा नहीं पटा। शायद तुम्हारे साथ फैसला हो जाए।"

"तो किस प्रकार पता करू ?"

"मैं एक प्रापर्टी-डीलर से कह दूगा। वह तुमसे मिल लेगा।"

"मैं एक घर का तागा भी रखना चाहता हू।"

"बहुत रुपया पैदा कर लिया मालूम होता है।"

"रायसाहब ! आपकी बराबरी तो नहीं कर सकता, परन्तु कुछ पैदा तो किया ही है।'

"कितनी आय आय-कर वालों को 'डिक्लेयर' की है ?"

' यही कुछ तीस-चालीस हजार वर्ष-भर मे अर्जन कर लेता हू।"

उशनाकराय मुख देखता रह गया। उसको मकानों के भाड़े की आय थी। कुछ कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के हिस्से भी खरीदे हुए थे। सब मिल-मिलाकर हजार-बारह सौ की आय वर्ष-भर मे होती थी।

उशनाकराय को विस्मय मे अपने मुख पर देखते हुए पा केशवदास ने कहा, "यह तो अब सरकार को बताना ही पडता है और आप जानते हैं कि अधिक दिखाने से आय-कर अधिक देना पडता है।'

" मैं यह विचार कर रहा हू कि इतना कमाते हुए तुम उस गन्दी गली मे क्यो रहते हो ? तुम्हारी पत्नी ठीक ही कहती है कि खुले स्थान मे मकान लेना चाहिए।

"मैं तागे के विषय मे यह सम्मति दूगा कि एक 'विक्टोरिया' ले लो। उसमे आने-जाने मे शान रहेगी। बच्चे किसी अच्छे घर में ब्याहे जाएंगे।"

केशवदास बताना नही चाहता था कि उसकी लड़की लक्ष्मी ने तो विवाह न करने का हठ किया हुआ है और दूसरी लड़की अभी छोटी है। उसने अब पुन बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "राय-

साहब ! तो विक्टोरिया गाडी कितने की बन जाएगी ?"

"आपके लिए कुछ अधिक नही । दो सौ रुपये का एक अच्छा घोडा मिल जाएगा। गाडी लगभग तीन सौ रुपये में बन जाएगी । कहो तो गाडियां बनाने वाले को दुकान पर भेज दू ?"

"और गाडी के कोचवान को क्या वेतन देना पडेगा ?"

"चालीस रुपया महीना ।"

केशवदास विचार कर रहा था कि इस सब व्यय करने पर उसे लाभ क्या होगा।

उसे परेशानी मे देख उशनाकराय ने कह दिया, "क्या विचार करने लगे हो ?"

इस समय रामू एक ट्रे मे चाय और बिस्कुट ले आया। तीन प्याले रखे थे। केशवदास विचार ही कर रहा था कि यह तीसरा प्याला किसके लिए रखा है कि उशनाकराय की पत्नी रामप्यारी आ गई । उसने केशवदास को हाथ जोड़कर नमस्ते कर कहा, "भाई साहब ! बहन सरस्वती को साथ नही लाए ?"

"मैं सीधा दुकान से ही आ रहा हू ।"

"उनसे मिलने को मन करता है । उन्हे कहिएगा कि कल दिन के ग्यारह बजे मैं उनके घर आऊंगी ।"

"आप क्यो कष्ट करेंगी ! कहे तो वह ही कल यहा आ जाएगी ।"

"नही। मैं ही आऊगी। वह बीसियों बार यहा आ चुकी है। कल रविवार है। इनका तागा खाली होगा और मैं ही आऊगी ।"

तीनो के लिए रामप्यारी चाय बनाने लगी । इसपर उशनाकराय ने कहा, "लालाजी की श्रीमतीजी ने भी इच्छा प्रकट की है कि हमारी बगल मे जगह ले कोठी बनवाए ।"

"सत्य ? तब तो आप भी नदी मे कूद पडेंगे।"

केशवदास समझा नही। उशनाकराय समझ हस पडा। हसते हुए

बोला, "पर भाई साहब ! यह नदी बहुत गहरी नही है। आप डूबेंगे नही।"

"रायसाहब ! मैं समझा नही !"

"भाई ! बात तो सरल ही है। नदी मे बहता हुआ मनुष्य तो कहीं का कहीं निकल जाता है और किनारे पर खडा तो सदियों खडा रहे तो भी वहा ही खडा रहता है। यह मेरी श्रीमती कहती है कि काल का प्रवाह नदी के प्रवाह की भाति है। हिन्दू समाज इस काल के प्रवाह मे सैकडो वर्षों से किनारे पर खडा है। इसी कारण इसमे बदबू उत्पन्न हो रही है। यह अपने को नदी मे बहता अनुभव करती है। इसने पहले मेरे चाय पीने के स्वभाव को बदला। फिर वस्त्रों को बदला। अब मकान को बदल रही है और कहती है कि यहा रहने वाला समाज तो जमाने के साथ बह रहा है। हम भी उसमे छलाग लगा रहे हैं। हम भी उनके साथ कदम मिलाकर चलने लगेंगे।"

"खाने-पीने मे क्या परिवर्तन किया है भाभी ने ?"

एक तो आदत डाल दी है कि प्रात चाय लिए बिना टट्टी नही उतरती। दूसरा, प्रात का अल्पाहार साढे नौ बजे लेता हू। लच सप्ताह मे दो दिन कचहरी मे लेता हू। जिस दिन घर पर होता हू, उस दिन श्रीमतीजी के साथ बैठ भोजन करता हू। अब यह लच मे सूप और मटनकरी बनाने लगी है।"

"वह क्या होता है ?" केशवदास ने पूछ लिया।

इसपर रायसाहब और उसकी पत्नी हसने लगे। उत्तर रामप्यारी ने दिया। उसने कहा, 'अब तो आप हमारे साथ मैक्लोड रोड पर कोठी बनवा रहने लगेंगे, तब बहन सरस्वती को सब समझा दूगी।"

उशनाकराय ने कहा "इनकी श्रीमतीजी तो शारदा ऐण्ड्रयूज से मिल आई हैं।"

शारदा का नाम सुन रामप्यारी चुप कर गई। केशवदास मुख देखता रह गया। वह समझ गया कि मास्टराइन की कुछ बात है, जो यह

बताना नहीं चाहते। इस कारण केशवदास एक ठेठ व्यापारी होने से विवादास्पद बात को छोड़ बात बदलने का अभ्यास रखता था।

केशवदास ने पूछ लिया, "भाभी ! तो लक्ष्मी की मां से कह दूं कि आप कल आएंगी और वह प्रतीक्षा करे ?"

"हां, अवश्य आऊंगी। और कह देना कि मध्याह्न का भोजन उनके यहां करूंगी।"

"यह तो ठीक किया कि आपने बता दिया है। हम तो दस बजे दिन का खाना खाते हैं और फिर चार बजे दूध अथवा फल लेते हैं।"

"हम तो चार बजे तीसरी बार खाते हैं। फिर रात को आठ बजे और कुछ रात को सोने से पहले भी लेते हैं।"

केशवदास मुख देखता रह गया। इसपर रामप्यारी ने कह दिया, "भाई साहब ! परेशान होने की बात नहीं। मैं सब बात बहनजी को समझा दूंगी।"

केशवदास ने अब आनरेरी मैजिस्ट्रेट साहब को कह दिया, "तो कोठी के लिए प्रापर्टी-डीलर और गाड़ियां बनाने वाले को भेज दीजिएगा।" इतना कह वह हाथ जोड़ पति-पत्नी से विदा ले चल पड़ा।

जब केशवदास कमरे से निकल गया तो रामप्यारी ने कहा, "किशोर की सगाई की बात इसकी लड़की से करना चाहती हूं।"

"पर किशोर उसे पसन्द करेगा क्या ? मैंने लड़की देखी है। वह बहुत कुरूप है। हां, उसकी छोटी बहन देखने में अच्छी मालूम होती है, परन्तु वह अभी बहुत छोटी है। मैं समझता हूं कि वह अभी दस वर्ष से कम ही होगी।"

"परन्तु इसकी लड़की की बात तो किशोर ने ही कही है। उसने अवश्य लड़की को कहीं देखा होगा।"

"परन्तु तुमने भी तो देखी है। क्या समझती हो कि वह किशोर को प्रसन्न कर सकेगी ?"

"मुझे तो सब लड़कियां प्यारी लगती हैं और मैं समझती हूं कि किशोर मेरा पुत्र है।"

इसमे कहने को कुछ नहीं था, अतः उशनाकराय चुप रहा।

६

रात केशवदास ने पत्नी से पूछा, "तो आज भी शारदा के घर गई थी?"

"हां। लक्ष्मी को तो लेने जाना ही था।"

"और आई कैसे हो वहां से?"

"पैदल ही आई हूं। सायकाल मैं अकेली तांगे मे सवारी करने से डरती हूं।"

"तो कोठी में अकेली जाकर कैसे रहोगी?"

"वहां तो मैं एक तांगा रख लूंगी।"

केशवदास हंस पड़ा और उशनाकराय तथा उसकी पत्नी से हुई बात सुनाने लग गया। सरस्वती ने बात बदल दी। उसने कहा, "कल रविवार है और लक्ष्मी की एक सहेली का जन्मदिन है। वह लक्ष्मी को अपने घर बुला रही है। वह ठीक दस बजे स्कूल के द्वार पर अपनी घोड़ा-गाडी भेज देगी और आशा करती हूं कि लक्ष्मी और मैं उसे बधाई देने के लिए उसके घर जाएं।"

"कितने बजे जाओगी?"

"दिन के दस बजे।"

"परन्तु उशनाकराय की पत्नी तो तुमको मिलने आने वाली है।"

"तब तो बहुत कठिन होगा।"

"मैं समझता हूं कि तुम कल प्रातः आठ बजे ही उसके घर पर चली जाओ और उससे मिल लो। वह किसी काम से मिलने के लिए आ

रही प्रतीत होती है।"

'यह ठीक है। मैं लक्ष्मी को लेकर प्रात उनके घर जाऊंगी। वहा से ही स्कूल के द्वार पर जा खड़ी होंगी।"

इसपर भी सरस्वती विचार कर रही थी कि रामप्यारी किस काम से मिलने माने वाली है। उसने लड़की को आवाज दे बुला लिया। वह अपने कमरे में बैठी स्कूल का काम कर रही थी। मा की आवाज सुन वह आई तो प्रात काल का उशनाकरायजी के घर चलने का कार्यक्रम उसे बताया और कहा, "साढ़े सात बजे तैयार हो जाना। वहा से ही हम स्कूल के द्वार पर और फिर वहा से निर्मला बैनर्जी के घर चली आएगी।"

"परन्तु मा! मैं मौसी रामप्यारी के घर नहीं जाऊंगी।"

"क्यो ?"

"बस, कह दिया कि नही जाऊंगी। तुम वहा से ही स्कूल के द्वार पर आ जाना। मैं वहा पहुच जाऊंगी।"

माता-पिता दोनों लड़की का मुख देखते रह गए। लक्ष्मी भूमि की ओर देख रही थी। जब मां ने कुछ नहीं कहा तो लक्ष्मी बोली, "तो अब मैं जाऊ ?"

लक्ष्मी मा के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना उठी और अपने कमरे में चली गई।

लक्ष्मी के चले जाने के उपरान्त सरस्वती ने कहा, "लड़की हठी होती जा रही है।"

'मुझे कुछ और ही बात समझ आई है।"

"क्या ?"

"यह जानती है कि क्यो उशनाकराय की पत्नी तुमसे मिलने आ रही है अथवा तुम उससे मिलने जा रही हो।"

"क्या बात हो सकती है ?"

"उशनाकराय का लड़का इस समय बी० ए० मे पढ़ता है। शायद

कुछ उसकी बात है।"

"मुझे यह बात नहीं समझ आ रही। मैं समझती हूं कि लक्ष्मी विशेष वस्त्र पहन अपनी सहेली के घर जाने वाली है। वह उन वस्त्रों के साथ रामप्यारी के घर नहीं जाना चाहती।"

"नहीं। बात वही है, जो मैं समझा हूं। तुम लड़की से पता करना कि उसने उशनाकराय के घर जाने से इनकार क्यों किया है।"

दस बजने में पांच मिनट रहते सरस्वती स्कूल के द्वार पर पहुंची तो लक्ष्मी वहां पहले ही खड़ी थी। एक विक्टोरिया घोड़ागाड़ी भी वहां खड़ी थी। सरस्वती ने आते ही लड़की से पूछा, "कितनी देर से यहां खड़ी हुई हो?"

"अभी आई हूं। एक मिनट से अधिक नहीं हुआ।"

"मैं समझी थी कि तुम जरीदार वस्त्र पहनकर जाने वाली हो।"

"किसलिए ऐसा समझा था?"

"सहेली के घर पहली बार जा रही हो न?"

"तो वह ससुराल है क्या?"

सरस्वती हंस पड़ी। दोनों घोड़ागाड़ी में बैठ गई थीं और गाड़ी चल पड़ी थी। सरस्वती ने हंसते हुए कहा, "तो तुम जानती हो कि ससुराल पहली बार कैसे जाया करते हैं?"

"हां। कृष्णा की डोली जाते देखी थी, परन्तु मां, वे वस्त्र तो उसकी सास उसके पहनने के लिए लाई थी। वहां न सास है और न पहली बार जाने की बात है।"

सरस्वती ने वार्तालाप में तल्खी आती देख चुप रहना ही ठीक समझा। गाड़ी के कचहरी रोड तक पहुंचने तक मां-बेटी में बातचीत नहीं हुई। सरस्वती उशनाकराय की पत्नी रामप्यारी का प्रस्ताव सुन आई थी और वह किसी प्रकार का उत्तर देकर नहीं आई थी। उसने

रामप्यारी को यह कहा था कि अभी दसवीं श्रेणी को यूनिवर्सिटी की परीक्षा दो मास मे होने वाली है। तब तक तो कोई बातचीत नहीं हो सकती। लक्ष्मी इस समय विवाह की बात पसन्द नही करेगी।

उशनाकराय के घर से वह चाय इत्यादि अल्पाहार लेकर आई थी। अत जब गाडी मिस्टर अतुल बैनर्जी की कोठी के बाहर पहुची तो गाडी का शब्द सुन अतुल बैनर्जी की लडकी निर्मला कोठी से निकल आई और वह हाथ जोड लक्ष्मी की माताजी को नमस्कार कर लक्ष्मी से गले मिलने लगी। लडकियों को कसकर गले मिलते देख सरस्वती मुस्कराती हुई लडकियो की ओर देखती रही। निर्मला ने कहा, "मौसी! मेरे सब बडे भीतर आपसे मिलने के लिए तैयार बैठे हैं।"

"ओह! तो हमारी प्रतीक्षा हो रही है?"

निर्मला ने मुस्कराते हुए कहा, "उस दिन से ही जब हम सहेली बनी थीं। मैंने मा को इसका 'प्रेज़ेण्ट' दिखाया तो मा कह रही थी कि वह आपकी सहेली बनेंगी।"

तीनों कोठी मे जा ड्राइगरूम मे पहुच गई थी। इतने मे एक प्रौढ़ावस्था की महिला पाच-छ प्राणियो मे से उठी और सरस्वती से सबके समक्ष ही गले मिली। गले मिलते हुए उसने सरस्वती को कान मे कहा, "सहेलियो की माताए भी तो सहेली हो जाती हैं।"

'हा। इसी कारण तो निमन्त्रण मिलते ही चली आई हू।"

"आइए, आपका परिचय कराऊ।" वह सरस्वती और लक्ष्मी को लेकर अपने समीप कुर्सियो पर बिठा अपने परिवार के सदस्यों से मां-बेटी का परिचय कराने लगी। उसने सबसे पहले अपने पास बैठे एक शरीर से भारी, परन्तु रोब-दाब वाले व्यक्ति की ओर सकेत कर कहा, "यह है बैरिस्टर अतुल बैनर्जी—निर्मला के पिता। आपको लाहौर मे आए इक्कीस वर्ष हो चुके हैं। यहा चीफ कोर्ट मे वकालत करते है।"

बैरिस्टर साहब ने हाथ जोड़ सरस्वती को नमस्कार किया और

कहा, "बहनजी ! मैं आपका इस घर में स्वागत करता हू।"

"और बहनजी," मिसेज बैनर्जी ने बताया, "यह इनके साथ बैठा हम दोनों का बड़ा लड़का सतीश बैनर्जी है। यह लाहौर के लॉ कालेज मे पढ़ता है। इस वर्ष अन्तिम परीक्षा देने वाला है। यहां से वकालत पास कर बैरिस्टर बनने के लिए विलायत डेढ़ साल के लिए जाएगा।"

सतीश ने भी हाथ जोड़ नमस्ते की तो फिर निर्मला की मा ने बारी-बारी से अपने अन्य बच्चों का परिचय करा दिया, "यह निर्मला की बड़ी बहन है उर्मिला। इस समय बी० ए० मे पढ़ती है। और यह तो निर्मला है। आप इसे जानती ही हैं। और यह सबसे छोटी लड़की विमला है। यह सबसे छोटा लड़का गिरीश है। बस, इसके उपरान्त परमात्मा ने और बच्चे बनाने से मना कर दिया है।

"और मैं हू निर्मला की मा भगवती। अब आपकी बहन। और देखो," भगवती ने परिवार वालो की ओर देखकर कहा, "यह है लक्ष्मी। पिछले मास ही निर्मला की सहेली बनी थी और इसने रेशमी दुपट्टा निर्मला को 'प्रेज़ेण्ट' किया था।"

सरस्वती इस परिचय की रस्म के समाप्त होने पर पूछने वाली थी कि क्या घर से बाहर की हम मा-बेटी ही आई हैं अथवा कोई अन्य भी आने वाला है, परन्तु भगवती ने उसके मुख की बात का उत्तर दे दिया। उसने कहा, "आज की हमारी 'सेरिमनी' घर की ही है। वैसे तो निर्मला के मित्रों का परिचय यहां बहुत लम्बा-चौड़ा है, परन्तु वे सब तो इनके जन्मदिन पर आते हैं। निर्मला की अभी एक ही सहेली है और वह तथा उसकी मा आ गई हैं। एक मेरी अन्य सहेली है। वह भी आज आने वाली है। वह आएगी तो आपसे परिचय कराऊंगी।

"तब तक निर्मला आपको एक भजन सुनाएगी और फिर सतीश बांसुरी बजाकर सुनाएगा और मैं समझती हू कि ये दिल्ली के बलूगड़े भी कुछ न कुछ मनोरंजन के लिए कहेंगे।"

इस प्रकार परस्पर परिचय में नाम धाम बताने से अधिक अपने-अपने शौक का प्रदर्शन होने लगा।

निर्मला ने एक बगला गीत गाया। भगवती ने गीत का अभिप्राय सरस्वती को बताया, "निर्मला के गाने का अभिप्राय यह है कि मैं नदी के किनारे झोपड़ा डाल रहती हूं। नित्य बीसियों वस्तुएं और कभी-कभी तो मृत शव तथा जीवित प्राणी भी नदी में बहते हुए निकलते दिखाई देते हैं। वे सब किसी अनन्त से आकर अनन्त की ओर ही चले गए हैं, परन्तु मैं तो वहीं की वहीं ही खड़ी बूढ़ी हो रही हूं, अर्थात् ससार आगे निकल गया और मैं वहीं की वहीं खड़ी हूं।"

सतीश अपनी बासुरी ठीक कर रहा था, जब भगवती निर्मला के गीत का भावार्थ बता रही थी। सरस्वती के मुख से एक ही वाक्य निकला, "यह ठीक कह रही है।"

भगवती सरस्वती के कुछ और कहने की प्रतीक्षा में सरस्वती का मुख देख रही थी कि सतीश ने बासुरी पर एक सरल-सी धुन बजानी आरम्भ कर दी।

मजलिस का ढग बदला जब प्रतीक्षित परिवार आ पहुचा। सतीश ने बासुरी-वादन बन्द कर दिया और परिवार के सब इन नये आए परिवार से मिलने लगे। आने वाले तीन व्यक्ति—एक पुरुष, स्त्री और उनकी एक लड़की थे।

लड़की ने आते ही अपने हाथ में पकड़े एक कपड़े के थैले में से घुघरू निकाल पांव में बाधने आरम्भ कर दिए।

लक्ष्मी ने समझा कि यह पहले ही निश्चित था। किसी ने उसे घुघरू बांधने के लिए नहीं कहा था।

सतीश ने बासुरी बजाना आरम्भ की तो वह वृन्दमण्डल के बीच में खड़ी हो पांव से बासुरी बजने के साथ ठुनक देने लगी। पन्द्रह मिनट तक वह अपना नृत्य दिखाती रही। जब वह नाच रही थी तो भगवती ने सरस्वती को बताया, "यह ज्योत्सना सरकार है। यह सतीश की

'कू धर रही है।"

"वह क्या होता है ?"

"यही कि वह सतीश से विवाह की इच्छा करती है, परन्तु अभी 'ऐंगेजमेंट' (मगनी) नही हुआ।"

"और इसके पिता क्या काम करते है ?"

"पजाब सरकार के कार्यालय मे सुपरिण्टेण्डेण्ट हैं।"

यह मजलिस बारह बजे तक चलती रही। इस सब समय सतीश लक्ष्मी और निर्मला के पास परस्पर बातचीत करता रहा। सतीश ने लक्ष्मी की पढाई से बात आरम्भ की और फिर अपनी पढाई का परिचय दे दिया। उसने कहा, "मैं कानून पढने जा रहा हू, परन्तु मैं कानून की एक विशेष शाखा 'अन्तर्राष्ट्रीय कानून' का विशेष अध्ययन कर रहा हू। यदि इसमे मेरी ख्याति हुई तो मैं देश-विदेश मे घूमा करूगा।"

"और आप अपनी पत्नी को भी साथ-साथ ले घूमा करेंगे ?"

"हा, यदि वह ले जाने योग्य हुई तो।"

"और यह ज्योत्स्नाजी भी ले जाने के योग्य नही हो सकती हैं क्या ? यह तो अच्छी-खासी सुदर है।"

'ग्रह !" सतीश ने अस्वीकृति प्रकट करते हुए कहा, "मौसी ! शरीर के अतिरिक्त कुछ बुद्धि भी तो सुन्दर होनी चाहिए।"

सरस्वती ने बात बदल दी और कह दिया, "बुद्धि तो परमात्मा ने पुरुषो मे ही सब बाट दी प्रतीत होती है। जब स्त्रियों की बारी आई तो परमात्मा के कोष में बुद्धि समाप्त हो गई प्रतीत हुई है।"

सतीश हस पडा। हसते हुए बोला, "मौसी ! हमारी माताजी को तो बुद्धि का उचित भाग मिल गया है।"

सरस्वती हस पडी और भगवती की ओर देखने लगी।

बारह बजे भोजन हुआ और जब भोजनोपरान्त सरस्वती ने निर्मला को एक साडी उसके जन्मदिन के उपलक्ष्य मे भेंट की तो

भगवती ने कह दिया, "निर्मला ! मौसी के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लो।"

निर्मला चरण स्पर्श करने के लिए झुकी तो सरस्वती ने उसे उठा गले लगा लिया और पीठ पर हाथ फेर प्यार दिया।

निर्मला सखी को विदा करने से पहले अपने कमरे मे ले गई और वहा उसने लक्ष्मी का बहुत-बहुत धन्यवाद किया और पुन आने के लिए कहा। निर्मला ने बताया, "जिस दिन तुमने मुझे दुपट्टा भेंट मे दिया था, उसी दिन मैं भी तुम्हे कुछ अपनी यादगार देना चाहती थी, परन्तु मा ने कहा कि अपने जन्मदिन पर देना। सो आज दे रही हू। यह देखो, मैंने तुम्हारे लिए उसी दिन से रखा हुआ है।"

इतना कह उसने मेज़ पर पडी एक कार्डबोर्ड की डिबिया उठा दे दी। डिबिया पर लिखा था—'पार्कर'। लक्ष्मी ने डिबिया खोली तो उसमे एक पार्कर का पेन और एक पेंसिल रखी थी।

निर्मला ने पेन के प्रयोग का ढग बताया और लिखकर दिखाया। इसपर लक्ष्मी ने भेंट के लिए धन्यवाद कर दिया।

७

लक्ष्मी से विवाह का प्रस्ताव दो परिवारों से आने लगा था। मा ने उससे कहा भी था, "लक्ष्मी ! यदि तुमने दामोदर के विवाह के प्रस्ताव पर भूख-हड़ताल न की होती तो मैं तुमसे पूछती ही नहीं और घर पर हलवाई लगा तुम्हें विदा करने का प्रबन्ध कर देती। अब बताओ, किनसे बातचीत करू ? भगवतीजी के सुपुत्र के घर जाओगी अथवा उशनाकराय के लडके के घर ?"

"मा ! मेरे मस्तिष्क मे ऐलजेबरा, ज्योमेट्री, इतिहास और भूगोल भर रहे हैं और साथ ही टेनिसन और वर्ड्सवर्थ हैं। बताओ, इस छोटी-सी खोपडी मे और कुछ विचार करने को स्थान ही कहां

है ?"

"तो मैं तुम्हारे लिए विचार कर लू । मेरी खोपड़ी तो तुमसे बड़ी है।"

"तुमने तो एक जगन्नाथ देखा था। फिर दामोदर देख लिया है। अब कुछ और देख रही हो। नही मा ! मैं स्वय विचार करूगी, परन्तु अभी नही। मुझे परीक्षा दे लेने दो। तब पुस्तकें बन्द कर विचार करूगी।"

"कब समाप्त होगी तुम्हारी परीक्षा ?"

"पच्चीस ऐप्रिल को।"

"और कब अपने मस्तिष्क के कपाट इस बात के लिए खोलोगी ?"

लक्ष्मी मुस्कराई और बोली, "पच्चीस ऐप्रिल सायकाल। अतिम पर्चा देकर।"

"ठीक है। यह देखो। यह कैलेण्डर टगा है। आज ऐप्रिल की पाच तारीख है। मैं इसपर यह पेंसिल से पच्चीस पर निशान लगा रही हू। उस दिन मैं तुमसे इस विषय पर बात करूगी।"

सरस्वती की निर्मला की मा भगवती और उत्तमचन्द राय की पत्नी रामप्यारी से बात चल रही थी। इस कारण वह अपने मन मे अपने पति से सम्मति कर एक निश्चय कर चुकी थी और उसी निश्चय के अनुसार वह लड़की को प्रेरणा दे रही थी, परन्तु लक्ष्मी प्रेरणा ले रही थी अपनी मुख्याध्यापिका शारदा से। एक घण्टा-भर नित्य वह शारदा से मिलती थी और उसमे शारदा उसकी अग्रेज़ी की कम्पोज़ीशन की कापी ठीक किया करती थी और अर्थमैटिक तथा ऐलजेबरा मे सहायता किया करती थी। इसके अतिरिक्त लक्ष्मी अपनी बड़ी बहनजी से घर पर मिल रही प्रेरणा पर बातचीत किया करती थी। इसी सन्दर्भ मे एक दिन लक्ष्मी ने शारदा को अपनी कम्पोज़ीशन की कापी दिखाई और गणित का कार्य आरम्भ करने से पहले कह दिया, "बहन जी ! मैं एक विचित्र द्विविधा मे फस गई हू।"

"क्या द्विविधा है ?"

"यही कि मैं विवाह के लिए तैयार हो जाऊं अथवा न ?"

"इसमें द्विविधा क्या है ? तुम वह करो, जो मन मे विचार आता है ।"

"विचार तो यही आता है कि विवाह न करूं । कम से कम अभी न करूं ।"

"तो मत करो ।"

"पर मां मुझे अपने मन की बात मनवाने का वही उपाय प्रयोग करने को कह रही हैं, जो मैंने अपनी बात मनवाने के लिए किया था ।"

लक्ष्मी ने दामोदर से विवाह न करने के लिए अपना भूखे रहकर मर जाने की योजना प्रयोग करने की सब कहानी बताई थी । शारदा को वह यह भी बता चुकी थी कि वह तब जगन्नाथ से अपने को वचन-बद्ध मानती थी, परन्तु अब वह समझती है कि वचन उनसे पालन किया जाता है, जो अपना वचन पालन करने पर कटिबद्ध हों । जगन्नाथ ने स्वयं वचनभंग किया था । इस कारण वह अब समझ गई है कि उसके साथ वचनभंग करना पाप नहीं, कदाचित् पुण्य है ।

"परन्तु," लक्ष्मी ने कहा, "अब एक नई सनक मन में सवार हो रही है । वह है आपकी भांति विवाह न करने की । इस सनक के लिए तो मैं भूख-हड़ताल कर नहीं सकती । इस कारण मैं द्विविधा में फंस गई हूं । मां नित्य अपने प्रश्न का उत्तर पाने के लिए आती हैं और मेरे मन में विक्षोभ उत्पन्न कर जाती हैं । परिणामस्वरूप उसके उपरान्त घण्टों ही मैं अपना ध्यान अपनी पढ़ाई में नहीं लगा सकती ।"

"तो ऐसा करो, मां से इस विषय पर चर्चा को टालने का यत्न करो ।"

"कैसे करूं ? बात तब ही टल सकती है, जब मैं मां को उनकी बात मान जाने का कुछ सीमा तक आश्वासन दूं । मां को दिए वचन को मैं भंग नहीं कर सकती ।"

"देखो लक्ष्मी ! तुम मा को कह दो कि परीक्षा तक तुम विवाह जैसी बात पर विचार नहीं कर सकती। परीक्षा समाप्त होते ही तुम मा के प्रस्ताव पर विचार करोगी।"

शारदा की इस सम्मति पर ही लक्ष्मी ने मा को वचन दिया था कि पच्चीस ऐप्रिल को सायकाल वह इस विषय पर मा से बातचीत करेगी। सरस्वती को इस निश्चयात्मक वचन पर विश्वास था और वह मौन हो गई।

पच्चीस ऐप्रिल को अंग्रेजी मे मौखिक परीक्षा थी और जब वह बिना कलम लिए परीक्षा-भवन को जाने लगी तो मा ने पूछा, "आज परीक्षा नहीं है ?"

"परीक्षा तो है। आज परीक्षा मौखिक होगी, इसलिए लिखने का कोई काम नहीं है।"

"तो आज मैं अपनी बात का उत्तर जानना चाहूंगी।"

"मैं परीक्षा-स्थान से सीधी शारदा बहनजी के घर जाऊंगी। तुम भी वहां आ जाना।"

केशवदास ने मैक्लोड रोड पर एक बिकाऊ कोठी बीस हजार रुपये में मोल ले ली थी और उस कोठी को अपने रहने योग्य ठीक करवा रहा था। वह भी आशा कर रहा था कि पच्चीस ऐप्रिल को लक्ष्मी के विवाह का निश्चय हो जाएगा और तब उसका एक-दो सप्ताह के भीतर ही विवाह करना होगा। उसकी इच्छा इस नई कोठी मे जाकर ही विवाह करने की थी। इसी कारण कोठी की मरम्मत और उसमे परिवर्तन द्रुतगति से हो रहे थे।

एक बात यह भी थी कि वह अतुल बैनर्जी के लड़के से लक्ष्मी के विवाह को उशनाकरराय के लड़के की तुलना में अच्छा समझता था। उशनाकरराय का लड़का किशोर इतना फूहड़ व्यवहार करता था कि

उसे वह पसन्द नहीं था।

एक दिन किशोर केशवदास की दुकान पर आया था और सीधा ही कहने लगा, लालाजी ! लक्ष्मी की परीक्षा किस दिन समाप्त होने वाली है ? '

' किसलिए पूछ रहे हो ?"

मां ने बताया है कि वह विवाह का निश्चय उसी दिन करेगी। मैं उससे उसी दिन मिलने की इच्छा करता हू।"

क्या करोगे मिलकर ?"

मैं उससे अपने साथ विवाह करने के गुण वर्णन करूंगा।'

' परन्तु वह तुमसे मिलना पसन्द नहीं करेगी। मुझे विश्वास है कि वह तुमको जली-कटी सुना देगी।"

"वह मैं देख लूंगा।"

इसपर भी पिता ने पुत्री की परीक्षा की अन्तिम तिथि नहीं बताई। उसने कह दिया बरखुरदार ! मैं स्वयं नहीं जानता कि परीक्षा कब समाप्त होगी। मैं समझता हू कि तुम्हारी मां को सूचना भेज दी जाएगी।"

केशवदास को यह बात पसन्द नहीं आई। इसने उसके मन मे निश्चय करने मे सहायता की और वह सतीश बैनर्जी से मिलना चाहता था। यह भी वह मैक्लोड रोड पर नये मकान में जाने के उपरान्त ही ठीक समझता था।

पच्चीस तारीख को परीक्षा भवन को जाने से पूर्व लक्ष्मी ने मां को कहा ' मां ! परीक्षा के तुरन्त उपरान्त मैं शारदा बहनजी के घर पर जाऊंगी। तुम भी वहां आ जाना। फिर तुम्हारे साथ ही घर आऊंगी।'

किस समय वहां पहुंच जाओगी ?"

आशा है कि बारह बजे से पहले ही पहुंचूंगी। बहनजी ने कहा था कि मुझे उनके घर भोजन करना चाहिए।"

"तो मैं भोजन के उपरान्त पहुचू ?"

"यह आवश्यक नहीं। तुम तो दिन-भर का खाना प्रात काल ले लेती हो। इस कारण तुम भोजन के समय भी वहा आ सकती हो। भोजन करते ही मैं घर लौट आऊगी।"

"और मेरी बात का उत्तर कब दोगी ?"

"मा ! यदि तुम चाहो तो शारदा बहनजी के सामने ही बात हो सकती है।"

"परन्तु वह तो कहेगी कि उसकी भाति तुम भी जीवन-भर कुवारी रहो।"

"नहीं मा ! वह इतनी मूर्ख नही कि अपने जैसे नीरस जीवन की सम्मति मुझे दें, परन्तु तुम आओगी तो तुम्हारी बात पर वहा ही विचार हो जाएगा।"

"परन्तु तुम्हारे पिता भी तो सम्मति देना चाहेंगे।"

"उनको मैं मना लूगी।"

"ओह ! बहुत विश्वास है उनपर ?"

"हा मा ! तुमसे अधिक।"

उस समय कुछ अधिक बात नही हो सकी। लक्ष्मी ने घडी मे समय हो गया देखा तो मा को कह दिया, "अच्छा मा ! अब देर हो रही है।"

विवश सरस्वती साढे ग्यारह बजे ही शारदा के स्कूल जा पहुची। उसके साथ ही वह तागे मे उसकी कोठी पर जाने का विचार रखती थी। उन दिनो स्कूल प्रात सात बजे से बारह बजे तक लगता था।

शारदा ने सरस्वती को अपने कार्यालय में प्रवेश करते देखा तो समझ गई कि वह अपनी लडकी के विवाह पर बात करने आई है।

अत उसने पूछ लिया, "बहनजी ! यहा स्कूल मे ही काम है अथवा घर पर चलेंगी ?"

सरस्वती ने अपने आने के उद्देश्य का वर्णन कर दिया। उसने

कहा, "लक्ष्मी ने कहा है कि परीक्षा के उपरान्त वह आपसे मिलने कोठी पर जाएगी और मैं उससे मिलने के लिए उत्सुक हूं। इस कारण आपके साथ कोठी पर ही जा रही हूं। वहां से उसे लेकर घर चली जाऊंगी।"

"तो ठहरिए। मैं स्कूल के काम से निपटकर ही यहां से जा सकूंगी।"

सरस्वती इस सद्व्यवहार की आशा ही करती थी। वह कुर्सी पर बैठ गई। शारदा सवा बारह बजे वहां से निकल सकी।

वे पौने एक बजे वहां पहुंची। शारदा और सरस्वती को विस्मय हुआ, जब उन्होंने निर्मला की गाड़ी कोठी के बाहर खड़ी देखी। वे गाड़ी और कोचवान को जानती थीं। जब कोचवान ने शारदा को हाथ जोड़ नमस्ते कही तो सरस्वती ने पूछ लिया, "यह बैनर्जी के घर से कौन आया हो सकता है?"

"मेरा निर्मला की मां से परिचय है। सम्भवतः वही आई होंगी।"

दोनों ड्राइंगरूम में पहुंची तो लक्ष्मी के अतिरिक्त निर्मला, उसकी मां भगवती और निर्मला के भाई सतीश को वहां बैठे देख विस्मय करती हुई इनका मुख देखने लगीं।

उनके विस्मय की बात इनके मुख पर अंकित देख लक्ष्मी ने उत्तर दिया, "माताजी! निर्मला की माताजी परीक्षा-भवन के बाहर मेरी प्रतीक्षा कर रही थीं। इनका विचार था कि मुझे अपने घर ले चलेंगी, परन्तु जब मैंने बताया कि मेरी माताजी मुझे घर ले जाने के लिए बड़ी बहनजी की कोठी पर आने वाली हैं तो ये आपको भी साथ ले चलने के लिए इधर ही आ गए हैं। मैं इनकी गाड़ी में ही यहां आई हूं।"

सरस्वती ने कहा, "परन्तु मैं तो लक्ष्मी को घर ले चलने के लिए आई थी। लक्ष्मी अपनी बहनजी का धन्यवाद करने और अपने नये जीवन में प्रवेश के लिए आशीर्वाद पाने यहां आने वाली थी।"

उत्तर भगवती ने ही दिया, "तब तो और भी अच्छा हो गया।

शारदाजी भी अब हमारे साथ ही चलेंगी। आज सब हमारे घर पधारिए। मैं आप सबकी कृतज्ञ हूगी।"

शारदा मुस्कराती हुई सबकी ओर देख रही थी। सतीश लक्ष्मी की ओर मन्त्रमुग्ध की भांति देख रहा था। जब भगवती ने शारदा को भी अपने घर चलने का निमन्त्रण दिया तो उसने कहा, "भगवती बहन! मेरा वहा चलना तो गौण है। जो मुख्य प्राणी है, उनको ले चलो तो मैं भी साथ चल दूगी।"

"परन्तु मुख्य कौन है?" सरस्वती का प्रश्न था, "मैं तो समझती हू कि मुख्य आप ही हैं।"

"नहीं।" सतीश ने बातों मे हस्तक्षेप करते हुए कहा, "मौसीजी! मैं बताता हू कि मुख्य कौन है। कल निर्मला ने बताया था कि उसकी परीक्षा आज ग्यारह बजे के लगभग समाप्त हो जाएगी तो मैंने इसे कहा कि अपनी सहेली को लेकर यहा मध्याह्न का भोजन करने आओ तो बहुत अच्छा रहेगा। निर्मला ने पूछा, 'क्या अच्छा होगा?' तो मैंने कहा, 'मैं तुम्हारी सहेली के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव करने का विचार रखता हू।' वह बोली, 'वह तो माताजी ने उसकी मा के सम्मुख पहले ही रखा हुआ है।'

'मेरा कहना था, 'मैं तुम्हारी सहेली के विचार जानना चाहता हू। यदि वह तैयार हो गई तो मैं उसे अपने विवाह के सम्पन्न होने का उपाय बताऊगा। तब समय पर हमारा विवाह हो जाएगा।' "

अब भगवती ने कह दिया, "बहनजी! बस यही मूल कारण है हमारा परीक्षा-भवन पर जाने का, वहा से यहा आने का और अब यहा से आप सबको घर ले जाकर बात करने का।"

सरस्वती ने अपने मन मे सतीश को अस्वीकार कर रखा था। यह केवल इसलिए कि वह बगाली परिवार का घटक था। वह उनके घर मास-मछली खाया जाता देख चुकी थी। यद्यपि भगवती ने सरस्वती के समीप बैठ केवल दाल, भात और साग-भाजी ही खाई थी, परन्तु

वह परिवार के अन्य प्राणियों को काँटोंसहित मछली चबाते देख चुकी थी। यह वह पसन्द नहीं करती थी। वह अपने नाती-नातियों को मछली की गन्ध से सराबोर देखने में रुचि नहीं रखती थी।

उसने अपने ये विचार लक्ष्मी को अभी बताए नहीं थे। इस विषय पर भी वह लक्ष्मी से अब परीक्षा के उपरान्त ही बात करना चाहती थी। इस कारण उसने कहा, "मैं सतीशजी से कहूंगी कि अभी वह कुछ दिन के लिए अपने प्रस्ताव को उपस्थित न करें। वैसे तो प्रस्ताव लक्ष्मी के पिताजी तक पहुंच चुका है। हमें पहले लक्ष्मी से पूर्ण विषय पर विचार कर लेने दें। पीछे ही हम किसी भी प्रस्ताव पर विचार करेंगे।"

"और सतीशजी!" लक्ष्मी ने कहा, "यदि आप अपना मुकद्दमा लड़ने आए हैं तो विपक्षी को भी तो आने दीजिए। बिना दोनों ओर की बहस सुने बहनजी कैसे 'जजमेण्ट' कर सकेंगी?"

इसपर निर्मला की मां ने पूछा, "तो कोई अन्य प्रत्याशी भी है?"

"हां।" सरस्वती ने कहा, "हमारी अपनी बिरादरी का ही एक लड़का है। वे भी अपने लड़के के लिए बहुत यत्न कर रहे हैं।"

इसपर भगवती ने कहा, "तो बहन सरस्वती! मैं समझती हूं कि पूर्ण बहस सुनने से पहले ही निर्णय नहीं होना चाहिए। हम इतना ही चाहते हैं। मैं समझती हूं कि लक्ष्मी मेरे घर की शोभा बनेगी, क्योंकि हमारा दावा बहुत जबरदस्त है।"

इसपर सब हंस पड़े और शारदा ने कह दिया, "इस अवस्था में मैं समझती हूं कि दो में से एक बात करिए। या तो सब लोग भोजन यहां ही करें, अन्यथा सब लोग विदा हो जाएं और भोजन अपने-अपने घर जाकर करें। अभी विवाह की बात बन्द कर दी जाए।"

लक्ष्मी को इस प्रस्ताव पर सुख अनुभव हुआ। वह उठ पड़ी और बोली, "मां, चलो।"

इस प्रकार गोष्ठी विसर्जित हुई और सब घर से बाहर निकल आए।

८

घर पहुच भोजन और विश्राम कर सरस्वती लक्ष्मी के पढ़ने और सोने के कमरे मे जा उसके पलग पर बैठ लडकी की पीठ पर हाथ फेरती हुई उसे जगाने लगी।

सरस्वती ने कहा, "उठो। बहुत सो चुकी हो। अब साय के साढे चार बज रहे हैं।"

'हा मा! बहुत परिश्रम भी किया है। आज परीक्षा का बोझ मस्तिष्क से उतरा तो सोने का आनन्द आया है।"

'मैं तुमसे अपने प्रश्न का उत्तर लेने आई हू।"

'मेरा उत्तर यह है कि मुझे दो मोली के धागे ला दो और मुझे उशनाकरायजी के घर ले चलो। एक धागा मैं वहा किशोर के हाथ पर बाध आऊगी और दूसरा धागा कल निर्मला के भैया सतीश के हाथ पर बाध दूगी।"

'और तिलक किसको दोगी ?"

'मा! वह एक बार ही दिया जाता है। उसके लिए अब और चन्दन नही है।'

मा विस्मय में मुख देखती रह गई। इस समय तक लक्ष्मी उठकर मा के समीप पलग पर ही बैठ गई थी। बहुत देर तक सरस्वती भूमि की ओर देखती हुई विचार करती रही। एकाएक लक्ष्मी ने कहना प्रारम्भ किया, "मा! सतीश भैया और किशोर भैया दोनों मुझसे मिले हैं—इन्ही परीक्षा के दिनो मे। मैंने दोनो को यह कहा है कि मैं उनको पच्चीस ऐप्रिल के उपरान्त उत्तर दूगी।

' पर मा! मैं यह विचार करती हू कि जिसको तुमने तिलक लग-

बाया था, वह तो मुझे कुरूप मान घर से भाग नगर छोड गया है और इन दोनों भाइयो ने जाने क्या मुझमें देखा है कि दोनों मुझे अपने घर ले जाने का हठ कर रहे हैं।"

"कुछ तो उन्होने देखा ही होगा।" सरस्वती ने तरल नेत्रों से लक्ष्मी के मुख पर देखते हुए कहा, "मैंने भी कुछ देखा है, जिससे जब भी तुमसे बात करती हू तो तुम्हें आज्ञा नही दे सकती, निवेदन ही करती हू।'

"यह तो इसलिए कि मा, तुम जानती हो कि मैं पुन भूखी रह मरने का सकल्प कर सकती हू।"

"नही लक्ष्मी ! यह बात नहीं। एक बार मैंने भी तुम्हें स्वय भूख-हडताल करने की धमकी दी थी, परन्तु मैं समझती हू कि विवाह जिसका होना है, उसकी बात माननी चाहिए।

"एक बात तुमसे कहती हू। युवा लडके और लडकियां कभी विवाह के लिए इतने अधीर हो जाते हैं कि बिना विवाह के भी मुख काला करने चल पडते हैं। यह नहीं होना चाहिए। इससे कल्याण की आशा नही की जा सकती।"

"मुझे बडी बहनजी ने यह बात समझाई है, परन्तु मैं समझती हू कि ऐसा नही होगा।"

"तुम्हारी बहनजी के विषय में लोग कुछ ऐसी ही बात कहते हैं परन्तु मुझे उससे मिलते हुए दो मास से ऊपर हो चुके हैं और मैंने वहा इस प्रकार की बात के लक्षण नहीं देखे। इससे मैं समझ रही हू कि इस अधीरता पर नियन्त्रण पाया जा सकता है। इसलिए मैं भूख हडताल करने का विचार छोड बैठी हू।"

उसी सायकाल मा-बेटी दोनों उदनाकरायजी के घर गए और लक्ष्मी किशोर को उसकी मा के सामने मौली का धागा हाथ पर बाध कह आई, 'भैया ! मैंने अपना उत्तर दे दिया है। आशा करती हू कि तुम भाई का उत्तरदायित्व निभाओगे।"

परन्तु सतीश से बात इतनी सुगम नहीं थी। वह एक विख्यात वकील का पुत्र और स्वयं लॉ कालेज में पढ़ता हुआ बहस करने का स्वभाव रखता था।

माता-पिता तथा निर्मला बैठी थी, जब सरस्वती और लक्ष्मी वहां पहुंची। जब लक्ष्मी मौली का धागा सतीश के हाथ पर बांधने लगी तो उसने हाथ पीछे कर लिया और बोला, "नहीं लक्ष्मीजी! इस प्रकार नहीं।"

"तो कैसे मैं अपने मन का भाव प्रकट करूं?"

"मैं समझता हूं कि मैं इस भाव का स्वरूप बदल दूंगा और तब तुम उसे प्रकट कर सकोगी।"

"तब तो इसके लिए अगले जन्म की प्रतीक्षा करनी होगी।"

"मैं तो जन्म-मरण को मानता नहीं। मैं इसी जन्म को सब कुछ मानता हूं।"

"तो दादा, तुम्हें बहुत निराशा होगी। हम जो जन्म-जन्मान्तर में विश्वास रखते हैं, उनके लिए तो आशा-निराशा भ्रम-मात्र है। इन दोनों भावों के अतिरिक्त एक भाव है, जिससे यह संसार चलता है।"

"परन्तु लक्ष्मी, संसार तो ऐसे चलता दिखाई देता है, जैसा मैं कह रहा हूं।"

"दादा! आपने गलत नम्बर की ऐनक लगाई हुई है, जिससे यथार्थ से सब कुछ विपरीत दिखाई दे रहा है।"

बहस बाप ने बन्द की। उसने लड़के को कहा, "सतीश! कोई बढ़िया फल पाने के लिए उसके लिए दाम भी तो जेब में होना चाहिए।"

"पिताजी, वह तो है।"

"परन्तु मुझे तो तुम खाली जेब दिखाई देते हो। देखो, मैं एक बात लक्ष्मी से पूछता हूं।"

सब बैरिस्टर साहब की ओर देखने लगे। अतुल बैनर्जी ने कहा,

"लक्ष्मी ! सतीश की अर्जी अभी खारिज न की जाए। जब कभी इस दिशा में विचार करने का अवसर आएगा तो इसपर भी विचार हो सकेगा।"

"पिताजी, यही तो कह रही हूं। अगले जन्म में भी तो नये सम्बन्ध बनेंगे। तब क्या सम्बन्ध होगा, यह मैं अभी नहीं बता सकती। यदि दम है तो प्रतीक्षा कर सकते हैं।"

"बहुत विश्वास है जीवात्मा के अनादि होने का और फिर साथ ही जन्म भी मनुष्य-योनि में पाने का ?"

'पिताजी, पहली बात तो मुझे समझ आ चुकी है। उसके अतिरिक्त दूसरी बात संभव ही प्रतीत होती है, परन्तु दूसरी बात के लिए मैं यत्न कर रही हूं। मैं मानवता का पालन करती हुई इस मानव-शरीर में रहने की लालसा उत्पन्न कर रही हूं और फिर शरीररूपी मकान का भाड़ा भी बटोर रही हूं।"

'देखो सतीश।" पिता ने पुत्र को कह दिया, "रक्षाबन्धन में नहीं बंधना तो तिलक लगवाने की योग्यता उत्पन्न करो।"

इसने बात समाप्त कर दी और फिर इधर-उधर की बातें होने लगीं। सतीश उठकर अपने कमरे में चला गया। जब वह चला गया तो बैरिस्टर साहब ने लक्ष्मी को सम्बोधन करते हुए कहा, "निर्मला ने तुम्हारी पूर्वकथा मुझे बताई है और मैं समझता हूं कि यह मृगतृष्णा है। मेरा अभिप्राय यह है कि उसकी आशा झूठी है। वह इस जन्म में तो आएगा नहीं। उसे सौन्दर्य की पहचान नहीं और अगले जन्म में वह मानव-योनि नहीं पा सकेगा। इसीसे कहता हूं कि तुम एक मृगतृष्णा की शिकार हो रही हो।

"परन्तु तुम अपनी अन्तर्दृष्टि से क्या देखती हो, यह न मैं जानता हूं और न जान सकता हूं। मैं परमात्मा से यही कामना करता हूं कि यह तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें सही-सलामत इस दुस्तर संसार-सागर से पार कर सके।"

"परन्तु पिताजी ! मैं एक बात नहीं समझ सकी कि मैं जो अपने मुख की कुरूपता के कारण एक युवक से अस्वीकार की गई थी, वह एकाएक कैसे दो-दो उससे अधिक पढ़े-लिखे युवकों द्वारा सुन्दर और स्वीकार करने योग्य मानी गई हू ? मैं तो इसे मृगतृष्णा समझती हू । वास्तविकता तो मैं नित्य अपना मुख दर्पण मे देख अनुभव करती हू और यह आपके तथा एक आनरेरी मॅजिस्ट्रेट के सुपुत्र द्वारा स्वीकार करने योग्य ही नही, वरच यत्न से प्राप्त करने योग्य कैसे हो गई ? मैं तो इसे ही मृगतृष्णा अनुभव करती हू ।"

अतुल बेनर्जी हस पड़ा । वह फिर एकाएक गम्भीर हो बोला, "मैंने यही प्रश्न सतीश से किया था। उसने कहा है कि बाहर का शरीर तो भ्रम है । मनुष्य-मनुष्य मे व्यवहार शरीर के रूप-रग से निश्चय नही होता । वह मन और बुद्धि से निश्चय होता है ।

"मैं समझता हू कि वह ठीक कहता है । इसपर भी मैं यह जानता हू कि उसने तुम्हारे मन और बुद्धि का अनुमान ठीक ही लगाया है । इस पृष्ठभूमि पर मैंने और निर्मला की मा ने सतीश को तुम्हे 'वू' करने का समर्थन किया है ।

"परन्तु अब देखता हू कि तुमने उसके प्रस्ताव को अस्वीकार किया है और उसके अनुमान से तुम एक श्रेष्ठ मन और बुद्धि रखने वाली हो । तभी मैं पूछ रहा था कि तुम्हारी अन्तर्दृष्टि क्या देखती है ? "

"मैं आपके प्रश्न का उत्तर नहीं जानती और न ही दे सकती हू । केवल आत्मा जो आदेश देता है, वही तो कह रही हू । मैं विवाह की इच्छा नहीं करती।"

लक्ष्मी की परीक्षा के उपरान्त उसका तथा उसकी मा का शारदा के घर जाना बहुत कम हो गया था। मई मास में मा-बेटी केवल दो बार शारदा के घर गई थीं। हा, शारदा अब कभी-कभी सरस्वती के घर आने लगी थी ।

मई का अन्तिम रविवार था। केशवदास तो दुकान पर गया हुआ था। सरस्वती और उसके सब बच्चे सामान बांधकर मैक्लोड रोड पर नई कोठी में जाने के लिए तैयार बैठे थे। वे प्रातः का अल्पाहार ले चुके थे और मकान के बाहर सामान ले जाने के लिए बैलगाड़ी के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। सामान उठा उठाकर बैलगाड़ी तक ले जाने के लिए दो कुली लालाजी ने पहले ही भेजे हुए थे।

शारदा ने देखा तो समझ गई। उसने पूछा "तो बहनजी आज नये मकान में जा रही हैं?"

"हां। वह अब तैयार हो गया है। रंग-रोगन सफाई और फरनी-चर सब वहां पर लग गया है।"

"और इस मकान का क्या करोगी?"

"अभी तो कुछ निश्चय नहीं कर सके। लक्ष्मी के पिता इसे बेच देने की बात कर रहे थे।"

"इसे भाड़े पर चढ़ा दो।"

"कौन लेगा इसे भाड़े पर?"

"मैं लूंगी। बताइए, क्या भाड़ा लेंगी?"

"परन्तु आप इस जगह पर रहेंगी?"

"क्या हानि है?"

"शारदा बहन! मैं हानि की बात नहीं कर रही। मैं पूछ रही हूं कि उस मकान को छोड़कर इस गली में और फिर इस अंधेरे मकान में कैसे रह सकेंगी?"

"उस मकान को छोड़ने का नोटिस आ गया है।"

"अरे! यह क्यों?"

"वह मकान उत्तमाकररायजी ने मोल ले लिया है। पहले उन्होंने मेरी शिकायत स्कूल कमेटी के पास की थी, परन्तु स्कूल कमेटी ने तो यह स्वीकार नहीं की और लालाजी की इच्छानुसार मुझे स्कूल की नौकरी छोड़नी नहीं पड़ी। अब वास मण्डी वाला मेरा मकान लालाजी

ने ले लिया है। पन्द्रह मई को रजिस्टरी हुई है और सोलह तारीख को मुझे नोटिस आ गया है कि एक महीने के भीतर मकान खाली कर दूं। अब एक सप्ताह से मकान ढूंढ रही हूं।

"आज लालाजी का लड़का किशोर आया और बहुत बुरी भली बातें कह गया। मैं आपके पास आई थी कि कहीं अपने पड़ोस में मकान ले दें और यहां यह मकान खाली होता देख इसे ही भाड़े पर लेने का विचार आ गया है।"

शारदा की बात लक्ष्मी सुन रही थी और वह किशोर के भला-बुरा कहने का कारण समझती थी। वह एक दिन बाजार में उसे मिला था और कह रहा था कि वह उसे और उसकी मास्टराइन को सीधा कर देगा। वह एक भी शब्द कहे बिना उसके सामने से चली आई थी। अब शारदा की बात सुन वह समझ गई कि वह कैसे सीधा करना चाहता है। उसने शारदाजी से कहा, 'बहनजी! आप हमारे साथ मैक्लोड रोड वाली कोठी में ही चलकर रहिए। क्यों मां! वहां जगह तो है?"

"हां, जगह तो है। उसमें ग्यारह कमरे हैं। उनमें से तीन-चार आपको दिए जा सकते हैं, परन्तु लक्ष्मी के पिताजी से पूछना पड़ेगा।"

"पूछ लीजिए। दोनों में से एक स्थान मुझे दे दीजिए तो यह पाप कट जाएगा।"

बैलगाड़ी आई तो कुली सामान उठा-उठाकर गली के बाहर बैल-गाड़ी में रखने लगे।

सरस्वती ने कहा, 'हमने अपनी एक विक्टोरिया गाड़ी भी ले ली है। वह भी बाजार में आ गई होगी। सामान लद जाए तो हम सब उस गाड़ी में कोठी पर जा रहे हैं। अभी आप चलिए। शेष बात रात लालाजी से सम्मति कर बता सकूंगी।"

शारदा वहां सामान लदता देखती रही। लक्ष्मी ने गठरियां बांध दिनों की हई दी। सब नोट गठरियां और सन्दूक इत्यादि थे। जब

सब लद गए तो गाडी वाले को पता बताकर वे मकान को ताला लगा—बाहर निकल आए। गली के बाहर घोड़ागाड़ी खड़ी थी। उसमें सब आकर बैठ गए।

९

जिस दिन सरस्वती इत्यादि मकान छोड़ कोठी में गए थे उसके तीसरे दिन शारदा अपने दोनों सेवकों के साथ उनकी कोठी के एक कोने में आकर रहने लगी थी। उसे तीन कमरे मिल गए थे। शारदा के नौकर रामू और नौकरानी सोनी को कोठी के पिछवाड़े में एक कोठरी मिल गई। अभी रसोई एक ही थी और उसमें सबके लिए खाना बनता था। शारदा इत्यादि के लिए भी यही प्रबन्ध था।

उनको कोठी में आए अभी चार-पांच दिन ही हुए थे कि शारदा रात के समय जब केशवदास घर पर आ रात के भोजन की प्रतीक्षा कर रहा था अपने कमरे से निकल आई और कोठी के गोल कमरे में आ लालाजी के सामने बैठ गई और बोली, 'अब तक आपने देख लिया है कि मैंने कितना बोझ आपपर डाला है। बताइए, कितना भाड़ा दे दूं जिससे मैं आपपर बोझ न रहूं ?"

'देखिए बहनजी ! मैं तो आपको बहन समझ यहां लाया था और बहन से मकान का भाड़ा और रोटी का खर्चा कैसे ले सकता हूं ? सरस्वती क्या समझकर आपको यहां लाई है, यह उससे पूछ लीजिए। वह हमारे घर की मलिका है। उसके कथन का हम ऐसे ही विरोध नहीं कर सकते जैसे प्रजा अपनी रानी की बात का विरोध नहीं कर सकती।'

तो बहनजी को बुला लीजिए। मैं इतने दिन चुप रही थी। इस कारण कि आप देख लें, आपको मेरे यहां रहने से कितना कष्ट होता है।"

केशवदास ने लक्ष्मी को आवाज दे दी। लक्ष्मी आई तो पिता ने कह दिया, "मा को बुलाओ।"

लक्ष्मी गई और मां को ले आई। भोजन-व्यवस्था तो रामू और सोनी करते थे। उनको खाना बनाने का काम कुछ अधिक करना पड़ रहा था, परन्तु वे अब बाग, फुलवारी और कोठी की सफाई नहीं करते थे। उसके लिए लालाजी ने एक माली और एक सेविका रख लिए थे।

लक्ष्मी मा के साथ आई तो केशवदास ने कह दिया, "यह बहनजी कुछ कह रही हैं। तनिक पूछो कि यह क्या कह रही हैं ?"

सरस्वती ने कहा, "बहनजी ने मुझे भी बताया है। मैंने इनको कहा है कि यह कोठी लालाजी ने मोल ली है और उनकी स्वीकृति से ही आप यहां आई हैं। इस कारण इन्हें आपसे ही पता करना चाहिए।"

"तब ठीक है। मैंने बहनजी से कहा है कि मैंने इनको बहन मान यहां पर रखा है। बहन से मकान का भाड़ा और खाने-पीने का खर्चा नहीं ले सकता।"

"यह तो मैंने भी बहनजी को कहा है। खाने-पीने में इनको कुछ यदि अभाव अनुभव होता है तो यह हमको जो कुछ देना चाहती हैं, उसको अपने लिए प्रयोग कर लें।

"भाड़ा इत्यादि यहां नहीं लिया जाएगा। हमने यह होटल नहीं खोला हुआ। बहनजी ! यह घर है और आपको घर का प्राणी समझ रखा हुआ है।"

इसपर लक्ष्मी ने कहा, "मैं बहनजी को समझा दूंगी।"

इसपर तो केशवदास, सरस्वती और शारदा हंसने लगे। लक्ष्मी गम्भीर मुद्रा में बैठी रही। उसे अपनी बात पर घरवालों को हंसते देखने का अभ्यास हो चुका था। इसपर भी वह समझती थी कि उसकी बात में दोष नहीं होता। बड़े इस कारण हंसते हैं कि वह बात अपनी आयु से बड़ी करती है।

केशवदास ने हसते हुए कहा, "आपकी चेली आपको कुछ सीख देने वाली है।"

"हां, बताओ लक्ष्मी! क्या समझाना चाहती हो?" शारदा ने पूछ लिया।

"बहनजी! कोई विशेष बात नहीं। मैं तो यह कह रही हू कि हम स्त्रियां जब निस्सहाय होती हैं तो किसीको भाई, किसीको पिता इत्यादि कहकर निर्वाह कर लेती हैं। इससे आपको पिताजी को भाई कहने में लज्जा नहीं लगनी चाहिए और भाई साहब तो बहन से खर्चा ले नहीं सकते।"

"परन्तु भाई साहब व्यापारी जीव है। इस कारण यह तो एक-एक पैसे का हिसाब-किताब लगाते होंगे। हम स्त्रियों की बात दूसरी है।

"साथ ही मैं कुछ तो भाड़ा और घर का खर्चा पहले करती ही थी। वह अब भी कर सकती हू।"

अब केशवदास ने हसते हुए कहा, "बहनजी ने बात ठीक कही है। मेरी व्यापारिक बुद्धि को भी सन्तुष्ट करना चाहिए। यह इस प्रकार हो सकेगा कि बहनजी स्वयं अनुमान लगाए कि वह इस मकान मे रहने पर तथा भोजन इत्यादि पर कितना बचाती हैं. और फिर उतना ही स्वत मुझे दे दिया करें। वह मैं क्या करूगा, यह अभी नहीं बता सकता; परन्तु यह निश्चय है कि बहनजी से लेकर मैं न तो उसे अपने पेट मे डालूगा और न ही अपनी तिजोरी मे रखूगा।"

"ठीक है। मैंने हिसाब लगाया है। मैं चालीस रुपये महीना रामू और सोनी को देती हू। यह आप दे दिया करें। मैं चालीस रुपया मकान का भाड़ा देती थी और एक सौ रुपये के लगभग खाने-पीने पर व्यय करती थी। वह मैं बहन सरस्वतीजी को दे दिया करूगी। तब मैं शान्तचित्त से यहां रह सकूगी।"

"ठीक है। ऐसा कर दिया करें।"

"तो बहनजी !" शारदा ने सरस्वती से पूछ लिया, "आप पेशगी लिया करेंगी अथवा महीने के उपरान्त ?"

"महीने के उपरान्त ।" सरस्वती ने मुस्कराते हुए कहा ।

लक्ष्मी को यह प्रबन्ध रुचिकर नहीं लगा, परन्तु वह अपने माता-पिता का विचार नही जानती थी । उसके पिता ने कहा था कि वह इस रुपये से क्या करेगा, अभी बता नही सकता । लक्ष्मी ने समझा कि इसमे वह अपने पिता को सम्मति देगी।

जून की दस तारीख को लक्ष्मी की परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ । वह पजाब प्रान्त मे सबसे अधिक अक लेकर उत्तीर्ण हुई थी। परिणाम शारदा बहनजी स्कूल से सुनकर आई थी। उसने मध्याह्न स्कूल से आते ही सरस्वती के कमरे मे जाकर कहा, "लो, लक्ष्मी पास हो गई है और वह प्रान्त मे सबसे अधिक अक लेकर पास हुई है।"

"तब तो आज दावत होनी चाहिए ।"

"हा । आइसक्रीम बननी चाहिए ।"

आइसक्रीम बनाने की मशीन शारदा के पास थी । उसने रामू को कह दिया, "आज आइसक्रीम बनेगी ।"

सरस्वती ने माली के द्वारा दुकान पर लालाजी को समाचार भेज दिया । उसके उत्तर मे लालाजी ने यह सन्देश भेज दिया, "मुझे इसकी सूचना यहा मिल गई है । लाला उशनाकराय का लडका किशोर आया था और बता गया है कि लक्ष्मी वजीफा पाएगी ।"

साथ ही लालाजी ने कहला भेजा कि शारदाजी को कहना चाहिए कि रात घर पर अथवा जहा भी वह चाहें, बहुत अच्छी दावत का प्रबन्ध कर दें । केशवदास लक्ष्मी की मास्टराइन को पुरस्कृत करने का विचार रखता था ।

यह सूचना माली दुकान से तीन बजे के लगभग लेकर आया । शारदा ने पूछा, "बहनजी ! बताइए, इस दावत का प्रबन्ध कैसा चाहती हैं ?"

'मेरी इच्छा तो लक्ष्मी के पिता ने पूछी नहीं। उनका कहना तो यह है कि शारदाजी को कहना जैसा उचित प्रबन्ध वह समझें, करें।"

"मैं तो यह चाहूंगी कि 'फ्लैटीज' में सात प्राणियो के रात के खाने का प्रबन्ध कर दूं।"

"यह तुम जानो और लालाजी जानें। मुझे इसमें कुछ भी कहने का अधिकार नहीं। बहन-भाई के प्रबन्ध में भावज का हस्तक्षेप उचित नहीं हो सकता।"

'तो मैं अभी जाती हूं और प्रबन्ध कर आती हूं।"

घर की घोडागाडी प्रात लालाजी को दुकान पर छोडकर वापस आ जाया करती थी। शारदा ने गाडी निकलवाई और माल पर 'फ्लैटीज' म प्रबन्ध कर आई।

शारदा वहा से लौटी तो उसने बताया, "मैंने सात प्राणियो का साग-भाजी का प्रबन्ध किया है। हमें एक कोने में पृथक् मेज मिल जाएगी और दस कोर्स का आर्डर दे आई हू।"

'और कितना व्यय आएगा?"

'वह मैं दूंगी। कुछ पेशगी जमा करा आई हू और कुछ पीछे बिल आने पर दिया जाएगा। ठीक रात के नौ बजे हम वहा पहुचेंगे। ग्यारह बजे से पूर्व हम वहां से लौट आएगे।"

लक्ष्मी सरस्वती इत्यादि को किसी बढिया होटल मे खाना लेने का यह पहला अनुभव था। इस कारण तो और बच्चे भी उत्सुकता स रात के भोजन की प्रतीक्षा करते रहे।

लालाजी आठ बजे दुकान से लौट आए थे और सब लोग अपने-अपने बढिया वस्त्र पहन नौ बजे होटल में जा पहुचे। सबसे पहली बात जो उनको दिखाई दी वह यह कि होटल के कमरे मे एक सौ से अधिक लोग मेजों पर बैठे थे और सब बातें कर रहे थे, इसपर भी किसी प्रकार का शोर नहीं था। दूसरी बात यह थी कि बयरा, जो सबके लिए खाना परोस रहे थे, दूध-समान श्वेत वस्त्र पहने हुए थे। सब साफ-सुथरे थे।

पूर्ण हॉल में कालीन बिछा था और जो स्थान उनके लिए 'रिज़र्व' था, वह सर्वथा साफ था और उसपर बढ़िया चीनी की प्लेटें, कांच के गिलास और मेज पर बीचोबीच एक फूलदान में गुलाब के फूलों का गुलदस्ता लगा था। गुलाब बेमौसम के फूल थे।

सरस्वती तो अपनी जरीदार साड़ी पहने हुए थी और लक्ष्मी रेशमी सलवार, कुर्ता और चुनरी ओढ़े हुए थी। लालाजी ने मलमल का कुर्ता और धोती तथा पगड़ी बांधी हुई थी।

ये सब लोग हॉल में सब बैठे हुओं के लिए नवीन दृश्य था। प्राय. सब बैठे हुए लोगों ने इनको आते हुए देखा, परन्तु किसीने विस्मय प्रकट नहीं किया। खाना खाने वालों में प्राय सबके सब गौरवर्णीय यूरोपियन ही थे। जो हिन्दुस्तानी थे, वे भी यूरोपियन ढंग के पहराये में थे। हिन्दुस्तानी स्त्री तो कोई भी नहीं थी। इस कारण इस हिंदुस्तानी परिवार के आने पर सब विस्मय कर रहे थे। इस होटल में कभी कोई राजा-रईस हिंदुस्तानी आता था, परन्तु उसका पहरावा इनसे भिन्न होता था।

इस कारण हॉल में बैठे सबने इनकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा। इसपर भी किसीने प्रसन्नता अथवा रोष प्रकट नहीं किया।

शारदा सबको लेकर उस मेज पर गई, जो इनके लिए हॉल के एक कोने में लगाई गई थी। बेयरा इनको हॉल के बीच में से ले जाता हुआ मेज पर ले गया। मेज पर एक कार्ड लगा था, जिसपर लिखा था 'रिज़र्व'। वह इनके बैठने पर बेयरा ने उठा लिया।

इनके बैठते ही पहले 'पाइन एप्पल' स्क्वैश आ गया। शारदा सबको बता रही थी, "यह पीने से आपकी भूख चमक उठेगी और फिर खाने का स्वाद बढ़ जाएगा।"

तदनन्तर वे सब्जियां, जो मौसम की नहीं थीं, आईं। जून का महीना था और मूली, गाजर, गोभी, आलू, टमाटर इत्यादि के शाक तथा नान साथ खाने के लिए। बीच में जीरे का पानी। अन्त में आइस-

क्रीम और पीछे जो लेना चाहे, उनके लिए कॉफी।

जब बच्चे और शारदा कॉफी ले रहे थे तो बेयरा बिल ले आया। बेयरा ने तो बिल शारदा के सामने तश्तरी में रखा था, परन्तु केशवदास ने बिल उठा लिया और पढ़ा। साठ रुपये का बिल था, जिसमें से बीस रुपये पेशगी दिए हुए लिखा था। केशवदास ने शेष चालीस रुपये के नोट जेब से निकालकर तश्तरी में रखे तो शारदा ने अपनी जेब से पाच रुपये टिप के निकालकर दिए। केशवदास ने प्रश्नभरी दृष्टि में शारदा की ओर देखा तो शारदा ने कह दिया, "इसे टिप कहते हैं। अपनी भाषा में बख्शीश कहना चाहिए। यह खाना खिलाने वालों के लिए है।"

केशवदास चुप रहा।

घर लौटते समय खाने पर टीका-टिप्पणी होने लगी तो सुन्दरदास ने कहा, "सब्जी-भाजी में न तो नमक था और न मिर्च।"

"परन्तु वे तो स्वयं अपनी इच्छानुसार डालने थे।"

"तो वहां रखे थे ?"

"हां।" लक्ष्मी ने कहा, "सब डाल तो रहे थे, परन्तु तुम तो देखते ही खाने लगे थे।"

"खाने के पीछे यदि आइसक्रीम और कॉफी न पीता तो यह बिना नमक-मिर्च वाली साग-भाजी पेट में उछल-कूद मचाते रहते।"

सब हंसने लगे। सुन्दर से छोटी मोहिनी थी। उसने कहा, "मैं तो देख रही थी कि सुन्दर भैया बिना नमक-मिर्च के ही खाने लगे हैं; परन्तु बहनजी ने कहा था कि वहां हंसना नहीं, इस कारण मैं चुप थी।"

शारदा ने बताया, "मैंने खास कहकर नमक, काली मिर्च के अतिरिक्त लाल मिर्च भी रखवाई थी और साथ ही अचार, चटनी इत्यादि विशेष बनवाई थी।"

"तो यह सामान्य खाना नहीं था ?" केशवदास ने पूछ लिया।

"नहीं भाई साहब ! वहां प्राय आने वाले यूरोपियन होते हैं और वे मटन, चिकन, ऐग्ज की बनी वस्तुएं खाते हैं।"

'और सुना है कि यहां गाय और सूअर का मास भी खाया जाता है ?"

"हां। जो खाने वाले मांगते हैं तो मिलता है। जो कुछ हमने खाया है, वह मैंने विशेष आर्डर देकर बनवाया था।"

सुन्दरदास ने कह दिया, "मुझे बिलकुल स्वाद नहीं आया।"

'हां। बैल के लिए खोया मलाई ही था।" लक्ष्मी ने कह दिया।

तो तुमको बहुत पसन्द आया है ?" सुन्दर ने पूछ लिया।

उसका उत्तर सरस्वती ने दिया, "उसके परीक्षा पास करने की दावत थी और उसकी बहनजी न प्रबन्ध किया था, तो भला उसे ही पसन्द क्यों नहीं आता ?"

'तो यह बात है !" सुन्दर ने कहा।

तदनन्तर कोई बात नहीं हो सकी और सब अपने-अपने कमरों में चले गए।

१०

बह रहे जमाने के साथ बह जाने का यह केशवदास और उसके परिवार का आह्वान था। सरस्वती देख रही थी कि सबसे अधिक लक्ष्मी की छोटी बहन मोहिनी ने यह नवीन चलन पसन्द किया था। एक दिन उसने मां से पूछा, "मां ! अब फिर उस होटल में खाने कब चलेंगे ?"

"जब तुम दसवीं श्रेणी की परीक्षा पास करोगी।"

"वह तो अभी चार वर्ष में होगा।"

"और तुम्हें वहां जल्दी जाने की इच्छा हो रही है ?"

"बहुत शान थी वहां।"

"तो बहन शारदाजी से पूछो कि वह कब तुम्हें वहां आने के लिए ले चलेंगी।"

परन्तु इस पूछने से पहले एक घटना और घटी। स्कूल में गर्मी की ऋतु की छुट्टियां थीं। एक दिन स्कूल कमेटी का मैनेजर शारदा से मिलने मैक्लोड रोड वाली कोठी पर आया और बहुत-सी बातें शारदा से पूछकर नोट कर ले गया।

राधाकृष्ण खन्ना से उसने पूछा भी था, "वकील साहब ! यह आज पहली बार जांच हो रही है। क्या मैं पूछ सकती हूं कि इनका क्या अर्थ है?"

"शारदाजी ! हमारे स्कूल के संरक्षक डिप्टी कमिश्नर साहब हैं। उनका आदेश आया था कि मैं आपके चरित्र के विषय में जांच करूं।"

"मैं आपके स्कूल में पिछले पांच वर्ष से काम कर रही हूं। आज इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी है?"

"यह मैं नहीं जानता। स्कूल को सरकार बीस हज़ार रुपया प्रति वर्ष सहायता के रूप में देती है। इसी कारण जो भी ज़िले का हाकिम होता है, वह स्कूल का संरक्षक माना जाता है। संरक्षक का अर्थ ही यह है कि वह स्कूल के भले-बुरे की देखरेख करे।"

शारदा चुप रही, परन्तु उसके मन में यह भय उत्पन्न हो गया कि कोई उसके विरुद्ध भाग-दौड़ कर रहा है। उसे उशनाकराय पर सन्देह था। उससे मकान खाली करवाने के विषय में उसका नोटिस था कि उसने मकान गिरवाकर नया बनवाना है। परन्तु वह न तो गिराया गया था और न ही नया बन रहा प्रतीत हुआ था। बांस मण्डी वाले मकान में अब एक नया किरायेदार आ गया था। उसमें एक छापा-खाना खुल गया था।

अब भी उसे सन्देह था कि उशनाकराय ही इस जांच में कारण हो सकता है। वह अभी विचार ही कर रही थी कि वर्तमान जांच का क्या कारण हो सकता है कि उसे मैनेजिंग कमेटी के प्रेज़ीडेण्ट राधाकृष्ण

खन्ना का नोटिस आ गया कि शारदा एम० ए०, बी० टी० की सेवाएं क्वीन विक्टोरिया गर्ल्स स्कूल मे अब नही चाहिए। उसका विधिवत् हिसाब-किताब स्कूल खुलने पर कर दिया जाएगा।

शारदा डिप्टी कमिश्नर मिस्टर जैकिन की कोठी पर जा पहुची। उसने अपना कार्ड भीतर भेजा तो उसे बुला लिया गया। शारदा ने अपना परिचय दिया और बताया कि उसे स्कूल के मैनेजर का नोटिस मिला है कि उसकी सेवाए अब स्कूल को नही चाहिए।

"मुझे ज्ञात है।" जैकिन ने कहा, "यह हमारे यहा कानून नही कि हमे 'इन्फार्मर' (सूचना देने वाले) का नाम बताया जाए, परन्तु मैं इतना बता सकता हू कि तुम्हारे चरित्र के विषय मे कई स्रोतों से शिकायत आई है। तुम्हारा पढाई का काम कमेटी के सदस्यों को बहुत अच्छा लग रहा था, परन्तु वे लोग अपनी लडकियो के चरित्र के विषय में बहुत सशय बुद्धि हैं। इस कारण सबने विवश हो यह निश्चय किया है कि तुम्हें सेवा से मुक्त कर दिया जाए।"

"मैं चाहती थी कि कम से कम मुझे मेरे पढाई के काम के सम्बन्ध मे सर्टिफिकेट दे दिया जाए।"

"वह मैं स्कूल के सरक्षक के नाम से दे सकता हू। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हारी कहीं अच्छा काम पाने मे सहायता भी कर सकता हू।"

"मैं आपकी बहुत आभारी रहूगी।"

"परन्तु यह बताओ कि तुमने किसी लाला केशवदास की लडकी को ईसाई बनाया है?"

"मैं तो स्वयं ईसाई धर्म मे कुछ अधिक विश्वास नही रखती। यद्यपि मैं हिन्दू-मुसलमान इत्यादि कुछ भी नहीं हू, परन्तु मैं ईसाई भी नहीं हूं।"

"यह सूचना है कि तुमने किसी लाला केशवदास की लडकी को गिरजाघर में ले जाकर बपतिस्मा दिलाया है।"

"यह बात मिथ्या है।"

"खैर, छोड़ो। तुम कल सायं चाय के समय मुझे मिलना। मैं तुम्हें अच्छे काम का और 'कैरेक्टर सर्टिफिकेट' दूंगा और एक सिफारिशी पत्र भी दूंगा और आशा करता हूं कि तुम वर्तमान से अच्छे स्कूल में काम पा जाओगी।"

शारदा ने धन्यवाद किया और चली आई। उसे लाला केशवदास की लड़की के ईसाई होने की बात सुन समझ आने में देर नहीं लगी कि इस काम छूटने में भी उशनाकराय का हाथ है। वह समझती थी कि राधाकृष्ण खन्ना तो उशनाकराय की बिरादरी का व्यक्ति है। वह क्यों इसमें सहायक हो गया है।

इसपर भी मिस्टर जैकिन के आश्वासन पर वह निश्चिन्त हो मैक्नोड रोड पर कोठी में लौट आई।

कोठी पर वह सरस्वती को अपनी नौकरी छूट जाने की बात बता यह कहकर गई थी कि वह डिप्टी कमिश्नर से मिलने जा रही है। इस कारण उसकी वहां से वापसी की उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही थी।

डिप्टी कमिश्नर के बंगले से लौटने पर लक्ष्मी और सरस्वती उसके पास आ पूछने लगीं, "क्या पता चला है?"

शारदा ने मुस्कराते हुए कहा,"दुर्जन तो सदा हानि ही पहुंचाने का यत्न करते हैं, परन्तु जब भाग्य साथ दे तो कौन कुछ बिगाड़ सकता है?"

'बहनजी! ऐसा समझ आया है कि यह सब भी उशनाकराय की करनी का परिणाम ही है, परन्तु मुझे आशा हो रही है कि मुझे इस स्कूल से भी किसी अच्छे स्कूल में काम मिलेगा।"

'कहां?" लक्ष्मी के मुख से एकाएक निकल गया।

'कल बताऊंगी। आज तो केवल आशा ही मिली है।"

इसपर शारदा ने सरस्वती को जैकिन डिप्टी कमिश्नर से हुई बात बता दी।

"बहुत दुष्ट है यह मैजिस्ट्रेट का बच्चा।" सरस्वती ने कह दिया।

"परन्तु भाभी, मुझे इससे क्या अन्तर पड़ता है।" लक्ष्मी ने कहा।

"तो तुम जीवन-भर कुवारी बैठी रहोगी?"

"तो ईसाई होने से विवाह का सम्बन्ध भी है?"

"बहुत घना है। यदि तुम ईसाई मान ली गईं तो फिर किसी हिंदू के घर में तुम्हारा विवाह नहीं हो सकता।"

"तो न हो। मैं तो कहती हूं कि किसी मुसलमान, पारसी के घर में भी न हो तो क्या हानि है। मैंने तो विवाह करना ही नहीं।

"मां! परमात्मा ने कुरूप तो पहले ही कर रखा है। विवाह नहीं होगा तो कोई छीना-झपटी भी नहीं करेगा। कुरूप के लिए कौन झगड़ा मोल लेगा?"

"परन्तु दो तो झगड़ा कर ही रहे हैं।" सरस्वती ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "यह किशोर का बच्चा इसीलिए तो सब झगड़ा कर रहा है और निर्मला के भाई ने तो तुम्हारी राखी बंधवाने से भी इनकार कर दिया था।"

"मुझे सतीश भैया का व्यवहार अधिक पसन्द है।"

"आज साढ़े दस बजे के लगभग निर्मला आई थी और तुम उस समय बाजार गई हुई थीं।"

"क्या कहती थी?"

"कहती थी कि कल ठीक दस बजे आएगी। तुम्हें घर पर ही रहना चाहिए।"

लक्ष्मी ने कह दिया "उसका भाई विलायत बैरिस्टरी पढ़ने जा रहा है। कदाचित् उसीके सम्बन्ध में आई होगी।"

"तो कल उस समय तुम बाजार मत जाना।"

इन दिनों लक्ष्मी सोनी को साथ लेकर पुरानी अनारकली में मार्केट से सब्जी तथा फल लेने जाया करती थी।

अगले दिन निर्मला बैनर्जी ठीक दस बजे अपने भाई के साथ आई

और लक्ष्मी कि भेंट सरस्वती के सामने ड्राइंगरूम मे हुई।

सतीशचन्द्र बैनर्जी ने सरस्वती को सम्बोधन करते हुए कहा, "माताजी ! मैं तो चाहता था कि लक्ष्मीजी मेरे प्रस्ताव को स्वीकार कर लेतीं तो मैं आज इन्हे साथ लेकर विलायत जाता और इन्हे एक वर्ष तक अपने पास रखता, पीछे बैरिस्टर बन मैं इन्हे अमेरिका और जापान की सैर कराता हुआ साथ लेकर हिन्दुस्तान लौटता, परन्तु इन्होने मेरे प्रस्ताव को ठुकरा दिया है। इसपर भी मैंने इनके प्रस्ताव को स्वीकार नही किया। मेरा अभिप्राय है कि मेरा प्रस्ताव अभी भी वही है और मैं अब आशा कर रहा हू कि मैं डेढ वर्ष के उपरान्त जब लौटूगा तो अपना प्रस्ताव पुन उपस्थित करूगा। तब यह मेरे भाव को समझ जाएगी और मैं अपना घर बसा सकूगा।"

लक्ष्मी भूमि की ओर देखती हुई मौन बैठी रही। उत्तर सरस्वती ने ही दिया। उसने कहा, "इसे पढाने वाली बहनजी ने इसके मस्तिष्क मे यह बात भर दी हुई है कि स्त्री विवाह के बिना अति सुखी रहती है। इस कारण यह सुख का जीवन चलाने के लिए ऐसा कर रही है। मैं इसमे कुछ हानि नहीं बता सकती।"

"माताजी ! मैं चाहता हू कि जब भी यह विचार बदलें, तब इन्हे आप मेरे प्रस्ताव का स्मरण करा देंगे जिससे यह मेरे विषय मे अपने विचार अनुकूल कर सकें।"

"लक्ष्मी !" सरस्वती ने कहा, 'सुन रही हो न ? मुझे सतीशजी और सुन्दरदास मे कुछ भी अन्तर प्रतीत नही होता।"

लक्ष्मी मौन बैठी रही। निर्मला न बात बदल दी। उसने कहा, "मैं और माताजी भैया को बम्बई तक छोडने जा रही है। वहा से हम बगलौर जाने का विचार रखते हैं। वहा मेरी मौसी रहती है। इसपर भी सितम्बर की पहली तारीख को हम लौट आएगी और मैं सेण्ट मेरी कालेज फार वुमेन्ज मे प्रवेश पाने का यत्न करूगी।"

लक्ष्मी अभी भी मौन थी। इसपर सतीशचन्द्र ने उसे बातों म

खींचने के लिए पूछ लिया, "लक्ष्मीजी, अब आगे पढ़ेंगी अथवा नहीं ?"

"मैं सेण्ट मेरी कालेज में दाखिल नहीं हूंगी।" आखिर लक्ष्मी ने मुख खोला। उसने आगे कहा, 'यहां और कोई लड़कियों का कालेज है नहीं।"

सतीश ने कहा, 'मुझे पता चला है कि फोरमैन क्रिश्चियन कालेज में लड़कियों के भी प्रवेश का प्रबन्ध हो रहा है। कालेज खुलते ही आप पता करें। यदि प्रबन्ध हो सके तो ठीक, नहीं तो आप पिताजी से मिल लें। कलकत्ता में लड़कियों की शिक्षा का प्रबन्ध है। आप वहां जा सकती हैं।"

'वहां रहने का क्या प्रबन्ध होगा ?" लक्ष्मी का सतर्क प्रश्न था।

"वहां लड़कियों के लिए पृथक् होस्टल है। यदि आप पिताजी से कहेंगी तो वह प्रबन्ध कर देंगे। आप इतने अच्छे अंक लेकर पास हुई हैं। आपको तो कोई भी कालेज प्रवेश दे गौरवान्वित अनुभव करेगा।"

इस प्रकार लक्ष्मी के मन में एक छुपी अभिलाषा जाग पड़ी। सैण्ट मेरी कालेज में भरती होने के विरुद्ध शारदा थी और उन दिनों लाहौर में अन्य कोई प्रबन्ध नहीं था।

उसी दिन सायंकाल शारदा मिस्टर जैंकिन, डिप्टी कमिश्नर से मिलकर आई तो उसने बताया, "बहनजी ! मुझे डिप्टी कमिश्नर ने बहुत अच्छा सर्टिफिकेट दिया है और साथ शिमला में एक लड़कियों के स्कूल में नौकरी पाने के लिए सिफारिशी पत्र भी दिया है।"

तो बहनजी शिमला जाएंगी ?"

"हां। यदि नौकरी मिल गई तो वहां जाना ही होगा।"

'कब तक पता चलेगा ?'

'मैं कल अपने सर्टिफिकेट और पत्र की प्रतिलिपियां तैयार

करवा शिमला भेज रही हू। तदनन्तर वहा से उत्तर की प्रतीक्षा करूगी।"

सरस्वती को शारदा का शिमला जाना एक विचार से ठीक ही प्रतीत हुआ। इसमे कारण था कि वह आशा करती थी कि यदि शारदा लक्ष्मी से दूर हो जाएगी तो उसको विवाह के लिए राजी करना सुगम हो जाएगा।

परन्तु लक्ष्मी मन ही मन कलकत्ता जाने की योजना बनाने लगी थी। उसके मार्ग म कठिनाई यह थी कि निर्मला के लाहौर से चले जाने पर वह निर्मला के पिताजी से मिलने कैसे जाएगी ?

उक्त घटना के सप्ताह के भीतर ही शारदा को शिमला में भेंट करने के लिए बुला लिया गया।

शारदा गई तो फिर वहा ही रह गई। वह लौटकर नहीं आई। उसने रामू और सोनी को अपने पास बुला लिया। उसने सरस्वती को लिखा था कि उसे शिमला मे एक सीनियर कैम्ब्रिज स्कूल की मुख्याध्यापिका का पद मिल गया है। रहने का स्थान भी वहा स्कूल के साथ ही है। इस कारण मेरा अत्यावश्यक सामान और मेरी सब पुस्तकें रामू और सोनी के साथ यहा भिजवा दें।

इसपर तो लक्ष्मी और भी अधिक निस्सहाय अनुभव करने लगी।

अगस्त की पच्चीस तारीख आ गई थी और लक्ष्मी के आगे पढने का कोई प्रबन्ध नही हुआ था। लक्ष्मी इससे बहुत उदास रहने लगी थी। इन दिनों उसे अग्रेजी के उपन्यास पढने की चटक लग गई थी। वह अनारकली बाजार मे रामकृष्ण एण्ड सन्ज़ की दुकान से पुस्तकें खरीद लाती थी और उनको पढती रहती थी।

एकाएक शिमला से शारदा का पत्र लक्ष्मी को आया। उसने लिखा था

'लक्ष्मी ! फोरमैन क्रिश्चयन कालेज के प्रिंसिपल मिस्टर कार्टर स्पीयर से जाकर मिल लो। वह बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं। मैं समझती

कि वह तुम्हारी पढाई का प्रबन्ध कर देगा।'

पत्र पाते ही वह मा को बताए बिना जब अगले दिन मार्केट मे साग-सब्जी खरीदने गई तो फोरमैन क्रिश्चयन कालेज के प्रिंसिपल के मकान के बाहर जा खडी हुई। उसने चपरासी के हाथों अपना नाम चिट पर लिख भीतर भेजा तो प्रिंसिपल अपने कमरे से निकल बाहर आया और लक्ष्मी को सिर से पाव तक देख पूछने लगा, "क्या आप मिस शारदा के कहने पर आई हैं?"

"जी हा। कल उनका पत्र मिला था और मैं यह जानने आई हू कि आप मेरी क्या सहायता कर सकते हैं।"

"आप पहली सितम्बर को कालेज में मेरे आफिस मे आकर मुझसे मिल लेना। मैं आपको अपने कालेज मे दाखिल कर लूगा और आपका 'गार्डियन' बन आपको गाइड करूगा।"

लक्ष्मी ने धन्यवाद किया और अपने घर लौट आई। उसी रात उसने अपने माता पिता को सबके सामने अपने फोरमैन क्रिश्चयन कालेज मे प्रवेश पाने की बात बता दी। उसने बताया, "बडी बहनजी ने शिमला से यहा के प्रिंसिपल को लिखा है और मैं आज उनसे मिल आई हू।"

"परन्तु तुम लडको मे बैठ पढ सकोगी? यह अनहोनी बात होगी।"

"प्रिंसिपल ने कहा है कि वह मेरा पथ-प्रदर्शन सरक्षक के रूप मे करेंगे।"

केशवदास चुप रहा, परन्तु सरस्वती ने कह दिया, "अच्छा, मैं स्वय तुम्हारे प्रिंसिपल से मिलकर पता करूगी कि और कितनी लडकिया तुम्हारी श्रेणी मे आ रही हैं।"

लक्ष्मी ने कहा, "मा! ठीक है, तुम मुझे प्रवेश दिलवाने जाओगी तो बहुत अच्छा रहेगा।"

"तुम तो कहती हो कि प्रवेश शारदा बहन ने दिलवाया है। मैं तो

यह जानने जाऊंगी कि तुम्हारा प्रबन्ध लड़कों में घुसकर बैठने का होगा अथवा पृथक् होगा। साथ ही तुम्हारी कोई सहेली भी वहां होगी अथवा नहीं।"

"मैं निर्मला के पिता को पत्र लिख रही हूं कि वह भी निर्मला को इसी कालेज में प्रविष्ट करवाए।"

"ठीक है। लिख दो।"

इस प्रकार लक्ष्मी और निर्मला तथा उनके साथ एक अन्य ऐंग्लो-इण्डियन लड़की फोरमैन क्रिश्चयन कालेज में साइंस लेकर दाखिल हो गईं। साइंस डाक्टर कार्टर स्पीयर की सम्मति से ली गई थी।

द्वितीय परिच्छेद

जगन्नाथ, फग्गूमल का लड़का, घर से भागा तो यौवन की स्वाभाविक प्रेरणा से ही था। उसके मन मे सम्मोहन था मोहिनी नाम की एक पड़ोसी मित्र की पत्नी का। मित्र सोहनलाल रेल-विभाग मे टिकट-चैकर लगा हुआ था और उसकी पत्नी मोहिनी जब अपने पति के मित्र से मिली तो उसपर आसक्त हो उसके आसपास घूमने लगी।

दोनो में आकर्षण उत्पन्न हुआ तो घरवालो से चोरी-चोरी मुलाकात भी होने लगी। इन मुलाकातो मे आलिंगन और मुख-चुम्बन इत्यादि तक ही सीमा थी। जब भी जगन्नाथ इस सीमा से आगे जाने लगता तो मोहिनी जगन्नाथ को छोड पृथक् हो जाया करती और कह दिया करती, "जी, बस। वह मेरे पति का अधिकार-क्षेत्र है।"

"तो मैं तुम्हारा क्या हूं ?"

"आप मित्र हैं। आपका रूप-रग मेरी सास के पुत्र से अधिक श्रेष्ठ है और उसका रस मैं लेती हूं; परन्तु यह दूसरा कर्म तो रूप-रग से पृथक् कार्य है। वह मैंने पति के लिए सुरक्षित रखने का वचन दिया हुआ है।"

जगन्नाथ इस जीवन-मीमासा को सुन विस्मय मे मुख देखता रह जाता था। एक दिन उसने मोहिनी से कहा भी, "मुझमे तुम्हारा भोग

करने की प्रबल इच्छा जाग पड़ती है।"

"तो अपनी मा से कहकर अपना विवाह शीघ्र करवा लीजिए। वह इच्छा आप अपनी पत्नी से पूर्ण कर लिया करेंगे।"

इस कारण वह पत्नी की प्रतीक्षा बहुत उत्सुकता से कर रहा था। उसी समय उसके मित्र दामोदर ने स्कूल के द्वार पर ले जाकर उसकी भावी पत्नी के दर्शन करा दिए।

लक्ष्मी को देखकर जगन्नाथ को बहुत निराशा हुई। मोहिनी की तुलना मे वह पचास प्रतिशत समझ आई थी। स्कूल-द्वार से लौटते हुए जगन्नाथ ने अपने मित्र दामोदर को बताया, "मैं एक अन्य को जानता हू, जो इससे शत प्रतिशत अधिक सुन्दर है।"

"तो उससे विवाह कर लो।"

"उसका विवाह एक मित्र स हो चुका है।"

"तो उसका अपहरण कर लो।"

"वह यह पसन्द नही करेगी।"

"तो उसकी साझेदारी मे प्रयोग करो।"

"वह प्रयोग एक सीमा से अधिक नही होने देती।"

"किस सीमा से ?"

"वह एक क्षेत्र अपने पति के प्रयोग के लिए सुरक्षित रखे हुए है।"

"यह तो बहुत ही कठिन समस्या है।"

"हा, परन्तु मैं इस तुम्हारी पड़ोसिन से तो विवाह करूगा नही।"

"वह तुम्हारे योग्य है भी नही। किसी अन्य स्थान पर यत्न करो। इसमे भी मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हू, परन्तु पहले लक्ष्मी से सम्बन्ध छोड़ो तब बताऊगा।"

जगन्नाथ गम्भीर विचार मे लीन अपनी दुकान पर जा बैठा। इसके तीन चार दिन उपरान्त ही उसके एक सैनिक को दस आने छोड़ने पर पिता से बात हो गई। इसने उसके मन मे दुकान तथा घर दोनों से ग्लानि उत्पन्न कर दी।

दामोदर का जगन्नाथ को वरगलाने मे एक अपना उद्देश्य था। यह लक्ष्मी के गुणों को जानता था। उसका सबसे बडा गुण, दामोदर की दृष्टि मे, उसके पिता का धनवान होना था। वह स्वय विधवा मा का पुत्र था। यद्यपि उसका पिता एक अच्छी-खासी सम्पत्ति छोड गया था, परन्तु पिता के देहान्त के समय वह पाचवी श्रेणी मे पढता था और स्कूल से पढाई समाप्त कर नये सिरे से काम करने के लिए दामोदर मे न तो साहस था और न ही बुद्धि। इस कारण वह एक दुकान पर सहायक के रूप मे काम करने लगा था और बीस रुपये महीना वेतन पाता था।

लक्ष्मी की सगाई से पहले उसने अपनी मा मालिन से कहा था कि वह लक्ष्मी की मा से बात करे। मा अपनी आर्थिक स्थिति लाला केशवदास के बराबर न देख टाल-मटोल कर रही थी, परन्तु जब दामोदर ने बहुत आग्रह किया तो मालिन लक्ष्मी की मा सरस्वती के पास गई और यह समाचार लाई कि उसका विवाह बिरादरी मे ही लाला फग्गूमल के लडके जगन्नाथ से होना निश्चय ,। चुका है।

एकाएक दामोदर के मुख से निकल गया, "यह सगाई टूट जाएगी।"

"क्यो ?"

"मा ! मैं जानता हू, लक्ष्मी जगन्नाथ के घर नहीं जा सकती।"

"यदि यह सगाई टूट गई तो मैं तुम्हारे लिए यत्न कर दूगी।"

वास्तव मे दामोदर की मा ने यह बात भी टालने के लिए ही कही थी। कारण यह कि वह जानती थी कि सगाई टूटने मे कोई कारण नहीं।

परन्तु जिस दिन जगन्नाथ लक्ष्मी को देखकर आया था, उसी दिन वह मा से लड पडा। पिता घर पर आया तो उसने जगन्नाथ को बहुत बुरी तरह डाटा। परिणाम यह हुआ कि अगले ही दिन प्रातः पाच बजे जब अभी घर के सब प्राणी सो रहे थे, जगन्नाथ उठ, वस्त्र पहन

और तिजोरी की चाबी ले, उसमें से जितनी स्वर्ण-मुद्राएं वह निकाल सकता था, निकाल घर से चल पड़ा।

घर से निकल वह सीधा रेल के स्टेशन पर पहुंचा। प्लेटफार्म-नम्बर एक पर एक गाड़ी खड़ी थी। उसने पता किया कि वह किधर को जा रही है। गाड़ी दिल्ली को जा रही थी। इस कारण उसने अमृतसर का टिकट खरीदा और गाड़ी पर जा बैठा। उसके मन में लाहौर छोड़ जाने का विचार उत्कट हो रहा था।

यह तो रेलगाड़ी में बैठे-बैठे उसके मन में विचार आया कि हरिद्वार चलना चाहिए। वह एक बार वहां जा चुका था। अतः अमृतसर स्टेशन पर उतर उसने हरिद्वार की गाड़ी का समय पता किया। पता चला कि सायंकाल पांच बजे लाहौर से अमृतसर पहुंचती है और साढ़े पांच बजे वहां से आगे चल देती है।

वह दुर्गियाना मन्दिर में गया। उससे सम्बन्धित धर्मशाला में ठहर स्नानादि से निवृत्त हो वह दरबार साहब देखने चला गया। तदनन्तर ढाबे पर खाना खा धर्मशाला में लेट रहा। ठीक साढ़े चार बजे वह अमृतसर रेल के स्टेशन पर पहुंच हरिद्वार की गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा।

अगले दिन प्रातः छः बजे वह हरिद्वार जा पहुंचा। हरिद्वार से एक स्टेशन पहले ज्वालापुर से ही हरिद्वार के पण्डे गाड़ी में आ गए और दो पण्डे जगन्नाथ से पूछताछ करने लगे।

उनमें से एक बोला, "लाला! कहां से आए हो? किसके पुत्र हो और कहां रहते हो?"

जब जगन्नाथ ने बताया तो एकाएक एक पण्डा बोल उठा, "लाला! तुम मेरे यजमान हो। तुम्हारा, तुम्हारे पिता का और तुम्हारी सात पीढ़ी तक पुरखाओं का नाम मेरी बही में है।"

हरिओम् पण्डा जगन्नाथ की सूरत-शक्ल देख समझ गया था कि कोई मोटी असामी है। इस कारण जब हरिद्वार स्टेशन पर उतरने लगे

गो पूछने लगा, "लालाजी ! सामान कहा है ?"

"वह रात चोरी हो गया है।" जगन्नाथ ने बहाना बना दिया, 'मुझे सहारनपुर पर स्टेशन पर पता चला था कि चोरी हो गई है, परन्तु कुछ चिन्ता की बात नहीं। मैं आवश्यक सामान बाजार से खरीद लूगा।"

पण्डा सन्तुष्ट हो उसे पचायती धर्मशाला म ले गया और धर्मशाला के मुशी को आख के सकेत से समझा दिया कि कोई मोटी मुर्गी है। मुशी समझ गया और ऊपर की मजिल पर एक सजा हुआ कमरा खोल जगन्नाथ को वहा ठहरा दिया। कमरे में पलग, बिस्तर, दरी जाजम और दीवारो मे मलमारियां थी।

जब तक जगन्नाथ शौचादि से निवृत्त होता रहा, पण्डा हरिओम् अपनी बैठक पर गया और अपने यजमानों की बही उठा लाया। उसने जगन्नाथ, उसके भाई-बहनो तथा माता-पिता का नाम बही में से निकालकर बताया तो जगन्नाथ ने कहा, "पण्डितजी, ठीक है अब गगा-स्नान के लिए चलना चाहिए।"

जगन्नाथ ने एक मोहर पण्डे को दी और कहा, 'मेरे लिए लगोट, धोतियां और कुर्ते खरीद लाइए।"

पण्डा गया और पहनने का सामान ले आया तो जगन्नाथ धोती, अगोछा ले गगा स्नान के लिए घाट पर जा पहुचा। वहा पण्डित ने पूजा-तर्पण कराया तो जगन्नाथ ने एक मोहर निकाल दक्षिणा के रूप में दे दी। पण्डा ईश्वर का धन्यवाद करता हुआ कि उसने किसी सखी यजमान से भेंट कराई है वह बाजार गया और यजमान के लिए पूरी इत्यादि का प्रबन्ध करने लगा।

जगन्नाथ हरिद्वार मे एक सप्ताह तक रहा। उसका विचार था कि उसके माता-पिता उसे ढूढते हुए वहा आएगे और वह विवाह-सम्बन्धी बातें कर ही घर जाएगा, परन्तु सात दिन तक भी जब कोई उसको ढूढने नही आया तो धर्मशाला के मुशी और पण्डे को भरसक दान

दक्षिणा दे ऋषिकेश जा पहुचा।

वहा वह कैलाश आश्रम मे ठहर गया। वहा पहले ही दिन उसकी भेंट एक सन्यासी ब्रह्मानन्द से हो गई। जगन्नाथ स्वर्गाश्रम के घाट पर स्नान कर आ रहा था कि स्वामीजी से साक्षात्कार हो गया। जगन्नाथ ने भगवे वस्त्रो मे एक भव्य मूर्ति को देखा तो हाथ जोड वदना कर दी। स्वामीजी ने जगन्नाथ के मुख पर ध्यान से देखा तो पूछ लिया, "भक्त ! कहा से आए हो ?"

"महाराज, लाहौर का रहने वाला हू।"

"कहा ठहरे हो ?"

"कैलाश आश्रम मे।"

"तब ठीक है।"

"क्या ठीक है महाराज ?"

"मैं भी वहा ही ठहरा हू।"

"तब तो अहोभाग्य है। आपकी सगत का फल पाने का यत्न करूगा।"

स्वामी ब्रह्मानन्द की आश्रम मे बहुत महिमा थी। आश्रम के कर्मचारी और वहा पर ठहरे यात्री स्वामीजी के चरण-स्पर्श करते थे। इससे जगन्नाथ आश्रम मे पहुच मध्याह्न के समय कुछ फल ले स्वामीजी के कमरे मे जा पहुचा।

"तो तुम आ गए हो ?" स्वामीजी ने पूछ लिया।

"महाराज ! आपने आज्ञा दी थी कि मैं आपकी सगत का फल प्राप्त कर सकूगा। इसी कारण उपस्थित हो गया हू।"

"मैं यह नही कह रहा। मेरा अभिप्राय था कि तुम मेरे साथ रहोगे कि घर मा के पास लौट जाओगे ?"

जगन्नाथ स्वामीजी के प्रश्न का अर्थ न समझता हुआ मुख देखता रह गया। बात स्वामीजी ने ही कही। उन्होने कहा, "देखो भक्त ! हम देख रहे हैं कि तुम घर से भागकर आए हो। तो अब पिता के घर लौट

जाने का विचार है अथवा नहीं ?"

जगन्नाथ ने मुस्कराकर कहा, "महाराज ! जब आप भूतकाल की बातें जान गए हैं तो भविष्य को भी पता कर लीजिए और मुझे बताइए कि मैं वापस जा रहा हूं अथवा नहीं ?"

स्वामीजी ने आखें मूंद एक क्षण तक ही विचार किया और कहा, "वहां एक प्रबल आकर्षण है। तुम्हारे एक मित्र की नवविवाहिता पत्नी है। यह आकर्षण तुम्हारे मस्तिष्क में हलचल मचाता रहता है।"

मोहिनी की बात तो जगन्नाथ के माता-पिता भी नहीं जानते थे। मोहिनी ने भी यह किसीसे कही होगी, उसे आशा नहीं थी। फिर यह स्वामी, जिसका उसने लाहौर मे कभी दर्शन नहीं किया, कैसे जान गया है ? उसे यह बहुत विचित्र प्रतीत हुआ था।

जब जगन्नाथ बहुत देर तक मौन हो स्वामीजी का मुख देखता रहा तो स्वामीजी ने कहा, "हां, तो क्या विचार किया है ?"

"महाराज ! अभी तो आपके ज्ञान के स्रोत का ही विचार कर रहा हूं।"

"वह स्रोत तो तुम स्वयं ही हो। जब हमने पूछा कि तुम हमारे साथ चलोगे तो तुम्हारा मन कह रहा था कि उस मोहिनी को भूल जाऊं क्या ? भूल सकूंगा क्या ? हमने तुम्हारे मन की बात सुन ली है।"

"जब इतना कुछ जान सकते हैं तो यह भी बताइए कि मैं क्या करूं ?"

"हम समझते हैं कि तुम अभी कुछ दिन के लिए हमारे साथ चलो। तब तक तुम्हारे मन मे व्यवहार स्पष्ट हो ज[illegible]"

"आप कहां रहते हैं ?"

"यदि चलने का विचार है तो तीन दिन उपरान्त [illegible] और तुम मेरे साथ चल सकोगे।"

[illegible] चलूंगा।"

नियत दिन प्रातः पांच बजे स्वामी ब्रह्मानन्द अपने आश्रम को चलने लगा तो जगन्नाथ अपनी कोठरी से निकल समीप आ खड़ा हुआ।

"तो तुम चलोगे?"

"हां, महाराज! अभी साथ चलने का निश्चय किया है। वहां रहने और कब तक रहने का निश्चय वहां चलकर करूंगा।

"मैंने आश्रम के स्वामीजी से पता लिया है। उसने बताया है कि आपका आश्रम यहां से बीस-बाईस मील के अन्तर पर है। मैंने अपने दो जोड़े वस्त्र और कुछ अन्य सामान इस थैले में रख लिया है। शेष यहां पर ही मुंशीजी के पास जमा करा दिया है। यदि लौटूंगा तो उनसे ले लूंगा।"

"ठीक है। चलो, मार्ग में ही स्नान और भोजन की व्यवस्था होगी।"

इतना कह दोनों लक्ष्मण झूला की ओर चल पड़े। वहां पर स्नान कर और वहां ही एक दुकान से दो पैसे के चने ले चबाते हुए दोनों चल पड़े।

मार्ग में जगन्नाथ ने कुछ पूछने के लिए ही पूछा, "महाराज! क्या ये भगवे वस्त्र पहनने आवश्यक हैं?"

स्वामी ब्रह्मानन्द हंस पड़ा। हंसते हुए कहने लगा, "तो इन वस्त्रों से मोह जाग पड़ा है?"

"नहीं, यह बात नहीं। मैं भविष्य के विषय में कल्पना कर रहा था। दो मार्ग हैं—एक घर वापस लौट जाने का और दूसरा आपके पीछे-पीछे चलने का। इस कल्पना में सबसे प्रथम प्रश्न वस्त्रों का मन में आया है।"

स्वामीजी ने भी मुस्कराते हुए कहा, "वस्त्र गौण हैं। मैंने भी तो ये भगवे तीन-चार वर्ष यहां आकर रहने के उपरान्त ही पहनने आरम्भ किए थे। वह इस कारण कि भगवा रंग शीघ्र मैला नहीं होता। इसपर मैल सुगमता से बैठता नहीं। केवल मात्र गंगाजी के जल में एक बार

फटकारने से मैल धुल जाता है। परन्तु मुख्य प्रश्न है मन का। वह तो आत्मा के सर्वथा साथ रहता है। उसका निर्मल रहना अत्यावश्यक है।"

"वह कैसे निर्मल रह सकेगा ?"

"बुद्धि को विकास देने से।"

"मैं समझता हूं कि बुद्धि तो मेरी अति प्रखर है।"

"यह तो देख ही रहा हूं। तुम्हारा मन दुर्बल है। मन ज्ञान का सचय स्थान है। बुद्धि तो उस ज्ञान का विश्लेषण ही कर सकती है, परन्तु यदि इसके समक्ष कूड़ा-कर्कट ही रखोगे तो बुद्धि उसमें से ही कार्य का निर्वाचन करेगी। इस कारण मन को शुद्ध संस्कार वाला और निर्मल कल्पना करने वाला बनाओ तो बुद्धि उस ज्ञान में से ही अपना मार्ग ढूंढेगी।"

जगन्नाथ के लिए यह सर्वथा नवीन विषय था। वह इतने मात्र से समझ नहीं सका। इसपर स्वामी ब्रह्मानन्दजी ने कह दिया, "भक्त! यह तो मानव-यन्त्र को समझने की बात है। तुम पिछले बारह वर्ष से गज से कपड़े ही नापते रहे हो। तुमने अपने भीतर देखने का कभी यत्न ही नहीं किया। इससे तुम्हारे भीतर क्या हो रहा है, तुम्हारी समझ में आ नहीं रहा। मैं समझाने का यत्न करता हूं। तुम अपनी प्रखर बुद्धि से शीघ्र ही समझ जाओगे। मैं जो कुछ कह रहा हूं, तुम सुन रहे हो ?"

"हां महाराज!"

"किस स्थान से सुनते हो ?"

"कान से।"

"कहां है कान तुम्हारा ?"

जगन्नाथ ने दाहिने हाथ से कान को हाथ लगा बता दिया। स्वामीजी ने सिर हिला दिया और कहा, "नहीं, यह नहीं। यह तो एक पड़दा-सा है। इसके भीतर एक पर्दा है, जैसे ढोल पर चढ़ा होता है। उसके पीछे एक नाली है। वह तुम्हारी खोपड़ी के भीतर एक यन्त्र है, उस तक जाती है। तब वह सुनता है। वास्तव में उसके समीप बैठा आत्मा सुनता

है। मन तो जड है।

"इसी तरह हम चल रहे हैं और सडक पर पडे पत्थरों से बचकर चलते हैं। ये पत्थर कौन देखता है ? यह सफेद और काली आख की पुतली नहीं। इसके पीछे भी एक पर्दा है और उसके साथ भी एक नाडी है, जो तुम्हारी खोपडी मे मन तक पहुचती है और मन के समीप बैठा आत्मा सडक देख रहा है।"

जगन्नाथ ध्यान से स्वामीजी की बात सुन रहा था। स्वामीजी ने आगे कहा, "इसी प्रकार पाच ज्ञानेन्द्रिया हैं। ये सब पीछे नाडियों से सम्बन्धित हैं, जो तुम्हारे सिर मे मन और उसके समीप बैठे आत्मा को बाहर की खबर देते है।

"जीवात्मा के पास एक अन्य यन्त्र है। वह बुद्धि है। वह निश्चय करती है। मन से इन्द्रियों द्वारा प्राप्त सूचना पर बुद्धि विचार कर निश्चय करती है कि मन जो कुछ कहता है, वह स्वीकार करने योग्य है अथवा नही। जो वह निश्चय करती है, जीवात्मा उसके अनुसार काम करता है।

"अब तुम्हारे मन म मोहिनी है और एक अन्य है। जहा तक हम समझ सके है, वह लक्ष्मी है। तुम्हारा मन एक के आकर्षण और दूसरे के तिरस्कार से भर रहा है और अपनी कल्पनाए बना रहा है। तुम्हारा मन अपनी कल्पनाओं को बुद्धि से सम्मति करने के लिए उपस्थित ही नही करता। परिणाम यह हो रहा है कि तुम मोह और तिरस्कार के झगडे मे फसे हुए भटक रहे हो।

"बताओ यह ठीक नहीं क्या ?"

"आपने मेरी बात को समझा तो ठीक है, परन्तु मैं बुद्धि से विचार तो कर रहा हू। इसी कारण तो घर से भाग आया हू। इस मोह और तिरस्कार के संघर्ष से बचने के लिए ही तो घर से भागा हू।"

"यह समस्या का सुलझाव नहीं। यह तो सामने शेर को देख डर से भाग खड़े होने-सी बात है। केवल मात्र भागने से तो काम नहीं चलता।

शेर तो तुमसे भी तीव्र गति से भाग सकता है। वह तो किसी भी क्षण तुम्हें दबोच लेगा।

"तुमने बुद्धि को इस शेर के विरोध करने तथा इसकी पहुंच से दूर हो जाने पर विचार नहीं किया। बुद्धि को विचार करने का अवसर ही नहीं दिया। प्रलोभनरूपी सिंह के मुख में अपना सिर स्वयं दे देना भी तो एक उपाय है। उससे भागना दूसरा उपाय है। ये दोनों पलायन कहलाते हैं। ये भय से बचने के उपाय नहीं।"

"और वह क्या उपाय है?"

"वह मैं नहीं बताऊंगा। वह तुम्हारी बुद्धि ही बताएगी। अभी तक तुमने अपनी बुद्धि को इस समस्या पर विचार करने के लिए अवसर ही नहीं दिया।"

"महाराज! बुद्धि ने ही तो हरिद्वार का मार्ग बताया है।"

"यह तो भय से भागने का मार्ग है। यह तो निर्बुद्धि गधा भी करता है। मालिक की लाठी देखकर वह चल पड़ता है। यह मालिक की लाठी से बचने का उपाय नहीं।"

"तो वह क्या है?"

"यह तुम्हारी बुद्धि ही बताएगी। कारण यह कि उसके फलाफल को तुमने ही भोगना है। इस कारण तुम ही इस विषय में विचार करोगे। मैं यह नहीं बताऊंगा।

"हां, मैं तुम्हें यह बता सकता हूं कि किस प्रकार बुद्धि से सम्मति की जा सकती है और उससे विचार की बात को सुना जा सकता है।

"यह तुम्हारे मन में जो मोहिनी और लक्ष्मी का ढोल बज रहा है, वह यदि तुम्हें अपनी बुद्धि से सम्मति करने का अवसर देगा तो वह सबल होने के कारण ठीक सम्मति देगी।"

"देखो जगन्नाथ! कुतुबनुम्मा का नाम सुना है?"

"हां महाराज! स्कूल में मास्टर ने दिखाया भी था। वह सदा उत्तर-दक्षिण का दर्शन कराता है।"

"हां। उत्तर दिशा समझ लो सत्य और दक्षिण समझ लो झूठ। वह सत्य और झूठ का मार्ग बता सकता है, परन्तु यदि उसके समीप कोई चुम्बक से आए तो वह मिथ्या मार्ग का दर्शन भी कराने लगता है।

"तुम्हारी बुद्धि है 'कुतुबनुम्मा'। यह सत्य और मिथ्या मार्गदर्शन की सामर्थ्य रखती है, परन्तु तुम्हारे मन में दो प्रबल चुम्बक आ बैठे हैं। एक है मोहिनी और दूसरी है लक्ष्मी। दोनों भिन्न-भिन्न दिशाओं में ले जाती हैं और तुम्हारी बुद्धि अपने काम से विचलित हो मिथ्या मार्ग दिखा रही है। यह भगवान् की कृपा समझो कि दोनों भिन्न-भिन्न दिशाओं में बल लगा रही हैं। इस कारण तुम्हारी बुद्धिरूपी 'कम्पास' निष्क्रिय हो रही है।

"अब मैं तुम्हें अपने आश्रम में लिए जा रहा हूं, जहां दो विघ्नकारी शक्तियों का प्रभाव मिटाने का उपाय बताऊंगा और तुम्हें बुद्धि से सम्मति करने का उपाय बताऊंगा। तब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। न तो मैं तुम्हारे कर्मों के शुभ का भोगने वाला हूं और न ही तुम मेरे कर्मफल के भोक्ता हो सकते हो।"

'तो कर दीजिए। मैं आपका जन्म-भर आभारी रहूंगा।"

स्वामीजी चुप रह कुछ विचार करने लगे।

२

जगन्नाथ स्वामीजी के साथ चलता चलता मध्याह्नोत्तर तीन बजे के उपरान्त गंगा किनारे व्यास आश्रम में जा पहुंचा। सड़क से जो पैदल चलने वालों के लिए मार्ग बना था, नदी की ओर नीचे उतरकर आश्रम का फाटक पक्का बना मिला। फाटक खुला था। ज्योंही दोनों ने फाटक में प्रवेश किया तो आश्रमवासियों में सूचना फैल गई कि स्वामीजी आ गए और वृद्ध, युवा सब सन्यासी और ब्रह्मचारी आ-आकर स्वामीजी के चरण-स्पर्श करने लगे।

ऋषिकेश गंगा के दाहिने तट पर बसा है। वहां से चलकर लक्ष्मण झूले से गंगा पार कर वे गंगा के बायें तट पर जा पहुंचे थे और तदनन्तर बायें तट पर ऊपर ही ऊपर को चलते हुए वे लक्ष्मण झूला से बीस मील चले आए थे और यह आश्रम आ गया था।

सब चरण स्पर्श करने वालों को स्वामीजी हाथ और मुख से आशीर्वाद देते जाते गंगा तट की ओर चले जा रहे थे। गंगा-तट पर पहुंचने से पहले मार्ग के दाहिनी ओर पक्की इमारत थी और स्वामीजी उधर ही चल पड़े। एक बड़ा कमरा था। उसमें एक उच्चासन लगा था। स्वामीजी उसपर बैठे तो आश्रमवासी वहां एकत्रित हो गए। जगन्नाथ अपना थैला कंधे से लटकाए हुए उन आश्रमवासियों में ही खड़ा था।

स्वामी ब्रह्मानन्द ने आसन पर बैठते ही एक ब्रह्मचारी की ओर देखकर कहा, 'रामानन्द ! इस भक्त को गुफा नम्बर तीन में ठहरा दो। और देखो यह प्रातःकाल से चलता आ रहा है। इस कारण यह भूखा और थका हुआ है। इसको कुछ खिला-पिलाकर विश्राम करने दो।"

रामानन्द ने जगन्नाथ की ओर देख कहा, 'आइए श्रीमान् !"

जगन्नाथ सत्य ही बहुत थका हुआ था। इस कारण एक शब्द भी और कहे बिना रामानन्द के पीछे-पीछे वह चल पड़ा।

स्वामीजी की कुटिया से कुछ नीचे नदी की ओर जाकर पहाड़ में बनी गुफाओं में एक में रामानन्द जगन्नाथ को ले गया। वह यों तो पहाड़ में खोदी हुई गुफा, परन्तु भीतर से और भूमि पर सीमेण्ट का पलस्तर होने से एक कमरा ही मालूम होती थी। वहां एक तख्तपोश लगा था। तख्तपोश पर एक मृगचर्म बिछा था। दीवार में एक अलमारी बनी थी। रामानन्द ने अलमारी खोली और उसमें रखी दो चादरें और एक तकिया निकाल मृगचर्म पर बिछाकर लगा दिया।

रामानन्द ने कहा, 'श्रीमान् ! इस अलमारी में अपना सामान रख

द ग्रौर इस चादर पर विश्राम करें। मैं आपके लिए भोजन का प्रबन्ध कर रहा हू।"

गमानन्द गया तो जगन्नाथ चादर पर बैठ विचार करने लगा कि यह कौन-सा ग्राश्रम है ? इसका व्यय कहा से चलता है ? यह स्वामीजी कोई बगाली प्रतीत होते हैं। यह यहा कैसे आ गए ? इत्यादि। इसपर स्वामीजी के उसके मन की अन्तरग बातों के ज्ञाता होने पर विस्मय हुआ। वह मन मे विचार करता था कि स्वामीजी को उसके थैले मे रखी स्वर्ण-मुद्राओ का भी ज्ञान है। अभी तक उसने दो सौ मुद्राओ मे से केवल दस-बारह ही व्यय की हुई थी। शेप उसके पास ही थीं।

ग्रब उसके मन मे आया कि स्वामीजी को ग्रवश्य इन मुद्राग्रों का थैले मे होने का ज्ञान हो गया होगा, ग्रौर क्या जाने, उन मुद्राग्रों पर ग्रधिकार जमाने के लिए ही वह उसे यहा लाए हैं ! एक दिन धन छीन हत्या कर उसे गगाजी मे बहा सकते हैं। इस सभावना पर वह कांप उठा ग्रौर वहा माने को अपनी महान भूल समझने लगा।

परन्तु ग्रब क्या हो सकता है ! इस समय तो वह इतना थका हुआ था कि एक पग भी चलने मे कष्ट अनुभव कर रहा था।

इस भयावह विचार को मन से निकाल स्वामीजी के विषय मे चिन्तन करने लगा। वह ग्रनुभव करता था कि स्वामीजी का व्यक्तित्व तो ग्रत्यन्त ग्राकर्षक है। पहले ही दिन स्वर्गाश्रम के घाट पर स्नान करते हुए उसने स्वामीजी के दर्शन किए थे और वह ग्रनायास ही आकर्षित हो स्वामीजी के सामने जा खड़ा हुआ था।

पीछे स्वामीजी की ग्रन्तर्दृष्टि को इतना तीव्र ग्रौर सही ज्ञान रखने पर उसे विस्मय हुग्रा था और अपने-आपको स्वामीजी के पीछे-पीछे चलने पर विवश ग्रनुभव करने लगा था। उनके केवल यह कहने पर कि यदि जानना चाहते हो तो चलना। वह तीन दिन उपरान्त यहा से चलेंगे। वह चलेगा तो उसे ले चलेंगे।

यह ग्रादेश नही था, केवल निमत्रण था, और वह बिना आना-

कानी किए मान गया था।

वह अभी अपनी विचार श्रृंखला में ही उलझा हुआ था कि रामानन्द उसके लिए एक गिलास में गरम-गरम दूध और आश्रम में ही बने बेसन के लड्डू ले आया।

जब तक वह लड्डू खाता रहा, रामानन्द सामने बिछी चटाई पर बैठा रहा। जगन्नाथ ने उसे अपने समीप तख्तपोश पर बैठने को कहा, परन्तु ब्रह्मचारी वहां नहीं बैठा। वह नीचे भूमि पर बिछी चटाई पर ही बैठा रहा।

जगन्नाथ स्वामीजी के विषय में पूछना चाहता था। इस कारण प्रश्न करने लगा। उसने पूछा "इस आश्रम का क्या नाम है?"

'तो भक्त बिना जाने ही चले आए हैं?"

"हां। स्वामीजी ने कहा कि चलो और मैं चल पड़ा।"

रामानन्द मुस्कराया और बोला, 'इसे व्यास आश्रम कहते हैं। यहां महर्षि कृष्ण द्वैपायन सावित्री नन्दनजी रहते थे और कहते हैं कि उन्होंने यहां रहते हुए ही महाभारत के सवा लाख श्लोकों का निर्माण किया था।"

जगन्नाथ ने महाभारत का नाम सुना था और स्कूल के दिनों में सुना था कि दो भाइयों का परस्पर झगड़ा था और एक विख्यात युद्ध हुआ था। उस युद्ध के समय श्रीकृष्णजी ने गीता अर्जुन को सुनाई थी।

इससे वह कुछ कुछ समझ सका और पूछने लगा, "महर्षि व्यास ने उस झगड़े की बात क्यों लिखी थी?"

रामानन्द नहीं जानता था। वह यह तो जानता था कि महाभारत में क्या लिखा है, परन्तु यह क्यों लिखी गई, यह नहीं जानता था। इस कारण उसने कहा, "भक्त! यह तो महर्षि स्वयं ही बता सकते हैं कि उनके मन में क्या था, जब उन्होंने यह ग्रन्थ लिखा था। मैं उनके पास कभी नहीं रहा। इस कारण यह नहीं जानता।"

जगन्नाथ ने मिठाई समाप्त कर दूध की चुस्की लगाई और पूछा,

"यहां का खर्च कैसे चलता है ?"

रामानन्द को इस प्रश्न पर विस्मय नहीं हुआ। ऐसा प्राय. यात्री पूछा करते थे। इस कारण उसने कहा, "मुझे विदित नहीं। स्वामीजी तीन मास मे एक बार ऋषिकेश जाया करते हैं और ढेरो रुपया ले आया करते हैं। किससे लाते हैं, यह मुझे ज्ञान नही।"

"आप लोग दिन-भर यहां क्या करते रहते हैं ?"

"मैं तो पढ़ता हू। उस पढ़ने के प्रतिकार में आश्रम की सेवा कर देता हू।"

"क्या सेवा करते हो ?"

"जब कोई यात्री यहां आता है तो उसकी सेवा किया करता हूं। जो भी वह चाहे, वह काम कर देता हू।"

"तो और भी विद्यार्थी हैं, जो यहां पढ़ते हैं ?"

"हां, बीस के लगभग हैं।"

"क्या पढ़ते हैं ?"

"हम सब अष्टाध्यायी पढ़ते हैं।"

"उससे क्या होगा ?"

"वेद-शास्त्र समझने की योग्यता आ जाएगी।"

"उसके समझने से क्या होता है ?"

"यह अभी कैसे बता सकता हू ! गुरुजी ने कहा है कि इसे पढ़ लो, बहुत कल्याण होगा। बस, मैंने पढ़ना आरम्भ कर दिया।"

"कब से यहां हो ?"

"तीन वर्ष से।"

"कब तक पढ़ाई समाप्त कर सकोगे ?"

"अभी एक वर्ष और लगेगा। तदनन्तर एक-दो शास्त्र पढ़ूंगा और फिर अपने घर लौट जाऊंगा।"

"विवाह हुआ है ?"

"हां, परन्तु जब मैं वहां से आया था तो पत्नी का गौना नहीं आया

था।"

"पत्नी को देखा है ?"

"हां। वह अभी ग्यारह वर्ष की बच्ची ही थी। मा ने कहा कि अभी वह पाच वर्ष उपरान्त हमारे घर आएगी। इसपर मैं यहा पढने चला आया। मेरे पिता भी यहो पढे थे। उन्होने मुझे भी यहा भेज दिया है।"

"तुम्हारी क्या आयु है ?"

"अभी अट्ठारह वर्ष का नही हुआ।"

"तुम्हारा अपनी पत्नी से मिलने को चित्त नही करता ?"

"मेरा चित्त तो यहा ही जीवन-भर रहने को करता है। इच्छा है कि सन्यास ले लू, परन्तु स्वामीजी कह रहे हैं कि मुझे बीस-पच्चीस वर्ष पत्नी की सेवा करनी चाहिए। पीछे यहा आना चाहिए।"

"स्वामीजी भी विवाहित है ?"

"हा। कहते हैं कि उनकी पत्नी को मरे आज पचास वर्ष हो चुके हैं।"

"पचास वर्ष ? तो स्वामीजी की क्या वयस है ?"

"इस समय पच्चानबे वर्ष के है।"

जगन्नाथ विस्मय मे रामानन्द का मुख देखता रह गया। फिर कहने लगा, "मैं इस समय बीसवें वर्ष मे जा रहा हू। परन्तु यहा आते हुए तो वह मुझसे तेज गति से चलते थे।"

"हा। वह बीस वर्ष के युवक प्रतीत होते हैं। मेरे पिताजी और बाबाजी भी इन्हींसे पढे हैं।"

जगन्नाथ स्तब्ध रह गया। वह दूध पी चुका था। रामानन्द उठ खड़ा हुआ और गिलास तथा थाली, जिनमे लड्डू और दूध लाया था, उठाकर जाने के लिए तैयार हो पूछने लगा, "और कोई सेवा बताइए ?"

"कुछ नही। अब सोऊगा।"

"हां। यहां भोजन दिन में एक बार ही होता है। आपके लिए आज्ञा हुई है कि प्रातः तथा सायं दूध और मिठाई भी मिला करे।"

"तो अब कल मिलेंगे ?"

"आप कहें तो मैं रात को आकर आपकी आवश्यकता के विषय में पूछ सकता हूं ?"

"नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं। शौचादि के लिए स्थान बता दीजिएगा।"

"हां। यह साथ ही कुटिया है। उसमें दीपक जलता रहता है। वह शौचालय है। लघुशंका इत्यादि के लिए वहां जा सकते हैं। स्नान तो सूर्य निकलने पर गंगाजी पर होता है। वहां मैं कल आकर आपको ले जाऊंगा।"

रामानन्द गया तो जगन्नाथ तख्तपोश पर लेटा और लेटते ही गहरी नींद में सो गया।

३

अगले दिन सूर्योदय के समय स्वामीजी स्वयं आए और जगन्नाथ को अभी भी गहरी नींद में सोए देख जगाने लगे।

"जगन्नाथ!" स्वामीजी ने कहा, "उठो! बहुत दिन चढ़ गया है।"

जगन्नाथ हड़बड़ाकर उठा और तख्तपोश से उतर भूमि पर खड़ा हो हाथ जोड़ नमस्कार करने लगा।

" मैं तुम्हें काम बताने आया हूं।

" यहां नियम है कि सूर्योदय से पूर्व शौचादि से निवृत्त हो मुख-हाथ धो ध्यानादि में लग जाते हैं।

" ध्यानादि का विधि-विधान ही यहां की शिक्षा का आरम्भ है। तुम्हें वह सीख लेना चाहिए।

" अब तुम शौचादि से निवृत्त हो गगानी पर हाथ-मुख धो मेरी कुटिया में आ जाना। वहा ही मैं तुम्हें कुछ बताऊंगा। वह नित्य किया करना। कुछ ही दिनो में तुम्हें उस क्रिया मे रस आने लगेगा।"

स्वामीजी इतना कह कुटिया से निकल गए और जगन्नाथ आवश्यक कामो से निवृत्त हो स्वामीजी की कुटिया मे जा पहुचा।

वहा स्वामीजी ने उसे बैठने का ढग और फिर प्राणायाम की आरम्भिक क्रिया बता दी। स्वामीजी ने कहा, 'इसे बीस-तीस बार प्रात-साय नित्य किया करो। एक सप्ताह के उपरान्त हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे।"

इस प्रकार जगन्नाथ को काम मिल गया और वह इनमें ध्यान लगाने मे लीन हो गया। एक सप्ताह के उपरान्त वह स्वामीजी को परीक्षा देने जा पहुचा। स्वामीजी ने एक सप्ताह और अभ्यास करने को कहा। इस ध्यान के साथ स्वामीजी तीसरे प्रहर सब आश्रमवासियो को प्रवचन दिया करते थे और उसमे आश्रमवासी अपने सशय-निवारण भी किया करते थे। जगन्नाथ इन प्रवचनों से भी बहुत प्रभावित हुआ था। वह देख रहा था कि स्वामीजी बाहर के ससार में हो रही घटनाओ से भली भाति परिचित थे।

एक दिन स्वामीजी ने बताया, 'युद्ध जीतने वालो मे मतभेद हो गया है।"

स्वामीजी ने मतभेद की बात भी बताई। उन्होंने आश्रमवासियो को समझाया, "युद्ध में एक ओर अकेला जर्मनी था और दूसरी ओर यूरोप के तीन बड़े देश और भारत, कनाडा, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा अमेरिका भी थे। इस विजय मे अपना-अपना योगदान सबने दिया है। परन्तु युद्ध के उपरान्त अमेरिका ने यूरोप के मामलों मे हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझा और वह यूरोप वालों को सन्धि की शर्तें करने में योगदान नहीं दे रहा।"

जगन्नाथ, जो युद्ध के दिनो में नित्य समाचारपत्र पढ़ा करता था,

पूछने लगा, "तो क्या यह ठीक नहीं हो रहा ?"

"नहीं। युद्ध के जीतने म सबसे बडा योगदान अमेरिका का है। अमेरिका ने युद्ध मे सम्मिलित होने से पूर्व भी इगलैण्ड इत्यादि की सहायता की थी और फिर युद्ध मे इनकी ओर से युद्ध भी लडा था। इस कारण उसको सन्धि की शर्तें निश्चय करने मे सम्मिलित करना चाहिए था। वह नही हुआ तो इसमें सबसे बडा कारण इगलैण्ड और फ्रास हैं। वे जर्मन से कुछ ऐसी शर्तें मनवाने का यत्न कर रहे हैं, जिनसे भविष्य मे सदा के लिए कटुता बनी रहेगी।

"अमेरिकी जनता यूरोप की इन शक्तियों का व्यवहार देखकर तटस्थ होना स्वीकार कर रही है।"

"तो फिर क्या होगा ?"

'एक अन्य युद्ध होगा और उससे भी शाति हो सकेगी, कहा नहीं जा सकता।"

"परन्तु आपके पास कोई समाचारपत्र तो आता नहीं। फिर आप यह सब कैसे जानते हैं ?"

"मेरे पास समाचार आते हैं, समाचारपत्र नही।"

जगन्नाथ इसका अर्थ नहीं समझा परन्तु अन्य आश्रमवासी इसका अर्थ समझते थे। अब जगन्नाथ को आश्रम मे आए हुए तीसरा सप्ताह जा रहा था। उसमें भी भीतर ही भीतर परिवर्तन हो रहा था। जब वह आश्रम मे आया ही था तो अपनी मोहरो के लिए उसे मारे जाने का भय लग रहा था। यह भय तो तीन-चार दिन मे समाप्त हो गया। वह प्रतिदिन दो बार अपनी मोहरों को गिनता था। वे एक सौ बयासी थीं। साथ तीन रुपये और दस आने थे। नित्य प्रात उठते ही वह थैली निकाल मोहरें गिन लेता था और रात के समय सोन से पूर्व वह पुन गिन लेता था। उसमें से कभी कोई टस से मस नहीं होती थी। गुफा का कोई द्वार नहीं था। अलमारी का किवाड तो था, परन्तु बन्द करने का कोई कुण्डा नहीं था और वह दिन म चार-पाच बार

कुटिया को खाली छोड़ जाया करता था। शौच के समय, स्नान के समय, मध्याह्न के भोजन के समय, स्वामीजी के प्रवचन के समय और फिर मध्याह्नोत्तर गंगा-तट पर बैठ वहां के भव्य दृश्य का रस लेने के समय।

अब उसे विश्वास हो रहा था कि कोई उसके धन को नहीं ले रहा। इस प्रकार उसको इसका गिनना भी विस्मरण होने लगा। तीसरे सप्ताह मे उसे कुछ यह समझ आने लगा कि वह अब एक लम्बे काल के लिए इस आश्रम मे रहने वाला है। इस कारण व्यर्थ की वस्तु को अपनी अलमारी मे रखे हुए है।

इस सप्ताह के व्यतीत होते-होते उसे समझ आया कि इसे स्वामीजी के पास जमा करा दे और यदि कभी आश्रम छोडना पड़े तो माग लेगा। इस प्रकार अपने पास रखने से तो कभी-कभी उसकी ओर ध्यान चला ही जाता है।

अतः वह प्रात.काल का दूध और कुछ नमकीन लेकर मोहरों की थैली ले अपनी जेब में रख स्वामीजी को ढूंढने चल पड़ा। उनकी कुटिया में जा उसे पता चला कि स्वामीजी उस समय गंगा-तट पर बैठे अभ्यास किया करते हैं।

वह वहां जा पहुंचा। स्वामीजी एक सपाट पत्थर पर पद्मासन लगाए सूर्याभिमुख बैठे थे और ध्यानावस्थित थे। जगन्नाथ उनकी पीठ के पीछे बैठ गया। जगन्नाथ को आधा घण्टा प्रतीक्षा करनी पड़ी। स्वामीजी का अभ्यास समाप्त हुआ और वह आसन से उठे तो जगन्नाथ को बैठा देख हस पड़े। हंसते हुए बोले, "जगन्नाथ! तो तुम आ गए हो?"

"तो महाराज! आप मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे?"

"हां। तुम अपनी मोहरें देने आए हो न?"

"हां महाराज! परन्तु आपको यह किसने बताया है?"

"तुम स्वयं ही तो बताया करते हो और फिर पूछते हो कि किसने बताया है! देखो, तुम कल जब कथा सुन रहे थे तो उस समय तुमने

कहा था कि मैं ये मोहरें स्वामीजी के पास जमा करा दूं। इसपर तुम कह रहे थे कि मोहरें लाकर बात करोगे और आज तुम आ गए हो।"

जगन्नाथ भौचक्का हो मुख देखता रह गया। एकाएक उसने अपनी जेब से रूमाल में बंधी गठरी स्वामीजी के चरणों में रखते हुए कहा, "महाराज! इसे आप अपने पास रखिए। मैं कभी अपने नगर को लौटा तो ले लूंगा।"

"परन्तु तब तो हम रहेंगे नहीं।"

"कहां चले जाएंगे?"

"जहां सब जाते हैं। इस समय मेरी आयु पच्चानबे वर्ष की है और मेरी वयस की अवधि पांच वर्ष और रह गई है। मैं उस समय इस शरीर को छोड़ दूंगा।"

"परन्तु यह तो अभी एक सौ वर्ष तक चलता रहने के योग्य प्रतीत होता है।"

"यह इसलिए कि मैंने इसे बहुत संभालकर रखा हुआ है, परन्तु इसकी गारण्टी एक सौ वर्ष की है। मैं तब किसी नये शरीर की याचना करूंगा।"

"किससे याचना करेंगे?"

"जिसके पास नये शरीर देने की सामर्थ्य है।"

जगन्नाथ ने बात बदल दी और पूछ लिया, "तो फिर इसे किसके पास रखूं?"

"जिसने तुम्हें ये दी थीं।"

"मुझे किसीने नहीं दीं। मैं तो पिताजी की तिजोरी से इन्हें बिना पूछे उठा लाया था।"

"तो क्या तुम्हारे पिताजी ने यह सोना बनाया था?"

जगन्नाथ इसका अर्थ समझ बोला, "वह तो परमात्मा ने बनाया है।"

"तो उनको वापस कर दो।"

"कैसे ?"

"इसे गंगाजी में बहा दो। जिसको परमात्मा चाहेगा, उसे दे देगा।"

जगन्नाथ को बात समझ आ गई। एक दिन स्वामीजी ने अपने एक प्रवचन में 'ईशावास्य मिदं' मन्त्र की व्याख्या में बताया था, 'प्रकृति की सब वस्तुएं परमात्मा की देन हैं। इन्हें लालच की दृष्टि से मत देखो।"

इसपर भी जगन्नाथ को गंगाजी में बहा देने की मीमांसा समझ नहीं आई। उसने कहा, "आप भी तो परमात्मा का स्वरूप हैं। आप इसे जिसे चाहें, दे सकते हैं। आश्रम के लिए भी रख सकते हैं।"

"आश्रम को इसकी आवश्यकता नहीं और मैं परमात्मा नहीं हूं। तब मैं कैसे जान सकता हूं कि किसको इसे देना चाहिए ? अतः इसे गंगाजी में बहा दो। जिसको यह मिलना होगा, मिल जाएगा।"

जगन्नाथ अब अधिक युक्ति-प्रतियुक्ति नहीं कर सका और चुपचाप गंगा के तट पर धोती उतार, कुर्ता लंगोट के ऊपर उठा गंगाजी में जितनी दूर जा सकता था, गया और पूरे बल से रूमाल में बंधी गठरी को वेग से बहती धार में फेंक वापस चला आया।

ब्रह्मानन्द किनारे पर खड़ा देख रहा था कि जगन्नाथ क्या करता है। वह जगन्नाथ को मोहरें फेंक प्रसन्नवदन गंगा से बाहर आते देख मुस्कराता हुआ देखता रहा। जब वह गंगा से बाहर निकल धोती पहन गीला लंगोट उतार निचोड़ने लगा तो स्वामीजी ने पूछा, "जगन्नाथ ! कैसा अनुभव करते हो ?"

"कुछ पहले से मस्तिष्क का बोझ हलका ही हुआ है।"

"ठीक है। जाओ और वह पुस्तक जो मैंने दी थी, स्मरण करो।"

दिन पर दिन व्यतीत होते गए। पांच वर्ष के उपरान्त एक दिन ब्रह्मानन्द जगन्नाथ की गुफा में आया और कहने लगा, "जगन्नाथ ! मैं बम्बई जा रहा हूं।"

"क्या काम है वहां भगवन् ?"

'एक सेठ इस आश्रम के ट्रस्टी हैं। वह रुग्ण हैं और मैं उनसे मिलने जा रहा हूं।"

"कब तक लौटेंगे ?"

'तुम मेरे साथ चलोगे।"

'जैसी आज्ञा हो।"

"इसमें मेरा एक उद्देश्य है।"

'क्या ?"

'यह तुम्हें वहा चलकर पता चल सकेगा।"

"कब चलना होगा ?"

"कल प्रात काल। मध्याह्न ढाई बजे ऋषिकेश स्टेशन पर पहुच जाएंगे। तीन बजे की गाडी से हरिद्वार और वहा से सहारनपुर। सहारनपुर से बम्बई का टिकट लेकर दो दिन में बम्बई। लौटने की बात वहा चलकर निश्चय करेंगे।"

'परन्तु वहा तो वस्त्र स्वयं नही धो सकेंगे। तो अधिक जोड़े ले चलने चाहिए ?"

"यह तुमने विचार नहीं करना। मैं अभी तुम्हें मध्याह्न के प्रवचन के उपरान्त दीक्षा देकर सन्यास दे दूगा और तुम्हें भगवे पहना दूगा। वे तुम पहनकर ही मेरे साथ चलना।"

जगन्नाथ अब कुछ समय से यह विचार कर रहा था कि वह भी भगवे पहन ले अथवा न। अब अकस्मात् स्वामीजी की बात सुन वह प्रसन्न हो चरण-स्पर्श कर हाथ जोड़ सामने खड़ा हो गया।

स्वामीजी ने सिर पर हाथ रख दीक्षा का मन्त्र पढ़ दिया।

अगले दिन ब्रह्मानन्द और जगन्नाथ बम्बई के लिए चल पड़े। पन्द्रह दिन के उपरान्त लौटे तो गुरु शिष्य दोनों ही प्रसन्न थे।

स्वामीजी ने वहा सेठ लक्ष्मीचन्दजी के निधन पर आश्रम के ट्रस्ट की सभा बुलाई और उसमें आश्रम की गद्दी का उत्तराधिकारी जगन्नाथ को नियुक्त करवा दिया। बम्बई में दस दिन रह आश्रम को लौट आए।

४

यह सन् १९२६ चल रहा था। लक्ष्मी मिशन कालेज मे एम० ए० कीपरीक्षा दे चुकीथी। उसकी सखी निर्मला का तो विवाह हो चुका था और वह अपने पति के पास राची रहती थी। निर्मला का भाई सतीश बैरिस्टर बन लाहौर लौट आया था और लाहौर मे 'प्रैक्टिस' करता था। वैसे तो वकालत का काम निर्मला का पिता अतुल बैनर्जी भी अभी करता था। उसने काम कम कर दिया था। वह केवल हाईकोर्ट में और वह भी कोई बहुत पेचीदा मुकद्दमा हो तो लेता था। सेशन कोर्ट और जिला कचहरी के मुकद्दमे सतीश ही लेता था। सतीश ने विवाह नही किया था और अभी भी लक्ष्मी से मिल उससे विवाह की इच्छा प्रकट करता रहता था। सतीश से विवाह की इच्छुक ज्योत्सना सरकार भी अभी तक थी। वह भी अविवाहिता थी। यद्यपि उसकी ओर से सतीश के लिए किसी प्रकार का यत्न नहीं हो रहा था।

इस समय तक लक्ष्मी का एक सहपाठी कुन्दनलाल मलहोत्रा लक्ष्मी से विवाह का प्रस्ताव कर रहा था। कुन्दन का पिता बम्बई मे कपड़े की एजेंसी लिए हुए था और वह स्वय अपनी मा के साथ लाहौर में रहता था।

लक्ष्मी की परीक्षा समाप्त हुई। अन्तिम दिन क्रियात्मक की परीक्षा थी। कुन्दनलाल के ग्रुप की परीक्षा एक दिन पहले हो चुकी थी और लक्ष्मी की परीक्षा अन्तिम दिन हुई थी।

लक्ष्मी गवर्नमेण्ट कालेज की फिजिक्स की प्रयोगशाला से बाहर निकली तो मलहोत्रा और सतीश दोनों आए हुए थे। सतीश तो अपनी मोटरगाडी लेकर आया था। मलहोत्रा पैदल ही था। गवर्नमेण्ट कालेज की इस प्रयोगशाला से लक्ष्मी के पिता की कोठी कुछ अधिक दूर नहीं थी। एक मील से कम अन्तर ही था। इस कारण मलहोत्रा ने आगे बढ़ नमस्ते कर कहा, "लक्ष्मीजी ! तागा कर लें अथवा पैदल चलेंगी ?"

"किधर चल रहे है ? मेरी मा के घर अथवा अपनी माताजी के घर ?"

इस समय सतीश प्रयोगशाला के बाहर खडी अपनी मोटरगाडी से उतर भीतर आता दिखाई दिया। लक्ष्मी ने देखा तो कह दिया, "वह भाई साहब आए हैं। कदाचित् अपनी गाडी लाए होंगे। यदि आपने हमारे घर चलना हो तो आप भी उनकी गाडी मे चल सकेंगे।"

इस समय सतीश सामने आ हाथ जोड नमस्ते कर पूछने लगा, "लक्ष्मीजी ! परीक्षा कैसी रही ?"

"तीनों प्रश्न ठीक कर आई हू।"

"मैं आपको अपनी माताजी के पास ले चलने के लिए आया हू।"

"मैं पहले अपनी माताजी के घर जा रही हू। यह भाई साहब भी वहा जा रहे हैं।"

कुन्दन आया तो था लक्ष्मी को अपनी मां के घर ले चलने के लिए, परन्तु लक्ष्मी को कही अन्यत्र ले जाने के लिए किसीको आया देख वह चुप रहा, अर्थात् वह मैक्लोड रोड वाली कोठी को जाने के लिए तैयार हो गया।

सतीश ने कहा, "मोटर तो है ही। चलिए, मैं आपको मैक्लोड रोड पर छोडकर अपनी मा को वहा ही ले आऊगा। तब वह आपसे और आपकी माताजी दोनों से एकसाथ मिल लेंगी।"

"तो आज आप कोर्ट नहीं गए ?"

"आज वहा कोई काम नहीं है। मैंने यत्न कर आज का दिन खाली रखा हुआ है।"

"किसलिए ?"

"एक लडकी के विवाह का प्रबन्ध करना है और आज उसका मुहूर्त है।"

"और वह लडकी ज्योत्सना है ?"

"नही। वह अब मुझे गाली देती है।"

इस समय तक तीनों प्रयोगशाला के फाटक की ओर चल पड़े थे और कुन्दनलाल दोनों, लक्ष्मी और सतीश, में हो रही बातचीत को सुन रहा था। लक्ष्मी ने कह दिया, "तब तो बहुत मजा रहेगा।"

"क्या मजा रहेगा?"

"भाभी और भैया में तर्क-कुतर्क और कदाचित् मुक्का-मुक्की होते देखने का।"

"परमात्मा करे, तुम्हारी यह इच्छा पूर्ण न हो।"

"तो बहन को यह आशीर्वाद दे रहे हो?"

"नहीं लक्ष्मी! अपने लिए शुभ कामना कर रहा हूं।"

कुन्दन और लक्ष्मी पीछे की सीट पर बैठ गए और सतीश ड्राइवर के पास बैठ गया। सतीश ने ड्राइवर को कह दिया, "मैक्लोड रोड बारह नम्बर।" और स्वयं घूमकर पूछने लगा, "लक्ष्मीजी! इनका परिचय?"

"ओह! यह तो गाड़ी में सवार होने से पहले ही कराना चाहिए था। यह हैं कुन्दनलाल मलहोत्रा। मेरे सहपाठी हैं और एम० ए० की परीक्षा मेरे साथ ही दी है। इनके ग्रुप की अंतिम परीक्षा कल हो गई थी। इनके पिता बम्बई में आढ़त की दुकान करते हैं। मुझसे बहन-समान स्नेह करते हैं।"

"और कुन्दनजी!" लक्ष्मी ने कुन्दन को सतीश का परिचय कराते हुए कहा, "यह हैं भैया सतीश।"

लक्ष्मी ने दोनों को भाई साहब कहकर सम्बोधन किया तो दोनों को सन्तोष हुआ। दोनों अपने मन में विचार करते थे कि वह उसे भाई साहब तो केवल औपचारिक रूप में कह रही है।

मोटरगाड़ी को बारह नम्बर मैक्लोड रोड पर पहुंचने में देर नहीं लगी। सतीश लक्ष्मी और कुन्दन को भीतर कोठी में ले गया। वहां ड्राइंगरूम में लक्ष्मी की मां सरस्वती और कुन्दनलाल की माता दुर्गादेवी और कुन्दन की छोटी बहन कौमुदी बैठी थीं।

कुन्दन ने माँ को बैठे देख प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "तो मा ! तुम यहां आई हुई हो ?"

"हा । मैंने समझा है कि मैं स्वय ही चलकर बहन सरस्वती को मिलू । तुम पहले लक्ष्मी को लाओगे और यह माताजी से पूछे बिना बात करेगी नही । इससे यहा दोनों से एकसाथ बात कर लूगी ।"

सरस्वती ने सतीश को सम्बोधन करते हुए कहा, "सतीश बेटा ! क्या लोगे ? कॉफी, चाय अथवा कोई ठण्डा पेय ?"

"मैं लक्ष्मी को अपनी माताजी के पास ले चलने के लिए परीक्षा-भवन पर पहुचा था, परन्तु यह इन भाई साहब के साथ इधर आने वाली थी । इस कारण इन्हे यहा छोड अब माताजी को यहा लाने के लिए अपनी कोठी पर जा रहा हू । दस मिनट मे उनको लेकर आता हू । वह कहती हैं कि आपसे और लक्ष्मीजी से बात करेंगी ।"

"मैं समझती हू कि बात हो गई है । इस बार रक्षाबन्धन के दिन तुम इससे राखी बधवा लो ।"

"मौसी ! यह आप स्वय माताजी से कहना और वह अपने मन की बात आपको बताएगी ।"

"तो ठीक है । जाओ, उनको ले आओ ।"

कुन्दन की माता और उसकी बहन बैठी ठण्डा अन नास का शरबत ले रही थीं । मई मास था और गरमी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी ।

सरस्वती कुन्दन को अपनी मा और बहन के बीच मे बिठा स्वय लक्ष्मी को लेकर पृथक् कमरे मे चली गई ।

कुन्दन ने मां से पूछा, "तो तुमने लक्ष्मी की माताजी से कुछ बात कही है ?"

"हा । मैंने यह कहा है कि लक्ष्मी मुझे बहुत ही प्यारी लगती है । मैंने तुम्हारे पिताजी को बम्बई लिखा था और उन्होंने लक्ष्मी और उसकी माताजी को बम्बई आने का निमत्रण दिया है । मैं सरस्वतीजी को वहां चलने के लिए कह रही थी कि तुम आ गए हो ।

"मैं समझती हू कि मा लडकी से इसी निमन्त्रण के विषय मे बात करने पृथक् मे ले गई है।"

"यह जो बगाली महाशय हैं और अपनी मा को यहां ला रहे हैं, मुझे सन्देह है कि इनका भी कुछ वही आशय है, जो तुम्हारा है।"

'तो यह भी लक्ष्मी को बम्बई चलने का निमन्त्रण दे रहा है ?"

कुन्दन ने मुस्कराते हुए कहा, "मां, नहीं। सबका विवाह बम्बई चलकर हो, यह कोई नियम नही है। बिना बम्बई गए भी तो विवाह हो रहे हैं। लक्ष्मी तो उसे भाई साहब कहकर पुकार रही थी, परन्तु वह लक्ष्मी की ओर ऐसी दृष्टि से देख रहा था, जैसे देखने को मेरा चित्त करता है।"

अब बात कौमुदी ने की। उसने पूछा, 'पर दादा! तुम इस लडकी में क्या देख रहे हो ? इससे कई गुणा अच्छी तो मेरी सखी सुधा है।"

कुन्दन हस पडा और बोला, 'हा। लाला राधाकृष्ण के तबेले में एक श्वेत बछडी बधी हुई है। कौमुदी, तुम पशु और मनुष्य में अन्तर नही जानतीं और मैं जानता हू।"

बात आगे नही चल सकी। सरस्वती और लक्ष्मी दोनों पिछले कमरे से आ कुन्दन इत्यादि के सामने कुर्सियों पर बैठ गईं।

इस समय तक घर की सेविका कुन्दन के सामने भी शरबत का गिलास रख गई थी और वह चुस्कियां लेता हुआ पी रहा था।

आते ही बात सरस्वती ने की। उसने कहा, 'मैंने लक्ष्मी से पूछा है। यह तो बम्बई चलने के लिए तैयार है, परन्तु इसके पिताजी से भी तो स्वीकृति लेनी है।"

"तो मैं कल पता करने आऊ ?" कुन्दन ने उत्सुकता से पूछा।

"आप कल भी आ सकते हैं। बात तो आज रात ही हो जाएगी।"

इससे कुन्दन की माता दुर्गावती और बहन कौमुदी प्रसन्नता से सरस्वती का धन्यवाद कर चलने के लिए तैयार हो गईं। सरस्वती और लक्ष्मी इनको छोडने कोठी के बाहर तक आईं। दुर्गावती एक तांगे में

भाई थी और तांगा अभी बाहर रोक रखा था।

ये लोग सरस्वती इत्यादि को नमस्कार कर कोठी के फाटक की ओर ही जा रहे थे कि सतीश मोटर में अपनी माता भगवतीदेवी को लेकर वहां आ गया। सरस्वती आगे बढ़ भगवती से गले मिली और निर्मला का सुख-समाचार पूछने लगी।

उत्तर भगवती ने ही दिया। उसने कहा, "उसका कल ही पत्र आया है। वह अपने पति के साथ अगले मास यहां आ रही है। उसने एक पत्र लक्ष्मी के लिए भी दिया है। वह मैं लक्ष्मी को अपने हाथ से देना चाहती थी। इसी कारण इसे कोठी पर लाने के लिए सतीश को भेजा था, परन्तु आपके मेहमान जो आए हुए थे, इस कारण लक्ष्मी यहां चली आई और मैं पत्र यहां ले आई हूं।"

"आओ, भीतर आ जाओ। इनके विषय में भी बताती हूं।"

सब भीतर ड्राइंगरूम में चले गए।

वहां इनको बिठा सरस्वती ने सेविका को कॉफी लाने के लिए कह दिया। जब तक सेविका कॉफी ला रही थी, सरस्वती ने कुन्दन के माता-पिता और उनके बम्बई में काम की बात बताकर कहा, "यह लड़का लक्ष्मी से विवाह के लिए उत्सुक प्रतीत होता है।

"लक्ष्मी ने इसे विश्वास दिया हुआ है कि वह वर्तमान परीक्षा के उपरान्त अपने मन की बात सदा के लिए बता देगी। यदि इसने विवाह करना होगा तो उसे बता देगी, अन्यथा विवाह की चर्चा को छोड़ अपने दूसरे काम में लग जाएगी।"

"किस काम में लग जाएगी?"

"इसकी अध्यापिका शारदाजी इसे अपनी भांति अविवाहित रहने की प्रेरणा दे रही हैं।"

"दि डेविल! शारदाजी सदा ही उलटी बात करती रहती हैं। जो कुछ भी लोक में नहीं हो तो उसे वह 'नॉरमल' व्यवहार समझती हैं। उनको अपना जीवन संसार से विपरीत अति रसमय लग रहा है।"

"देखो बेटा सतीश !" सरस्वती ने कहा, "विचार अपना-अपना है। वह पिछली छुट्टी के दिनों में यहां आई हुई थीं तो अपने जीवन से सर्वथा सन्तुष्ट प्रतीत होती थीं। उनका जीवन पढ़ना और पढ़ाना है, बस।"

"मांजी ! यदि आधी दुनिया भी उनकी बात मान ले तो संसार उजड़ जाएगा। यह चहल-पहल और नये-नये आविष्कार और सुख-सुविधा के सामान सब विलुप्त हो जाएंगे। पृथ्वी पर रोटी, कपड़ा उपलब्ध होना भी कठिन हो जाएगा। यह जो मनुष्य की परम्परागत उत्तरोत्तर वृद्धि होती है तो संघर्षमय जीवन चलता है और मनुष्य जीवन के नये-नये उपाय खोज निकालता है।"

सरस्वती तो समाजशास्त्र की इस बात को न तो समझती थी और न ही इसका उत्तर जानती थी। वह सतीश और उसकी मां का मुख देखती रह गई। उत्तर लक्ष्मी ने ही दिया। उसने कहा, "एक सिद्धान्त है। 'ऐवरी बॉडी फॉर हिमसेल्फ'। यदि इसको मानें तो धनियों की सुख-सुविधा में वृद्धि होती है अथवा कमी होती है, इसकी चिन्ता हमें क्यों लगे ? मैं समझती हूं कि यदि विवाह के बिना रहा जा सकता है तो फिर इस झंझट को किसलिए मोल लिया जाए ? आप कहते हैं कि समाज के लिए। समाज अपनी बात स्वयं देख ले। जिसे खेतों में खाद देकर खीरे, ककड़ी की खेती अधिक करनी है, करे। समाज उन खेतों में पैदावार अधिक कर लेगा, जो पैदावार करने के लिए व्याकुल हो रहे हैं।"

"परन्तु समाज के सुख तो हम भी भोग करते हैं।" सतीश ने कोठी के ड्राइंगरूम की सजावट और सुख-सुविधा के सामान की ओर देखकर कह दिया।

"हां। फिर इनका त्याग करना पड़ेगा।"

"तो देख लो। विवाह न करने का कितना बड़ा मूल्य देना होगा।"

"भैया ! यही विचार कर रही हू ।"

"हा, करो । साथ ही एक वचन मैं चाहता हू कि विवाह करोगी तो मेरी अर्जी भी सुन ली जाए ।"

'आपके दावे का विकल्प तो मैंने विचार किया हुआ है । गोली की तार मैं सदा अपनी जेब मे रखती हू ।"

"ठीक है । यह तब करना, जब विवाह के लिए मेरी किसी भी दूसरे के मुकाबले मे बहस सुन लेना ।"

"अच्छी बात । परन्तु भैया ! जज किसको बनाओगे ? मैं तो विवादास्पद वस्तु रहूगी । एक दावेदार आप होंगे और कोई अन्य भी हो सकता है । मैं समझ रही हू कि कुन्दनलाल तो हैं ही । कदाचित् तब तक कोई अन्य भी आ जाए ।"

सतीश मुख देखता रह गया । फिर कुछ विचारकर बोला, "मैं जज तो आपके माता-पिता को ही मानूगा । यदि ये चाहे तो मेरे माता-पिता को भी सहायता के लिए साथ बिठा सकेंगे । बहस मैं करूगा और दूसरी ओर से जो कोई भी करना चाहे ।"

सरस्वती ने बात समाप्त करते हुए कहा, "यह ठीक है । परन्तु सतीशजी, अभी तो मैं और लक्ष्मी एक-दो दिन मे बम्बई जाएगे । वहा से लौटकर यह मुकद्दमा सुनने के लिए अदालत बैठ जाएगी । उसमे वस्तु एक जीवित, जाग्रत् प्राणी होने के कारण स्वयं भी अपना विचार उपस्थित करेगी ।"

कॉफी आ गई थी और सब पीने लगे थे । भगवती ने पूछ लिया, "आप बम्बई कब जा रही हैं ?"

'मेरी इच्छा तो जाने की हो रही है । लोग कहते हैं कि वह नगर दर्शनीय है । अब जाने का बहाना मिल रहा है । इसपर भी लक्ष्मी के पिता की इच्छा और स्वीकृति के बिना नहीं जा सकेंगे ।"

"तो ऐसा करिए, आप अपने कार्यक्रम की सूचना देते रहा करें । अब तो आपकी कोठी पर भी टेलीफोन लग गया है । आप अपना कार्य-

मय बता दीजिएगा।"

इस प्रकार बात निश्चित हो गई।

५

कुन्दन और उसकी माता तथा बहन कौमुदी तो बम्बई सरस्वती, केशवदास और लक्ष्मी से दो दिन पहले ही चले गए थे। सरस्वती ने जब अपने पति से कुन्दनलाल और उसकी माता के प्रस्ताव का वर्णन किया तो केशवदास ने कह दिया, "हमारा उनके निमन्त्रण को स्वीकार करने का अर्थ यह समझा जाएगा कि हम लड़की का विवाह वहां करने के लिए तैयार हैं।"

"हां। यह तो है ही, परन्तु लड़की अब सज्ञान और वयस्क हो चुकी है और विवाह की बात उसने ही तय करनी है। मैं तो उसकी सरक्षिका के रूप में हो जा रही हूं।"

"यह तो ठीक है। हम स्वीकार कर रहे हैं क्या ?"

"देखिए जी, कुन्दन एक व्यापारी का लड़का है। पजाबी है। और लाहौर के रहने वाले ही हैं। उनका जीवन सुख-सुविधायुक्त भी है। इस कारण यदि लक्ष्मी मान जाए तो हमें इसमें आपत्ति करने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता।

"मैंने लक्ष्मी से पूछा है। उसने एक बात कही है कि वह अब विवाह तो करने को तैयार है और उसके लिए कुन्दन और सतीश में निर्वाचन की बात है। इस कारण वह कहती है कि सतीश के माता-पिता तो देखेभाले हैं और अब कुन्दन के माता-पिता को भी देख ले। पीछे निश्चय करेगी।"

"कुन्दन की माताजी को तो उसने देखा ही है।"

"हां। वह कहती थी कि तनिक कुन्दन के पिताजी के दर्शन भी कर ले। पीछे निश्चय करने में सुविधा होगी।"

"मैं तो सतीशजी के पक्ष में अपनी सम्मति बना चुका हू, परन्तु अभी तक गाडी अटकी हुई है तो लक्ष्मी की ओर से ही।"

"शारदा ने लक्ष्मी के मस्तिष्क में जोकुछ भर रखा है, उससे मुक्ति प्राप्त करने की अब वह इच्छा करने लगी है। मैं इसे शुभ मानती हू।"

"परन्तु पहले तो तुम मास्टराइन को सिर पर चढाए हुए थी ?"

"वह उसकी विद्वत्ता के कारण था। उसे ससार का बहुत अच्छा ज्ञान है, परन्तु उसे अपने विषय मे ज्ञान प्रतीत नही होता।"

"तो तुमने बम्बई चलने की इच्छा कुन्दन की माता के सामने व्यक्त की है ?"

"यह लक्ष्मी के कहने पर ही की है। इसपर भी यह कह दिया है कि आपकी स्वीकृति से ही यह हो सकेगा।"

"मैं विचार कर रहा हू कि अब सुन्दर दुकान का काम देखने लगा है। इससे दुकान उसके हवाले कर मैं भी लाहौर से बाहर निकलू।"

"यह सुमति आपको किसने दी है ? मुझे उसका धन्यवाद करना चाहिए।"

केशवदास हस पडा। हसते हुए बोला, "सुझाव तो अपने पुरोहित बृजलाल ने दिया है, परन्तु समर्थन सुन्दरदास की योग्यता ने दिया है। वह ग्राहकों के साथ मुझसे अधिक सफलता के साथ पेश आता है।"

"पण्डित बृजलाल क्या कहता था ?"

"कहता था कि मुझे अब तीर्थयात्रा का पुण्य-लाभ करना चाहिए। यह कह रहा था कि इस वर्ष मुझे अमरनाथ की यात्रा पर जाना चाहिए और शीत ऋतु मे दक्षिण के तीर्थों पर और फिर बैसाख मे बद्रीनारायण और अन्य धामों की। इस प्रकार उसने एक वर्ष का कार्यक्रम बना दिया है।"

"और मैं समझता हू कि यह यात्रा बम्बई से ही आरम्भ करनी चाहिए।"

"हा। यदि लक्ष्मी का वहीं काम बन जाए तो एक तीर्थयात्रा का

लाभ तो यहां ही हो जाएगा।"

इस प्रकार जो प्रस्ताव पहले केवल लक्ष्मी और सरस्वती के लिए था, वह अब केशवदास के लिए भी हो गया। इसपर भी केशवदास का कहना था कि उनके रहने का प्रबन्ध किसी होटल में किया जाए। वह वहां का खर्चा अपने पास से देना चाहेगा।

परन्तु जब माता पिता के साथ लक्ष्मी बम्बई विक्टोरिया स्टेशन पर उतरी तो कुन्दन, उसकी माता तथा बहन कौमुदी प्लेटफार्म पर उपस्थित थीं। परस्पर नमस्ते और सुख समाचार के उपरान्त बात हो गई।

सरस्वती ने दुर्गावती से पूछा, "तो कहां हमारे ठहरने का प्रबन्ध किया है ?"

'एक सजा-सजाया कमरों का सेट मिल गया है। अपने मकान से कुछ अन्तर पर है, परन्तु एक मोटरगाडी आपकी सेवा में रख दी है, जिससे आपको घूमने फिरने की सुविधा रह सके। कुन्दन का बड़ा भाई आपको बम्बई दो दिन मे दिखा देगा।"

इसपर केशवदास ने पूछ लिया, 'इस मकान के लिए कितना भाडा देना होगा ?"

'कुछ नही। कमलापति जगीमल वालों का मेहमानखाना है। उसमे कई फ्लैट हैं। एक आपके लिए सुरक्षित कर दिया गया है।"

कौमुदी विस्मय मे लक्ष्मी की ओर देख रही थी। लक्ष्मी ने कौमुदी की बाह मे बाह डाल स्टेशन से बाहर को चलते हुए पूछ लिया, "कौमुदी बहन ! क्या देख रही हो मेरे मुख पर ?"

कौमुदी हस पडी। हसते हुए बोली, 'भैया कुछ कह रहे थे और वह मैं 'वुड बी' भाभी के मुख पर देख रही थी।"

'क्या कहा था 'वुड बी' ननद के भैया ने ?"

'यही कि लक्ष्मी के मुख पर एक विशेष ओज है, जो उसे ससार की किसी अन्य लडकी के मुख पर दिखाई नहीं देता।"

"और 'वुड बी' ननद को क्या दिखाई दिया है ?"

इस प्रश्न पर कौमुदी फिर हँस पड़ी और उत्तर देने से बचने के लिए सरस्वती की ओर घूमकर पूछने लगी, "मौसी ! कितने दिन का कार्यक्रम बनाकर यहां आई हैं ?"

सरस्वती ने कहा, "तुम्हारी माताजी कह रही हैं कि मुकन्दलाल-जी हमें बम्बई की सैर कराएंगे। अब वह कितने दिन में करा सकेंगे, यही देखना है।"

"भैया कुन्दनलाल तो अब बम्बई में ही रहेंगे और दुकान का काम देखेंगे।"

"और बेटी कौमुदी कहां रहने का कार्यक्रम बना रही है ?"

"मेरा तो पत्ता कट गया है। मुझे ये कलकत्ता से भेजने का टिकट कटवाकर दे रहे हैं।"

"सत्य ?"

"माताजी कहती हैं कि लड़कियों को अधिक अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ी की पुस्तकें पढ़ने की आवश्यकता नहीं। अब अपनी हिन्दी भाषा में बहुत पुस्तकें प्रकाशित होने लगी हैं, जो लड़कियों को पढ़नी चाहिए।"

"और बेटी कौमुदी यह मान गई है ?"

"पिताजी कहते हैं कि लड़कियां गाय होती हैं। गले में रस्सा डाल जिसके हाथ में दे दी जाए, उसके साथ वे चल पड़ती हैं।"

अब हंसने की बारी लक्ष्मी की थी। वह कौमुदी की बात सुन रही थी। सब स्टेशन से निकल आए थे और कुन्दनलाल ने दूर खड़ी गाड़ी को हाथ के संकेत से बुलाया। विक्टोरिया गाड़ी थी। वह आई तो लक्ष्मी के माता पिता और कौमुदी उसमें बैठ गए। सामान गाड़ी के पीछे कैरियर पर बांध दिया गया।

दुर्गावती ने सरस्वती को कहा, "यह गाड़ीवान आपको उस फ्लैट पर ले जाएगा और कौमुदी आपकी सुख-सुविधा देखेगी। आप स्नानादि

से निवृत्त हो लें, तब मुकन्दलाल आपको अपनी गाडी मे प्रात के अल्पाहार के लिए अपने घर पर ले आएगा।"

इस प्रकार कौमुदी और लक्ष्मी की बात चलने का अवसर मिल गया। फ्लैट मे दो बेडरूम और एक ड्राइगरूम था। दोनों बेडरूम के साथ बाथरूम भी थे। सरस्वती और लक्ष्मी के पिता पहले शौचादि, स्नान से निपटने चले गए और लक्ष्मी तथा कौमुदी ड्राइगरूम मे बाथरूम के खाली होने की प्रतीक्षा करने लगे। लक्ष्मी ने मुस्कराते हुए पूछा, "तो गाय की बछडी के गले मे रस्सा बाध किसके हाथ मे पकडा दिया है ?"

"अभी पकडाया नहीं। हा, पकडाने का प्रबन्ध हो रहा है।"

"तो अभी समय है ?"

'किस बात का ?"

"बहन कौमुदी के कलकत्ता जाने में।"

"मैं कलकत्ता के स्वप्न लेने लगी हू।"

"तो क्या हमारे 'वुड बी' जीजाजी को देखा है ?'

"वह अगले सप्ताह दर्शन देने के लिए आने वाले हैं। उनका फोटोग्राफ तो आया है।"

"और पसन्द है ?"

"भैया कुन्दन कहते थे कि गाय के पसन्द न पसन्द का तो प्रश्न ही नही होता। यह वह पिताजी की बात का व्यग्यात्मक उत्तर दे रहे थे।"

"परन्तु गाय, मेरा मतलब है कि बछडी को तो यह व्यग्य पसन्द नहीं आया होगा।"

"परन्तु इसमे भी मजा है।"

"क्या ?"

"अपने को चिन्ता करने की आवश्यकता नही रहती। यदि कहीं पीछे मनबन हो जाए तो मा को घर आकर कहा तो जा सकता है कि

यह अब उनका काम है कि सांड को दो-चार डण्डे लगा सीधा कर दें। उन्होंने ही तो ढूढ़ा था। अपने ढूढ़े से झगड़ा होने पर किसीपर दोषारोपण नहीं किया जा सकता।"

"हां। यह तो ठीक है, परन्तु यही तो मनुष्य और पशु मे अन्तर है। पशु डण्डे से हांके जाते हैं और मनुष्य समझ-समझाकर व्यवहार करते हैं।"

"कौन समझता है? सब डण्डे के जोर से हांके जा रहे हैं। कहीं डण्डा धन का है और कहीं बल का। सामान्य मनुष्यों के व्यवहार मे भी तो डण्डा ही कार्य करता है। वह है कामना। कामना वासना भी होती है।"

ज्यों-ज्यों बात चलती जाती थी, लक्ष्मी के मन मे बम्बई के लोगो से ग्लानि बढ़ती जाती थी। वह समझ रही थी कि शारदा बहनजी का कथन सोलह आने सत्य है कि हिन्दू समाज मे स्त्रियां गाय-बछड़ियों से अधिक नहीं समझी जातीं। उनके माता-पिता जिसके हाथ मे उनका रस्सा पकड़ा देते है, उसके साथ ही चल पड़ती हैं और फिर मन को तसल्ली देने के लिए भाग्य, कर्मफल और परमात्मा को बीच मे ला खड़ा करती हैं।

इसपर भी वह अपने मन मे अब विवाह के लिए उत्कट इच्छा अनुभव करने लगी थी। यह कालेज के जीवन में अंग्रेज़ी के नावल पढने से उत्पन्न हुई थी। नावल पढने में रुचि कुन्दनलाल ने उत्पन्न की थी।

कुन्दनलाल बिरादरी का लड़का होने से लक्ष्मी के पिता तथा भाई को जचता था और यह उसका परिचय बढाने का स्रोत हो गया। जब पुस्तक, विशेष रूप मे नावल, पढने के लिए दी जाने लगी तो परस्पर विवाह के विषय पर बातचीत भी होने लगी। प्रारम्भ मे तो लक्ष्मी का निश्चय विवाह न करने का ही था, परन्तु जब इच्छा जाग्रत् हुई तो सतीश बैनर्जी की याद आ गई।

सतीश बैनर्जी से कुन्दनलाल केशवदास को अधिक पसन्द आया

और वह बम्बई की यात्रा पर चल पड़ा। जब लक्ष्मी स्नान कर रही थी तो पति ने पत्नी को अपने मन की भावना बता दी। उसने सरस्वती से कहा, "मैं यह बम्बई की यात्रा विफल नहीं जाने दूंगा।"

परन्तु यह हमीपर तो निर्भर करता नहीं। मुझे तो भय लगा रहता है कि कहीं लक्ष्मी की रुचि के विपरीत कार्य किया गया तो वह भूख-हड़ताल कर देगी। गांधीजी ने यह हम जैसे मूर्खों को समझाने का बहुत अच्छा साधन निकाला है। यह लड़की तो गांधीजी की चेली बनी घूमती है।"

"मैं यह नहीं कह रहा। मेरा कहना तो यह है कि यदि लक्ष्मी का विवाह निश्चय हो गया तब तो यात्रा का उद्देश्य सिद्ध होगा ही, परन्तु यदि इस दिशा में सम्बन्ध न बन सका तो मैं लाला गिरधारी-लाल की जो लड़की कौमुदी है, उसे अपने घर ले चलने के लिए बाज़ी लगा दूंगा।"

"क्या बाज़ी लगा देंगे? वह तो कह रही है कि उसको कलकत्ता भेजने का विचार बन चुका है।"

तब तो कठिन समस्या उत्पन्न हो जाएगी। सुन्दरदास ने कहा था कि वह कौमुदी से विवाह करने की इच्छा कर रहा है।"

"बहुत कठिन है।" सरस्वती का मत था।

जब केशवदास और उसकी पत्नी तथा लड़की स्नान कर चुके तो कौमुदी इनके लिए चाय का प्रबन्ध कर रही थी। ये लोग चाय और बिस्कुट ले ही रहे थे कि मुकुन्दलाल का बड़ा भाई मुकन्दलाल अपनी मोटरगाड़ी लेकर आया और इन सबको बिठाकर अपने मकान पर ले गया।

मार्ग में ही केशवदास ने कौमुदी के बड़े भाई से कौमुदी के विषय में बातचीत प्रारम्भ कर दी। केशवदास ने कहा, "यह तुम्हारी बहन तो बहुत समझदार प्रतीत होती है।"

"क्या समझदारी की बात की है इसने? घर में तो यह बछड़ी

समझी जाती है।"

सब हसने लगे। सरस्वती ने कौमुदी के गले मे बाह डालकर अपने अग लगाते हुए कह दिया, "मुझे तो यह बहुत ही प्यारी लड़की लग रही है। बछड़ी-वछड़ी कुछ नहीं। यह लक्ष्मी की सखी कौमुदी है।"

सरस्वती, कौमुदी और लक्ष्मी पीछे की सीट पर बैठी थी और लाला केशवदास अगली सीट पर मुकन्दलाल के साथ बैठा था। मुकन्द-लाल स्वय गाड़ी चला रहा था।

कौमुदी ने व्यग्यात्मक भाव में कहा, "मौसी ! भैया कुन्दन तो बहन लक्ष्मी के लिए लाहौर मे ही कोई काम करने की बात कर रहे हैं।"

"मैं समझती हू," सरस्वती ने कहा, 'यह अब एक-दो दिन मे ही निश्चय हो जाएगा। लक्ष्मी के भैया ने इसको घर से निकाल बम्बई की यात्रा के लिए तो तैयार कर ही दिया है।"

"बहुत खूब !" हसते हुए कौमुदी ने कहा, "भैया 'वुड बी' भाभी के लिए लाहौर जाने के लिए तैयारी कर रहे हैं और 'वुड बी' भाभी के भैया भाभी को बम्बई की यात्रा करने पर तैयार कर रहे हैं। मैं समझती हू कि दोनों शहरो के बीच ही कही आगरा, ग्वालियर पर समझौता हो जाएगा।"

इस समय ये लोग लाला गिरधारीलालजी के मकान पर जा पहुचे। बहुत बड़ा-सा मकान था और उसके नीचे भूमि तथा तहखाने म तेरह कपड़ा मिलों के गोदाम का काम चलता था। कार्यालय में पन्द्रह-सोलह क्लर्क काम करते थे और कार्यालय का काम मुकन्दलाल ने सभाला हुआ था। पिता गिरधारीलाल तो मिलो के मालिको से सम्बन्ध बनाए रखने का काम करने वाला था।

बम्बई मे काम बहुत अधिक था। इसी कारण पिता यह कह रहा था कि कुन्दन को अब दुकान का काम करना चाहिए।

कुन्दन पढ़ाई छोड़ बम्बई आ कामधन्धे में लग जाने में शर्त यह

लगा रहा था कि उसका लक्ष्मी से विवाह मान लिया जाए। यह थी पृष्ठभूमि कुन्दन के लक्ष्मी की माताजी के बम्बई आने पर बातचीत करने की।

लक्ष्मी ने अपनी मा से स्पष्ट कह रखा था, "मा ! विवाह तो अब होगा ही, परन्तु कहा होगा, यह अभी विचारणीय है। सतीश भैया भी तो हैं, जिन्होंने राखी बंधवाने से इनकार किया हुआ है।"

"ठीक है।" सरस्वती का कहना था, "विचार कर लो। हम तो तुम्हारे विचारानुसार ही कार्य करने के लिए तैयार हैं।"

जब सरस्वती इत्यादि मकान पर पहुचे तो कुन्दन की माताजी ने अपने पति का परिचय मेहमानों से कराया और फिर अपने पति का भी परिचय करा दिया। उसने कहा, "यह हैं कुन्दन के पिताजी। जब कुन्दन ने लक्ष्मी को घर लाने का विचार प्रकट किया तो इन्होंने भी लड़की को देखने का विचार प्रकट कर दिया। अब आप यहा आ ही गए हैं। सब कुछ आप समझ-समझा लें तो अधिक ठीक होगा।"

जब तक भोजन परोसा जाता रहा, गिरधारीलाल केशवदास को पृथक कमरे मे ले गया और विवाह-सम्बन्धी बात करने लगा। उसने पूछ लिया, "आप लड़की के विवाह पर क्या कुछ देने वाले हैं ?"

"आप कितने कुछ की आशा करते हैं ?"

"बात यह है कि मैंने कौमुदी की सगाई कलकत्ता मे सेठ जग्गीमल किशोरीलाल के परिवार मे करने का निश्चय किया है और वे पाच लाख दहेज के रूप में माग रहे हैं।"

"और यदि आपको कौमुदी के विवाह पर एक पाई भी व्यय न करनी पड़े तो कैसा अनुभव करेंगे ?"

"वैसे तो मैं इतना कुछ दे सकता हू, परन्तु मैंने एक प्रस्ताव उनके समक्ष रखा है कि मैं उनकी फर्म मे एक हिस्सेदार बन जाता हू। दहेज का दहेज भी हो जाएगा और व्यापार में हानि भी नहीं होगी। अभी इसका उत्तर नहीं मिला।"

केशवदास समझ गया कि यह पंजाबी लाला मारवाड़ियों में रहता हुआ रुपये की ऊंच-नीच को समझने लगा है। दहेज में देने के स्थान पर व्यापार मे लगाया धन लाभ कराएगा और साथ ही सम्बन्ध सुदृढ़ करने में सहायक हो जाएगा।

इस कारण पूछने लगा, "परन्तु क्या ये कलकत्ता वाले आपको अपने व्यापार मे सम्मिलित करने के लिए तैयार हैं?"

"कोई कारण नहीं तैयार न होने मे।"

"तो मैं आपको एक प्रस्ताव करता हू कि आपके व्यापार में मैं पांच लाख लगा सकता हू। बताइए, आप लडकी का विवाह लाहौर मे कर देंगे?"

"तो आपका लडका इस प्रकार का सम्बन्ध बनाने के लिए तैयार हो जाएगा?"

"उसे तैयार कर लिया जाएगा।"

"परन्तु आप तो लडकी के विवाह का प्रबन्ध करने आए हैं न?"

"वह तो लडकी और लडके की इच्छानुसार ही होगा। मैं तो आपसे व्यापार की बात कर रहा हू। देखिए गिरधारीलालजी! मैं तो आपसे सम्बन्ध बनाने के लिए उत्सुक हू और आपकी लडकी के दहेज में पाच लाख की बचत हो जाएगी। मेरा पाच लाख एक चलते काम में लग जाएगा। बताइए, यह कैसा रहेगा?"

गिरधारीलाल बातचीत इस स्तर पर होती देख सन्तुष्ट था। उसने कह दिया, "तो पहले कुन्दन को अपनी होने वाली बीवी से बात कर लेने दीजिए। यदि वह विवाह हो गया तो आप अपनी लडकी के नाम पर पाच लाख रुपये गिरधारीलाल क्लाथ एजेंसी के नाम कर दीजिए और यदि यह सम्बन्ध न हो सका तो मैं फिर कुन्दन की मां से कौमुदी के विषय मे बात करूंगा। तब आप अपने लडके को हमारी एजेंसी में भागीदार बना दीजिएगा। तब सम्बन्ध अति सुदृढ़ हो जाएगा।"

केशवदास ने कह दिया, " मुझे इस प्रकार का प्रबन्ध अधिक पसन्द है। यद्यपि मैं बम्बई आते समय अपने साथ चैकबुक लेकर आया हूं और दहेज देने के लिए भी तैयार हू, परन्तु लडकी गाधीजी की चेली है। यदि इसके मन की बात न मानी जाए तो भूख-हडताल कर मरने के लिए तैयार हो जाती है।

"परन्तु लडके के विषय मे यह बात नहीं। वह तो बेचारा गाय है और उसे जैसा कहो, मान जाता है।"

"क्या आयु है उसकी इस समय ?"

"उन्नीस पार कर चुका है। लडकी से दो वर्ष छोटा है।"

"यही बात कुन्दन कह रहा था।"

"क्या कह रहा था ?"

"यही कि लक्ष्मी को घर लाने से धन-सम्पद और बाल-बच्चों की लहर-बहर लग जाएगी। वह कहता था कि लक्ष्मी के पाच भाई-बहन हैं।"

केशवदास हस पडा और बोला, ' सब ईश्वर की माया है। उसकी आज्ञा के बिना तो एक तिनका भी नहीं तोडा जा सकता। बच्चे बनाना तो बहुत बडी बात है।"

"परन्तु यहा ऐसा नही समझा जाता। यहा एक वादिया एण्ड कम्पनी है। वह 'प्रोफिलैक्टिस' बेचता है और कहता है कि बच्चे निर्माण करना मनुष्य ने अपने अधीन कर लिया है।"

"हां। हमारी एक शारदा बहनजी हैं। वह एक दिन बता रही थीं कि मनुष्य बना नहीं सकता, परन्तु पैदा होने का मार्ग बन्द कर सकता है।"

दोनों हस पडे। इस समय मुकन्दलाल कमरे के दरवाजे के पास आकर बोला, "पिताजी ! अल्पाहार लग गया है।"

"बस, आ रहे हैं। हमारी बातचीत भी समाप्त हो चुकी है।"

दोनों बाहर खाने के कमरे मे आ गए। बैठते हुए गिरधारीलाल ने

कुन्दन की माँ से कहा, "दुर्गाजी ! मैं तो इस सम्बन्ध से बहुत प्रसन्न हूं। शेष बात तो कुन्दन और लक्ष्मीजी मे होगी।"

उत्तर कुन्दन ने दिया। उसने कहा, "लक्ष्मीजी कहती हैं कि वह आज अभी तो यहा पहुची हैं। तनिक बम्बई का जलवायु देख लें तो बताएगी कि यहा जीवन चलाना सुगम होगा अथवा नही।"

"देखो बेटी!" गिरधारीलाल ने लक्ष्मी को सम्बोधन कर कहा, "मैंने एक प्लाट मैरीन ड्राइव पर सवा लाख रुपये पर निन्यानवे वर्ष की लीज पर लिया है। कुन्दन के लिए वहा मकान बन जाएगा और सागर-तट होने से वह अति स्वास्थ्यप्रद स्थान होगा। लाहौर उसके मुकाबले मे रुपये मे एक आना भी नही होगा।"

इसपर मुकन्द बोल उठा, "मैं इन्हे आज अपनी मोटरगाडी में वह स्थान दिखाने ले चलूगा। मैं समझता हू कि इन्हें वह स्थान पसन्द आ जाएगा।"

लक्ष्मी चुपचाप पुरुष वर्ग की बात सुनती रही।

भोजन समाप्त हुआ तो यह निश्चय हुआ कि अभी केशवदास इत्यादि गेस्ट हाउस मे चले जाए और वहा विश्राम करें। मध्याह्न का भोजन मैट्रोपोलिटन होटल में होगा। उसमे कुन्दनलाल, लक्ष्मी, लक्ष्मी के माता-पिता और कुन्दन के भाई-भावज ही होंगे। वहां से मुकन्द उनको नगर के स्थान दिखाने ले जाएगा। कल मुकन्द उनको 'ऐलिफैण्टा केव' दिखाने ले जाएगा। वह तो समुद्र पार कर देखा जा सकता है।

६

केशवदास इत्यादि को बम्बई आए हुए तीन दिन हो चुके थे। यह निश्चय ही था कि केशवदास अपनी पत्नी और लड़की के साथ अहमदाबाद और द्वारिकाजी जाएगा। इस कारण सब उत्सुकता से उस उद्देश्य

के विषय में जानना चाहते थे, जिसके लिए लाहौर से बम्बई की यात्रा की गई थी।

पिछले तीन दिन मे कई बार दो परिवारों के पुरुखाओं में विचार-विनिमय हो चुका था और दोनो विकल्पों पर विचार हो चुका था।

अन्तिम बात रात के भोजन के उपरान्त तीसरे दिन हो गई। खाने की मेज पर बैठे हुए ही केशवदास ने बताया, "लक्ष्मी की मा ने बताया है कि लक्ष्मी और कुन्दन में समझौता हो गया है।"

"क्या समझौता हुआ है ?" गिरधारीलाल ने पूछ लिया।

उत्तर कुन्दन ने दिया। उसने कहा, "पिताजी ! यह समझौता हुआ है।" और उसने अपनी दाहिनी कलाई कुर्ते की आस्तीन ऊपर कर दिखा दी। उसपर मौली की तार बधी हुई थी।

कुन्दनलाल ने आगे बताया, "इस मौली की तार के प्रतिकार में मैंने बहन लक्ष्मी को एक मोहर दी है।"

गिरधारीलाल आगे बात के लिए केशवदास का मुख देखने लगा। केशवदास ने गिरधारीलाल का आशय समझ कह दिया, "मैंने एक प्रस्ताव आपके समक्ष रखा है। लालाजी अपनी एजेंसी का कार्य फैलाना चाहते हैं। इसी अर्थ आपने कलकत्ता वालों को एक प्रस्ताव किया था। उसके बदले मे मैंने भी एक प्रस्ताव किया है कि घर से बाहरवालो की कम्पनी मे रुपया लगाने के स्थान घर के सम्बन्धियो के व्यवसाय में ही रुपया लगाना अधिक ठीक रहेगा।"

दुर्गावती और मुकन्दलाल इस प्रस्ताव का अर्थ न समझ केशवदास का मुख देखने लगे थे। केशवदास ने बात स्पष्ट कर दी। उसने कहा, "भाई गिरधारीलालजी ने कहा है कि कलकत्ता वाले कौमुदी के दहेज मे पाच लाख मागते है। इसपर मैंने कहा है कि कौमुदी बेटी को उसके भाई अपने व्यवसाय मे हिस्सेदार मानें तो मैं कौमुदी के नाम पर आपकी एजेंसी मे पाच लाख के हिस्से खरीद लूगा।"

"और आप कौमुदी के नाम के हिस्सो के लिए यह रुपया किस-

लिए देंगे ?" दुर्गावती ने पूछ लिया।

"मैं सुन्दर की पत्नी को पाच लाख का 'गिफ्ट' करना चाहता हूं।"

गिरधारीलाल मुस्कराता हुआ पूरी चबा-चबाकर खा रहा था। दुर्गावती केशवदास के कथन का आशय समझ बोली, "तो आप कौमुदी को वापस लाहौर ले जाना चाहते हैं ?"

"यह तो बेचारी अभी बछड़ी है। इसका रस्सा जिसके हाथ में पकड़ा देंगे, यह उसके साथ ही चली जाएगी। ऐसा कौमुदी को आपने ही कहा है।"

"हां।" गिरधारीलाल ने कह दिया, "हमारी फर्म आठ प्रतिशत का लाभ हिस्सेदारों को देती है। इसका अभिप्राय यह है कि कौमुदी को अनायास चालीस हजार वार्षिक की आय होने लगेगी।"

लक्ष्मी ने कौमुदी के मुख पर देखा तो वह आंखें मूंद लज्जा से लाल हो रही थी। उसने सुन्दरदास को देखा हुआ था और मन में उसे पति के रूप में पाने की कल्पना कर रही थी।

शान्ति-भंग दुर्गावती ने की। उसने कहा, "मुकन्द ! कल बहन सरस्वतीजी के जाने से पूर्व कुछ शकुन-शात्र दे देना चाहिए।"

"हां। कुन्दन ने बहन बनाने के प्रतिकार में एक मोहर दी है और तुम्हें अपना जीजा बनाने के अवसर पर एक सहस्र एक मोहरें तो देनी ही चाहिए।" गिरधारीलाल का सुझाव था।

"मां ! यह हो जाएगा।" मुकन्दलाल ने कह दिया।

अगले दिन अहमदाबाद की गाड़ी में फर्स्ट क्लास के डिब्बे में बैठे हुए सरस्वती ने पूछा, "यह सब तो अप्रत्याशित ही हुआ है।"

"हां। गिरधारीलाल की जब मैंने लड़की के दहेज पर पाच लाख देने की बात सुनी तो समझ गया कि यहां रिश्तेदारी का बन्धन धन से ही ठीक रहेगा। मैंने कह दिया, 'भाई साहब ! आप व्यर्थ में कल-कत्ता वालों का मुख देख रहे हैं। इतने के हिस्से तो मैं भी खरीद सकता

हू।'

"इसपर निश्चय हो गया कि चाहे तो सम्बन्ध कुन्दनलाल और लक्ष्मी में हो अथवा कौमुदी और सुन्दरदास मे हो, मैं पाच लाख उनकी फर्म में लगा दूगा और वह दोनों अवस्थाओं मे लड़की के नाम पर होगा।

"मुझे कल सायकाल ही कुन्दनलाल ने बताया था कि वह लक्ष्मी को बम्बई आने के लिए राजी नहीं कर सका। इसपर मैंने पूछा था कि क्या उसे लाहौर चलने के लिए तैयार कर लिया है?

"वह बोला, 'जी नही। हमारा विवाह नही होगा। उसने बहन से अधिक बनना स्वीकार नहीं किया।'

"मेरा कहना था, 'परन्तु बहन तो पत्नी से कुछ अधिक ही होती है।'

"'जी नही। बहुत कम होती है। मुझे बहुत शोक है कि मैं उसे पत्नी बनने के लिए तैयार नही कर सका।'"

"क्यों लक्ष्मी! क्या कहकर टाला है तुमने?" सरस्वती ने लक्ष्मी की ओर देख पूछ लिया।

एक कूपे मे तीन के बैठने का 'रिजर्वेशन' था। लक्ष्मी भूमि की ओर देखती हुई माता-पिता मे हो रहे वार्तालाप को सुन रही थी। उसने मां से पूछे जाने पर कह दिया, "मैं इससे कभी भी विवाह की इच्छा नही करती थी। यह ठीक है कि मुझमे विवाह की इच्छा कुन्दन ने ही उत्पन्न की थी, परन्तु मेरे मन मे वह पति के रूप मे कभी भी नही आया था। कल जुहू पर सागर-तट पर बैठे-बैठे मैंने उसे स्पष्ट कह दिया, 'भैया! आपसे विवाह को चित्त नही करता। आपके विषय मे जब भी विचार करती हू तो मैं अपने को आपके दाहिने हाथ पर राखी बाधती हुई ही कल्पना करती पाती हू। यदि हमारे बड़ों ने यह सम्बन्ध बनाया तो मैं जीवन-भर न उनको और न ही आपको क्षमा करूगी।'

" 'तो क्या करोगी ?' उसने पूछ लिया ।

" 'प्राण त्याग दूगी ।'

" 'कैसे ?'

" 'मिट्टी का तेल ऊपर डालकर दियासलाई लगा लूगी ।'

" 'इतना कष्ट करने की क्या आवश्यकता है ? मैं विवाह ही नही अन्यत्र कर लूगा ।'

" जब उसने यह कहा तो मैंने अपने बैग मे से मौली की तार निकाली और उसकी कलाई पर बाध दी । उसने भी तुरन्त जेब से एक मोहर निकालकर मुझे दे दी और मैंने नमस्कार कर दिया । "

"बहुत विचित्र है !" सरस्वती के मुख से निकल गया ।

"क्या विचित्र है मा ?"

"इस लाला के लडके को एक क्षण में ही पति से भाई बना लेना । ऐसा होता नही है । मैं तुम्हें अपनी बात बताती हू । मेरी भी सगाई पहले किसी अन्य स्थान पर हुई थी और मैंने उसे चोरी-चोरी ही देखा था । इसपर भी मेरे मानसपट पर उसका पति के रूप मे चित्र बन चुका था । पीछे कुछ लेन-देन के विषय में मतभेद हुआ तो सगाई टूट गई और तुम्हारे पिताजी से बातचीत हुई । इन्हे भी मैंने देखा । उसी प्रकार जैसे पहले दूल्हे को देखा था । जब शकुन दिया जा रहा था तो मैं द्वार पर लगे पर्दे के पीछे खड़ी देखती रही थी । विवाह के कई दिन पीछे तक भी मैं अपने चित्त को इनको पति के रूप मे ग्रहण करने के लिए तैयार नही कर सकी थी । तुमने तो ऐसा करतब कर दिखाया है कि जैसे कोई चतुर दुकानदार खरबूजा खरीदने आए ग्राहक को आम खरीदने पर राजी कर लेता है ।"

केशवदास हस पडा । उसने कहा, 'और देखा था कि कौमुदी किस प्रकार सुन्दर के नाम पर लज्जा से लाल हो रही थी ?"

"मुझे इस सबमें कुछ शुभ प्रतीत नही हो रहा ।"

"परन्तु तुम्हारे विवाह मे दूल्हे के बदल जाने पर तो शुभ ही

हुआ।"

"हा। परन्तु यह तो मैं हू। कौमुदी वैसी हो सकेगी क्या ?"

केशवदास हस पड़ा। हसते हुए बोला, "मैं समझता हू कि तुमसे कम के लिए ही राजी हो जाएगी।"

"मा!" लक्ष्मी ने कहा, "वह तो बहुत प्रसन्न प्रतीत होती है। कहती है कि मेरा भाई तो देखा-भाला है। कलकत्ता वाले की तो सूरत भी नहीं देखी।"

"वास्तव मे नारी हृदय को समझना बहुत कठिन है।" केशवदास का कहना था।

"कठिन तो नहीं है पिताजी यह तो सर्वथा नई और साफ प्लेट की भाति होता है। केवल इसपर लिखने की पैंसिल किसके पास है, यही समझने मे भूल हो जाती है।"

"और तुम्हारे हृदय-पट पर किसकी पैंसिल कुछ लिख पाएगी?"

"मैं समझती हू कि किसीने पहले ही कुछ लिख दिया है। उस लिखे को मेरे पढने मे देर हो रही थी।

"एकाएक कल कौमुदी के भाई ने एक बात कही और मुझ ऐसा समझ आया, जैसे अधेरी रात मे बिजली चमकने से कभी आसपास की वस्तुए दिखाई दे जाती हैं। मैं समझ गई कि मुझे शीघ्र लाहौर वापस चलना चाहिए।

"बस, बात हो गई और भला हो कुन्दनजी का कि वे बिना हील-हुज्जत के मान गए हैं।"

"मैं समझता हू कि ठीक ही हुआ है।" केशवदास ने कह दिया, "देखो लक्ष्मी की मा! मैं पाच लाख का एक चैक मैनेजिंग डायरेक्टर गिरधारीलाल एण्ड कम्पनी के नाम दे आया हू और वह कह रहे थे कि मुझे दो-तीन दिन मे शेयर सर्टिफिकेट मिल जाएगे।

"अभी हिस्से मेरे नाम होंगे और विवाह के समय मैं वे कौमुदी के नाम बदल दूगा।"

लक्ष्मी के कथन पर कि उसके मन मे यह आया है कि शीघ्र ही लाहौर लौट चलना चाहिए, सरस्वती विचार करने लगी कि लडकी विवाह के लिए अधीर हो रही प्रतीत होती है। कदाचित् वह सतीश को स्मरण कर रही है। इस कारण वह पति से बोली, "मैं विचार कर रही हू कि द्वारिकाजी जाना अधिक आवश्यक है क्या ?"

"किसलिए पूछ रही हो ?"

"लक्ष्मी कह रही है कि शीघ्र लाहौर चलना चाहिए।"

"तो ठीक है। अहमदाबाद से वापस दिल्ली और दिल्ली से लाहौर चल सकते हैं।"

"क्यों लक्ष्मी ?" सरस्वती ने पूछ लिया, "क्या विचार है ?"

"मेरा विचार है कि लाहौर चलना चाहिए।"

इस प्रकार अहमदाबाद पहुचते ही वे यात्रा से वापस चल पड़े और तीसरे दिन लाहौर जा पहुचे।

सरस्वती ने कोठी पर पहुचते ही भगवती को टेलीफोन किया और एक सप्ताह मे ही विवाह हो गया। सतीश के विवाह के अवसर पर निर्मला रांची से आई हुई थी।

दोनों सखियों में बात हो गई। निर्मला ने कहा, "लक्ष्मी ! मैं तो मां का पत्र पढ कितनी देर तक विश्वास नहीं कर सकी कि माजी ठीक लिख रही हैं क्या। मैंने कई बार पत्र पढ़ा और जब उसका कुछ दूसरा अर्थ निकला ही नही तो फिर लाहौर आने की तैयारी करने लगी थी।"

"हां। कुछ ऐसी ही बात हुई थी कि मन मे आंधी उठ खडी हुई और मैंने मां को कह दिया कि लाहौर चलना चाहिए।"

दोनों सखियां विवाह के अगले दिन अतुल बैनर्जी के अपने मित्रों को दिए जाने वाले भोज से पहले ड्राइगरूम म बैठी थीं। लक्ष्मी वस्त्र-आभूषण पहन अभ्यागतों के स्वागत के लिए तैयार बैठी थी। सतीश अपने कमरे मे ससुराल से मिला नया सूट पहन तैयार हो रहा था।

निर्मला भी इस एकाएक के निर्णय पर विस्मय करती हुई पूछने लगी, "वह एकाएक क्या हुआ था, सखी कि भैया के घर की ओर मुख कर भाग पड़ी ?"

लक्ष्मी हस पड़ी। हसते हुए बोली, 'तुम तो जानती हो कि आज छ वर्ष पहले मेरी एक स्थान पर सगाई हुई थी और वह हमारे एक पड़ोसी के साथ मुझे देखने हमारे स्कूल के द्वार पर आया था। मैंने एक झलक ही उसे देखा था और उसने तो बहुत ध्यान से मेरे मुख पर देख मुख मोड़ लिया था। अगले दिन वह अपने बाप के घर से चोरी कर भाग गया था। मैं वास्तव मे उसीके एक दिन लौटने की आशा कर रही थी। उस दिन जुहू तट पर भ्रमण करते हुए मुझे वही व्यक्ति-एक अन्य के साथ टहलता हुआ दिखाई दिया। वह भगवे वस्त्र पहने हुए था। मैं समझ गई कि वह अब नही लौट सकता। बस, मैंने विवाह का निश्चय किया और फिर मन मे तुलना करने लगी तुम्हारे भैया और कौमुदी के भैया में। उस तुलना मे तुम्हारे भैया बाजी ले गए और मैं कौमुदी के भैया को दो टूक उत्तर दे लाहौर वापस चली आई।"

'और अब विवाह तथा पति मिलने के उपरान्त क्या समझी हो ?"

"मैं समझी हू कि ससार-सागर मे डुबकिया लेना शारदा बहनजी के एकाकी जीवन से अधिक मधुर है।"

"और वह सन्यासी कहा रहता है ?"

"यह जानने की इच्छा नही हुई। दो सन्यासी एव मारवाड़ी सेठ के साथ वहा भ्रमण कर रहे थे। जब हम वहा टहलने लगे तो वे वहा से चले गए। मैंने कौमुदी के भाई से पूछा, 'इनको जानते है ?'

"कुन्दनलालजी कहने लगे कि वे राधाकृष्ण सेठ के घर पर ठहरे हुए हैं। किसी बहुत बड़े आश्रम मे मठाधीश हैं। एक गुरु है और दूसरा शिष्य है। गुरु शिष्य को गद्दी का उत्तराधिकारी बनाने लाया हुआ है।

"वे लोग तो सेठजी की मोटरगाड़ी में सवार हो चले गए और मेरी कुन्दनजी से दो टूक बात हो गई। विस्मयजनक बात तो यह है कि मेरे स्पष्ट बात कहने पर वह तुरन्त मान गए और हमारा घर लौटने का कार्यक्रम बन गया।"

"अभिप्राय यह कि वह भी तुम्हारे टालमटोल से ऊब गया था?"

"यह हो सकता है, परन्तु मुझे कुछ और ही समझ आया है। मुझे वहां से घर लौटते समय पिताजी के माताजी को बताते हुए समझ आया है कि पांच लाख रुपया भैया सुन्दरदास की पत्नी के नाम कुन्दन के पिता की फर्म के हिस्से खरीदने के लिए उनसे बात हुई है तो उस पांच लाख को लड़की के नाम मिलता देख लड़की को सुन्दर के घर भेजने का विचार बन गया है।

"इससे मैं यह समझी हूं कि जो कुछ मेरे दहेज में पाने की वह आशा कर रहे थे, वह अनायास ही मिलता देख उनकी मेरे दहेज में रुचि नहीं रही थी। बाप-बेटा दोनों एक योजनानुसार काम कर रहे थे।"

निर्मला हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "दहेज तो मेरा भी देना पड़ा है। हम बंगालियों में तो यह प्रथा बहुत प्रचलित है।"

"क्या दिया था तुम्हारे पति का दाम?"

"मेरी मां ने पीछे बताया था कि बीस हजार रुपया।"

"और तुम्हारे भैया को मेरे पिताजी ने कुछ नहीं दिया। सवा लाख रुपया मुझे मेरे विवाह मान जाने पर दिया है, और मैं समझती हूं कि पिताजी सस्ते ही छूट गए हैं। कुन्दन के पिता तो बहुत अधिक मांग रहे प्रतीत होते थे।"

"तो भैया को कहूं कि उनको इसका शोक है अथवा नहीं?"

"हां, कहना। मुझसे सम्मति करेंगे तो मैं एक तरकीब बता दूंगी, जिससे कम से कम इतना और मिल जाएगा।"

"क्या तरकीब बताओगी?"

'तो मुझमें पुरुष-अंश भी है ?"

"हां। यही तो कह रहा हूं।"

इस समय ड्राइंगरूम के बाहर खड़ी लक्ष्मी ने आवाज़ दे दी, "क्या मैं अब आ सकती हूं ?"

'हां आओ भाभी ! बहन-भाई में बात हो गई। सत्य ही वह बात तुम्हारे मुख पर कहने की नहीं थी।"

लक्ष्मी बहन भाई के बीच में बैठते हुए पूछने लगी, "क्यों ?"

"इसलिए कि यदि तुम वह बात सुन लो तो तुम आकाश में चढ़ने लगोगी।"

'हवाई जहाज में ?"

"ऊहूं। बिना पंख के ही।"

"तब सिर के बल गिर पड़ूंगी।"

"इसलिए भैया ने बात कहने से पहले ही तुम्हें भगा दिया था।"

इसपर तीनों हंसने लगे और सतीश मन्त्र-मुग्ध की भांति पत्नी के मुख पर देखता रह गया। लक्ष्मी को हंसते हुए देख वह सदा उसमें विशेष तेज देखा करता था। इसका अनुभव निर्मला को भी हुआ करता था।

"क्या देख रहे हैं आप मेरे मुख पर ?"

'जिसे देख देखकर मैं पिछले छः वर्ष से अपने को तुमसे बंधा हुआ पाता हूं।"

"और वह क्या है ?"

'यही तो वर्णन नहीं कर सकता। हमारी भेंट के आरम्भ के दिनों में एक बार ज्योत्स्ना ने पूछा था, 'इस चेचक के दागों से भरे हुए मुख पर क्या देखा करते हैं आप ?' इसपर मैंने उसको कहा था कि मेरी आंखों के पास ज़ुबान नहीं और वे बता नहीं सकतीं कि क्या देखा करती हैं।"

'मैं समझती हूं कि यह इलल्यूज़न' (अध्यास) है और अब समीप

"तो मुझमे पुरुष-अश भी है ?"

"हा। यही तो कह रहा हू।"

इस समय ड्राइगरूम के बाहर खडी लक्ष्मी ने आवाज दे दी, 'क्या मैं अब आ सकती हू ?"

'हा, आओ भाभी ! बहन-भाई मे बात हो गई। सत्य ही वह बात तुम्हारे मुख पर कहने की नही थी।"

लक्ष्मी बहन-भाई के बीच म बैठते हुए पूछने लगी, 'क्यो ?"

'इसलिए कि यदि तुम वह बात सुन लो तो तुम आकाश मे चढ़ने लगोगी।"

'हवाई जहाज म ?"

"ऊ हू। बिना पख के ही।"

'तब सिर के बल गिर पड़ूगी।"

"इसलिए भैया ने बात कहने से पहले ही तुम्हे भगा दिया था।"

इसपर तीनों हसने लगे और सतीश मन्त्र मुग्ध की भाति पत्नी के मुख पर देखता रह गया। लक्ष्मी को हसते हुए देख वह सदा उसमे विशेष तेज देखा करता था। इसका अनुभव निर्मला को भी हुआ करता था।

'क्या देख रहे हैं आप मेरे मुख पर ?"

'जिसे देख देखकर मैं पिछले छ वर्ष से अपने को तुमसे बधा हुआ पाता हू।"

"और वह क्या है ?"

"यही तो वर्णन नही कर सकता। हमारी भेंट के आरम्भ के दिनो मे एक बार ज्योत्सना ने पूछा था, इस चेचक के दागो से भरे हुए मुख पर क्या देखा करते हैं आप ?' इसपर मैंने उसको कहा था कि मेरी आखो के पास जुबान नही और वे बता नही सकती कि क्या देखा करती है।"

'मैं समझती हू कि यह 'इलल्यूजन' (अध्यास) है और अब समीप

माने पर वह मिट जाएगा। तब आपकी त्वचा की कुरूपता अखरने लगेगी।"

'खैर ! अभी तक तो वह अभ्यास मिटा नहीं। जब मिटेगा, तब देखूंगा कि तुम कैसी दिखाई देती हो।"

'भैया !" निर्मला ने बीच मे बोलते हुए कहा, 'सुना है कि तुम्हें ससुराल से सवा लाख दहेज में मिला है। बताओ, उसमे मेरा कितना भाग है ?"

'मुझे कहा मिला है ! वह तो पिता ने बेटी के नाम चैक काट-कर बेटी के पर्स मे डाल दिया था और बेटी का अपना बैंक मे हिसाब है। उसम आज जमा हो गया है।"

"तो भाभी से मागूगी।"

'परन्तु मागने की क्या आवश्यकता है ? मैं तुम्हें आज एक 'ब्लैंक चैक' दे देती हू। जितना इच्छा हो, भर लेना।"

'बिना जाने कि बैंक मे भाभी का कितना जमा है ?"

'वह सब बता दूगी। कही ऐसा न हो कि चैक ही 'डिस-ऑनर' हो जाए।"

"यह ठीक है। मुझे इसने अपने बैंक का हिसाब दिखाया है। इस सवा लाख के जमा करने से पहले दो लाख चार हजार से कुछ ऊपर राशि थी।"

'तो भैया ! विवाह से पहले तुम यह जानत थ ?"

'यह तो नही जानता था कि इसका बैंक मे कितना कुछ है। हां, एक अन्य बैंक मे इसका हिसाब मैं जानता था और अब भी जानता हू।'

"उसमे कितना है ?"

'मेरी तीन वर्ष की सारी आय उसमे जमा है। वह मैं इसीके लिए जमा कर रहा था और अब पीछे एक सौ एक रुपया छोड सबको इसीके खाते में ट्रासफर कर दूगा।"

"बहुत चतुर हो भैया !" निर्मला ने व्यंग्य के भाव में कह दिया, 'बहन को दूर करने के लिए बहुत अच्छा उपाय विचार किया है !"

तीनों हसने लगे। इस समय भगवती आई और तीनों को लेकर कोठी के लॉन मे ले गई। वहा शामियाना, दरिया, कुर्सिया, मेज और चाय का सामान लगा था।

७

अगले दिन सतीश पत्नी को लेकर कश्मीर जाने वाला था। जाने से पूर्व लक्ष्मी अपनी सास के पास पहुची और बोली,' माताजी ! जीजाजी, बहनजी तथा अन्य सम्बन्धियों को जो कुछ देना उचित बनता है, यह इन चैकों पर भरकर दे दें। मैंने सब चैकों पर हस्ताक्षर कर रखे हैं और इन सबके लिए मेरे बैंक मे है।"

' कितना है ?"

' सब पिताजी द्वारा दिया हुआ है। लगभग सवा तीन लाख रुपये है।'

"और कितने चैकों पर हस्ताक्षर कर दे रही हो ?"

' ग्यारह हैं। इनपर नाम नही लिखे। इसपर भी अपने विचार से दे रही हू। एक पिताजी के लिए, एक आपके लिए, तीन इनके बहन-भाइयों के लिए, एक इनके लिए भी है। एक बहन निर्मला के लिए तथा जीजाजी मिस्टर दास के लिए है। एक आपके ज्येष्ठजी के लिए और एक जेठानीजी के लिए। इनके अतिरिक्त एक चैक है जिसपर आप फुटकर देने के लिए जितना चाहिए, स्वय लिखवा लें।"

भगवती इस सबकी आशा ही करती थी। लक्ष्मी के पिता केशव-दास ने कहा था कि उनके परिवार का रिवाज है कि लड़की को वे विवाह के उपलक्ष्य मे देते हैं। यह दहेज नहीं होता। यह लड़की को अपने घरवालों के स्नेह का चिह्नमात्र होता है। तब लड़की जो चाहे,

इसका करे। चाहे तो वह सब कुछ अपने पति को दे और चाहे अपने सास श्वसुर को दे। यह दोनो परिवारो की मर्यादा का प्रतीक होगा।

भगवती इस प्रबन्ध से बहुत प्रसन्न थी। उसने अपनी पॉकिट बुक पर बैंक मे जमा धनराशि लिख ली और हस्ताक्षर किए चैक अपनी तिजोरी में रख लिए।

इसके उपरान्त सतीश और लक्ष्मी श्रीनगर, रावलपिण्डी के मार्ग से चल पड़े। डेढ महीने के भ्रमण के उपरान्त पति-पत्नी लाहौर लौटे तो लक्ष्मी 'मॉर्निंग सिकनेस' से पीड़ित हो आई थी। भगवती ने लक्ष्मी का उतरा मुख देखा तो पूछ लिया, "सतीश ! यह क्या है ?"

'मा ! लक्ष्मी ही बताएगी। पिछले पाच छ दिन से इसने कुछ खाया-पीया ही नही है। कुछ लेती है तो तुरन्त उलट देती है।"

"तो यह बात है !

"चलो, लक्ष्मी ! तुम्हें आराम करना चाहिए। वैसे तुम्हें यह लक्षण देखते ही चले आना चाहिए था।"

'माजी ! जब पता चला तब हरिमुख गगा की झील के किनारे हम कैम्प लगा रह रहे थे। पहले ही दिन खाया-पीया उलटने पर यह बोले कि लाहौर लौट चलना चाहिए। बस, हमने कैम्प उखड़वाया और चल पड़े और वहा से भागते हुए आने मे छ दिन लग गए हैं।"

सुन्दर के विवाह पर लक्ष्मी जा नही सकी। वह बिस्तर पर पड़ी थी। विवाह से लौट ही सुन्दरदास और कौमुदी लक्ष्मी को मिलने आए।

"लक्ष्मी !" कौमुदी ने विस्मय से पूछ लिया, "यह क्या कर दिया है तुमने ?"

लक्ष्मी ने मुस्कराते हुए कहा, "जो तुम करने जा रही हो।"

'मैं तो कुछ ऐसा अनुभव कर रही हू कि इस दुस्तर सागर से पार नहीं हो सकूंगी।"

'क्यों ? भैया बहुत पीटते हैं ?"

"पीटना वीटना तो कुछ होता नहीं। यदि यह होता तो छुट्टी हो जाती। यह हलका-सा चाटा भी लगाते तो मैं मां के घर जा बैठती। बात उलटी हो रही है। लक्ष्मी बहन के भैया रात को इतना प्यार करते हैं कि उसको स्मरण करती हुई अगली रात की प्रतीक्षा में व्याकुल रहती हूं।"

"ओह ! यह तो बहुत बुरा करते हैं।"

"क्या बुरा करते हैं ?"

"बहन कौमुदी को अपने माता-पिता से मिलने भी नहीं जाने देते।"

"अब तो लाहौर आ ही गई हूं। मां एक सप्ताह के उपरान्त आएगी। मैं विचार कर रही हूं कि मां को अकेली ही लौटा दूं।"

लक्ष्मी हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "मैं सुन्दरदास से कहूंगी कि इतना अन्याय न करें। भाभी कौमुदी को कुछ तो अपने माता-पिता के पास जाने को अवकाश दें।"

"हां। कहकर देखना। कदाचित् बहन की बात भैया मान जाएं।"

"अवश्य कहूंगी। इतना तो न्याय भाभी कौमुदी के लिए मांगा ही जा सकता है।"

लक्ष्मी ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "कौमुदी ! तुम्हारे भाई साहब कैसे हैं ?"

"पिताजी से नाराज हैं।"

"क्यों ?"

"कुन्दन भैया यह समझते हैं कि पिताजी ने ही लेन देन आपके पिता से निश्चय किया है। उसके लिए ही वह अपना दावा तुमपर छोड़ने के लिए विवश हुए थे।"

"कैसी लेन-देन की बात हुई थी ?"

"यही कि यदि तुमपर वह अपना दावा छोड़ दें तो उनकी फर्म म

आपके पिता पाच लाख रुपया लगा देंगे।"

"तो उन्होंने मेरे कथन पर मेरा भाई बनना स्वीकार नहीं किया ?"

"उसकी योजना तो दूसरी थी, परन्तु पिताजी ने जब बताया कि एक और तो मुझे कलकत्ता भेजने के लिए पाच लाख कलकत्ता वालों को देना पड़ेगा और इधर मेरे लाहौर आने पर पांच लाख उनकी फर्म के व्यापार को विस्तार देने के लिए मिलता है। घर को दस लाख रुपये का अन्तर पड़ता था।

"इस बात ने कुन्दन भैया को सन्मार्ग दिखा दिया और बुद्धू बन वह तुमसे राखी बधवा घर लौट आया था।"

"मैं तो समझी थी कि मेरा आग्रह वह मान गए हैं।"

कौमुदी हस पड़ी और हसकर बोली, "मैं समझती हू कि यह ठीक ही हुआ है। वह तो बम्बई पहुंचने की पहली ही रात तुम्हे मद्य पिला तुम्हारा 'रेप' करने वाले थे।"

"वह क्या होता है ?"

कौमुदी लक्ष्मी से गले मिलने लगी। लक्ष्मी को 'रेप' के अर्थ समझ आए तो बोली, "बहुत ही कुत्सित विचार हैं तुम्हारे भाई के।"

"बम्बई मे यह बात बहुत प्रचलित है।"

"परन्तु इससे तो मैं पत्नी तो बनती ही नहीं। हा, उनकी हत्या का पाप अपने सिर लेने के लिए तैयार हो जाती।"

"वह कहता था, ऐसा कुछ नहीं होता। ये सब लड़कियों की मनमटकी मे खिचड़ी का उबाल है।"

लक्ष्मी हस पड़ी और बोली, "तो मैंने अपनी मोली की तार व्यर्थ ही गवाई है।"

"परन्तु उसके दाम से कई गुणा अधिक तो उसने तुम्हें भेंट में दिया था।"

"वह मैं अब वापस कर दूगी।"

कौमुदी ने बात बदल दी। उसने कहा, "वह कह रहा था कि मां मुझे लेने आएगी तो वह भी लाहौर आएगा।"

लक्ष्मी इस सम्भावना पर विचार करने लगी। वह विचार करने लगी थी कि जो कुछ कौमुदी ने बताया है, उसके उपरान्त उससे मिले अथवा नहीं, परन्तु उसकी विचार-श्रृंखला को भंग किया सुन्दरदास ने। वह कौमुदी के साथ आया हुआ था और लक्ष्मी के पति सतीश के साथ बाहर ड्राइंगरूम में बातें कर रहा था। सुन्दरदास ने लक्ष्मी के कमरे में प्रवेश करते ही पूछा, "मैं दो सखियों की बातों में किसी प्रकार से विघ्न तो नहीं बन रहा?"

'आओ भैया! बहन की बधाई स्वीकार हो। मैं अभी अभी कौमुदी से पूछ रही थी कि भैया पीटते तो नहीं।"

'तो तुम्हें जीजाजी पीटते हैं?"

'बहुत बुरी तरह। तभी तो घायल हो खाट पर पड़ी हूं।"

"बहुत बुरे हैं सतीशजी! बहन, कहो तो मैं उनको द्वन्द्व के लिए चुनौती दे दूं?"

"हां। भाई के लिए तो यह उचित ही है।"

इसपर कौमुदी हंस पड़ी और बोली, 'यह तो मेरी भी यही दशा होने की आशा कर रही हैं।"

'परन्तु मैं तुमको पीटूंगा नहीं। तो फिर यह दशा कैसे होगी?"

"मुझे भय है कि बिना पीटे भी यह दशा हो सकती है।"

सुन्दरदास ने बात बदल दी। उसने कहा, "दीदी! लाला फग्गू-मल के लड़के जगन्नाथ का पता चल गया है।'

"मुझे पता है।"

'क्या पता है?"

'उसने सन्यास ले लिया है और सुना है कि किसी बहुत बड़े मठ का मठाधीश बन गया है।"

'फग्गूमल बद्रीनारायण की यात्रा पर गए थे और वह मार्ग में

उससे मिले थे। मा ने जगन्नाथ से अपने कड़े कटु वचनों के लिए क्षमा मागी है, परन्तु वह घर नहीं आया। वह कहता था कि कभी लाहौर आएगा।"

"मुझे उसकी बातों में अब रुचि नहीं।"

"परन्तु कभी तो उसके लिए भूख-हड़ताल कर मरने के लिए तैयार हो गई थीं ?"

"हां परन्तु अब हमारे मार्ग भिन्न-भिन्न हो गए हैं। वह उत्तर को जा रहा है और मैं दक्षिण को।"

सुन्दर प्रसन्न था कि उसकी बहन म अब जगन्नाथ के लिए किसी प्रकार का लगाव नहीं रहा।

उसी रात जगन्नाथ के विषय मे सतीश से भी बात हुई। सुन्दरदास सतीश को अपनी बहन की पहली मगाई की बात बताता रहा था। सतीश ने कहा, "सुन्दरदास बता रहा था कि तुम्हारा 'फर्स्ट लव' साधु हो गया है ?"

"कह नहीं सकती कि उसे क्या कहू। 'लव' अथवा 'इनफैचुएशन' (सम्मोहन)। मैं अब यह भी विचार करती हू कि इसके साथ धर्म की भावना भी सहायक हो रही थी। मेरे सस्कार थे कि जब एक बार किसीको तिलक दे दिया गया तो फिर जीवन-भर का सम्बन्ध बन गया। इन सस्कारों का मेरे व्यवहार के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध प्रतीत होता है।

"परन्तु जानते हैं कि क्या हुआ जो मैंने एकाएक विवाह का निश्चय कर लिया और फिर दो प्रत्याशियों में से आपको चुना ?"

"क्या हुआ था ?"

"कालेज की पढाई के दिनों म कुन्दनलाल मुझे अग्रेजी भाषा में उपन्यास पढ़ने को देता था। उनमें कभी बहुत उत्तेजनात्मक विवरण पर मैं विचार करती थी कि यदि विवाह करना है तो फिर आपसे ही करूंगी।

' इसपर भी अभी विवाह करने का निश्चय नहीं होता था। उसमे जैसाकि मैंने बताया है, वह भावना सर्वोपरि थी कि अब एक बार किसीको पति धारण कर लिया तो फिर बार-बार विचार बदलना ठीक नहीं, परन्तु यह विचार अंग्रेजी उपन्यास पढने से ढीले पडते जाते थे। उनके ढीले पडने से आपका चित्र मन मे स्पष्ट बनता जाता था।

' उस समय बम्बई मे एक घटना घटी। जुहू पर कुन्दनजी के साथ भ्रमण करते हुए वही, जिसे आप मेरा 'फर्स्ट लव' कहते हैं, मिल गया। हम टहलने के लिए वहा पहुचे ही थे कि वह सन्यासी परिधान मे एक अन्य सन्यासी के साथ टहलता दिखाई दिया। मैंने जब उसे पहचाना तो मेरी रही-सही उसके प्रति धारणा भी निर्मूल हो गई। मैं समझी कि तिलक लगवाने वाले के जब विचार इतने बदल गए हैं तो लगाने वाली क्यो इस बधन में फसी है।

"बस, आपके घर की ओर मुख कर चल पडी। हम बम्बई से लाहौर आ पहुचे और अब यहा आने का परिणाम प्रकट होने लगा है।"

"परन्तु उस सन्यासी का सम्मोहन अभी भी है क्या ?"

"उसको जुहू के तट पर टहलता देखने का स्वरूप रहा होगा। उसे देखते ही मैंने पहचान लिया था। मैंने कुन्दनजी से कहा भी था कि यह युवा सन्यासी बहुत सुन्दर लग रहा है।

"कुन्दन ने बताया कि उसके पिताजी किसी एक बहुत बडे आश्रम की प्रबन्धक समिति के सदस्य हैं और वे दोनो सन्यासी उसी आश्रम के हैं। एक मठाधीश है और दूसरा उसका शिष्य है। आजकल गुरु अपने शिष्य को लेकर बम्बई आया हुआ है और शिष्य को अपनी गद्दी का उत्तराधिकारी बनाने के लिए कमेटी को कह रहा है।

" 'और वह बन गया है उत्तराधिकारी ?' मैंने पूछा था।

" 'हा। सर्वसम्मति से निश्चय हो गया है और अगले वर्ष कमेटी आश्रम मे जाएगी और इसे प्रमुख शिष्य मान आश्रम की रस्म पूरी

करने की बात है।"

"मैंने कुन्दन को बताया नहीं कि मैं क्यों पूछ रही हू, परन्तु वह जान गया प्रतीत होता है कि मेरा उससे सम्बन्ध बनने वाला था। उसकी बहन कौमुदी ने मुझे बताया है।

"परन्तु उसे भगवे वस्त्रों मे देख मेरे मन पर यह प्रतिक्रिया हुई कि मैंने आपके घर आने का निश्चय कर लिया था।"

"और अब मेरे और उस सन्यासी मे तुलना मे मैं कहा हू ?"

"मैं कालेज की पढाई के दिनो मे उस मन स्थिति से बहुत आगे निकल चुकी थी, जिसमे मैं तब थी जब मेरी इस भद्र पुरुष से सगाई हुई थी। तब मैं विवाह को तो क्या, सगाई मात्र को भी धर्म का सबध मानती थी और जब मेरे माता-पिता मेरा विवाह किसी अन्य स्थान पर करने लगे, तो मैं मरने के लिए तैयार हो गई थी।"

"और अब यदि मैं तुम्हारी इस पूर्ण मन स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर तुम्हें छोड दू तो क्या करोगी ?"

"कुछ नही। अब मरने को चित्त नही करता। विशेष रूप मे इस जीव के लिए जीने को चित्त करता है।" और उसने अपने पेट की ओर सकेत कर दिया।

"तो इससे भी बहुत मोह हो गया है ?"

"क्या कहू ! समझा नही सकती। मैंने इसकी अभी सूरत भी नही देखी और इसके लिए एक विशेष प्रकार की 'अटैचमेण्ट' अनुभव करती हू।"

"और मैं ?"

"आप इसके पिता होने से पहले से कुछ अधिक समीप हो रहे अनुभव होते हैं।"

सतीश आरम्भ से ही, जब से उसने निर्मला के जन्मदिन पर लक्ष्मी से एक-दो बातें ही की थी तो इसे एक दार्शनिक की भांति बात करते देख वह इसमे रुचि लेने लगा था। तब उसके यौवन और शरीर के

आकार-विस्तार पर मुग्ध हुआ था और उसके मानव-प्रकृति के ज्ञान पर तो उसे पत्नी बनाने के लिए लालसा करने लगा था। समय व्यतीत होने के साथ यह लालसा पागलपन के स्तर तक पहुंच गई थी।

अब उसे अपने मन के पट खोल अपने पति के सम्मुख रखते देख वह समझ रहा था कि वह अपनी मन स्थिति का ठीक-ठीक दर्शन करा रही है।

लक्ष्मी ने पति को गम्भीर विचार में मग्न देख पूछ लिया, "तो क्या अब आपको मुझसे ग्लानि होने लगी है?"

"ग्लानि! ग्लानि क्यों?"

"कहते हैं कि पुरुष वर्ग यह सहन नहीं कर सकता कि उसकी पत्नी कभी किसी दूसरे के प्रति सद्भावना रखती हो।"

"किसने कहा है यह?"

"निर्मला बहन बता रही थी। मेरे विवाह के समय जब वह लाहौर आई थीं तो जीजाजी की मन स्थिति का वर्णन कर रही थीं।

"निर्मला ने बताया था कि उसके पति का जीजा उसे रुचिपूर्वक देख रहा था। इसपर उसके पति ने कहा था कि मिस्टर सान्याल अच्छा आदमी नहीं है और यदि उसने उससे कुछ अधिक बातचीत की तो वह किसीकी हत्या करने पर विवश हो जाएगा।"

"महामूर्ख है वह। वह नहीं जानता कि स्त्री में क्या वस्तु है, जो पसन्द की जाती है। वह है स्त्री का मस्तिष्क और वही उसका मूल्य है। इसीका रसास्वादन करने के लिए छः वर्ष तक मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा हूं।"

लक्ष्मी ने मुस्कराते हुए कहा, "मैंने भी कुछ ऐसी ही बात निर्मला बहन से कही थी और वह मेरी सम्मति सुन पहले तो मुझसे रुष्ट हो गई, परन्तु पीछे मुझसे गले मिल बोली, 'मैं अपने शरीर से उनको पसन्द आ रही हूं। अपने मस्तिष्क के कारण नहीं। वैसे मैं उनको एक ब्लण्डरिंग फूल' समझती हूं, परन्तु पति के रूप में वह अद्वितीय हैं।'"

"और तुम मुझे क्या समझती हो ? एक 'बलण्डरिंग फूल' अथवा कुछ और ?"

"आप 'बलण्डरिंग फूल' तो हैं नहीं। यदि होते तो मेरे विवाह करने के अनिश्चित काल में आप किसी अन्य को अपने बिस्तर पर स्थान दे चुके होते। ज्योत्सना भी तो कुछ बुरी नहीं थी। वह बेचारी तो आपके नाम की माला जपती प्रतीत होती थी।"

"हां। गालियां देते हुए।"

"परन्तु गाली और प्रेम-प्रलाप में बहुत सामीप्य है। यह गणित की उस 'प्रॉबलम' की भांति है, जिसमें यह सिद्ध किया जाता है कि शून्य और असीम पर्याय अर्थवाचक ही हैं।"

"अर्थात् स्त्री की गालियां और प्रेम-वचन एकसमान अर्थवाले होते हैं ?"

"सबके लिए यह कहना ठीक नहीं। हां, प्रेमग्रस्त स्त्री के लिए अपने प्रेमी के लिए गाली और प्रेमसूचक वाक्य पर्याय अर्थ वाले होते हैं।"

"तो इसकी परीक्षा करनी चाहिए।"

"हां करके देखिए। मैं समझती हूं कि एक प्रेमग्रस्त पत्नी के कथन को आप शत-प्रतिशत सत्य पाएंगे।"

"अच्छी बात।" सतीश ने केवल इतना कहा। इससे आगे कोई बात न हो सकी।

८

बम्बई में ब्रह्मानन्द और जगन्नाथ का जाना अत्यन्त सफल रहा। व्यास आश्रम ट्रस्ट के चेयरमैन सेठ लक्ष्मीचन्द मरणासन्न पड़े थे। उनकी धर्मपत्नी ने तार द्वारा स्वामी ब्रह्मानन्दजी को सूचना भेजी। तार ऋषिकेश और ऋषिकेश से विशेष सन्देशवाहक के द्वारा व्यास

आश्रम पहुंची तो ब्रह्मानन्द ने अन्तर्ध्यान हो विचार किया और जगन्नाथ को आश्रम का अध्यक्ष बनाने के लिए पूर्ण ट्रस्ट की अनुमति लेने के लिए बम्बई जा पहुंचा।

ट्रस्ट के अध्यक्ष सेठ लक्ष्मीचन्द के मकान पर पहुंचते ही स्वामीजी को एक विशाल आगार में ठहरा दिया गया और स्वामी ब्रह्मानन्द बम्बई पहुंचने के पांच मिनट के भीतर सेठजी के सामने जा खड़े हुए।

सेठजी हिल-डुल नहीं सकते थे। उन्होंने हाथ पलंग के नीचे लटका चरण-स्पर्श करने का यत्न किया, परन्तु स्वामीजी ने उनके सिर पर हाथ रख कहा, "आप अब जा रहे हैं। संसार में कोई शक्ति नहीं, जो आपको रोक सके। इस कारण परमात्मा का सिमरण करिए, जिससे जो कुछ भी हो सके, उससे आपको सद्गति मिल सके।"

सेठजी ने सुना-समझा और गुरुजी की ओर याचना के भाव में देखा। ब्रह्मानन्द सेठजी की शय्या के एक कोने पर बैठ सिर पर हाथ रख परमात्मा से सेठजी के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रार्थना करने लगे।

इससे सेठजी को सुख अनुभव हुआ और वह प्रसन्न हो आंखें मूंद अपने अन्त की प्रतीक्षा करने लगे। सेठजी की पत्नी, तीन पुत्र और एक पौत्र पलंग के चारों ओर भूमि पर बैठे थे।

जगन्नाथ स्वामीजी के समीप खड़ा था। सेठजी ने प्रश्नभरी दृष्टि से जगन्नाथ की ओर देखा तो ब्रह्मानन्द ने कहा, "मेरा शिष्य जगतानन्द गिरि है। मैं इसे अपने उपरान्त आश्रम का अध्यक्ष नियुक्त करने के लिए साथ लाया हूं।"

सेठजी स्वामीजी की बात को समझने के लिए उनके मुख पर देखते रहे। बात ब्रह्मानन्द ने ही आगे चलाई। स्वामीजी ने कहा, "अभी आपके जाने में तीन दिन हैं। मैं चाहता हूं कि आज सायंकाल आश्रम के ट्रस्ट की मीटिंग बुला ली जाए और उसमें मेरे प्रस्ताव पर विचार कर लिया जाए।"

सेठ लक्ष्मीचन्द ने अपने बड़े लड़के केदारनाथ की ओर देखा तो वह समझ गया और बोला, "पिताजी ! स्वामीजी के आने की आशा मे हमने ट्रस्ट की एक मीटिंग आज छ बजे बुलाई है। सबको लिखित सूचना भेजी जा चुकी है। अभी टेलीफोन से मैं सबको सूचित कर दूगा कि स्वामीजी आ गए है और मीटिंग होगी।"

लक्ष्मीचन्दजी के मुख पर इस सूचना से सतोष प्रकट होने लगा। अब स्वामीजी ने औषधि के विषय मे पता किया तो केदारनाथ ने बता दिया, "यहा के चोटी के वैद्य श्री यादवजी त्रिक्रमजी की चिकित्सा चल रही है। उनकी सम्मति से ही आपको टेलीग्राम किया गया था।"

"वैद्यजी कब आने वाले हैं ?"

"वह सायकाल ही आएगे।"

"तो ठीक है। मैं उनसे मिलूगा। अभी तो आप सेठजी के पूजागृह मे जल, कुशा, चादी का गिलास और चम्मच रखवा दीजिए। हम दोनो वहा जप आरम्भ करेंगे।"

इतना कह स्वामीजी ने सेठजी के कान के समीप मुख कर कह दिया, "सेठजी ! अपना इच्छा-पत्र लिख दिया है अथवा नहीं ? नहीं लिखा तो तुरन्त लिख दीजिए।"

उत्तर केदारनाथ ने दिया, "पिताजी ने इच्छा पत्र लिखा हुआ है और वह इनके निजी कागजो मे रखा है।"

"तब ठीक है। परमात्मा का नाम लीजिए।"

इसका अभिप्राय यह था कि अब कोई आशा नहीं सेठजी के शेष जीवन के लम्बे होने की। स्वामीजी उठ अपने आगार में गए तो सेठजी की पत्नी उठ उनके पीछे-पीछे वहा जा पहुची।

स्वामीजी के लिए मृग-चर्म भूमि पर बिछा था। वह उसपर बैठे तो जगतानन्द उनके पीछे भूमि पर ही बैठ गया। सेठजी की पत्नी रुक्मिणीदेवी सामने भूमि पर बैठ पूछने लगी, "तो अब कोई आशा नहीं ?"

"माताजी ! मेरी विद्या यही कहती है। शेष वैद्यजी से सम्मति कर सायंकाल बताऊंगा।"

"सेठजी बहुत कष्ट में हैं। इनकी दुर्बलता बढ़ रही है। नित्य रक्त-संचार करने पर भी प्रभाव कुछ घण्टों से अधिक नहीं होता।"

"यह अब कष्ट अनुभव नहीं करेंगे। इसका यह अभिप्राय नहीं कि इनकी जीवन-अवधि बढ़ जाएगी।

"देखिए माताजी ! आज रविवार है। मंगलवार मध्याह्न के समय इनका प्रयाण निश्चित है। इनके लिए नया मकान, मेरा अभिप्राय है, शरीर तैयार है। वह पिछले तीस-पैंतीस दिनों से बन रहा था। मंगलवार तक वह रहने योग्य तैयार हो जाएगा।"

इस समय केदारनाथ भी आ अपनी माताजी के पीछे भूमि पर बैठ गया। उसने पूछा, "महाराज ! इनका कहां जन्म होगा ?"

"अमेरिका में।"

"कहां और किस परिवार में इनका जन्म होगा ?"

"सेठजी ने अपने जीवन में दान-दक्षिणा बहुत की प्रतीत होती है और वहां एक करोड़पति के घर में इनका जन्म हो रहा है।"

"महाराज ! इनको यह जीवन स्मरण रहेगा क्या ?"

"बहुत कठिन है। इसपर भी कुछ बातें हैं, जो इनके मन को पार कर इनके जीवात्मा पर अंकित हो चुकी हैं। यदि वे बातें इनको स्मरण कराई गईं तो यह धीरे-धीरे इस जन्म की बात भी स्मरण कर सकेंगे।"

"तो यह श्रेष्ठ कार्य तो आपको ही करना पड़ेगा।"

"देखो केदारनाथ ! मैं इस समय छियानबे वर्ष का हूं और मेरा जीवन भी अब अन्तिम छोर पर पहुंच गया है। मैं कह नहीं सकता कि आज से तीन वर्ष उपरान्त यह शरीर कितना चल फिर सकेगा। यदि इसमें सामर्थ्य रही तो मैं इनके दर्शन करने आज से तीन वर्ष उपरान्त चलूंगा।"

"महाराज ! क्या मैं भी चल सकूंगी ?" रुक्मिणी ने पूछ लिया।

"हां। आप ही एक ऐसा बिन्दु होंगी, जहां से इनकी स्मृति जागृत् हो सकेगी।"

पूजागृह में आसन इत्यादि लगा दिया गया और जगतानन्द वहां बैठ महामृत्युंजय मन्त्र का जाप करने लगा।

स्वामीजी जगतानन्द को पूजा के आसन पर बिठा अपने आगार में आ गए। रुक्मिणीदेवी और केदारनाथ स्वामीजी के साथ उनके कमरे में आ गए। इस समय जगतानन्द पूजागृह में था। रुक्मिणी ने पूछ लिया 'महाराज ! आपके शिष्य का क्या परिचय है ?"

"यह लाहौर-निवासी है। पूर्वजन्म में एक क्षत्रिय के रहने वाले धनी परिवार का युवक था। इसका वहां इकतीस वर्ष की आयु में देहान्त हो गया था।

"लाहौर में पिता से सामान्य-से झगड़े पर घर छोड़ हरिद्वार चला आया। वहां से अपनी अन्तर्प्रेरणा के अधीन ऋषिकेश आया और कैलाश आश्रम में ठहर गया। वहां यह मुझे मिला। यह एक श्रेष्ठ आत्मा है। मैंने इसको अपने आश्रम में पांच वर्ष तक शिक्षित किया है। मैंने प्रयत्न किया है कि यह नदी के तट पर खड़ा हो निर्लेप भाव से बह रहे संसार को देख सके। मैं इनको अपने ढंग से तैयार कर रहा हूं। इसने पिछले पांच वर्ष में बहुत उन्नति की है और मैं समझता हूं कि यह अच्छी प्रकार से आश्रम का कार्य चला सकेगा।"

सायंकाल वैद्यजी आए और रोगी की परीक्षा कर बोले, "इनको गंगाजल पिलाओ।"

स्वामी ब्रह्मानन्द वैद्यजी के समीप कुर्सी पर बैठे थे। वैद्यजी ने स्वामीजी से पूछा, "महाराज ! क्या समझे हैं ?"

"मैं इनके प्रस्थान का समय कल बुधवार मध्याह्न बारह बजे समझता हूं।"

वैद्यजी ने प्रस्थान का दिन और समय सुन कहा "आप यहां कब

तक ठहरने के लिए आए हैं।"

"मंगलवार मध्याह्न तक तो रहूंगा ही। उनके उपरान्त की बात आज सायंकाल ट्रस्ट के सदस्य निश्चय करेंगे।"

"और आप सेठजी के लिए क्या कर रहे ?"

"कोई किसी दूसरे का मार्ग बदल नहीं । मार्ग में होने वाले कष्टों का एक सीमा तक निवारण कि सकता है।"

"और उनके लिए क्या कर रहे हैं ?"

"मेरे साथ एक अन्य श्रेष्ठ जीव आए हुए हैं। यह जब से यहां आए हैं, मृत्युंजय मन्त्र का जप कर रहे हैं।"

वैद्यजी ने सेठजी से कहा, "सेठजी ! जो कुछ कोई मनुष्य किसी दूसरे के लिए कर सकता है, वह आपके लिए किया जा रहा है; परन्तु आपके अपने कर्म सर्वाधिक आपकी सहायता करेंगे।"

इसी समय डाक्टर आया और रक्तचाप का यन्त्र लगा रक्त चढ़ाने लगा।

आधे घण्टे के उपरान्त ट्रस्ट की मीटिंग हुई।

ट्रस्ट में सात व्यक्ति थे। सातों बम्बई के प्रतिष्ठित व्यापारी थे। उनमें एक सेठ गिरधारीलाल भी थे। वह ट्रस्ट की मीटिंग में आने लगे तो कुन्दनलाल भी अपने पिता के साथ चला आया। वह अपने मित्र केदारनाथ के पिता का स्वास्थ्य-समाचार लेने आया था। गिरधारीलाल इत्यादि सेठजी की रुग्ण-शय्या के चारों ओर बैठ ट्रस्ट की मीटिंग में विचार-विनिमय करते रहे। केदारनाथ और कुन्दनलाल जगतानन्द को जाप करते देखते रहे। वह चुपचाप जगतानन्द का पूजागृह में स्वर-सहित मन्त्र-जाप सुन रहे थे।

इनको वहां बैठे अभी पन्द्रह मिनट नहीं हुए थे कि सेठजी का मुनीम आया और जगतानन्द को जप से उठा अपने साथ लेकर ट्रस्ट की मीटिंग में ले गया। जगतानन्द के वहां से चले जाने पर कुन्दनलाल ने पूछा, "क्या नाम है इन महाराज का ?"

"यह व्यास आश्रम के स्वामी ब्रह्मानन्द के मुख्य शिष्य हैं। नाम है जगतानन्द। पता चला है कि पीछे लाहौर के रहने वाले हैं और पिछले पाच वर्ष से आश्रम मे रहते हैं।"

यह परिचय ही था, जो कुन्दनलाल ने लक्ष्मी का जुहू बीच पर टहलते हुए बताया था। लक्ष्मी पहचान गई थी और जगन्नाथ को भगवे वस्त्रों मे देख समझ गई थी कि उसको तिलक देना भूल थी। साथ ही तब से अब तक रावी के पुल के नीचे से बहुत जल बहकर निकल चुका था। उसके विचारो और निष्ठाओ मे अन्तर आ चुका था। इस कारण विद्युत् की गति से उसने विचार किया और इस निर्णय पर पहुची कि अब उसे भी विवाह कर लेना चाहिए। इस निश्चय के होते ही उसने उमसे विवाह के दो प्रत्याशियों मे अपना चुनाव कर लिया। यह सतीश बैनर्जी था।

इस निर्णय तक पहुचते ही उसने साथ चलते हुए कुन्दनलाल की बाह मे से बाह निकाली और कहा, 'देखिएजी! आज हमारा बम्बई मे रहने का अन्तिम दिन है और रात भोजन से पूर्व मुझे आपके विषय मे अपने विचार बताने हैं। इस कारण मैं अभी आपको अपना अन्तिम निर्णय बता देना चाहती हू।"

"ठीक है। बताइए?"

"अपना दाहिना हाथ निकालिए।"

कुन्दन ने दाहिना हाथ निकाल फैलाकर लक्ष्मी के सम्मुख कर दिया। लक्ष्मी ने अपने हैण्डबैग मे से राखी मोली की तार निकाल कलाई पर बाध दी।

"यह क्या है?" कुन्दन ने पूछ लिया।

'आपको बहन के राखी बाधने पर उसे कुछ भेंट देनी चाहिए।"

कुन्दनलाल ने कुछ क्षण तक ही विचार किया और फिर अपने पर्स मे से एक स्वर्ण-मुद्रा निकालकर लक्ष्मी के फैले हाथ पर रख दी। लक्ष्मी ने कहा, "धन्यवाद भैया! युग-युग जीयो! बहन के आशीर्वाद

से बहुत सुन्दर और गोरी-गोरी बहू घर पर लाओ, जो घर मे बच्चो की चहल-पहल लगा दे।"

इस बात को अब पाच मास से अधिक हो चुके थे। लक्ष्मी चार मास के गर्भ से थी। पिछले एक मास तक खाना-पीना बहुत सूक्ष्म हो जाने के कारण वह दुर्बल हो रही थी। कौमुदी सुन्दरदास के साथ मिलकर गई तो सतीश और लक्ष्मी मे बातचीत हो गई। लक्ष्मी ने अपने पूर्व इतिहास, जगन्नाथ के प्रति उसकी निष्ठा और फिर उस निष्ठा का भग होना, यह सब इतिहास बता दिया। साथ ही कह दिया, "ज्योत्सना आपके नाम की माला जप रही है और इस बात की जाच-पड़ताल हो सकती है।"

इसने सतीश के मन मे एक नया फितूर उत्पन्न कर दिया। अगले ही दिन से वह ज्योत्सना से मिल और उसके भावों को जानने का यत्न करने लगा। उसकी ज्योत्सना और उसके माता-पिता से मेल-मुलाकात होती रहती थी। यद्यपि वह अपने माता पिता और सतीश के सम्मुख उसे 'रास्कल' कहकर पुकारा करती थी, परन्तु भेंट होती ही रहती थी। दोनों परिवारो मे मेलजोल था।

एक दिन सतीश पजाब क्लब मे जाने लगा तो ज्योत्सना और उसकी मा भगवती से मिलने आई। यह बात लक्ष्मी से उसके विषय मे हुई बात से पाच-छ दिन उपरान्त की थी। ज्योत्सना अपनी मा के साथ-साथ बैनर्जी की कोठी मे प्रवेश कर रही थी कि सतीश कोठी से बाहर जाता मिल गया। सतीश ने हाथ जोड नमस्ते कर कह दिया, 'आज तो आप बहुत अच्छे अवसर पर आई हैं।"

उत्तर मा ने ही दिया, "कैसा अवसर है ?"

'मैं एक डास पर जा रहा हू और ज्योत्सनाजी यदि मेरे साथ चलें तो बहुत मजा रहेगा।"

ज्योत्सना माथे पर त्योरी चढा पूछने लगी, "क्या मजा रहेगा ?"

"क्लब के कुछ सदस्य ज्योत्सनाजी के डास करने पर इनका

धन्यवाद करेंगे और यदि यह तनिक चित्त लगाकर डांस करेंगी तो क्लब में रंग जम जाएगा।"

ज्योत्स्ना की मां ने कहा, "जाओ। तनिक दिल बहल जाएगा।"

"चित्त नहीं करता। विशेष रूप में इस रास्कल के साथ जाने को।"

सतीश को लक्ष्मी का कथन स्मरण आ गया और बोला, "परन्तु देवीजी! इस रास्कल का एक मित्र है, जो आपको बहुत स्मरण किया करता है।"

"कौन है वह?" ज्योत्स्ना की मां ने पूछ लिया।

"यह तो यहां नहीं बता सकता। यदि आप चाहें तो इनसे रात क्लब से लौटने पर पता कर सकती हैं। यह चाहें तो बता देंगी।"

ज्योत्स्ना की मां ने कहा, "जाओ। रात के खाना खाने के समय से पहले लौट आना।"

"माजी! यदि उस मित्र ने इनको 'डिनर' वहां ही लेने का निमन्त्रण दे दिया तो यह स्वीकार करें अथवा नहीं?"

"यह इसकी इच्छा पर है।"

"परन्तु मैंने वस्त्र बदलने हैं।" ज्योत्स्ना ने कहा।

"तो मैं आपको आपकी कोठी पर ले चलता हूं। वहां आप वस्त्र बदल सकेंगी। तब तक मैं आपके पिताजी से बातें कर सकूंगा। उनसे मिले भी बहुत दिन हो चुके हैं।"

ज्योत्स्ना नृत्य की बहुत शौकीन थी। वैसे कुछ वर्षों में उसकी रुचि क्लब में जाने की नहीं होती थी। उसके कई मित्र भी वहां थे। उनमें से कइयों का विवाह हो चुका था। कई अभी अविवाहित थे। उसके मन में भी यह जानने की लालसा जाग पड़ी थी कि कौन है, जो उसको याद करता रहता है।

दोनों मिस्टर सरकार की कोठी पर जा पहुंचे। ज्योत्स्ना भीतर अपने कमरे में डांस के योग्य पोशाक पहनने चली गई और सतीश

मिस्टर रविशंकर सरकार के स्टडीरूम में चला गया। सरकार कार्यालय का काम घर पर ले आया करता था और इस समय किया करता था। सतीश आया तो वह एक फाइल देख रहा था। उसे आया देख रविशंकर ने फाइल बन्द कर दी और बोला, "तो सतीश आये हो? आज इधर कहां घूम रहे हो?"

"ज्योत्सनाजी की सेवा में हूं। वह हमारे यहां गई थीं और वहां से इधर वस्त्र बदलने आई हैं। मैं इन्हें अपनी गाड़ी में लाया हूं।"

"तो तुम्हारी उससे सुलह हो गई है?"

"अभी पूर्ण रूप से तो नहीं हुई। हां, माताजी ने उसे मेरे साथ मनाव में जाने को कहा है।"

"तब तो ठीक है। यह भी कहीं ठिकाने लग जाए तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।"

"पापा! मेरी पत्नी भी यही कहती है।"

"क्या कहती है?"

"यही कि ज्योत्सना बहन की तनिक सहायता कर दूं तो वह सूरत-शक्ल में किसी भी लड़की से कम नहीं। उसकी नौका भी पार लग जाएगी।"

"हां। एक साहब ने कुछ मास हुए, प्रस्ताव किया था, परन्तु वह दहेज इतना मांगता था कि मैं भौंचक्का सा मुख देखता रह गया। वह पुनः अभी नहीं आया।"

"कौन था वह रास्कल?" सतीश ने 'रास्कल' शब्द पर बल देते हुए पूछा।

रविशंकर ने गम्भीर भाव बनाए हुए ही कहा, "पर रास्कल तो वह तुमको मानती है। तुम एक समय उससे विवाह करने का वचन देकर मुकर गए हो और अब तो तुम्हारी पत्नी के बच्चा होने वाला है।"

सतीश ने मुस्कराते हुए कहा, "पापा! मैं रास्कल नहीं हूं। और



मैं समझता हू कि ज्योत्सनाजी भी मुझे रास्कल प्रेमवश ही कहती हैं। वैसे वह मेरा मान करती हैं।"

इस समय ज्योत्सना नाच के योग्य वस्त्र पहन ऊपर ओवरकोट पहने हुए आ गई और पिताजी से बोली, 'पापा! मैं आज इस रास्कल के साथ क्लब जा रही हूं और यह वचन देते हैं कि रात को मुझे यहा पहुचा जाएंगे।"

सतीश हस पडा और रविशकर को हाथ जोड नमस्कार कहकर ज्योत्सना के साथ चल पडा। चलते समय रविशकर ने ज्योत्सना को कहा, "बेटे! भोजन के समय आ जाना।"

"पापा! यत्न करूगी।"

६

ज्योत्सना रात को ग्यारह बजे के उपरान्त लौटी और सीधी अपने कमरे मे जाने लगी तो ज्योत्सना की मा, जो उसकी प्रतीक्षा मे अभी तक ड्राइगरूम मे बैठी थी, लपककर उठी और लडकी के साथ-साथ चलते हुए पूछने लगी, "बहुत देर कर दी?"

"हा मा! मिस्टर बैनर्जी से बहुत लम्बी-चौडी बातें होने लगी थीं।"

एकाएक ज्योत्सना अपने बेडरूम मे जाती-जाती रुक गई और बोली, "मा! यदि मैं सतीश का प्रस्ताव मान लूं, तो तुम क्या कहोगी?"

"कैसा प्रस्ताव?"

"उसकी सेकण्ड वाइफ बनने का।"

"तो इसी काम के लिए वह तुम्हे साथ ले गया था?"

"नहीं मा! वह ले तो गया था मिस्टर रोलेग्सन एक अन्य एडवोकेट से मिलाने के लिए। उसने अपनी मिस्ट्रेस बनाने का प्रस्ताव

किया है। वह विवाह नहीं कर सकता। उसका ईसाई ढंग से एक विवाह हो चुका है।

"इसपर यह बदमाश का बच्चा सतीश कह रहा है कि मिस्ट्रेस से तो सेकण्ड वाइफ बनना अधिक मान की स्थिति होगी। आज तो ग्यारह राउण्ड डास के किए हैं और अत्यन्त थकी हुई हूं।"

मां अपनी लड़की को अपने बेडरूम में जाते देखती रह गई। मिस्टर सरकार तो उसके आने से पूर्व ही सो गया था।

सतीश घर देर से पहुंचा तो लक्ष्मी सो रही थी। उसने उसे जगाना उचित नहीं समझा। अगले दिन अल्पाहार तक तो सतीश को अवकाश ही नहीं था। उसे एक मुकद्दमे में बहस करनी थी और वह उसकी तैयारी में लगा हुआ था। प्रातः के अल्पाहार के उपरान्त उससे उसके मुवक्किल मिलने आ गए और फिर वह कोर्ट में चला गया।

कोर्ट में लंच के समय से पूर्व वह एक मुकद्दमे में सफलतापूर्वक बहस कर अपने पर सन्तुष्ट हो टिफनरूम में गया तो वहां सरकार बैठा था। वह अपने सामने चाय और कुछ सैण्डविचेस रखे ले रहा था। सतीश ने समीप बैठते हुए पूछा, "पापा! यहां कैसे?"

"तुमसे ही मिलने आया हूं। मैं जानने आया हूं मिस्टर बैनर्जी कि क्या किया है तुमने ज्योत्स्ना को?"

"क्या किया है पापा?"

"वह हेड एण्ड टेल तुमसे प्रेम करती प्रतीत होती है।"

"सत्य पापा! तब तो लक्ष्मी का कथन सत्य प्रतीत होता है।"

"वह क्या कहती है?"

"वह कह रही थी कि जब कोई स्त्री गालियां दे तो समझो कि वह सत्य हृदय से प्रेम करती है।"

"और जब कोई स्त्री अत्यधिक प्रेम की बातें करे तो क्या होता है?"

"इस विषय में तो उसने कुछ कहा नहीं। हां, मैं यह समझता हूं कि यदि गालियों से प्रेम प्रकट होता है तो प्रेम से घृणा ही माननी चाहिए।"

"अभिप्राय यह कि लक्ष्मी तुमसे घृणा करती है और तुम्हें मूर्ख समझती है?"

"परन्तु पापा, उसने मेरी प्रशंसा कभी भी नहीं की। विवाह से पहले भी और विवाह के उपरान्त भी उसका व्यवहार ऐसा रहा है, जैसा एक नार्मल व्यक्ति व्यवहार करता है। वह आज भी मुझसे कह रही थी कि अपना भला-बुरा स्वयं विचार कर लीजिए। उसे कुछ भी अन्तर नहीं पड़ता।"

"अर्थात् ज्योत्सना के तुम्हारे बेडरूम शेयर करने से उसे कुछ अन्तर नहीं पड़ेगा?"

"वह कहती है। मुझे उसकी 'सिनसैरिटी' पर विश्वास है।"

"तो उसकी परीक्षा कर सकते हो?"

"अर्थात् ज्योत्सना का प्रस्ताव स्वीकार कर लूं?"

"तो यह ज्योत्सना का प्रस्ताव है?"

"किस प्रस्ताव की बात कर रहे हैं आप?"

"वह कह रही है कि तुमने उसे अपनी सेकण्ड वाइफ बनने का निमन्त्रण दिया है।"

"जी इस प्रकार नहीं।"

"तो किस प्रकार है?"

"वह तो मेरी मिस्ट्रेस बनकर रहने की याचना कर रही थी और यह मैंने ही उसे सुझाव दिया था कि मिस्ट्रेस बनने से तो सेकण्ड वाइफ बनना अधिक ठीक होगा। वह इसके लिए तैयार प्रतीत होती थी।"

"वह आज तुम्हें सायंकाल तुम्हारी पत्नी लक्ष्मी के सामने मिलना चाहेगी।"

'मुझे इसमे कोई आपत्ति नही। वह रात भोजन के समय आ सकती है। उससे पहले मैं क्लब मे होता हू।"

"तो मैं उसे कह दूगा।"

रात भोजन के समय तक ज्योत्स्ना वहा बैठी रही। सतीश क्लब गया हुआ था। उसने किसीसे शतरज का खेल खेलने का चैलेंज स्वीकार किया हुआ था।

जब भोजन का समय हो गया और सतीश नहीं आया तो लक्ष्मी ने ज्योत्स्ना से कहा, "आओ मिस सरकार! भोजन कर लें।"

'तो मिस्टर बैनर्जी नहीं आ रहे ?"

'वह आज किसीसे शतरज की बाजी लगाए हुए हैं। कदाचित् बाजी समाप्त नही हुई।"

'परन्तु उसने मुझे यहा आज इस समय मिलने का वचन दिया हुआ था।"

"बहन! यह ठीक है, परन्तु जब बाजी जीत हार के समीप पहुच जाए तो कोई उसे छोड नही सकता। वह आएगे अवश्य। कल ग्यारह बजे तक रात उनसे क्लब मे बातें करती रही हो तो आज ग्यारह बज जाएगे तो कुछ हानि होगी क्या ?"

'तो तुम जानती हो कि कल मैं उनके साथ ग्यारह बजे तक रही हू ?"

'तो तुम चोरी कर रही थी ?"

'कम से कम तुमसे।"

लक्ष्मी हस पडी और हसते हुए पूछने लगी, 'यह उन्होंने कहा था क्या ?"

'कहा तो नहीं, परन्तु रात जो यह मेरे साथ करते रहे हैं, वह विवाहित पत्नी को बताने का नही होता।"

"बस, यही तुममे और मुझसे अन्तर है। तुम समझती हो कि पति-पत्नी मे भी कुछ लुकाव-छुपाव होता है। मैं समझती हू कि यह

झुकाव-छुपाव तो रखैलो से करने को होता है।

"देखो ज्योत्सना! मुझे तो भूख लगी है और खाने के लिए जा रही हू। यदि तुम्हे भूख लगी हो तो तुम भी आ सकती हो।"

"परंतु वहा उनकी माताजी होगी।"

"हा, और पिताजी तथा उनके छोटे भाई, जो यहा कालेज में पढते हैं, वह भी होंगे।"

'वे पूछेंगे कि क्या काम है तो क्या बताऊगी?"

"जो काम है, वह बता देना।"

"वह तो उनको ही बताना चाहिए।"

"तो कह देना कि उनका रहस्य है। इस कारण वह स्वय ही बताए तो ठीक होगा।"

"हा, यह ठीक है। चलिए।"

दोनो ड्राइगरूम से उठ खाना खाने के कमरे मे आ गईं। वहा सतीश के माता-पिता और उनका छोटा भाई नरेन्द्र बैठे थे। इनको आया देख अतुल बैनर्जी ने पूछ लिया, "तो ज्योत्सनाजी अभी नहीं गईं?"

उत्तर लक्ष्मी ने दिया, "पिताजी! इनको उनसे कुछ काम है और यह उनकी प्रतीक्षा मे बैठी हैं। भोजन के समय तो भोजन होना ही चाहिए। इस कारण मैं इन्हें यहा ले आई हू।"

इसपर अतुल बैनर्जी ने ज्योत्सना से पूछ लिया, 'तुम्हारे पिता जी से मिले बहुत दिन हो गए हैं। उनका स्वास्थ्य तो ठीक है?"

"वह और माताजी दोनों ठीक हैं। आज कोर्ट मे आपके सुपुत्र ने पापा को कहा था कि उनको मुझसे कुछ काम है। इस कारण मैं उनको यहा भोजन से पूर्व मिलू।"

"तो भेंट भोजन के पश्चात् होने मे कुछ हानि तो नहीं होगी?"

लक्ष्मी मुस्कराकर ज्योत्सना का मुख देखने लगी। ज्योत्सना ने कहा, "मुहूर्त टल गया तो हानि हो भी सकती है।"

तभी सतीश आ गया। बाहर मोटर का हार्न बजा तो भगवती ने कह दिया, 'लो, वह आ गया है। आशा है कि अभी मुहूर्त नहीं टला होगा।"

लक्ष्मी हस पडी और बोली, "माताजी आजकल के प्राणियों के काम तो बिना मुहूर्त के ही ठीक होते हैं। इससे मुहूर्त टलने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

सतीश आया तो ज्योत्सना को बैठी देख बोला, 'ज्योत्सनाजी! नमस्कार। क्षमा करें, कुछ देर हो गई है। मैं आज 'चैस' का एक मैच खेलने लगा था। मैच तो पाच बजे आरम्भ हुआ था, परन्तु वह लम्बा होता होता साढे नौ बजे जाकर समाप्त हुआ।"

पिता ने पूछ लिया, "और हारकर आए हो ?"

"नहीं पिताजी! मैं जीतकर आया हू। केवल एक बार ही जीवन मे हारा था। आजकल तो मैं जीत के पक्ष मे हू।"

वह मेज पर बैठ गया। भगवती ने कह दिया, 'बेटा! ज्योत्सना कह रही है कि तुमने कुछ इससे कहना है और उसका मुहूर्त टल रहा है।"

'नहीं। मुहूर्त टला नहीं माताजी! बात यह है कि वह कमरा जो लक्ष्मी के बगल मे है, वह ज्योत्सनाजी भाडे पर लेना चाहती हैं।"

इसका अर्थ लक्ष्मी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं समझा। इससे अन्य तीनों प्राणी सतीश का मुख देखने लगे। नरेन्द्र पिता की चौथी सन्तान थी। सबसे बडा सतीश था। उससे छोटा एक अन्य लडका था। उसका नाम गिरीश था। वह भी वकील था और इस समय कलकत्ता में वकालत करता था। उसने वहा की एक ग्रेजुएट लडकी किरण से विवाह कर उससे दो सन्तान उत्पन्न कर चुका था। सतीश लक्ष्मी की प्रतीक्षा मे ही छः वर्ष तक बिना विवाह के रहा था। वह भी अब पिता बनने के मार्ग पर था। सतीश से छोटी निर्मला थी। वह विवाह कर राची मे चली गई थी और उसका ही कमरा रिक्त पड़ा

था। निर्मला से छोटा था नरेन्द्र। वह इस समय कालेज की तृतीय श्रेणी मे पढता था।

नरेन्द्र से एक छोटी लडकी थी कानन। वह अपनी मौसी के घर बर्दवान मे रहती थी। जब सतीश ने कहा कि ज्योत्सना इस कोठी में भाडा देकर रहना चाहती है तो सब मौन हो सतीश का मुख देखते रहे। जब सतीश कुछ नही बोला तो भगवती ने ही पूछा, 'क्या भाडा देगी ?"

"यह कहती है कि जितना माताजी मागेंगी।"

अब पिता ने पूछा, "और इसका अपने पिता की कोठी मे जो कमरा है, उसका क्या होगा ?"

"वह तो सब लडकियो की भाति इससे छूटना ही है। यह स्वेच्छा से छोड रही है।"

"परन्तु दूसरो का तो विवाह के उपरान्त छूटता है। इसका विवाह से पहले क्यो छूट रहा है ?"

"इसका विवाह इस घर मे ही होगा।"

"घर के किस प्राणी से ?"

"जो भी इससे करना चाहेगा।"

इसपर नरेन्द्र बोल उठा, 'तो भैया ! मैं इससे विवाह करूगा।"

"यह तुम दोनों की सम्मति से हो सकेगा। परन्तु नरेन्द्र ! यह तो तुम्हारी मा के बराबर प्रतीत होती है। तो क्या बूढी स्त्री से विवाह करोगे ?"

"मुझे पता नहीं था कि यह मा-समान बूढी है।" नरेन्द्र ने हसते हुए कह दिया।

अब लक्ष्मी बोली, "पिताजी ! एक निस्सहाय, अबला स्त्री की सहायता तो करनी ही चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी किसी करतूत के कारण इसकी मा ने इसे घर से निकल जाने का नोटिस दे दिया है।"

"तो तुमको इसने बताया है ?" भगवती ने पूछ लिया।

"नहीं माताजी ! यह तो इसका व्यवहार देख मैं अनुमान लगा रही हू।"

पिता ने बात समाप्त कर दी। उसने कहा, "अच्छा, भोजन करो। पीछे मालिक-मकान और ज्योत्सना परस्पर निश्चय कर लेंगे।"

"और मालिक कौन है ?" अब ज्योत्सना ने काम बनता हुआ देख पूछा।

इसपर दो उत्तर एकसाथ मिले। अतुल बैनर्जी ने कहा, "भगवती है।" और भगवती ने कह दिया, "सतीश के पिताजी हैं।"

ज्योत्सना अभी उत्तर विचार ही रही थी कि सतीश ने कह दिया, 'तो दोनो मालिको से भोजनोपरान्त ज्योत्सना बात कर ले। पिताजी, मैं इसकी सिफारिश करता हू।"

लक्ष्मी इस सबका अर्थ स्पष्ट समझ रही थी। यह यह कि अब ज्योत्सना से पति बटकर मिलेगा। सम्भव यह भी है कि उसे पति का एक अति न्यून भाग ही मिल सके, परन्तु वह प्रत्यक्ष रूप मे सतुष्ट प्रतीत होती थी और वह शान्त चित्त से भोजन कर रही प्रतीत हुई। उसने चुप्पी भग करने के लिए कह दिया, 'नरेन्द्र भैया की इच्छा विवाह करने की हो रही प्रतीत होती है।"

उत्तर नरेन्द्र ने ही दिया, "नही तो।"

"परन्तु भैया, तुमने कहा तो है कि तुम ज्योत्सना बहन से विवाह करोगे ?"

"वह तो मजाक किया था। मैं तो बैरिस्टर बनने विलायत जाऊगा और वहा से ही कोई गोरी लडकी विवाह कर लाऊगा।"

"ज्योत्सना भी तो गौरवर्णा है ?"

"परन्तु यह तो मा-समान आयु की है। मैं तो अपने से कम आयु की लडकी को विवाह कर लाऊगा।"

"इसमें तो अभी तीन-चार वर्ष लग सकते हैं।" लक्ष्मी ने कह

दिया ।

"हां भाभी ! तुम पंजाबी में बात करती हो । माता-पिता बंगला भाषा में और जो नई आएगी, वह अंग्रेज़ी में बातें किया करेगी ।"

"परन्तु मैं तो बंगाली सीख रही हूं । शीघ्र ही आप सबकी बात समझ सकूंगी और उसी भाषा में उत्तर दे सकूंगी ।"

"परन्तु वह नहीं सीख सकेगी ।"

"क्यों ?" सतीश ने पूछ लिया ।

"अंग्रेज़ लड़के-लड़कियां 'डस हैडिड' (गधों के से मस्तिष्क वाले) होते हैं ।"

अब भगवती ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो तुम एक 'डस हैडिड' से ही विवाह करोगे ?"

"माताजी ! इसमें मज़ा रहता है । चतुर बीवी तो राज्य करती है और एक 'डंस हैडिड' सेवा करती है ।"

पिता ने मुस्कराते हुए कहा, "नरेन्द्र ! तुम तो बहुत समझदार हो गए हो ।"

"हां पिताजी ! एक बैरिस्टर का पुत्र और दो एडवोकेटों का छोटा भाई समझदार नहीं होगा तो क्या बुद्धू होगा ?"

सब हंसने लगे ।

भोजन समाप्त हुआ तो भगवती ज्योत्सना को लेकर अपने पति के कमरे में चली गई । नरेन्द्र ने सतीश और लक्ष्मी के समीप आकर पूछा, "भैया ! दूसरा विवाह करोगे ?"

लक्ष्मी और सतीश हंस पड़े । सतीश ने हंसते हुए कहा, "वह मैंने कल इससे कर लिया है । आज इसकी डोली आई है ।"

"और इसके आने की दावत ?"

"यदि माताजी ने घर पर रहने की स्वीकृति दे दी तो कल दूंगा ।"

"और भाभी लक्ष्मीजी ?"

'यह भी यहां रह सकेंगी, परन्तु यह इनकी इच्छा और रुचि पर निर्भर करता है।"

इस प्रकार भोजन समाप्त हुआ और सब उठ गए।

१०

नरेन्द्र गम्भीर विचार में मग्न अपने कमरे में चला गया। लक्ष्मी और सतीश आजकल पृथक्-पृथक् कमरों में सोते थे। सतीश लक्ष्मी के साथ कमरे में जाने लगा तो लक्ष्मी द्वार पर ही खड़ी हो गई और प्रश्न-भरी दृष्टि से पति के मुख पर देखने लगी।

सतीश ने पूछा, "खड़ी किसलिए हो गई हो ?"

'आपको विचार करने के लिए समय देने के लिए कि पहली ही रात नववधू को छोड़ना ठीक है अथवा नहीं। छोड़ेंगे तो वहां जाने का एक अन्य प्रत्याशी नरेन्द्र बन सकता है।"

'वह अभी बच्चा है।"

'संसार द्रुत गति से चल रहा है। एक ही 'जेनेरेशन' में अन्तर दिखाई देने लगा है। पिछले सप्ताह शारदाजी आई थीं और बता रही थीं कि एक खरबूजे को पकता देख दूसरे भी पकने लगते हैं।"

"क्या मतलब ?"

मतलब यह कि वह भी विवाह कर रही हैं।"

'ओह! वह तो एक बड़ी आयु की स्त्री प्रतीत होती है।"

हां पैंतीस छत्तीस वर्ष की होंगी। उनका प्रस्तावित पति भी चालीस वर्ष का एक उन्हीं के स्कूल का मास्टर है।"

'तब तो ठीक है।"

"यही तो कह रही हूं कि एक खरबूजे को पकता देख दूसरे भी पकने लगते हैं।"

"तो नरेन्द्र की बात कह रही हो ?"

"मैं समझती हू कि नरेन्द्र और ज्योत्सना दोनों की बात कर रही हू।"

"परन्तु मैं तो तुम्हारे कमरे में इसलिए आ रहा था कि माताजी ज्योत्सना को लेकर मेरे पास आने वाली हैं और मैं सब बात तुम्हारे सामने ही करना चाहता हू।"

"परन्तु श्रीमानूजी ! मैंने अभी तक आपपर अविश्वास प्रकट नहीं किया। आप पृथक् मे बात करेंगे तो भी जो कुछ प्रबन्ध ज्योत्सना से करेंगे वह बता देंगे। वह गलत नही होगा। मुझे आपपर विश्वास है।"

'फिर भी बात तुम्हारे और माताजी के समक्ष ही होनी चाहिए।"

वे अभी द्वार पर खड़े बातें कर ही रहे थे कि भगवती ज्योत्सना को लेकर आ गई। आते ही उसने दोनों को कहा, "भीतर चलो।"

तीनों लक्ष्मी के बेडरूम मे जा पहुचे। वहा कुर्सियो पर भगवती और ज्योत्सना बैठ गए। लक्ष्मी अपने पलग पर बैठ गई और सतीश वहा अन्य कोई कुर्सी न होने के कारण खड़ा रहा।

भगवती ने कहा, "सतीश ! तुमने इससे व्यभिचार किया है। तुम्हारे पिताजी बहुत नाराज़ हैं। मैं अभी तो उनको शान्त होने का अवसर देने के लिए कह आई हू कि सतीश की बात पर कल अथवा एक-दो दिन मे विचार करेंगे। आज तो ज्योत्सना की बात पर विचार करना चाहिए।

"यह कहती है कि इसके पिता ने इसे घर से निकल जाने का नोटिस दे दिया है। यद्यपि इसकी माताजी उनकी मिन्नत-समाजत कर रही हैं, परन्तु यह तुम्हारी अनुमति से इस घर मे रहने आई है। बताओ, यह ठीक है ?"

'माताजी ! मैं विवश हो गया था।"

'देखो, मैंने यह निश्चय किया है कि इसे इस घर मे रख लू,

जिससे यह लक्ष्मी के साथ मिलकर तुम्हारे नाक की नकेल मज़बूती से पकड़ सके और तुम्हे इस भूल के लिए जीवन-भर बन्धन मे रख सके।

"क्यो लक्ष्मी ?" भगवती ने पलग पर बैठी लक्ष्मी से पूछ लिया।

"माताजी ! मैं इनके अन्तर्मन की बात तब से जानती हू, जब इनका विवाह नही हुआ था। सब कुछ जानती हुई भी मैंने विवाह किया था और इनके इस नये विचार की पुष्टि पर न तो अप्रसन्न हू और न ही प्रसन्न। मैं इस मामले मे निर्लेप ही हू।"

"तो ठीक है। इसे मैं यहा ही छोड़े जा रही हू। बगल वाला कमरा भी खाली है। यह अब तुम तीनो के विचार करने की बात है कि किस-किसको क्या-क्या और कितना चाहिए।

"मैंने ज्योत्सना से कमरे का भाड़ा तय कर लिया है। वह इसने स्वीकार कर लिया है। लो, मैं चलती हू। शेष प्रबन्ध प्रातःकाल कर सकूगी।"

सतीश मा की खाली की गई कुर्सी पर बैठते हुए ज्योत्सना से कहने लगा, "अब सो जाओ।"

उत्तर मे लक्ष्मी ने कह दिया, "चलिए, मैं आप दोनो को साथ वाले आपके कमरे मे पहुचा दू।"

"मैं वहा का मार्ग जानता हू।" सतीश ने कहा, "परन्तु मैं तो इस कमरे मे सोना चाहता हू।"

"मैंने अभी-अभी कुछ बताया है। आप भूल गए प्रतीत होते हैं।"

"क्या ?"

"उस कमरे मे जाने का एक अन्य प्रत्याशी हो सकता है।"

"वह कौन है ?" ज्योत्सना ने पूछ लिया।

"इनका छोटा भाई नरेन्द्र है।"

ज्योत्सना अवाक् मुख देखती रह गई।

'विवाह कब हुआ है ?"

'विवाह से क्या मतलब है मा ? यदि वेद मन्त्र बोलकर कहो तो नहीं ।"

"तो और कैसे ?"

'जैसे कुत्ते-बिल्लिया करते हैं ।"

"तो वह भी विवाह होता है ?"

'न होता तो उनके सन्तान कैसे हो जाती ? विवाह सन्तान के लिए ही तो प्रबन्ध है ।"

"नहीं बेटी ! विवाह मनुष्य समाज मे एक नियत विधि-विधान का नाम है, जिससे होने वाली सन्तान अपने माता पिता की सम्पत्ति की उत्तराधिकारी मानी जाती है। कुत्ते बिल्लियों की कोई सम्पत्ति नहीं होती। इस कारण उसके उत्तराधिकार के लिए विवाह का नियम नहीं।

"परन्तु अब रूस मे एक विधान बना दिया गया है कि किसीको खाने-पीने के अतिरिक्त अपने पास कुछ भी रखने का अधिकार ही नहीं।"

"हा सुना तो मैंने भी है। सुन्दरदास एक समाचारपत्र मे से पढ़कर सुना रहा था। जब वह हो जाएगा तो फिर विवाह के रीति-रिवाज की आवश्यकता नहीं रहेगी। तब मेहनत मजदूरी करो और रोटी, कपड़ा तथा मकान प्राप्त करो। बीमार पड़ जाओ तो हस्पताल में चले जाओ। मर जाओ तो म्युनिसिपल कमेटी की गाड़ी मे उठवा-कर श्मशान म।"

'यही तो हो रहा प्रतीत होता है।"

"परन्तु मां ! तुम्हारे जीवनकाल म होता तो दिखाई नहीं देता। अभी तो यहां अंग्रेज का राज्य है। वह बहुत मोटी बुद्धि का जीव है। उसके रहते तो रीति रिवाज और सम्पत्ति तथा उसके उत्तराधिकारी होंगे ही। मैं समझती हू कि अंग्रेजी राज्य तो अभी

सतीश ने उठ ज्योत्सना की बाह मे बाह डाल कहा, 'चलो, उस कमरे पर अधिकार तो जमा लें।"

दोनों कमरे से निकल गए। लक्ष्मी ने ऊपर डालने की चादर ओढ़ी और लेट गई। लक्ष्मी को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि उसके मन पर बोझ कम हो रहा है। जब-जब भी वह अपना मुख दर्पण मे देखती थी और उसकी तुलना सतीश के मुख से करती थी तो वह कुछ ऐसा अनुभव करती थी कि वह अपने अधिकार से कुछ अधिक प्राप्त कर रही है। वह अपनी बुद्धि और वाक्शक्ति का ही यह करतब समझती थी कि उसने एक सतीश जैसे सुन्दर और ओजस्वी युवक को अपने साथ बाध रखा है। इस विचार से वह कुछ, जो उसका अपना नही, उसे किसी प्रकार की धोखा-धडी से प्राप्त कर रही अनुभव करती थी और यही उसके मन का बोझा था। जब उसने देखा कि ज्योत्सना उसके पत्नी-कर्म की स्थानापन्न आ रही है तो वह सन्तोष अनुभव कर रही थी। अब सतीश की माताजी को भी सतीश की बात मानते देख वह समझ गई कि वह भी उसके अपने पति पर अन्याय को अनुभव करती थी और इसी कारण उन्होने ज्योत्सना को घर मे रख लेने की स्वीकृति दे दी है। इन विचारों मे वह हलके मन से सो गई।

इस घटना के कुछ दिन उपरान्त सरस्वती लक्ष्मी का सुख-समाचार लेने आई तो वह ज्योत्सना को वहा इत्मीनान से रहते देख विस्मय में पूछने लगी, 'यह यहा क्या कर रही है ?"

"मा !" लक्ष्मी ने बताया, 'यह यहा रहने आ गई है।"

"किस रूप मे ?"

'आपके दामाद की दूसरी पत्नी के रूप मे।"

सरस्वती भौचक्की हो मुख देखती रह गई। लक्ष्मी ने कहा, "वह इस बगल वाले कमरे मे रहती है और यहा की माताजी की स्वीकृति से रहती है।"

"विवाह कब हुआ है ?"

"विवाह से क्या मतलब है मा ? यदि वेद-मन्त्र बोलकर कहो तो नही।"

"तो और कैसे ?"

"जैसे कुत्ते-बिल्लिया करते हैं।"

"तो वह भी विवाह होता है ?"

"न होता तो उनके सन्तान कैसे हो जाती ? विवाह सन्तान के लिए ही तो प्रबन्ध है।"

"नही बेटी ! विवाह मनुष्य समाज मे एक नियत विधि-विधान का नाम है, जिससे होने वाली सन्तान अपने माता-पिता की सम्पत्ति की उत्तराधिकारी मानी जाती है। कुत्ते-बिल्लियों की कोई सम्पत्ति नही होती। इस कारण उसके उत्तराधिकार के लिए विवाह का नियम नही।

"परन्तु अब रूस मे एक विधान बना दिया गया है कि किसीको खाने-पीने के अतिरिक्त अपने पास कुछ भी रखने का अधिकार ही नही।"

"हा, सुना तो मैंने भी है। सुन्दरदास एक समाचारपत्र मे से पढकर सुना रहा था। जब वह हो जाएगा तो फिर विवाह के रीति-रिवाज की आवश्यकता नही रहेगी। तब मेहनत-मजदूरी करो और रोटी, कपडा तथा मकान प्राप्त करो। बीमार पड जाओ तो हस्पताल में चले जाओ। मर जाओ तो म्युनिसिपल कमेटी की गाडी मे उठवा-कर श्मशान मे।"

"यही तो हो रहा प्रतीत होता है।"

"परन्तु मां ! तुम्हारे जीवनकाल मे होता तो दिखाई नही देता। अभी तो यहा अंग्रेज का राज्य है। वह बहुत मोटी बुद्धि का जीव है। उसके रहते तो रीति-रिवाज और सम्पत्ति तथा उसके उत्तराधिकारी होंगे ही। मैं समझती हूं कि अंग्रेजी राज्य तो अभी

जाता दिखाई देता नही।"

"इस वहम को छोडो। तुम अब की बात करो। यदि बगल के कमरे वाली ने टागें पसार कष्ट देना आरम्भ कर दिया तो क्या करोगी?"

"मा! मुझे कुछ भी कष्ट नही। यहा की माताजी बहुत देख-भाल करती हैं। मुझे यहा बहुत सुख है।"

"परन्तु पति-सुख?"

"वह अभी सात-आठ मास के लिए नही चाहिए।"

"परन्तु यह तुम्हारी सौतन उसे नीबू की भाति निचोड भी सकती है।"

"तब तो दोनो को मुक्ति मिल जाएगी।"

परन्तु हुआ इससे विपरीत। जब तक लक्ष्मी के लडका हुआ, ज्योत्सना के गर्भ तीन मास का हो चुका था।

लक्ष्मी के लडके का नाम रखा गया हरिमोहन। इस अवसर पर केशवदास, सरस्वती, सुन्दरदास और उसकी पत्नी भी आए हुए थे।

नामकरण-संस्कार के उपरान्त अन्य सब चले गए, परन्तु कौमुदी जानबूझकर और सुन्दरदास के कहने पर रह गई। उसने लक्ष्मी से कहा, "बहन लक्ष्मी! यह तो यहा से सीधे दुकान पर जा रहे है। मैं यहा ही रहूगी। यह सायकाल अपने घर जाने से पहले मुझे यहा से लेते जाएगे।"

लक्ष्मी समझ गई कि कदाचित् ज्योत्सना के विषय मे बातचीत होगी। उसने कह दिया, "यह तो भाभी ने आज बहुत ही शुभ विचार बनाया है। किसका धन्यवाद करू, भाभी का अथवा भैया का?"

सुन्दरदास हस पडा और बोला, "दोनों का। यह साजिश तो हम घर पर ही विचार कर आए थे।"

"तो भैया, धन्यवाद। भाभी का धन्यवाद तो इनके जाने के समय सायकाल को ही करूगी।"

सुन्दरदास अपनी मोटरसाइकल पर चला गया। केशवदास और सरस्वती इत्यादि तो मोटर मे पहले ही जा चुके थे।

जब ननद-भाभी पृथक् कमरे मे बैठी तो बात लक्ष्मी ने ही आरम्भ की। उसने पूछ लिया, 'सुनाओ, तुम्हारे भाई साहब का कोई समाचार आता रहता है?'

कोमुदी हस पडी। हसते हुए बोली, "कुन्दन की बहू अपने मायके गई हुई है। कुन्दन दो बार उसे लेने जा चुका है, परन्तु वह नही आई।"

"तो क्या वह रूठी हुई है?"

"उसके पिता रूठे हुए प्रतीत होते हैं। बात यह हुई कि कुन्दन के श्वसुर ने लडकी को दहेज देने के स्थान पिताजी की कम्पनी मे पाच लाख 'इनवेस्ट' किया था, परन्तु पीछे उनका विचार बदल गया और वह अपना लगाया धन वापस मागने लगे।

धन कुन्दन की बहू के नाम है। इस कारण वह लडकी को अपने घर रखे हुए हैं और रुपये के लिए चाराजोई कर रहे हैं।"

'परन्तु क्या भाभी के पिता धन वापस करना नही चाहते?"

"यह बात नहीं। धन तो वह वापस कर देंगे, परन्तु धीरे धीरे। उन्होंने व्यापार बढ़ा दिया था और कई देशों मे बम्बई के माल की एजेंसिया खोल दी थीं। वहा से धन एकदम निकाला नही जा सकता।

"यह झगडा पिछले तीन मास से चल रहा है और इस काल मे वह दो लाख रुपया तो वापस कर चुके हैं। उनका विचार है कि आगामी तीन मास मे सब राशि वापस कर देंगे।"

"और तुम बताओ, तुम्हारे नाम पर भी तो पाच लाख रुपया लगा हुआ है।"

"मुझ तो चालीस हजार लाभ की रकम इस वर्ष मिली है। यह ठीक है कि मैंने यह धन भी लिया नहीं। वह इस कारण कि कुन्दन की बहू के नाम का रुपया जमा हो रहा है और मैंने अपनी निकासी

रोक दी है।"

"यह तो बहुत ठीक हो रहा है।"

"परन्तु मैं तो तुम्हारे विषय में जानने के लिए ठहरी हूं।"

"मेरी आर्थिक स्थिति तो अपने विचार से मुझे ठीक ही प्रतीत होती है। मुझे पिताजी ने दहेज मे सवा लाख रुपया दिया था। उसमे से यहा की माताजी ने अपने सम्बन्धियो मे पच्चीस हजार बाट दिया था। शेष एक लाख मे से निकालने की आवश्यकता नही पडी। उसमे मैंने अपने मासिक भत्ते मे से बचाकर कुछ जमा ही कराया है।"

"यह ठीक है। कुन्दन अपने माता-पिता से नाराज है। वह समझता है कि यदि यह लेन-देन की बात न होती तो वह विचार करने में स्वतन्त्र होता और तुमसे विवाह करने मे सफल हो जाता।"

"तो कुन्दन भैया समझते हैं कि उन्होंने विवाह से इनकार किया था?"

"इस प्रकार नहीं बहन लक्ष्मी! जब तुम जुहू के तट पर भैया को राखी बाधने लगी थी, तब वह पहले की भाति इनकार कर सकता था। वह करना चाहता भी था, परन्तु पिताजी ने दबाव डाला हुआ था कि वह तुमसे तिनका तोड दे। इससे उनकी फर्म के काम को विस्तार देने मे और भी सहायता मिल सकेगी। मेरे विवाह पर पाच लाख रुपया मिलने की बात पिताजी मान गए थे। वह तो यदि तुम्हारा कुन्दन से विवाह होता तो मेरा न होता और तब यह धन न मिल सकता। साथ ही कुन्दन के विवाह पर जो मिला है, वह भी न मिल सकता।"

"खैर, कुछ तो हुआ; परन्तु सुन्दरदास इस व्यापार को कैसा समझता है?"

"प्रत्यक्ष रूप मे तो तुम्हारे भैया मुझसे सन्तुष्ट हैं। मैंने भी अपने लाभ का धन इस वर्ष न लेना उनकी सम्मति से ही किया है। यह चालीस हजार भी पूजी मे ही सम्मिलित हो जाएगा और ब्याज

के स्थान लाभ का अर्जन करेगा।"

"तो भैया प्रसन्न हैं?"

"यह तो वह ही बता सकते हैं। मैं सब कुछ उनकी सम्मति से ही कर रही हूं।"

"और अभी तक सूखी बैठी हो। यह भी क्या भैया सुन्दर की सम्मति से ही है?"

"हां। बम्बई में 'प्रौफिलैक्टिस' मिलते हैं। वे मैंने मंगवाए हुए हैं और अभी तक तो इस बोझे से बची हुई हूं।" कौमुदी ने पलंग पर सो रहे हरिमोहन की ओर संकेत कर दिया।

इस समय भगवती और ज्योत्स्ना आ गईं। भगवती ने आते ही कौमुदी से पूछा, "कौमुदी बेटी! तुम्हारी मटकी अभी तक खाली ही प्रतीत होती है।"

"माजी! इसमें मेरा कुछ भी दोष नहीं।"

"तो किसका दोष है?"

"अभी तक तो मैं यह भी नहीं समझ सकी कि इसे दोष कहूं अथवा गुण?"

"परन्तु तुम्हारा पति भी इस गुण-दोष को नहीं समझता?"

"उन्हें तो इसमें रस आता प्रतीत होता है। मैं सदा उनकी सेवा के लिए तैयार रहती हूं।"

"और बच्चों का रस लेना नहीं चाहती?"

"वह कहते हैं कि इसके लिए अभी बहुत समय है। मेरी आयु अभी अट्ठारह वर्ष की है।"

"और तुम्हारी सास क्या कहती है?"

"मां-पुत्र में बात हुई है। पुत्र ने मां को उन यन्त्रों के विषय में बता दिया है, जिनका हम प्रयोग करते हैं। इसपर भी मां कहती है कि इनका प्रयोग दो-चार बच्चे होने के उपरान्त करना चाहिए और पुत्र कहता है कि बच्चे मेरे चौबीस-पच्चीस वर्ष की आयु होने के पीछे

आने चाहिए। यह मतभेद दोनों में चल रहा है। मैं इस विवाद मे तटस्थ ▯।"

"यह ठीक है, परन्तु सतीश इससे भिन्न विचार रखता है।"

"क्या ?" कौमुदी ने पूछ लिया।

"यही कि उसके पैंतीस वर्ष का होने तक वह दस बच्चों का बाप बनना चाहता है। इसी कारण उसने दो खेतों पर बुआई करनी आरम्भ कर दी है।"

इसपर तीनों स्त्रिया हंस पडी।

"तब तो आपकी यह कोठी छोटी हो जाएगी।" कौमुदी ने कहा।

"हा। सतीश एक अन्य कोठी बनवा रहा है। उसके लिए जमीन ले ली है। इमारत का नक्शा कमेटी मे दे चुका है।"

"तब तो ठीक है।"

और तीनों स्त्रिया हंसने लगीं।

तृतीय परिच्छेद

जब व्यास आश्रमवासियों को पता चला कि जगन्नाथ, जो स्वामी ब्रह्मानन्द के बम्बई जाने से पहले जगतानन्द हो गया था, आश्रम का अध्यक्ष बनने वाला है तो उसकी भी मान-प्रतिष्ठा बढ़ने लगी थी और आश्रमवासी अब अपनी कठिनाइयों को ले-लेकर उसके पास आने लगे थे।

ब्रह्मचारी रामानन्द अपनी पढ़ाई समाप्त कर अपने घर जा चुका था। उसे घर लौटे हुए दो वर्ष हो चुके थे। गुरु और मुख्य शिष्य को बम्बई से लौटे दो मास हो चुके थे और ब्रह्मानन्द आश्रम के प्रबन्ध में जगतानन्द की और अधिक सहायता लेने लगा था। स्वयं वह भजन-ध्यान और समाधि में लीन रहने लगा था।

जगतानन्द अब तक जान गया था कि आश्रम का व्यय कहाँ से चलता है। कुछ महाराज टीहरी गढ़वाल वार्षिक अनुदान देते थे। वह अनुदान ऋषिकेश में बैंक में जमा हो जाता था और कुछ उनकी ट्रस्ट कमेटी बम्बई से त्रैमासिक सहायता भेजती रहती थी। कभी आश्रम को विशेष सहायता की आवश्यकता होती तो स्वामी ब्रह्मानन्द बम्बई जाता और कमेटी के द्वारा विशेष सहायता माँग लाता था।

जगतानन्द का कार्यक्रम कुछ बदल गया था। अतः वह प्रातः

चार बजे उठ नित्य कर्म में लीन हो जाता था । इस नित्य कर्म में शौचादि और सन्ध्योपासनादि होता था । इस कार्य मे वह दिन के एक प्रहर तक लीन रहता था । तदनन्तर रामानन्द के स्थान पर काम करने वाला एक अन्य ब्रह्मचारी सदानन्द उसके तथा ब्रह्मानन्दजी के लिए दूध और कुछ आश्रम मे ही बनी हुई मिठाई ले आता था। मिठाई और दूध लेने के उपरान्त दोनो अध्यक्ष और उपाध्यक्ष इकट्ठे बैठ जाते और आश्रम के प्रबन्ध के विषय मे विचार और व्यवहार होता । तदनन्तर जगतानन्द प्रारम्भिक शिक्षा के ब्रह्मचारियो को और ब्रह्मानन्द उच्च शिक्षा के विद्यार्थियो को शिक्षा दिया करते थे । साय-काल चौथे प्रहर मे एक दिन ब्रह्मानन्द और एक दिन जगतानन्द उपदेश दिया करते थे ।

जगतानन्द के सुझाव पर आश्रम मे एक पुस्तकालय का निर्माण आरम्भ हो गया था । पहले स्वामी ब्रह्मानन्द स्मृति से ही पढाते थे। जगतानन्द की स्मृति अभी इतनी प्रखर नहीं हुई थी जितनी कि ब्रह्मानन्दजी की थी । जगतानन्द अभ्यास से कुछ दूर तक भूत और भविष्य मे भी देखने की क्षमता प्राप्त कर रहा था ।

एक दिन स्वामी ब्रह्मानन्द और जगतानन्द आश्रम के प्रबन्ध के समय के उपरान्त जब अपनी अपनी कुटिया मे जाने लगे तो ब्रह्मानन्द अपनी कुटिया मे जाने के स्थान जगतानन्द की कुटिया मे जा पहुचे। इसका कारण जानने से पूर्व जगतानन्द ने जो चौकी वहा उसके अपने बैठने के लिए रखी हुई थी, वह ब्रह्मानन्दजी को बैठने के लिए दे स्वय भूमि पर बैठ गया ।

ब्रह्मानन्द ने बैठते ही कहा, 'मैं तुमसे एक बात जानने आया हू।"

'आज्ञा करिए।"

"बम्बई मे तुम्हे उस लडकी के दर्शन हुए थे जिससे तुम्हारी सगाई हो चुकी थी ?"

'हां महाराज ! एक दिन मैं आपके साथ जुहू-तट पर टहल रहा था कि वह एक युवक के साथ टहलती हुई दिखाई दी थी। मेरा अनुमान है कि वह भी मुझे पहचान गई थी।"

और तुम उसे अपने मन से अभी तक निकाल नहीं सके ?"

मैं उससे घृणा करता हूं। उसकी सूरत शक्ल मुझे तब भी पसन्द नहीं थी और उस दिन देखने पर भी पसन्द नहीं आई।"

पसन्द आती तो क्या करते ?"

कदाचित् इन भगवे वस्त्रों को उतार उससे विवाह की इच्छा करता।"

और अब न पसन्द आने पर ?"

उससे घृणा करता हूं और उससे विवाह न करने पर सन्तोष अनुभव करता हूं।'

ब्रह्मानन्द ने मुस्कराते हुए कहा, 'दोनों भावनाएं मन और आत्मा पर समान प्रभाव उत्पन्न करती हैं।"

'क्या प्रभाव उत्पन्न करती हैं ?"

आत्मा को संसार से लिप्त करती हैं। निन्दा और प्रशंसा दोनों समान प्रकार की भावनाएं हैं। इस कारण उससे घृणा अथवा उससे प्रेम मन में राग अथवा द्वेष दोष उत्पन्न करने वाली हैं और एक का दूसरे में परिवर्तन सहज में ही हो सकता है।

देखो जगतानन्द ! वह अब विवाह कर चुकी है और मां बनने वाली है। इससे तुम्हारे लिए तो वह घृणा के भी योग्य नहीं।"

'तो किस योग्य है ?"

जिस योग्य संसार का कोई भी पदार्थ है। तुम्हारा उससे निःसंग रहना गुण है।"

गुरुजी ! यत्न कर रहा हूं।"

मैं तुम्हें यह सूचना ही देने आया था कि वह अब माता बनने वाली है। सब माताएं हमारे लिए माताएं ही हैं और उनके प्रति मां

की भावना ही रहनी चाहिए।

' देखो जगतानन्द ! वह गगा बह रही है। कुछ वर्ष हुए तुमने उसमें दो सौ के लगभग मोहरें बहा दी थी। वे अब कहा है ?"

"नही जानता।"

"इस प्रकार सब ससार के पदार्थ कालरूपी नदी मे बहते जा रहे है। कहा जा रहे हैं, कोई नही जानता, परन्तु तुमको तो ज्ञान होना चाहिए। तुम तो काल मे डुबकी लगा इसकी गहराई तक जाने की क्षमता प्राप्त करते जा रहे हो।"

जगतानन्द इस पूर्ण वार्तालाप का अर्थ समझने का यत्न कर रहा था और गुरुजी के ओर आगे कहने की प्रतीक्षा कर रहा था।

ब्रह्मानन्दजी ने कहा, "सब नदियो के जल सागर की गन्दगी मे मिल रहे हैं। हम लोग इस कालरूपी नदी से बाहर निकल तट पर आ खडे हुए हैं। वह जल,जिसमें स्वर्ण-मुद्राएं गई थी, बगाल की खाडी मे पहुच चुका है, परन्तु तुम तो यहा ही खडे हो और मैं यत्न कर रहा हू कि तुम्हें गगा के स्रोतों की ओर ले जाऊ। कुछ तो उन्नति इस दिशा मे तुमने की है, परन्तु यह लक्ष्मी से घृणा तुम्हारे ऊपर चढने मे बाधक हो रही है।

"इसीलिए मैं तुम्हे सचेत करने आया हू। ये प्रशसा निन्दा दोनो ही तुम्हें टाग से पकडकर नदी मे घसीट लेंगी और फिर तुम्हें समुद्र की ओर ले जाएगी।"

"फिर मुझे क्या करना चाहिए ?"

"वह मा है। मां से कोई घृणा नहीं करता। उसके स्वरूप, रग अथवा कुरूप होने पर कोई ध्यान नहीं देता। मा के लिए सबके मन मे स्तुति ही होनी है।"

"गुरुदेव ! समझ रहा हू। अब इस दिशा मे यत्न करूगा।"

'हा। और देखो, हम सन्यासी हैं। हम किसीके पक्ष अथवा विपक्ष में नहीं हैं। हम सूर्य के समान सबको अपनी ऊष्मा और

प्रकाश का लाभ देते हैं। कोई क्या है क्यों है और कब से है, यह हमारी चिन्ता का विषय नहीं। हमारी चिन्ता का विषय उसका कल्याण ही है।"

यह वार्तालाप हुआ था ब्रह्मानन्द के जगतानन्द के मन में लक्ष्मी के प्रति घृणा का भाव देखने पर, परन्तु इसका प्रभाव एक भिन्न प्राणी में भिन्न दिशा में हुआ। उक्त वार्तालाप के कुछ दिन उपरान्त रामानन्द गृहस्थियों के पहरावे में आश्रम में आया और जगतानन्द से स्वीकृति ले आश्रम में रहने लगा। जगतानन्द ने समझा कि वह अपनी पत्नी से लड़कर घर से चला आया है। पहले दिन तो उसने उसकी बात पर विश्वास कर लिया प्रकट किया था। रामानन्द ने कहा था, "महाराज! पत्नी के बच्चा होने वाला है और उसने कहा है कि मैं कुछ मास के लिए घर से बाहर रहने चला जाऊं तो ठीक है।"

जगतानन्द तो पहले दिन ही समझ गया था कि यह बात नहीं है। रामानन्द, जिसका गृहस्थ का नाम था रघुनन्दन मिश्र, का आए पाँच दिन ही हुए थे तो वह जगतानन्द से आकर कहने लगा, "महाराज! इस थैले में कुछ वस्तु है। यह मेरी अमानत आश्रम की तिजोरी में रख ली जाए। अपने पास रखने से इसके चोरी हो जाने का भय है। आजकल यात्री अधिक संख्या में आ-जा रहे हैं।"

जगतानन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "तो यह बात है?"

"हां महाराज! कुछ आभूषण हैं पत्नी के।"

"परन्तु मैं तो कुछ और कह रहा हूं। वह यह कि चोरी का भय उसे होता है, जो चोर हो। मैं स्वयं ऐसी ही स्थिति को पार कर चुका हूं। मैं भी घर से कुछ चुराकर लाया था और जब तक वह पास रहा, मुझे उसके चोरी हो जाने का भय लगा रहता था।"

रघुनन्दन स्वामीजी का मुख देखता रह गया। उसे चुप देख जगतानन्द ने कहा, "तो यह ठीक है कि तुम पत्नी के आभूषण उससे चोरी उठा लाए हो?"

रघुनन्दन तो जगतानन्द के पास इस कारण आया था कि वह बड़े स्वामीजी की शक्ति दूसरे के मन की बात जान लेने के विषय में जानता था। अब जगतानन्द को भी वैसी ही बात करते देख मुख देखता रह गया। वह समझ नहीं सका कि छोटे स्वामी क्या और कितना कुछ जान गए हैं।

आखिर बात जगतानन्द ने चलाई। उसने कहा, "तुम मां और पत्नी दोनों से लड़कर घर से भाग यहां आए हो और मैं समझता हूं कि दोनों तुम्हारे पीछे यहां आने वाली हैं।

"अच्छा यही होगा कि उनके आने से पहले तुम बड़े स्वामीजी के पास जाकर अपने झगड़े की बात सत्य-सत्य बता दो। तुम्हारी माता तथा पत्नी उनके पास ही आएंगी। वे मुझे नहीं जानतीं। बड़े स्वामीजी को जानती हैं। उनके द्वारा सत्य अथवा झूठ न बोला जा सके, इस कारण वहां जाकर सब कुछ वर्णन कर दो और जो कुछ तुम चाहते हो, उसके विषय में भी बड़े स्वामीजी से कह देना।"

"मैं उनको कष्ट देना नहीं चाहता था।"

"कष्ट तो तुमको होगा। स्वामीजी तो कदाचित् अब भी सब कुछ जानते हैं। वह स्वयं किसीके घरेलू मामलों में तब तक हस्तक्षेप नहीं किया करते, जब तक वह स्वयं उनके हस्तक्षेप की इच्छा न करे।

"तुम्हारी मां उनके पास जाएगी और स्वेच्छा से अपने हृदय की बात कहेंगी। उससे पहले तुम सब कुछ बता दोगे तो तुम्हारा कल्याण होगा।"

इसके उपरान्त रघुनन्दन ब्रह्मानन्दजी के पास जा पहुंचा। एक घण्टा-भर उसे लगा अपनी पूर्ण कथा बनाते हुए। उसके उपरान्त रघुनन्दन मिश्र ने जगतानन्द से बात नहीं की।

एक दिन उसकी पत्नी और मां आईं और सीधे ब्रह्मानन्दजी के पास जा पहुंचीं। ब्रह्मानन्द ने रघुनन्दन को भी वहां बुला लिया और दो घण्टे भर के पृथक् में वार्तालाप का परिणाम यह हुआ कि दो

दिन के उपरान्त रघुनन्दन अपनी माँ तथा पत्नी के साथ घर को लौट गया।

इस प्रकार आश्रम का जीवन चलते हुए एक वर्ष बीत गया था। बद्रीनारायण तथा केदारनाथ धाम के यात्री आने लगे थे।

व्यास आश्रम एक विश्राम-स्थान भी था। यात्री वहां एक रात ठहरने की सुविधा पाते थे। वैसे तो आश्रम के बाहर एक चट्टी बनी थी। उसके साथ अन्न-अनाज की दुकान भी थी और जो आश्रम की रोटी खाना चाहते थे, वे आश्रम के भीतर आ जाते थे। वे जाते हुए कुछ न कुछ दान-दक्षिणा में दे जाते थे।

एक दिन जगतानन्द मध्याह्नोत्तर का प्रवचन दे रहा था कि उसका ध्यान एक व्यक्ति की ओर आकर्षित हो गया। वह दामोदरदास था।

जगतानन्द के मन में उससे मिलने का उत्साह नहीं हो रहा था, परन्तु प्रवचन के उपरान्त दामोदर एक ओर खड़ा हो श्रोतागणों के चले जाने की प्रतीक्षा करता रहा। जब सब लोग आशीर्वाद प्राप्त कर चले गए और ब्रह्मानन्द तथा जगतानन्द भी उठ अपनी अपनी कुटिया में जाने लगे तो दामोदरदास जगतानन्द के साथ चल पड़ा। बात जगतानन्द ने ही आरम्भ कर दी। उसने पूछ लिया, "सुनाओ दामोदर! तीर्थयात्रा के लिए आए हो? अभी भी अकेले हो क्या?"

'नहीं मित्र! विवाह कर लिया है। घर में दो सन्तान हैं, तीसरे की तैयारी है, परन्तु तीर्थयात्रा के लिए अकेला ही आया हूं।"

इस समय दोनों कुटिया में आ पहुंचे थे। जगतानन्द अपने आसन पर बैठ और दामोदर को सामने चटाई पर बिठाकर पूछने लगा, 'जीवन से सन्तुष्ट हो न?"

'नहीं। सन्तोष तो ठहरे हुए जल की भांति होता है जो समय पाकर बदबू करने लगता है।"

"तो तुम बहता जल हो, जो अन्त में समुद्र में जा मिलता है और जिसमे पूर्ण ससार का कूडा-करकट आदिकाल से आज तक इकट्ठा हो रहा है ?"

दामोदर इस कथन का अर्थ नही समझा और मित्र का मुख देखता रह गया। जगतानन्द ने अपनी बात समझाने के लिए कहा, "यहा गगा का किनारा है। देखा है ?"

"हा। ग्यारह बजे यहा पहुचा था और स्नान करने आश्रम के घाट पर गया था।"

"देखा था जल कितना निर्मल है ?"

"हा मित्र।"

"परन्तु जानते हो कि यह किधर जा रहा है ?"

"कलकत्ता की हुगली नदी मे मिल समुद्र मे लीन हो जाएगा।"

"और कभी कलकत्ता गए हो ?"

"कई बार गया हू।"

"और देखा है कि वहा का जल कितना गदला और गन्दा है ?"

"सारे देश का कचरा और गन्दगी उसमे मिली होती है।"

"तो तुम ऐसा ही बहता जल हो ?"

दामोदर को अब कुछ-कुछ समझ आने लगा। जगतानन्द ने आगे कहा, "ससार मे सतोष से स्थिर चित्त होकर रहने से पवित्रता बनी रहती है, और यदि तपस्या से वाष्प बन जाए तो आकाश मे उड कैलाश और गगोत्री की ओर भी जाया जा सकता है।"

"वह तो सागर का जल भी हो सकता है।"

"हां, परन्तु तपस्या तो दोनों स्थानों पर करनी होती है, और यहा से कैलाश समीप है। सागर तो बहुत दूर है। प्राय सागर के बादल तो कैलाश पहुचने से पूर्व ही बरस जाते हैं और भूमि के कीचड मे कीचड हो जाते है।"

"तो मित्र ! तुम यहा से ही उड कैलाश पर जा बर्फ की भाति

जम जाना चाहते हो ?"

दामोदर को जब बात समझ आई तो उसने अलकार को आगे बढ़ाते हुए यह व्यंग्य कस दिया।

परन्तु जगतानन्द अब वह जगन्नाथ नहीं रहा था और उसे आश्रम मे रहते, प्रवचन सुनते और ध्यान-चिन्तन करते हुए सात वर्ष हो चुके थे। उसने मुस्कराते हुए कहा, "हां, चित्त की शान्ति के लिए बर्फ बन जाना ठीक ही है। कम से कम हुगली के गंदे जल में तथा किसी मरुभूमि की रेत मे टपककर कीचड बन जाने से और फिर आने-जाने वालो के पाव मे कुचले जाने से अधिक ठीक होगा।"

दामोदर अपनी स्थिति की कीचड से उपमा दी जाती सुन गम्भीर हो गया। एकाएक उसे कपकपी हुई और वह उठकर बोला, 'जगन्नाथजी ! तुम्हारा कथन विवादास्पद है। दोनो पक्षो मे बहुत कुछ कहा जा सकता है। मैं यात्रा से लौटता हुआ एक-दो दिन यहां रहकर देखूगा कि कितनी चित्त की शान्ति यहा प्राप्त है।"

इतना कह दामोदर चला गया।

२

दमोदर अपने ठहरने की चट्टी म पहुचा तो उसके साथ यात्रा कर रहे एक कुमार ने पूछा, "स्वामीजी से क्या बात करने ठहर गए थे ?"

साथी का नाम सरबनकुमार था। वह लक्ष्मी का छोटा भाई था। इस समय चौदह-पन्द्रह वर्ष की आयु का था। दामोदर का सम्पर्क लक्ष्मी के माता-पिता तथा बहन-भाइयो से चल रहा था। उसका विवाह भी लक्ष्मी की मौसी की लडकी से हो चुका था। तीर्थयात्रा पर चलने से पूर्व वह केशवदास के घर मिलने और अपनी पत्नी तथा दोनों बच्चों को उनकी कोठी मे रख जाने के लिए गया था। जब उसने

अपनी इच्छा उत्तराखण्ड की तीर्थयात्रा पर जाने की बताई तो लक्ष्मी का छोटा भाई सरवन साथ चलने के लिए तैयार हो गया।

लक्ष्मी का भाई सरवन ही उससे पूछ रहा था कि स्वामीजी से क्या बात करने ठहर गए थे। इसपर दामोदर ने बताया, "तुम्हारी बड़ी बहन के विषय में पूछने गया था।"

"कौन बहन ?"

"लक्ष्मीजी।"

"उसके विषय में क्या पूछना था ?"

"देखो सरवन ! तुम्हें एक बात बताता हूँ। एक समय यह स्वामी लाहौर में रहता था। इसका नाम जगन्नाथ था। इसकी सगाई तुम्हारी बहन लक्ष्मी से हो चुकी थी। एकाएक विवाह से कुछ दिन पहले ही यह तुम्हारी बहन को और उसके कुरूप मुख को देखकर घर से भाग आया। यह उससे विवाह करना नहीं चाहता था और इसकी मां विवाह के लिए हठ कर रही थी।

"अब यह साधु के रूप में यहां मिल गया तो इसका स्वास्थ्य-समाचार जानने लगा था और इसकी मंगेतर की बात बताने लगा था।"

सरवन को स्वप्नवत् कुछ-कुछ स्मरण था कि एक बार लक्ष्मी का विवाह दामोदर से होने वाला था और उसने भूख-हड़ताल कर दी थी। इससे सरवन ने हंसते हुए कहा, "हां, मुझे स्मरण आ गया है जीजाजी ! उसका आपसे विवाह होने वाला था तो उसने भूख-हड़ताल कर दी थी।"

"वह बात दूसरी है।"

"क्या बात है ?"

"मुझे मालूम था कि तुम्हारी बहन को विवाह के समय बहुत धन मिलने वाला है। इस कारण मैं विवाह करने के लिए राज़ी हो गया था, परन्तु अब तो मुझे तुम्हारी दूसरी बहन याहनी मिल गई है। वह तो लक्ष्मी से कहीं अधिक सुन्दर है।"

सरवन को यह बातचीत पसन्द नहीं आई। उसने बात बदलकर कह दिया, "मुझे तो यह यात्रा पसन्द नहीं आ रही।"

"तो फिर ?"

"मैं यहां से वापस लौट जाना चाहता हूं।"

"कैसे लौट जाओगे ?"

"कोई कुली वापस जाता आज देखता हूं। जिसके पास कम सामान हुआ, उससे अपना सामान उठवा ऋषिकेश, हरिद्वार और फिर लाहौर चला जाऊंगा।"

"मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि तुम अभी अल्पवयस्क हो और तुम अकेले यात्रा नहीं कर सकते।"

सरवन चुप कर रहा। परन्तु अगले दिन जब दामोदर की नींद खुली और वह अगले पड़ाव पर चलने के लिए बिस्तर बांधने लगा तो साथ का स्थान खाली देख विचार करने लगा। सरवन और उसका सामान वहां नहीं था।

वह परेशानी अनुभव करता हुआ जगतानन्द को ढूंढने चल पड़ा, परन्तु यह समय छोटे स्वामीजी के पूजा-ध्यान का था। इस कारण स्वामीजी की कुटिया से बाहर ही रोक दिया गया और वह प्रातःकाल नौ बजे तक वहां बैठा स्वामीजी के अवकाश पाने की प्रतीक्षा करता रहा।

जगतानन्द कुटिया से बाहर निकला तो दामोदर को कुटिया के द्वार पर बैठे प्रतीक्षा करते देख पूछने लगा, "सरवन को ढूंढ़ रहे हो ?"

"तो आपको पता है कि वह कहां है ?"

"वह वापस ऋषिकेश को लौट गया है। रात वह आया था और अपनी इच्छा बताने लगा तो मैंने उसका प्रबन्ध कर दिया।

एक कुली आश्रम का सामान लाने ऋषिकेश जा रहा था। वह रात के दो बजे ही यहां से जा रहा था। सरवन उसके साथ ही वापस लौट गया है।"

"इससे तो उसका पिता नाराज होगा।"

"नहीं होगा। मैं जानता हूं कि वह उसे तुम्हारे साथ भेजने के लिए तैयार नहीं था। लक्ष्मी की मां सरस्वती के कहने पर ही उसने भेजा था।"

"तो यह सब उसने बताया है ?"

"नहीं। कल तुमने ही तो बताया था।"

"नहीं मित्र ! मैंने तो ऐसा नहीं बताया।"

"ठीक है। तुम्हारे होंठों और जिह्वा ने तो नहीं बताया, परन्तु तुम्हारी आत्मा मेरी आत्मा को बता रही थी।"

"जब रात सरवन मेरे पास अपनी समस्या लेकर आया तो मैं सब समझ गया। तुमने उसकी बहन की निन्दा की थी और वह तुमसे नाराज हो लौटना चाहता था। मैंने उसकी सहायता कर दी है। यह मेरा काम है। यात्रियों की सेवा करने का काम मुझे बड़े स्वामीजी ने दिया हुआ है।"

"यह तो आपने ठीक नहीं किया। मैं देवप्रयाग पहुंचते ही इस बात की रिपोर्ट पुलिस में कर दूंगा।"

"ठीक है। कर देना। पुलिस क्या करेगी ? लड़का कल तक अपने माता पिता के पास पहुंच जाएगा।"

दामोदर निराश देवप्रयाग के लिए चल दिया। सरवन ने जब लक्ष्मी के विषय में निन्दात्मक बातचीत सुनी तो उसके मन में एकाएक प्रतिक्रिया हुई और वह वहां से ही लाहौर लौटने का विचार बना बैठा।

जब दामोदरदास ने उसे कहा कि वह अल्पवयस्क है तो वह बिना उसे बताए लौटने का प्रबन्ध करने लगा। वह मन में विचार करता था कि यदि वह अल्पवयस्क है तो वह उसका संरक्षक भी तो नहीं है। रही

हूं केवल है। उनके लिए कुली नहीं मिल रहा।"
"...जाएगा। तुमने ठीक किया है, जो दामोदर के साथ नहीं आ
रहे। वह अच्छा व्यक्ति नहीं है।"

इससे सरवन को प्रसन्नता हुई। उसने स्वामीजी के चरण स्पर्श
किए तो स्वामीजी ने सरवन की पीठ पर हाथ फेर प्यार दिया और कहा,
"रात के दो बजे एक कुली यहां से खाली हाथ ऋषिकेश जाने वाला है।
मैं तुम्हारा उससे साक्षात्कार करा देता हूं। तुम उससे तय कर लो।"

स्वामीजी सरवन को साथ लेकर आश्रम के कुलियों के निवास-
स्थान को चल पड़े। वहां एक कुली, जो उसी रात ऋषिकेश लौट रहा
था, उसे सरवन से साक्षात् करवाकर कहा, "इस लड़के का सामान
उठा ऋषिकेश ले जाना।"

"परन्तु महाराज, मैं तो रात के दो बजे यहां से चल दूंगा।"

उत्तर सरवन ने ही दिया और कहा, "मैं तुम्हें अपना स्थान दिखा
देता हूं। तुम जब वहां आओगे तो मैं तैयार मिलूंगा।"

इस प्रकार सरवन रात को दो बजे से पहले ही जाकर

बाहर खड़ा हो कुली की प्रतीक्षा करने लगा। कुली आया और वह अपना बिस्तर और सूटकेस चट्टी से उठा लाया तथा कुली को देखकर ऋषिकेश की ओर चल पड़ा।

तीसरे दिन वह लाहौर जा पहुंचा। जब वह भाड़े के तांगे में मैक्लोड रोड वाली कोठी के बाहर उतरा तो सबसे पहले दामोदर की पत्नी काहनी ने ही उसे देखा और कोठी के द्वार पर आ पूछने लगी "क्या हुआ है ?"

'कुछ विशेष नहीं। मेरा चित्त यात्रा में नहीं लगा। अत लौट आया हू।"

'और तुम्हारे जीजाजी ?"

"वह आज रुद्र प्रयाग से आगे जाने वाले होंगे।"

'तो वह नहीं लौटे ?"

नहीं बहन ! मैं ही लौटा हू।"

काहनी मुख देखती रह गई। सरवन ने तांगे वाले को भाड़ा दिया और स्वयं ही अपना बिस्तार और सूटकेस उठा भीतर चला आया। कोठी के बरामदे में उसे सुन्दर की पत्नी कौमुदी मिली और उसने भीतर आवाज दे दी माताजी ! माताजी ! सरवन लौट आया है।"

सब परिवार वाले ड्राइंगरूम में सरवन को घरकर खड़े हो गए। सुन्दर दुकान पर जा चुका था। केशवदास बारह बजे दुकान पर जाया करता था। घर पर सरस्वती लक्ष्मी कौमुदी और केशवदास सब यह जानने के लिए उत्सुक थे कि वह यात्रा से लौट क्यों आया है और दामोदर कहा है।

सरवन ने बताया नहीं कि वह दामोदरदास से नाराज हो लौट आया है। उसने यही कहा, "मुझे यात्रा में रस नहीं आ रहा था।"

लक्ष्मी को सरवन की यात्रा के रस न आने की बात समझ नहीं आई। इसपर भी वह उस समय तो चुप रही परन्तु पीछे जब वह

स्नानादि से अवकाश पा अल्पाहार ले अपने कमरे में विश्राम करने पहुंचा तो लक्ष्मी वहां आ पहुंची। उसने आते ही पूछा, "जीजाजी से लड़कर लौट आए हो ?"

"हां बहन ! वह तुम्हारी निन्दा करने लगा तो मुझे उसके साथ यात्रा करना भला प्रतीत नहीं हुआ।"

"क्या निन्दा की थी उसने ?"

"वह बता रहा था कि तुम्हारी क्यों पहली सगाई वाले के साथ विवाह नहीं हुआ था, क्योंकि तुम कुरूप हो।"

"कौन पहली सगाई वाला ?"

इसपर सरवनकुमार ने व्यास आश्रम पर स्वामी जगतानन्द की सब बात बता दी। इससे लक्ष्मी को अपने विवाह से पूर्व कुहू के बीच पर दो सन्यासियों में उस व्यक्ति की याद आ गई जिसके लिए वह अपने मन में पति की भावना बना चुकी थी और जिसे भगवे वस्त्रों में देख वहां अपने विवाह की आशा छोड़ वह अन्यत्र विवाह करने पर राज़ी हुई थी।

उस समय तो लक्ष्मी के मन में अपने जीवन की निराशा की झलक से ही विवाह के लिए उसे तैयार किया था परन्तु पीछे वह जगन्नाथ के साधु हो जाने का कारण जानने की लालसा करने लगी। यह बिना उनसे मिले और सीधा प्रश्न किए पता नहीं चल सकता था। अतः उसके मन में उस सन्यासी के दर्शन करने की लालसा जाग उठी।

लक्ष्मी ने पूछा "सरवन ! तुम उस स्वामी से मिले हो ?"

"हां बहन ! उसने ही तो मेरे लौटने का प्रबन्ध किया था, अन्यथा वहां से लौटना अति कठिन था। कुली अथवा सवारी का प्रबन्ध हो सकना बहुत कठिन था। मैं उस स्वामीजी को मिलने गया और उन्हें अपना नाम बताया तो वह एकाएक बोले, 'लक्ष्मी के भाई हो ?

'हां स्वामीजी !'

" दामोदर के साथ यात्रा पर आए हो ?'

" 'हां महाराज ! और अब लौटना चाहता हूं।'

" 'तो उससे लड पड़े हो ?'

" 'नहीं महाराज ! लड़ा नही, परन्तु अब उसके साथ यात्रा करने को मन नही करता।'

" 'ठीक है। वह अच्छा व्यक्ति नही है।"

" 'परन्तु महाराज ! मेरे पास बिस्तर और सूटकेस है। उसके लिए कुली नही मिल रहा।'

" मेरी कठिनाई समझ उन्होंने कुली का प्रबन्ध कर दिया और मैं वापस आ गया हूं। "

लक्ष्मी ने झिझकते हुए पूछ लिया, "और वह स्वामीजी मेरे विषय मे कुछ पूछते थे ?"

"नहीं तो। बस, मेरा नाम सुनते ही कहने लगे, 'लक्ष्मी के भाई हो ?' इसके अतिरिक्त कोई बात नहीं हुई।"

'तो अब क्या करोगे ? स्कूल से तो छुट्टियां ले चुके हो ?"

'कल स्कूल चला जाऊंगा। छुट्टियां 'कैंसिल' करवा दूंगा।"

लक्ष्मी को सरवन के लौट आने पर सन्तोष अनुभव हुआ था। केशवदास भी प्रसन्न था। केवल सरस्वती समझ रही थी कि वह अवश्य दामोदर से लडकर आया है। इससे उसकी बहन की लडकी काहनी से दामोदर का झगड़ा हो गया।

सरवन के लौट आने से कई दिन पीछे की बात है। लक्ष्मी अपने पिता के घर गई हुई थी और सरवन नियमित रूप से स्कूल जाने लगा था। प्रातःकाल का स्कूल था और वह मध्याह्न के साढ़े बारह बजे अपनी बाईसिकल पर पैंडल चलाता हुआ पसीने से तर-बतर होता हुआ कोठी पर पहुंचा तो सरस्वती ने सेविका को कहा, 'सरवन के लिए शरबत बना लाओ।"

वह अकेली ही ड्राइंगरूम में बैठी थी और सरवन भी शरबत की प्रतीक्षा में मां के समीप बैठा तो सरस्वती ने बताया, "देवप्रयाग से

दामोदर का पत्र आया है और उसने लिखा है कि व्यास आश्रम के साधु ने तुम्हें भड़काकर वापस भेज दिया है।

" साथ ही उसने काहनी को लिखा है कि वह उसकी मा के घर चली जाए। उसे हमारे घर नहीं रहना चाहिए।"

सरवन बिजली के पंखे तले पसीना सुखाता हुआ और मुझे गले से शरबत की प्रतीक्षा मे बैठा था। वह मा की बातो का उत्तर नहीं दे रहा था।

उसे चुप देख सरस्वती ने पूछा, "क्या बात हुई है ? क्या बहुत झगड़ा हुआ है ?"

सविता शरबत ले आई थी। सरवन ने आधा गिलास एक ही घूट मे पीकर गला हरा कर मा को कहा, ' मा ! उस आश्रम का अध्यक्ष एक साधु है, जिसका नाम जगतानन्द है। दामोदर जीजाजी कहते थे कि उसका नाम जगन्नाथ था। वह अब साधु हो गया है और उसके साधु होने का कारण लक्ष्मी बहन है। लक्ष्मी इतनी कुरूप थी कि वह उससे विवाह करना नही चाहता था। उसकी मा पिताजी के धन के लोभ मे विवाह कर रही थी। इस कारण वह घर छोड़कर चला गया था।

' परन्तु मा ! क्या बहन लक्ष्मी इतनी ही कुरूप है ? "

' मुझे तो वह तुम सबसे अधिक प्यारी और सुन्दर लगती है। उसके पति ने भी तो उसे पसन्द कर ही विवाह किया है। सतीश ग्रेजुएट है। एक विद्वान बैरिस्टर का सुपुत्र है और स्वयं भी हाईकोर्ट मे वकालत करता है। एक दिन की पाच सौ रुपया फीस लेता है। यदि लक्ष्मी कुरूप होती तो वह उससे विवाह क्यो करता ?

' और फिर तुम नही जानते परन्तु मैं जानती हूं कि लक्ष्मी सतीश से विवाह करना नही चाहती थी। इसलिए नहीं कि उसमे कोई दोष था, वरन इसलिए कि जगन्नाथ से उसके विवाह की बात हुई थी और वह किसी अन्य स्थान पर विवाह करना पाप मानती थी।

"पीछे जब उसे पता चला कि जगन्नाथ तो साधु हो गया है तो उसने सतीश से विवाह कर लिया। सतीश लक्ष्मी की छ वर्ष तक प्रतीक्षा करता रहा था।"

यह सब सरवनकुमार को प्रसन्न करने वाला वृत्तान्त था। इसपर भी वह समझ नहीं सका कि दामोदर को इससे क्या रोष है। इसका भी कारण सरस्वती ने बताया। उसने कहा, 'दामोदर की मां को पता चल गया था कि हम लड़की के विवाह पर उसे सवा लाख रुपया नकद देने वाले हैं। लक्ष्मी ने उससे विवाह नहीं किया। इस कारण वह तुम्हारी बहन की निन्दा करता है।"

सरवन अब सारी स्थिति समझने लगा था।

३

लक्ष्मी और ज्यात्सना की भली भांति पट रही थी। लक्ष्मी ने एक दिन ज्योत्स्ना को महाभारत की एक घटना सुना दी। उसने बताया, द्रौपदी ने पांचों पाण्डवों से विवाह किया था। वह बहुत सुन्दर थी और पांचों भाई उसके संगत के लिए लालायित रहते थे। इसपर नारद ने उनमें एक समझौता करा दिया। वह यह था कि द्रौपदी एक समय में एक ही भाई की सेवा में रहेगी। जब एक की सेवा में होगी तो फिर कम से कम एक वर्ष तक कोई दूसरा उसकी ओर नहीं देखेगा और उसके शयनागार में नहीं जाएगा। यदि जाएगा तो बारह वर्ष के लिए बनवास करेगा।"

लक्ष्मी ने बताया, 'यहां बात कुछ भिन्न है। आकर्षण का केन्द्र पत्नी नहीं वरन् पति है और उसके स्वास्थ्य का विचार कर हम परस्पर यह वचन कर लेना चाहिए कि एक ही समय में वह एक पत्नी का भोग बनेगा और कम से कम एक वर्ष तक ऐसा रहेगा। इस काल में यदि दूसरी पत्नी उसमें हस्तक्षेप करेगी तो वह फिर दो वर्ष के लिए

पति की सगत से वंचित रहेगी। यह समझौता सतीश को समझाकर बता दिया गया और उसे कह दिया गया कि यदि वह इस प्रबन्ध में विघ्न डालेगा तो वह दोनों पत्नियों की संगत से दो वर्ष के लिए वंचित कर दिया जाएगा।"

यह प्रबन्ध और इस सम्बन्ध मे वचन हुए थे, जब अभी लक्ष्मी प्रथम गर्भ से थी। लक्ष्मी ने तो अपना वचन पालन किया। वह सतीश की सगत से इनकार करती रही, जब तक उसका बच्चा आठ मास का नहीं हो गया। बच्चा होने के उपरान्त वह अभी रजस्वला नहीं होने लगी थी कि ज्योत्सना को गर्भ ठहर गया था और वह सात मास का हो गया था। इस कारण सतीश जब लक्ष्मी के बेडरूम मे सोने के लिए जाने लगा तो ज्योत्सना को किसी प्रकार का रोष नहीं हुआ; परन्तु लक्ष्मी के पूर्ण वर्ष-भर पति की संगत में रहने पर भी दूसरा गर्भ नहीं ठहरा। तब तक ज्योत्सना का बच्चा, जो एक लड़की थी, दस मास की हो चुकी थी। लक्ष्मी तो अपने बेडरूम मे लटक रहे कैलेण्डर पर वह दिन अंकित किए हुए थी, जब तक उसको पति का लाभ वचनानुसार मिलने वाला था। ठीक निश्चित दिन लक्ष्मी ने सायंकाल सतीश को कह दिया, "मेरी तपस्या का वर्ष आज से आरम्भ हो रहा है और अब मैं आपके क्लब से लौटने के पहले सो जाऊंगी।"

"परन्तु लक्ष्मी ! वास्तविक शर्त तो पूर्ण हुई नहीं।"

"हो तो गई है। आज मोहन के जन्म के उपरान्त आपकी सगत का लाभ उठाते हुए तीन सौ छयासठवां दिन है। आज आपसे मैं एक वर्ष के लिए मुक्ति चाहती हूं।"

"परन्तु तुम्हे गर्भ स्थित तो हुआ नहीं।"

"इसकी शर्त नहीं थी। यह बात हमारे प्रबन्ध मे न थी और न हो सकती है।"

"क्यों ?"

"सगत तो हमारे नियन्त्रण में आ सकती है,

तो भाग्य से ही हो सकती है। जो मेरे भाग्य मे नही, वह आपसे शर्त लगाने की बात नही हो सकती।"

ज्योत्सना तो आतुर हो रही थी। उसने लक्ष्मी की युक्ति का समर्थन कर दिया और सतीश लक्ष्मी के बेडरूम से निष्कासित हो गया। उस दिन जब वह क्लब से लौटा और रात का भोजन हुआ तो लक्ष्मी भी अपने पुत्र हरिमोहन को दाई को सौंपकर अपने कमरे मे चली गई और भीतर से द्वार बन्द कर लिया।

भगवती ने पूछा भी, "सतीश! लक्ष्मी से लड पडे हो क्या?"

"नही मा! हमारे समझौते के अनुसार वह एक वर्ष के लिए मुझे तलाक दे गई है।"

ज्योत्सना की लडकी मृणालिनी, जो अभी दस मास की थी, दाई के पास गई तो वह भोजन करने के कमरे से निकली और पति की बाह मे बाह डालकर अपने सोने के कमरे मे चली गई।

अतुल बैनर्जी ने अपनी पत्नी की ओर देखकर कहा, "लक्ष्मी एक भले घर की लडकी प्रतीत होती है। वह अपने पर बहुत नियन्त्रण रखती है।"

"यह तो ठीक है, परन्तु दूसरी ओर ज्योत्सना तो भूखे बाघ की भाति अच्छे शिकार पर लपकी है।"

अतुल ने कह दिया, "मैं इसके पुन गर्भस्थिति की आशा करता हू। यह बगाली लडकी है। मछली खाती है, और वह तुम्हारे घर मे पोते-पोतियों की लहर बहर लगा देगी।"

"हा, यह तो मैं आशा ही करती हू। इसी कारण तो ज्योत्सना के इस घर में आने पर मैं प्रसन्न हुई थी।"

माता-पिता का अनुमान ठीक निकला। उसके उपरान्त ज्योत्सना रजस्वला नही हुई और अगले ही मास गर्भस्थिति के लक्षण दिखाई देने लगे थे।

यही दिन थे जब लक्ष्मी अपनी माता के घर रहने के लिए गई हुई

थी और सरवनकुमार दामोदर के साथ तीर्थयात्रा पर गया था। जाने के सातवें दिन सरवनकुमार लौट आया तो पहले दिन तो सरवन के लौट आने पर विस्मय हुआ। पीछे लक्ष्मी और सरस्वती को सरवन के नाराज होने का कारण पता चला तो सतोष अनुभव हुआ और जब देव-प्रयाग से दामोदर का भेजा पत्र उसकी पत्नी काहनी को मिला तो वह नगर में अपनी सास के घर रहने चली गई।

लक्ष्मी को यह भला प्रतीत नहीं हुआ। उसने समझा कि दामोदर ने अवश्य कुछ सरवन तथा उसके विषय में निन्दात्मक लिखा होगा, तभी तो वह किसी प्रकार का कारण बताए बिना ही सास के घर चली गई है। वैसे यह निश्चित था कि वह पति के तीर्थयात्रा से लौटने पर ही अपनी सास के घर जाएगी।

काहनी को नगर वाले मकान में सास के पास गए अभी दो दिन ही हुए थे कि सतीश आया और लक्ष्मी को अपने घर चलने के लिए आग्रह करने लगा।

लक्ष्मी जाना नहीं चाहती थी। उसने पूछ लिया, "क्या बात है? वहा सब स्वस्थ और प्रसन्न तो हैं?"

"प्रत्यक्ष रूप मे सब ठीक है। केवल ज्योत्सना खाया-पीया उलटने लगी है।"

"तो ऐसा करिए कि आप मेरे कमरे मे सोया करिए।"

"इसी कारण तो आया हूं।"

"परन्तु वहां की चाबी तो माताजी के पास है। उसके लिए भी तो यहा आने की आवश्यकता नहीं थी।"

"परन्तु साथ तो तुम सोया करोगी।"

"नहीं श्रीमान्‌जी! मैं तो आपके साथ उस कमरे में सोऊंगी नहीं।"

"कब तक?"

"कम से कम अभी दस मास तक और।"

"और तब तक मैं रण्डुओं की भांति रहूं ?"

"नहीं। ऐसे ही, जैसे पति पत्नी के प्रसव के समय संयम से रहा करता है।"

"बहुत कठिन है।"

"परन्तु मैं तो वचनबद्ध हूं।"

"ज्योत्सना स्वयं अपना अधिकार तुम्हें दे देगी।"

"परन्तु श्रीमान् ! मैं अपना अधिकार वापस नहीं कर रही।"

"कौन-सा अधिकार वापस नहीं कर रही ?"

"अभी दस मास तक पति की सेवा से छुट्टी पाने का अधिकार मेरा है।"

"तो यह तुम अधिकार समझती हो ? इसमें भी किसी प्रकार का रस है ?"

"हां श्रीमान् !"

"तो ऐसा करिए श्रीमतीजी ! अपनी सास की सेवा में तो चल-कर रहिए और उसे अपनी पुतोहू की सेवा से वंचित मत करिए।"

"तो ऐसा माताजी ने कहा है ?"

"हां, और उन्होंने ही मुझे तुम्हें वहां ले आने के लिए भेजा है और श्रीमतीजी को वहां चलना ही चाहिए।"

"हां, यदि माताजी ने ऐसा कहा है तो मैं चल सकती हूं।"

परिणामस्वरूप रात के भोजन के उपरान्त सतीश लक्ष्मी को लेकर अपनी मां के घर आ पहुंचा।

भगवती ने पति-पत्नी को और गोद में हरिमोहन को उठाए आते देखा तो विस्मय में पूछ लिया, "तो तुम ससुराल में गए थे ?"

"हां माताजी ! इसको लेने गया था।"

"परन्तु यह तो दो महीने के लिए मां के घर रहने गई थी और अभी इसे गए पन्द्रह दिन ही हुए हैं।"

"आपकी एक पुतोहू बीमार है न। इस कारण दूसरी को आपकी

सेवा करने के लिए ले आया हूं।"

'परन्तु मैंने लक्ष्मी इत्यादि को अपनी सेवा का कार्य दिया हुआ है क्या ? यह तो मेरे उपरान्त यहां घर की मालकिन बनने के लिए है।"

'उस पद की योग्यता प्राप्त करने के लिए ही तो इसे लाया हूं।"

तब ठीक है। बताओ लक्ष्मी ! यहां की मालकिन बनने की योग्यता प्राप्त करने के लिए क्या करोगी ?"

जो आप करने को कहेंगी, वही करूंगी। इसमें आपकी आज्ञा-पालन ही एक कार्य अभी तक समझी हूं।"

अतुल बैनर्जी हंस पड़ा। मां पुत्र और पुत्रवधू सतीश के पिता का विस्मय में मुख देखने लगे। वे समझे नहीं थे कि पिता का हंसने में कारण क्या है। बैनर्जी उठ खड़ा हुआ और अपने सोने के कमरे की ओर जाते हुए बोला, "इसका कारण कल बताऊंगा।"

अतुल बैनर्जी अपने कमरे में गया तो भगवती उसके पीछे चली गई। ज्योत्सना तो पहले ही अपने कमरे में गई हुई थी।

लक्ष्मी भी लपककर उठी और अपने बेडरूम में गई और जाकर भीतर से द्वार बन्द कर लिया।

सतीश बच्चे को दाई को सौंपने गया था। हरिमोहन को दाई को देकर जब वह आया तो लक्ष्मी अपने बेडरूम का द्वार भीतर से बन्द कर चुकी थी। सतीश ने द्वार पर थाप दी तो भीतर से आवाज़ आई, "आपकी प्रतीक्षा बहन ज्योत्सना कर रही है।"

सतीश उस कमरे में गया तो ज्योत्सना गहरी नींद में सो रही थी। विवश हो सतीश वस्त्र बदल साथ वाले पलंग पर सो गया।

इससे ज्योत्सना की नींद खुल गई। उसने करवट बदल पूछ लिया, 'तो लक्ष्मी को किसलिए लाए हो ?"

"माताजी की सेवा के लिए।"

'तब ठीक है। सो जाइए। मैं दिन भर की भूखी और अत्यन्त दुर्बलता अनुभव कर रही हूं।"

सतीश रातके समय हल्ला करने के स्थानपर करवट ले मुख दूसरी ओर कर सोने का यत्न करने लगा। वह सो नहीं सका। आखिर उठकर बाहर कोठी के लॉन मे चला गया और वहा एक खाट डलवा खुले मे लेट रहा।

४

यह सम्बन्धों के अन्त का आरम्भ था। लक्ष्मी तो छ घण्टे गहरी नींद सोकर तरोताज़ा हो उठी थी और पिता के घर मे से लाई गीता का पाठ करने लगी। अत चार बजे प्रात उठ स्नानादि कर गीता ले पढ़ने लगी तो उसे हरिमोहन के पिता की याद आ गई। वह उस समय उठकर अपना कचहरी का काम देखने लगता था, और आज उसने भाककर पति के स्टडीरूम की ओर देखा तो वहा प्रकाश नहीं हो रहा था। वह ज्योत्सना के कमरे मे चली गई। वह जागी हुई थी और बेड-टी ले रही थी। साथ बिस्कुट थे। वहां भी पति को न देख पूछने लगी, "मृणालिनी के पिता कहा हैं ?"

"तो तुम्हारे कमरे मे नहीं है ?"

"वह तो तुम्हारे कमरे मे आए थे।"

"तो फिर ढूढ लो। यहा तो वह नही है।" लक्ष्मी कुछ चिन्ता व्यक्त करती हुई ड्राइगरूम में आ पहुची। वहा नौकर भाड-पोंछ कर रहा था। पिता के कमरे मे प्रकाश था। वह वहा चली गई। अतुल बैनर्जी ने प्रश्नभरी दृष्टि से लक्ष्मी की ओर देखा तो लक्ष्मी ने पूछ लिया, मोहन के पिताजी को देख रही हू।"

"वह बाहर लॉन मे सो रहा है।"

"क्यों ?"

"दो-दो पत्नियां होते हुए भी उसे एक भी प्राप्त नहीं हुई प्रतीत होती।"

'तो यह बात है !" इतना कह वह बाहर लॉन मे आ पहुची। सतीश तो रात-भर करवटें लेता हुआ सो नही सका था और प्रात चार बजे ही उसकी आंख लगी थी। अभी पाच बजे थे। वह अभी भी सो रहा था। लक्ष्मी पति की खाट के एक ओर बैठ बोली, 'आज जागिएगा नही ?"

सतीश लक्ष्मी को वहा बैठे देख उठा और आखें मलता हुआ बोला कितने बज गए हैं ?"

"पाच बज रहे है।"

'ओह ! मैंने तो एक मुकद्दमा तैयार करना है।" वह लपककर खाट से नीचे उतर खड़ा हो गया और अपने स्टडीरूम की ओर चला गया। लक्ष्मी किचन मे गई और चाय का एक प्याला, दो बिस्कुट ले पति के स्टडीरूम मे जा पहुची।

सतीश उस समय तक केस की फाइल खोलकर पढ और उसमे से नोट ले रहा था। उसने ध्यान फाइल से ऊपर उठा पूछ लिया, 'विनी कहा है ?" यह सेविका का नाम था और प्रात की चाय लाना उसका काम था।

'वह आपको अभी तक सोया देख अपनी कोठरी म चली गई है। इस कारण मैं ही ले आई हू।"

सतीश ने चाय का प्याला और सासर पकड़ते हुए पूछ लिया, "यह प्रात काल की चाय पिलाना पत्नी का काम है अथवा रात को अपने पलग पर पति को सुलाना ?"

"डियर !" लक्ष्मी ने बिस्कुट की प्लेट सामने मेज पर रखते हुए कहा, "दिन प्रात जागने पर आरम्भ होता है अथवा रात सोने के समय ?'

'प्रात । परन्तु क्या यह मेरे प्रश्न का उत्तर है ?"

'और सोना दिन-भर का कौन-सा भाग है ?"

'मैं समझता हू कि चौथाई।"

"तो तीन-चौथाई दिन-भर सेवा तो लीजिए। कहीं ऐसा न हो कि एक-चौथाई के लोभ मे शेष तीन-चौथाई भी हाथ में न रहें।"

मनीश इसका अर्थ समझने का यत्न करते हुए चाय की चुस्की ले पत्नी का मुख देखने लगा।

लक्ष्मी ने अब सामने मेज़ की दूसरी ओर कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "आजकल दिन का एक-चौथाई रात का समय मैं किसी दूसरे के हाथ मे सेवा के लिए दे चुकी हू। वह कुछ रुग्ण है। इस कारण शेष तीन-चौथाई दिन के लिए मैं आ गई हू।"

"बहुत चतुर हो लक्ष्मी।"

'क्या चतुराई की है, जिसकी आप प्रशंसा कर रहे है?'

"परन्तु मैं तो निन्दा कर रहा हू।"

"मुझे वह प्रशंसा ही समझ आ रही है। देखिए जी! अभी साय-काल मे बहुत समय है। दिन के एक-चौथाई भाग का स्वामी कोई दूसरा है। मैं उसकी मलकीयत में हस्तक्षेप करना नहीं चाहती।"

"परन्तु वह तो बीमार है।"

"यह तो न मेरे अधीन है और न ही उसके। आप भी इसमें कुछ नही कर सकते। जिसपर अपना वश न चले, उसको तो सहन ही करना पड़ता है।"

"परन्तु मुझे इस सेवा की आवश्यकता नही।"

"ठीक है। कल से यह काम भी नहीं करूगी। आज तो आप इसे लेकर अपना काम करिए।"

इतना कह लक्ष्मी उठी और अपने कमरे में चली गई। प्रात के अल्पाहार के उपरान्त मनीश कोर्ट मे जाने योग्य कपड़े पहनने लगा तो लक्ष्मी वहा पहुच गई और उसको कपडे पहनने मे सहायता करने लगी। मनीश ने झटककर कोट छीन लिया और स्वयं दर्पण के सामने जा खड़ा हो पहनने लगा।

लक्ष्मी ने मुस्कराते हुए पूछा, "तो इस काम से भी छुट्टी दे रहे

हैं ?"

"तुम्हे मैंने सब कामो से छुट्टी दे दी है ।"

"बहुत धन्यवाद है । तो सायंकाल फिर दर्शन करूंगी ।" इतना कह वह कमरे से निकल गई ।

वह अपने कमरे मे जा मन मे विचार करने लगी कि वह उसमे परिवर्तन पाया है अथवा उसके पति मे ।

इस समय दाई हरिमोहन को कपड़े पहना ले आई । लक्ष्मी ने पूछा, "यह दूध पी चुका है क्या ?"

"हा बहनजी !"

हरिमोहन इस समय सवा साल का हो चुका था और मम्मी पापा इत्यादि शब्द उच्चारण करने लगा था ।

वह आज गीता का पाठ नही कर सकी थी । वह अपने बच्चे से बातें करने लगी थी कि भगवती आ गई ।

"माताजी !" लक्ष्मी ने कहा, "देखिए, यह अब अपने मन के भाव प्रकट करने लगा है ।"

"क्या कहता है ?"

"यह दाई के विषय मे कुछ कहना चाहता है, परन्तु उसके लिए यह शब्द नही पा रहा । जब विनी इसे छोडकर गई तो इसने कहा है, 'मम्मी विनी । मम्मी · विनी ।' यह उसके विषय में कुछ कहना चाहता है, परन्तु जानता नहीं कि कैसे कहे ।"

"तो इसे प्रतीक्षा करनी चाहिए । कुछ शब्द और सीख ले ।"

वह तो यह करेगा ही, परन्तु केवल प्रतीक्षा करने से ही तो कुछ नही बन सकता । उस काल मे प्रयत्न और फिर उस प्रयत्न मे बडो की सहायता के बिना कुछ सीख नही सकेगा ।"

"हा मोहन !" अब भगवती ने मोहन को सम्बोधन कर पूछ लिया, "क्या कहना है ?"

"मा···विनी···मैं···।" इसपर दोनों बडी स्त्रिया हसने लगी ।

बच्चा चुप हो मुख देखता रह गया। लक्ष्मी ने पूछा, 'कान मरोडा है ?" और उसने अपने कान को हाथ लगा दिया।

बच्चे ने सिर हिला दिया। लक्ष्मी ने पूछा, 'चपत लगाई है ?" और हलकी-सी चपत उसके मुख पर लगा दी। बच्चे ने फिर सिर हिला दिया। अब बच्चे ने कहा, "मम्मी !" और उसने मा के होठो पर हाथ रख दिया।

लक्ष्मी ने कुछ समझा और उसके गाल को चूम लिया। अब बच्चा प्रसन्न हो हस पडा, अर्थात् वह अपनी बात समझा सका था।

अब लक्ष्मी ने कहा, "तो उसने तुम्हारे मुख को चूमा था ?"

बच्चे ने पुन गाल आगे कर दिया। मा ने पुन. मुख चूमा और कहा, 'इसे चूमना कहते हैं।"

भगवती को अपनी बात स्मरण आ गई और पूछने लगी, "तो मैं भी तुम्हारा मुख चूम सकती हू ?"

हरिमोहन अपनी मा की गोद से उठ दादी की गोद म जा बैठा और गले मे बाह डाल गाल आगे कर बैठा।

भगवती ने कहा, 'यह तुम्हारा बच्चा बाप से भी अधिक समझ-दार होगा।"

"और ऐरे-गैरे से मुख चुमाता फिरेगा ?"

"परन्तु इसमे दोष तुम्हारा नही है क्या ?"

"माजी ! मैं समझी नही।"

'तुमने उसे ज्योत्सना को घर लाने मे उत्साहित नही किया था क्या ?"

'ऐसे ही, जैसे इसे मुख चुमाने मे उत्साहित कर रही हू।"

"हा, यही तो कह रही हू।"

'परन्तु माजी ! वहा तो प्रतिक्रिया उलटी हो रही है।"

" वह इस कारण कि ज्योत्सना उसके मुख-चुम्बन को सहन नहीं कर सकी। देखो लक्ष्मी ! मैं तुम्हे एक बात बताती हू। जब तुम पहले

हो दिन हमारे घर मे आई थीं तो तुम आजकल से अधिक कुरूप प्रतीत होती थी। मुख तो तुम्हारा जो कुछ है सो है, परन्तु उस समय तुम्हारा शरीर भी अभी भरा नही था। हड्डियां अधिक थी और मास कम था। उस समय सतीश ने पिता से कहा था, 'पिताजी, मैं तो इसी लडकी से विवाह करूंगा।'

" 'इसमे क्या गुण है ?' पिता ने पूछा।

" 'इसमें विकास की गुजाइश है और ज्योत्सना तो अभी से भैंस-बुद्धि हो रही है।'

" 'तुम बुद्धि की बात कर रहे हो अथवा शरीर की ?' पिता ने पूछा था।

" 'दोनों की पिताजी !'

"पुत्र का कहना था कि एक विकासशील है और दूसरी ह्रास-शील। मैं और तुम्हारे पिता समझे नही। इस प्रकार बात चलती रही। मैं देख रही हू कि सतीश की उस समय कही बात अब प्रकट हो रही है। तुम विकास करती-करती बहुत आगे निकल गई हो, और ज्योत्सना तो कुछ पशुपन की ओर ही खिसकी है।"

लक्ष्मी अपनी सास की बात का उद्देश्य समझने के लिए उसका मुख देखने लगी। इतना तो वह समझी थी कि बच्चे के जन्म के उप-रान्त उसका शरीर पहले से अधिक भर गया है। अब वह अधिक गोल और मासल हो गई है। दूसरी ओर एक बात प्रकृति ने भी की थी। वह यह कि ज्योत्सना का पहला बच्चा अभी चार मास का ही हुआ था कि वह पुन. पेट मे निर्माण आरम्भ कर बैठी थी।

परन्तु यह ज्योत्सना का गुण है अथवा दोष। उसमे स्त्रीत्व उससे अधिक था।

जब लक्ष्मी बात समझी नहीं तो भगवती ने कहा, "तुम बुद्धि में भी उन्नति कर रही प्रतीत होती हो, और शरीर तो तुम स्वय भी दर्पण मे देख सकती हो।"

"भाजी ! यह परिवर्तन तो मैं अनुभव करती हू, परन्तु इनके साथ एक बात और हुई है, जो मैं अनुभव कर रही हू और किसीसे कहती नही हू।"

"वह क्या है ?"

'वह यह कि मेरी बुद्धि का विकास हुआ है अर्थात् वह अधिक तीक्ष्ण हुई है। साथ ही वह सुदृढ और सबल भी हुई है। वह मेरे कार्यों पर अधिक नियन्त्रण रख रही है।"

"वह तुम्हारे इस नियन्त्रण के लिए तुमसे नाराज हो गया है।"

"यह इस कारण कि अभी वह मनोद्गारो मे बह रहे थे। आशा करती हू कि सायकाल तक जब उनके मनोदगार शान्त होंगे तो उनकी बुद्धि बादलो से निकले चाद की भाति निर्मल हो परिस्थिति को समझने लगेगी।"

परन्तु मुझे भय है कि इस क्षुब्ध मनोद्गार के साथ तो वह कुछ अनिष्ट भी कर सकेगा।"

'परन्तु यह तो सब मनुष्य करते हैं। मन के प्रलोभनों के अधीन वे प्राय प्रसित होते हैं तो बुद्धि जो लगाम है वह मनरूपी घोडो को ठोकर खाने से रोक सीधे मार्ग पर ले आती है। मैं समझती हू कि इनमे लौट आने की सामर्थ्य है।"

'परमात्मा करे कि ऐसा ही हो, परन्तु आज कोर्ट मे जाते हुए उसने कहा है कि वह लक्ष्मी से सर्वथा निराश होता जा रहा है।"

'माताजी ! वह इस कारण कि उन्होंने मुझे समझने का यत्न ही नही किया। मैं समझती हू कि मन में उठा तूफान कुछ शात हो तो बादल छट जाएगे और वह मुझको भली भाति देख सकेंगे।"

बात कुछ विलक्षण हुई। साय चार बजे मुशी आया और सतीश का ब्रीफकेस, कुछ पुस्तकें और फाइलें सतीश की मेज पर रखकर जाने लगा तो भगवती ने पूछ लिया, "छोटे बाबू कहा हैं ?"

"वह कोर्ट से सीधे क्लब में गए हैं। कह रहे थे कि वहा आज

सास के पास ड्राइंगरूम मे आ बैठी ।

पाच बजे बडे बाबू आए। वह सायकाल की चाय अपने मित्रो के साथ हाईकोर्ट के रेस्टोरा मे लिया करते थे। जब वह आए तब तक ज्योत्सना भी भगवती को चिन्ता मे वहा बैठा देख समीप आकर पूछने लगी थी, "माताजी ! बहुत चिन्ता मे प्रतीत होती हैं ?"

भगवती कुछ उत्तर देने ही लगी थी कि अतुल बैनर्जी आ गया और भगवती लक्ष्मी और ज्योत्सना दोनों को वहा ही छोड अपने पति के स्टडीरूम मे चली गई ।

जब भगवती चली गई तो ज्योत्सना ने पूछा, "बहन लक्ष्मी ! क्या बात है, जो माताजी का मुख लम्बा हो रहा था ?"

"इनके बैरिस्टर सुपुत्र कोर्ट से नियत समय पर घर नहीं आए, इस कारण वह चिन्तित हैं।"

"और बहन लक्ष्मी भी चिन्तित हैं क्या ?"

"कुछ अज्ञात भय अब मुझको भी लग रहा है ।"

"क्या अज्ञात भय लग रहा है ?"

"वह यह कि मेरी बचपन मे एक स्थान पर सगाई हुई थी और वह मेरी सूरत-शक्ल देख भाग गया था। अब मेरा मोहन के पिता से विवाह हुआ है और वह वही मेरे वचन-भग न करने पर मुझसे रूठ गए हों।"

"क्या वचन-भग नही किया लक्ष्मी बहन ने ?"

"एक वचन मैंने बहन ज्योत्सना को दिया था कि मैं और वह पति का प्रयोग बारी-बारी से एक-एक वर्ष तक करेंगी। आजकल बहन ज्योत्सना का सुहाग-वर्ष चल रहा है। इस कारण मैंने उनको रात अपने कमरे मे घुसने नही दिया ।"

"तो यह बात है ! परन्तु मैंने…।" वह कुछ कहती-कहती रुक गई और फिर बोली, "हा, कुछ चिन्ता की बात तो है। परन्तु उनको विदित था कि यह वर्तमान वर्ष मेरे लिए है। इस कारण उनको मुझसे

पूछकर तुमसे बातचीत करनी चाहिए थी ।

"दोष तो उनका ही है । उनको चाहिए था कि वह मुझे कहते त
मैं उनके लिए तुम्हे वचन से मुक्त कर देती ।

'मैं यह विचार करती हू कि मैंने उनको ससार के पतियों
अधिक सुविधा दिला रखी थी । उनको दो पत्नियां रखते हुए सयम
काम लेना चाहिए ।

"सयम से भय कुछ नही । मनुष्य भी तो एक पशु ही है । इतन
अन्तर है कि पशु की इच्छा वर्ष मे एक बार होती है और मनुष्य
लिए कोई ऋतु, दिन, समय अथवा आयु का नियम नहीं ।"

"मैं उनको इतना निर्बुद्धि नहीं समझती थी ।"

'परन्तु जब वासना का भूत सवार होता है तो फिर बुद्धि कु
काम नही करती ।"

सतीश रात के दस बजे आया और सीधा ज्योत्सना के कमरे क
ओर जाने लगा तो ज्योत्सना ने आवाज दे दी । उसने कहा, "जी,
यहा भोजन की प्रतीक्षा म बैठी हू ।"

वह ड्राइगरूम मे दोनों पत्नियो को बैठा देख उधर ही चला आ
और दोनो के बीच मे बैठ गया। उसके बैठते ही दोनों को समझ आ
कि उसने मद्यपान किया हुआ है और उसके श्वास में से मद्य की ग
आ रही है।

५

अतुल बैनर्जी मद्य पीया करता था, परन्तु वह रात के भोजन
परान्त अपने बेडरूम मे जाकर पीया करता था। इसपर भी लक्ष्म
इसकी गन्ध को पहचानती थी परन्तु वह कुछ कह नहीं सकी ।

ज्योत्सना ने तो तुरन्त कह दिया, 'आज तो आपने शराब पी हु
है ।"

सतीश अपने विचार से कुल्ला करके आया था और समझ रहा था कि उसकी इस हरकत को घर पर कोई जान नहीं सकेगा, परन्तु ज्योत्सना ने जब निश्चयात्मक भाव मे कहा तो सतीश ने उससे पूछ लिया, "तो तुम इसकी गन्ध को पहचानती हो ?"

"हां। मेरे पापा और मम्मी पीते हैं।"

"और तुम ?"

"मैंने भी चखी तो है, परन्तु मैं पसन्द नहीं करती।"

"परन्तु पापा के पीने को सहन तो करती हो ?"

"वह पापा हैं। उनको मना कैसे कर सकती हूं ?"

लक्ष्मी ने बात बदल दी। उसने कहा, "आप सोने के कमरे मे जा रहे थे, तो क्या भोजन नहीं करना ?"

"मैं कर आया हूं। मैं ज्योत्सना के कमरे मे जा रहा था। उसने तो रात को भोजन करना नहीं होता।"

"परन्तु मैं तो आज कुछ लेने की इच्छा कर रही हूं।" ज्योत्सना ने कह दिया।

"तो जाओ, तुम कर आओ। मैं पापा और मम्मी के सामने जाना नहीं चाहता।"

"जो काम करने पर छुपाने की आवश्यकता थी तो वह किया ही क्यों है ?" लक्ष्मी ने पूछ लिया।

"यह जगत् की रीति है। सब लोग पत्नी से सहवास करते हैं और सब इसे छुपाते हैं।"

इसपर ज्योत्सना ने कहा, "परन्तु अब तो दस बज रहे हैं और पापा-मम्मी अपने सोने के कमरे मे चले गए हैं।"

"तब चलो। तुम खाना और मैं तुम्हें खाता देखता रहूंगा।"

लक्ष्मी को भूख लग रही थी। इस कारण वह उठ खड़ी हुई और उसके साथ ज्योत्सना और सतीश भी डाइनिंग हॉल में जा बैठे।

वहां सेविका इन तीनों को खाना खिलाने की प्रतीक्षा कर रही

थी। ये वहा गए तो उसने तीनो के सामने प्लेटें लगा दीं। सतीश न कह दिया 'इनको खिलाओ। मैं खा आया हू।"

सेविका ने प्लेट उठाई नहीं, परन्तु साग-भाजी 'वैजिटेबल डिलेज' में लाकर सामने रखना आरम्भ कर दिया।

लक्ष्मी ने चुपचाप चावल और पूरी ली और खाने लगी। ज्योत्सना भी बहुत अल्पमात्रा मे ले खाने लगी। सतीश कुछ कहना नहीं चाहता था सेविका के सामने। अत वह चुप रहा।

चुपचाप भोजन होता रहा। लक्ष्मी ने पेट-भर खाया और ज्योत्सना ने खाने का बहाना मात्र किया और सतीश इनको चुप बैठा देखता रहा।

इस समय भगवती अपने सोने के कमरे से बाहर आ गई और इन तीनो के पास आ पूछने लगी 'सतीश! आज बहुत देर कर दी है?"

इतना कहते कहते मां को भी अनुभव हुआ कि उसने शराब पी हुई है, परन्तु मा को शराब के विषय में कुछ कहने से पूर्व सतीश ने कह दिया, "मा! 'चैस' का मैच बहुत लम्बा हो गया था।"

'और झूठ बोलने की तैयारी करने मे देर लग गई।"

लक्ष्मी तो मुस्कराई, परन्तु ज्योत्सना हस पडी और बोली, 'दाई से गर्भ नहीं छुपाया जा सकता।"

'कौन दाई है और कौन गर्भ छुपा रहा है?" सतीश ने कुछ समझकर कहा।

इसपर तो मा और लक्ष्मी भी हस पडी। इनके हसने पर सतीश ने समझा कि उसने बात टाल दी है। इस कारण उसने कहा, 'मां! मैं आज जीवन मे पहली बार शतरञ्ज का खेल हारकर आया हू।"

मां को सतीश के पुन झूठ बोलने पर क्रोध आ गया। लक्ष्मी भोजन समाप्त कर हाथ धोने के लिए उठ पडी थी। सतीश भी मा की आखो म क्रोध देख वहा से भागने के लिए उठते हुए बोला, "मां! अब सोने जा रहा हू। मैच के विषय में कल प्रात मे अल्पाहार के

समय बताऊंगा।"

इतना कह वह लक्ष्मी के साथ उसके बेडरूम को चला गया। लक्ष्मी ने रात-भर उसे अपने कमरे मे रखा। आज उसने पहली रात की भांति भीतर से कुण्डा बन्द नही किया था।

प्रात काल लक्ष्मी अपने बिस्तर से चार बजे जाग पड़ी और शौचादि से निवृत्त होने चली गई। सतीश अभी भी गहरी नींद सो रहा था।

लक्ष्मी स्नानादि से अवकाश पा जब पाच बजे के लगभग गीता-पाठ के लिए बैठने लगी तो पति को जगा अपने स्टडीरूम मे भेजने का विचार करने लगी। उसने उसे हिलाकर जगाया। सतीश जागा तो अब रात से वह अधिक चेतनावस्था मे था। वह पलग पर बैठा हुआ पूछने लगा, "कितने बज गए हैं ?"

"मैं समझती हू कि दिन-भर के काम की तैयारी करनी चाहिए, अन्यथा रात की 'चैस' की बाजी की भांति कोर्ट में मुकद्दमे भी हारने लगेंगे।"

सतीश को काम की याद आ गई और वह अपने स्टडीरूम मे चला गया।

लक्ष्मी अपने नियमानुसार प्रात के पूजा-पाठ से अवकाश पा अपनी सास के कमरे मे उनके चरण-स्पर्श करने जा पहुची।

लक्ष्मी के आते ही भगवती ने पूछा, "बताओ, सतीश कैसा है ?"

"वह इस समय अपने स्टडीरूम मे हैं।"

"परन्तु रात तो वह अस्वस्थ प्रतीत होता था ?"

"जी। किसी अनिच्छित की सगत मे पड गए प्रतीत होते हैं। परन्तु अब तो वह ठीक हैं और अपने काम मे लगे हुए हैं।"

"यह ठीक नही हो रहा है।"

"ज्योत्सना ने मुझे अपने वचन से मुक्त कर दिया है और अब मैं उनके चित्त को स्वस्थ करने का यत्न कर रही हू।"

वस्तुस्थिति यह नहीं थी। रात तो सतीश लकड़ी के लट्ठ की भांति पलग पर पडा रहा था और लक्ष्मी अपने पलग पर बहुत रात गए तक अपने व्यवहार पर चिन्तन करती हुई जागती रही थी। वह इसे गृहस्थ जीवन की विवशताओ में समझ इसमे प्रवृत्त हो गई थी।

भगवती ने कहा, "लक्ष्मी ! मैं यह नही पूछ रही। रात वह अपना मुख कहाँ काला करता रहा है और फिर पहली बार मां के सम्मुख झूठ बोल रहा था।"

"माताजी ! उसीकी चिकित्सा की बात कह रही हू। मैंने चिकित्सा प्रारम्भ कर दी है। आशा करती हूं कि वह ठीक मार्ग पर आ जाएगे।"

"अच्छी बात है। मैं तो यही कह सकती हू कि भगवान तुम्हारी सहायता करे।"

लक्ष्मी अपने कमरे मे आई तो दाई हरिमोहन को लेकर वहा आई हुई थी। लक्ष्मी उससे बातें करने लगी।

प्रात. के अल्पाहार के समय पिता ने पुत्र की ओर अर्थभरी दृष्टि से देखकर पूछा, "सतीश ! सुना है कि तुम रात शतरंज के खेल मे हार-कर आए हो ?"

"हा पिताजी !"

"और तुम कहते हो कि जीवन मे पहली बार ही हारे हो ?"

"जी।" सतीश इस वार्तालाप का अभिप्राय समझने के लिए पिता का मुख देखने लगा।

अतुल बैनर्जी ने अपनी प्लेट मे से 'पौरेज' लेते हुए कहा, "मैं समझता हूं कि यह खेल बन्द कर दो, अन्यथा कल की हार जारी रही तो पूर्ण जीवन मे ही हारते चले जाओगे।"

सतीश समझ रहा था कि पिता किस हार की ओर संकेत कर रहा है; परन्तु मां, पत्नियो और छोटे भाई के सामने वह इस विषय पर वार्तालाप बन्द करने के लिए बोला, "परन्तु कल के मुकद्दमे मे तो फैसला मेरे पक्ष में हुआ है।"

"तो उसको अन्तिम विजय मत बनने दो।"

"ऐसा नहीं होगा, पिताजी !"

"ठीक है। मैं अब तुम्हारे प्रोफेशनल कार्य मे अधिक रुचि लेने लगा हू।"

"किसलिए ?"

"मैं अब अपने काम से रिटायर होने का विचार कर रहा हू और चाहता हू कि तुम मेरे स्टडीरूम मे प्रवेश पाने लगो।

"यत्न करूगा।"

"उसके लिए ही कह रहा हू कि रात वाला 'चैस' का खेल बन्द कर दो।"

परन्तु वह बन्द नहीं हुआ। कुछ ऐसा हुआ, जैसे कोई नदी-तट पर चलता हुआ यात्री पाव फिसल जाने से नदी मे जा गिरा हो और फिर वेग से वह रहे नदी के प्रवाह में वह चला हो। अभी तो उसको कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि नदी का जल शीतल और सुखकारक है। तट पर भी गर्मी से व्याकुलता नहीं रही। उस नदी मे स्नान का आनन्द अनुभव हुआ था। पिता ने कहा था कि नदी मे वह जाना कोई शुभ परिणाम उत्पन्न करने वाला नहीं होता, परन्तु जो सुख उसे अनुभव हुआ था, वह उसको जल मे बार-बार डुबकिया लेने की प्रेरणा देता था।

उस दिन भी मुशी आया तो उसने बताया कि छोटे बाबू क्लब चले गए हैं। लक्ष्मी समझ गई कि घर से अधिक आकर्षण कहीं अन्यत्र स्थान पर उत्पन्न हो गया है, परन्तु वह इसका प्रतिरोध कैसे कर सकती है, वह जानती नहीं थी। इस कारण वह अपने को विवश पाती थी।

आज वह प्रतीक्षा मे ड्राइगरूम मे नहीं बैठी थी। आज ज्योत्स्ना फिर कुछ अधिक रुग्ण थी। इस कारण अपने कमरे में वह सो रही थी। आज सतीश रात के नौ बजे आ गया। उसने भोजन नहीं किया था। इस कारण वह आते ही अपने सोने के कमरे मे गया और वस्त्र बदल

भोजन की तैयारी करने लगा।

आजकल उसका बेडरूम वही था, जो ज्योत्सना का था। ज्योत्सना पलग पर लेटी हुई थी। सतीश ने पूछा, "आज फिर लेट गई हो ?"

"सब आपकी ही कृपा है। मैं तो केवल मछली का सूप ही ले सकी हू। पेट में अन्न न जा सकने से अत्यन्त दुर्बलता अनुभव कर रही हू।"

"अच्छी बात है। मुझे तो आज बहुत जोर से भूख लग रही है।"

"तो आप भोजन कर लीजिए और मैंने लक्ष्मी बहन से कह दिया है कि वह आपको अपने कमरे में आज से एक वर्ष के लिए स्थान दे दे।"

सतीश हस पडा। ज्योत्सना ने पूछ लिया, "किस कारण हसे हैं ?"

"इस कारण कि तुम स्त्रिया यह समझती हो कि पूर्ण ससार तुम्हारी अगुलियों पर नाचता है।"

ज्योत्सना ने कहा, "मेरा यह अभिप्राय नही कि आप मेरे कहने पर कार्य करते हैं अथवा कर सकते हैं। मेरा तो यह कहना है कि परसों रात की भाति वह अपने कमरे का द्वार भीतर से बन्द नही करेगी।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद है ज्योत्सनाजी।" सतीश ने यह व्यग्य के भाव मे कह दिया।

वह सीधा खाने के कमरे में जा पहुचा। वहा लक्ष्मी, भगवती, अतुल बैनर्जी और नरेन्द्र पहले ही उपस्थित थे। सतीश ने देखा कि आज घर पर उसकी प्रतीक्षा नही हो रही। जब वह खाना खाने के कमरे मे पहुचा तो सेविका प्लेटें लगा रही थी।

सतीश आया तो भगवती ने कहा, "शुक्र है कि तुम आ गए हो।"

"तो मेरी प्रतीक्षा हो रही थी ?"

"नहीं।" उत्तर पिता ने दिया, "कोई किसीकी प्रतीक्षा नही करता। इस कारण किसीको यह आशा नहीं करनी चाहिए कि उसकी

प्रतीक्षा होगी। कोई भी मनुष्य इस ससार में 'इनडिस्पेंसेबल' नही। प्रत्येक का स्थानापन्न है और उसको छोडा जा सकता है।"

"तो मा को पुत्र मिल सकता है ?" सतीश ने पूछा।

"परमात्मा की कृपा है कि मेरे चार पुत्र हैं। यदि एक भी न होता तो फिर क्या था ! बहुत हैं जो पुत्रविहीन हैं। वे भी जीवित हैं और किसी न किसी प्रकार अपना अभाव पूर्ण करती रहती हैं।"

भगवती ने जब यह कहा तो सतीश को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि घर का वातावरण बदल गया है। इससे उसने कहा, "मा ! मेरी नई कोठी का नक्शा मजूर हो गया है।"

इसका किसीने कुछ उत्तर नहीं दिया। वास्तव मे इसमे कुछ उत्तर देने को नही था। भोजन आरम्भ हो गया था। इसपर लक्ष्मी ने बातो की नई शृखला आरम्भ कर दी। उसने कहा, "मेरा कहना यह था कि जब किसी वकील को पता चले कि उसका मुवक्किल झूठा मुकद्दमा लड रहा है तो वह मुकद्दमा छोड मुवक्किल को दण्ड क्यों नही पाने देता ?"

"यह डाक्टर का काम नही कि रोगी को मरने वाला जानकर उसकी चिकित्सा न करे।" अतुल बैनर्जी ने समझा कि उसने बहुत बडी युक्ति दी है।

परन्तु लक्ष्मी का सन्तोष नही हुआ। उसने कहा, "पिताजी ! दोनो मे अन्तर है। एक अपराधी है और दूसरा रोगी है। यदि यह मान भी लिया जाए कि रोगी बदपरहेज है और उसने अपने कुपथ्य से रोग को आमन्त्रित कर लिया है, तब भी रोगी का रुग्ण होना और उसका मर जाना उसका व्यक्तिगत कर्म है। न तो किसी दूसरे के कारण वह बीमार हुआ है और न ही स्वस्थ हो जाने से किसी अन्य का हित-अहित होने वाला है।

"रोगी और चिकित्सक का सर्वथा निजी मामला है। रोगी कष्ट में है और चिकित्सक उसके कष्ट को कम करने का यत्न करता है;

परन्तु न्यायालय तो व्यक्तिगत अपराधों का नोटिस नहीं लेता। न्यायालय में तो केवल उन अपराधों का ही मुकद्दमा होता है जो सामाजिक अपराध हैं। वे कार्य, जिसके करने वाले से कोई दूसरा प्रभावित होता है।

"वे अधर्म कार्य जो सामाजिक हैं उनका ही न्यायालय में मुकद्दमा चल सकता है। इस कारण जब किसी अपराधी को कोई वकील बातों के हेरफेर से अपराधमुक्त करता है तो वह उनके साथ अन्याय करने का दोषी हो जाता है, जिनके विरुद्ध अपराधी ने अधर्माचरण किया है। रोगी को नीरोग करने में यह बात नहीं।"

अतुल बैनर्जी लक्ष्मी का मुख देखता रह गया। वह नहीं जानता था कि लक्ष्मी युक्ति करने में इतनी चतुर है। पिता को चुप देख सतीश बोल उठा, 'पिताजी! यह लक्ष्मी का वाक्चातुर्य ही है, जिसने मुझे इससे विवाह करने की प्रेरणा दी थी, परन्तु अब मैं देखता हूं कि इस वाक्चातुर्य में तत्त्व कुछ नहीं। यह वागाडम्बर ही है।"

भगवती हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "सतीश अब दो दिन से बहुत समझदारी की बातें करने लगा है। कोई इसे बहुत ही योग्य मास्टर मिल गया है।"

इसपर तो अतुल बैनर्जी भी हंसने लगा। लक्ष्मी कुछ नहीं बोली और चुपचाप भोजन करती रही। लक्ष्मी को कुछ कहने की प्रेरणा देने के लिए अतुल ने कहा, 'अब बताओ लक्ष्मी! क्या कहती हो?"

"क्या बताऊं पिताजी?"

"तो सतीश यह ठीक कहता है कि तुम्हारी बात वागाडम्बर है?"

"परन्तु पिताजी, इस कथन में कोई युक्ति अथवा प्रमाण है क्या? उत्तर तो किसी प्रश्न का दिया जाता है। इसमें तो कुछ उत्तर देने को है ही नहीं।"

अतुल गम्भीर हो गया। उसने कहा, "मैं समझता हूं कि वकालत

तो लक्ष्मी को पढ़नी चाहिए थी। यदि यह वकील बन जाए तो देश क्या, विश्व-भर में नाम पाएगी। न्याय का अर्थ है 'लौजिक' और 'लौजिक' शब्दों का हेरफेर नहीं। यह आधारयुक्त युक्ति ही होता है।"

"पिताजी ! रहने दीजिए।" सतीश ने घृणास्पद भाव में कहा।

भगवती ने कह दिया, "यह तो छोटे वकील साहब ने बहुत कमाल की युक्ति की है। सतीश, भोजन करो और वहां की मिट्टी मस्तिष्क से उतारकर बात करोगे तो कुछ समझ सकोगे। इस समय तुम वह सतीश नहीं हो, जो बैनर्जी परिवार में उत्पन्न हुए थे।"

६

बेडरूम में लक्ष्मी गई तो उसने द्वार भीतर से बन्द नहीं किया था। सतीश भी वहां जा पहुंचा। दोनों की मानसिक स्थिति स्वाभाविक नहीं थी। इस कारण एक भी शब्द बोले बिना दोनों ने वस्त्र बदले और पलंगों पर लेट गए। लक्ष्मी आशा कर रही थी कि सतीश उसको अपने पलंग पर आमन्त्रित करेगा, परन्तु उसने इच्छा प्रकट नहीं की।

अगले दिन दोनों उठे तो अपने-अपने काम पर लग गए। अब नित्य यही होने लगा। सतीश कोर्ट से सीधा थीडन रोड पर जाता और मध्याह्नोत्तर का चाय-पानी वहां ही लेता। वहां से वह प्रायः रात के नौ बजे के लगभग अपने घर लौटता। उस समय घर के प्राणी या तो भोजन पर बैठे होते थे अथवा भोजनालय में जाने ही वाले होते थे। वहां से सब अपने-अपने बेडरूम में चले जाते थे। यद्यपि ज्योत्सना अब स्वस्थ थी, इसपर भी गर्भावस्था के कारण वह पति को अपने बेडरूम में आमन्त्रित नहीं करती थी। लक्ष्मी अब अपने बेडरूम का द्वार भीतर से बन्द नहीं करती थी और सतीश वहां ही सोता था।

कोई सतीश के व्यवहार पर आपत्ति नहीं करता था और शांतिपूर्वक दिन व्यतीत हो रहे थे।

समय पर ज्योत्सना का लड़का हुआ। उसका नामकरण-संस्कार किया गया। उसका नाम राममोहन रखा गया।

इन दिनों कभी-कभी लक्ष्मी की मां सरस्वती अपनी लड़की से मिलने आती थी। स्त्रीसुलभ अन्तर्दृष्टि से वह समझ गई थी कि इस घर मे स्थिति सामान्य नहीं। इस कारण वह बहुत कम आती थी और जब आती तो घर की बातो के अतिरिक्त इधर-उधर की बातें ही किया करती थी।

एक दिन वह आई तो दामोदर की बात बताने लगी। सरस्वती ने बताया, "वह तीर्थयात्रा से लौट आया है। ढाई महीने की यात्रा मे वह रुग्ण रहा है और अपने रुग्ण रहने का कारण वह सरयन को बताता है।"

लक्ष्मी हंस पड़ी और बोली, "खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे वाली बात है।"

एक अन्य दिन सरस्वती ने बताया, "उसने काहनी को घर से निकाल दिया है।"

"क्यों?" लक्ष्मी ने पूछा।

"तुम्हारे पिता उससे पत्नी को घर से निकाल देने का कारण जानने गए तो वह बोला कि वह बदकार है।

" 'कोई प्रमाण?' तुम्हारे पिता ने पूछा।

"तो वह कहने लगा, 'आप जज नहीं हैं। इस कारण आपको प्रमाण नहीं बता सकता।' "

इस प्रकार बात चलती रही। ज्योत्सना का बच्चा अब छः मास का हो चुका था कि लक्ष्मी ने एक दिन कहा, "ज्योत्सना बहन! अपने पति को अब संभालो।"

"पति तो वह तुम्हारा है। मेरा तो केवल-मात्र वह 'फ्रेण्ड' है।"

"परन्तु माताजी तो तुम्हे अपनी पुतोहू की भांति मानती है।"

"वह भावुक स्त्री सबको मा, भाई, बहन, पुत्र और पुतोहू बनाती फिरती है।"

लक्ष्मी अपनी सास को ऐसा नही मानती थी। इसपर ज्योत्सना ने कहा, "मैंने तुम्हारा पति तुम्हें वापस कर दिया है।"

लक्ष्मी ने ज्योत्सना से हुई बात भगवती से बताई तो वह अवाक् बैठी रह गई। कुछ विचार कर उसने लक्ष्मी से पूछा, "और तुम्हें तो पति प्राप्त हो रहा है ?"

"हा माताजी ! कभी-कभार और वह भी एक निचोड़े हुए नीबू की भाति। परन्तु माताजी ! मुझे इस बात की शिकायत नही है।"

भगवती को यह तो सन्देह था कि सतीश पत्नी के साथ न्याय नही कर रहा, परन्तु जो कुछ भी था, उसे पत्नी के स्पष्ट शब्दो मे वर्णन कर दिया।

भगवती ने पुत्र को एक दिन लक्ष्मी के सामने कहा, "सतीश ! घर पर दो-दो पत्निया रखते हुए भी तुम कही अन्यत्र दान-दक्षिणा करते प्रतीत होते हो ?"

"तो यह लक्ष्मी ने शिकायत की है ?"

"इसने तो यह कहा है कि कभी-कभार पति प्राप्त होता है और वह भी निचोड़े हुए नीबू की भाति।"

सतीश ने हसते हुए कहा, "जो जिसके योग्य होता है, उसे वही प्राप्त होता है। परन्तु मा ! यह तो उसे भी त्याग के भाव से देखती है। मुझे निरन्तर कहती रहती है कि ज्योत्सना के कमरे को जाकर सुशोभित करू।"

"और तुम उसके कमरे मे क्यो नही जाते ?"

"वह इस कारण कि वह मुझे अपना पति नही मानती। इस कारण वह मुझे बहिष्कार की दृष्टि से देखती है।"

इस गुत्थी को भगवती समझ नही सकी और वह उठकर चली गई। उसके जाने के उपरान्त सतीश ने आक्रोश मे लक्ष्मी को कहा,

'देखो लक्ष्मी ! निचोड़ा हुआ नीबू तो कड़वा होता ही है, इसलिए मैं समझता हूं कि यदि तुम मां के घर में स्वतः नहीं चली जातीं तो मैं तुम्हें धक्के मार-मारकर यहां से निकाल दूंगा।"

'आपको इतना कष्ट नहीं करना पड़ेगा। मैं स्वयं यहां चली जाऊंगी।"

"हां। ठीक है।"

"तो अब सो जाइए।"

'और तुम ?"

'मैं ज्योत्स्ना के कमरे में सोना चाहूंगी।"

'ठीक है। जा सकती हो।"

लक्ष्मी उसी समय कमरे से निकल गई और ज्योत्स्ना के कमरे का द्वार खटखटाने लगी। भीतर से आवाज आई, "कौन ?"

लक्ष्मी ने अपना नाम बताया तो ज्योत्स्ना ने कहा 'लक्ष्मी बहन ! अब मैं प्रातःकाल मिलूंगी। मैं सो रही हूं।"

'परन्तु काम तो अभी का था।"

'इस समय मुझे अवकाश नहीं।" विवश लक्ष्मी अपने कमरे में लौट आई। जब वह आई तो सतीश खिलखिलाकर हंस पड़ा। लक्ष्मी इस हंसने का अर्थ नहीं समझी और टुकर टुकर पति का मुख देखती रह गई।

सतीश ने कहा 'अब कहां जाओगी लक्ष्मी ?"

"आप सो जाइए। मैं अपना प्रबन्ध स्वयं कर लूंगी।" इतना कह वह कमरे से बाहर निकल गई। ड्राइंगरूम चपरासी बन्द कर गया था। लक्ष्मी ने उसे खोला और उसमें एक सोफा पर जा लेट गई।

प्रातः उठ उसने पहला काम यह किया कि पिता के घर टेलीफोन किया। उधर से आवाज आई "कौन बोल रहा है ?"

लक्ष्मी आवाज सुन भौचक्की हो विचार करती रह गई। फिर एकाएक बोली 'शारदा बहनजी बोल रही हैं ?"

"हां । तुम लक्ष्मी बोल रही हो ? मैं तो आज तुमसे मिलने आने वाली थी । कल सायंकाल ही लाहौर आई हूं ।"

"तो बहनजी ! माताजी को तनिक बुला दो ।"

"क्या बात है ?"

"उनसे कुछ काम है । आप उन्हें बुला दीजिए ।"

"अच्छी बात है ।"

सरस्वती टेलीफोन पर आई तो लक्ष्मी ने कहा, "माताजी ! आप मुझे अपने घर ले जाने के लिए यहां आ जाइए ।"

"क्या बात है ?"

"कुछ विशेष नहीं । मैं केवल अपने-आप यहां से नहीं जाना चाहती । जब आप आएंगी तो मैं सास से जाने की स्वीकृति मांग लूंगी ।"

सरस्वती यह तो जानती थी कि उस घर में मुर्दनी छाई हुई है, परन्तु लक्ष्मी ने कभी शिकायत नहीं की थी और वह स्वयं लड़की के ससुराल वालों की बात पूछती नहीं थी ।

उसने चुपचाप टेलीफोन का चोंगा रखा और समीप खड़ी शारदा से बोली, "बहनजी ! चलिए, लक्ष्मी के ससुराल । आप मिलने चलिए और मैं आपके बहाने उसे वहां से इस घर में आने का निमन्त्रण दे दूंगी और उसे साथ ले आऊंगी । मैं समझती हूं कि शेष जीवन के लिए ।"

शारदा सब समझ गई । उसकी अपनी भी कुछ ऐसी कथा थी । डेढ़ वर्ष तक उसने शिमला सीनियर कैम्ब्रिज स्कूल में हैड मिस्ट्रेस के रूप में काम किया और फिर स्कूल के मैनेजर मिस्टर पी० बैस्टन से विवाह कर लिया । यह विवाह आठ-नौ मास तक रहा और फिर बिना हो-हल्ला के 'सेपरेशन' हो गया और अब मिस्टर बैस्टन ने उसे दुश्चरित्रा कहकर कोर्ट में तलाक का दावा किया था ।

शारदा को नोटिस आया कि वह अदालत में उपस्थित होकर बताए कि क्यों न मिस्टर बैस्टन की तलाक की याचिका स्वीकार की जाए ।

शारदा ने शिमला में ही एक वकील से सम्मति की और उसने बता दिया, 'मुकद्मा लडा जा सकता है। वह तुम्हारे चरित्र के विरुद्ध झूठे गवाह पेश करेगा और मैं उनसे जिरह करूंगा। इससे एक महान 'स्कैण्डल' हो जाएगा और कदाचित् समाचारपत्रों में भी छपे।

'इससे मैं समझता हूं कि स्कूल से त्याग-पत्र दे दो और बैस्टन की याचिका का उत्तर ही मत दो। इसका अर्थ यह होगा कि आप उसके दावे को स्वीकार करती हैं।'

शारदा इस विडम्बना पर परेशान हो वकील की बैठक से लौटी थी। बहुत विचारोपरान्त उसने स्कूल से एक महीने की बिना वेतन के छुट्टी ले ली और छुट्टी मिलते ही त्याग-पत्र भेज दिया और स्वयं अपना सामान साथ सरस्वती की मेहमान बन गई।

अगले ही दिन प्रातःकाल पांच बजे लक्ष्मी का टेलीफोन आया तो सरस्वती और शारदा फिरोजपुर रोड पर बैनर्जी की कोठी को जाने की तैयारी करने लगीं।

सेविका भगवती को 'बेड-टी' देने आई तो उसका पति अतुल अपने स्टडीरूम में गया हुआ था। भगवती ने चाय का प्याला पकड़ा तो सेविका ने परेशानी प्रकट करते हुए कहा, "माताजी! आज लक्ष्मीजी अपने बेडरूम में नहीं हैं। छोटे बाबू अकेले थे।"

भगवती के कान खड़े हो गए। उसने सेविका के मुख पर देखते हुए पूछा, "तुमने छोटे बाबू से पूछा है कि वह कहां है?"

"पूछा था। उनका कहना है, शायद ज्योत्सनाजी के कमरे में होंगी।"

इससे भगवती को और भी चिन्ता लग गई। उसने पूछा, "और तुम ज्योत्सना को चाय दे आई हो?"

"जी नहीं। उनका कमरा भीतर से बन्द नहीं था और भीतर से आवाज आई है कि पहले माताजी को दे आओ। मैं नरेन्द्र बाबू के कमरे में गई थी। वह वहां नहीं थे। कदाचित् प्रात-भ्रमण के लिए गए

हुए हैं । इस कारण अब आपके लिए ले आई हू ।"

भगवती को यह गोरखधन्धा समझ नही आया । नरेन्द्र की बी० ए० की परीक्षा अगले वर्ष होने वाली थी । यह दिसम्बर का महीना था । आजकल पढाई के दिन थे और उसे प्रात पढाई करनी चाहिए थी । इस कारण उसने चाय छोड, प्याला तिपाई पर रखा और नरेन्द्र के कमरे को चल पडी । नरेन्द्र अपने बिस्तर मे लेटा चाय की प्रतीक्षा कर रहा था । भगवती कमरे का द्वार खटखटाने लगी तो उसने समझा कि सेविका है । उसने आवाज दे दी, 'हा, बेड-टी ले आओ ।"

'तुम कहा थे ?" भगवती ने उसके प्रश्न का उत्तर न देते हुए पूछ लिया ।

'यही तो था ।"

भगवती कुछ न समझती हुई लक्ष्मी के कमरे मे पहुची । सतीश चाय समाप्त कर खाली प्याला मेज पर रख रहा था कि मा आ गई । उसने पूछा, "लक्ष्मी कहा है ?"

'रात ज्योत्सना के कमरे मे गई थी ।"

भगवती वहा पहुची तो ज्योत्सना पलग पर लेटी हुई थी । वह भी बेड टी की प्रतीक्षा कर रही थी । भगवती ने कमरे मे प्रवेश करते ही पूछा, 'लक्ष्मी कहा है ?"

'तो अपने कमरे मे नहीं है ?"

'नही ।"

'तो अवश्य वह भी 'लॉन' मे जाकर सोई होगी ।"

"लॉन म ?"

हा । एक बार उसके पतिदेव पत्नी से लड पडे थे तो वह 'लॉन' मे जाकर सो गए थे ।"

'परन्तु तब तो मई का महीना था और आजकल तो दिसम्बर मास है ।"

'परन्तु माताजी, मैं नही जानती ।"

इतने मे सेविका ज्योत्सना के लिए चाय लेकर वहा आ गई और चाय का प्याला ज्योत्सना के हाथ मे देती हुई भगवती से बोली, "माताजी ! बहू ड्राइगरूम मे किसीको टेलीफोन कर रही हैं।"

भगवती वहा जा पहुची। उस समय तक लक्ष्मी मा से बात कर चुकी थी। भगवती ने पूछा, "कौन था ?"

"माताजी के घर से टेलीफोन आया था। शारदा बहन शिमला से आई हैं और मुझे मिलने के लिए आने वाली हैं।"

भगवती ने देखा कि सोफासेट पर उसके ओढने का कम्बल पडा है। इससे वह समझ गई कि लक्ष्मी रात वहा ही सोई है। उसने पूछ लिया, "तो तुम यहा सो रही थी ?"

"हा माताजी !"

'क्यो ?"

'वहा से निकाल दी गई थी।"

"किस अपराध पर ?"

'यह तो दण्ड देने वाला ही बता सकता है, परन्तु माताजी, मैंने किसी प्रकार का इस घर मे रहने का दावा नही किया हुआ। यह तो आपका और आपके पुत्र का आग्रह ही था, जिससे प्रेरित हो यहा आई थी। अब आपके पुत्र ने नोटिस दे दिया है कि यदि मैं यहा से नही गई तो धक्के मार-मारकर निकाल दी जाऊगी।"

भगवती लक्ष्मी का मुख देखती रह गई। वह अभी मन मे विचार ही कर रही थी कि किस प्रकार इस गुत्थी को सुलझाए कि लक्ष्मी ने कह दिया, 'अब माताजी शारदा बहनजी को लेकर यहा मिलने आ ही रही हैं। इस कारण यदि आप भी स्वीकृति दें तो मैं माताजी के साथ ही चली जाऊ ?"

भगवती को भी यह बात ठीक ही प्रतीत हुई, परन्तु वह यह नही चाहती थी कि लक्ष्मी अपनी मा से अपने पति की शिकायत करे। इस कारण उसने पूछ लिया, 'और मा से सतीश की शिकायत करोगी ?"

"माताजी ! शिकायत उसके सामने की जाती है जिसे निर्णय देने का अधिकार हो। वहां की माताजी को यह अधिकार प्राप्त नहीं। इस कारण शिकायत करने का कुछ भी लाभ नहीं।"

"तो क्या करोगी ?"

"अभी तो अपनी माताजी से कहूंगी कि मुझे अपने घर ले चलें। वह आपसे स्वीकृति मांगेंगी और आप दे दीजिएगा।"

"और मेरे सम्मुख अपना मुकद्दमा दायर क्यों नहीं करती ?"

"इस कारण कि आप उनकी मां हैं। मैं आपको आपके पुत्र के विरुद्ध किसी प्रकार का निर्णय देने के लिए नहीं कह सकती। यह आपसे एक अस्वाभाविक कार्य करने के लिए कहना होगा।"

"लक्ष्मी बेटी ! मैं तुम्हारे विरुद्ध कुछ नहीं कह सकती। कुछ ऐसा कहने को है भी नहीं, परन्तु मैं क्या करूं अभी यह विचार नहीं सकी। इस कारण मैं भी अभी यही चाहूंगी कि तुम मां के घर चली जाओ। यहां का वातावरण तुम्हारे अनुकूल होते ही तुम्हारे घर जाकर तुम्हें यहां ले आऊंगी।"

"ठीक है। यह आपका अधिकार है। मैं तो आपकी बेटी-समान हूं।"

७

ये अभी बातें ही कर रही थीं कि सरस्वती और शारदा घर की मोटरगाड़ी में आ गईं। बाहर हार्न का शब्द हुआ तो सास-पुतोहू दोनों ही कोठी की ड्योढ़ी में सरस्वती का स्वागत करने जा पहुंचीं।

शारदा लक्ष्मी से कसकर गले मिली। जब दोनों मिल चुकीं तो लक्ष्मी ने हाथ जोड़ मां को नमस्कार कही और दोनों को लेकर ड्राइंग-रूम में चली आई।

बात शारदा ने ही आरम्भ की। उसने कहा मैं तुम्हें मैक्लोड

रोड वाली कोठी पर ले चलने के लिए ग्राई हू । इस बार तुमसे बहुत बातें करनी हैं।"

भगवती ने शारदा का समर्थन कर दिया तो लक्ष्मी ने भगवती की ग्रोर देख पूछ लिया, "तो माताजी ! जाऊ ?"

'हा बेटी ! मैं समझती हू कि जाना ही चाहिए । मा बेटी को घर ले जाने के लिए ग्राए ग्रौर मैं रोक दू तो बहुत बड़ा ग्रपराध हो जाएगा ।"

इसपर लक्ष्मी ने शारदा से कहा, "बहनजी ! ग्राप माताजी से बातचीत करिए ग्रौर मैं पाच मिनट मे तैयार हो जाती हू ।"

इतना कह वह सोफा पर से कम्बल उठा ग्रपने कमरे मे चली गई। सतीश उस समय स्टडीरूम मे था। लक्ष्मी पाच मिनट मे ग्राई ग्रौर ग्रपनी सास को सकेत से ग्रपने साथ भीतर ले गई। दो मिनट मे ही दोनो लौट ग्राई। लक्ष्मी सूटकेस ग्रौर ब्रीफकेस उठाए हुए थी। दोनो की आखें तरल हो रही थी।

लक्ष्मी ने ग्राते ही ग्रपनी मा से कहा, 'मा, चलो । मैंने स्वीकृति ले ली है।"

जब तीनो स्त्रिया मोटरगाडी मे बैठी तो सरस्वती ने पूछा, "सास को ग्रपना सामान दिखाने ले गई थी ?"

"हा मा ! मैं वहा से केवल अपने वस्त्र ही लेकर ग्राई हू । किसी प्रकार का कोई भी ग्राभूषण नही ला रही थी। इसकारण दिखाकर ग्राना पड़ा है। मैं ग्रपने मन से इस घर से तिनका तोड़कर जा रही हू।"

इसपर शारदा ने कह दिया, "मैं भी स्कूल, शिमला ग्रौर वहा बनाया पति सदा के लिए छोड ग्राई हू।"

"सत्य ! बहनजी, ऐसा क्यों किया है ?"

"पहले तुम बताओ कि तुमने यह विचार क्यो किया है ?"

सरस्वती ने हाथ के सकेत से उनको ग्रागे बात करने से रोक

दिया और ड्राइवर की ओर संकेत कर दिया।

अत शेष बातें मैक्लोड रोड की कोठी पर आकर हुईं। वहा पहुचते ही लक्ष्मी शौचादि मे लग गई और शारदा, जो अभी स्नानादि के लिए तैयार नहीं हुई थी, ड्राइगरूम मे बैठी तो सुन्दरदास की पत्नी कौमुदी भी उसके पास आ बैठी। वह भी देर से जागने का स्वभाव रखती थी और अपने पति के प्रात का अल्पाहार ले दुकान पर चले जाने के उपरान्त स्नानादि किया करती थी।

कौमुदी ने आते ही पूछ लिया, "बहनजी! अब कितने दिन के लिए यहा आई हैं?"

शारदा इस प्रश्न पर विस्मय मे मुख देखती रह गई। यह प्रश्न अप्रत्याशित था। साथ ही इस प्रश्न से यह प्रकट हो रहा था कि घर के स्वामी मे अदला-बदली हो गई है।

शारदा ने कहा, "यह माताजी से विचार करने के उपरान्त बताऊगी।"

सरस्वती अपने कमरे मे अपने पति को लक्ष्मी की बात बताने गई हुई थी। कौमुदी चुप रही और उठ अपने कमरे मे चली गई।

इस बात का रहस्य तो प्रात के अल्पाहार के उपरान्त जब लक्ष्मी और शारदा मे बातचीत हो चुकी थी, पता चला। शारदा ने बताया था कि उसे अपने पति से लड़े हुए छ मास से ऊपर हो चुके हैं। वस्तु-स्थिति यह थी कि दोनों मे अपने-आप 'सेपरेशन' की स्थिति थी। अब उसे अदालत से नोटिस मिला था कि वह अमुक तारीख को आकर बताए कि क्यो न उसके पति की याचिका उसे तलाक देने की स्वीकार कर ली जाए। साथ ही उसके पति की याचिका की प्रतिलिपि थी। शारदा उत्तर देने के स्थान पर नौकरी छोड़ शिमला से चली आई थी।

लक्ष्मी ने अपने घर की बात व्याख्या से न बताकर कह दिया कि उसे भी तलाक का नोटिस मिल गया है और उसने भी वहा की अदालत मे उत्तर देने के स्थान पर वहा से चला आना ही उचित समझा है।

जब ये दोनों ड्राइंगरूम में बैठी बातें कर रही थी तो कौमुदी इनके पास आ बैठी। वह बाज़ार से घर के लिए सब्ज़ी-भाजी लेकर उस समय आई थी। वह घर से पति के साथ मोटरसाइकल पर गई थी। वह उसे बाज़ार में छोड़ अपनी दुकान को चला गया था और कौमुदी साग-भाजी ले वहां से तांगे में बैठ घर आई थी।

अभी शारदा और लक्ष्मी परस्पर पूर्व वृत्तान्त ही बता रही थी कि कौमुदी बाज़ार से लौट आई। उसने आते ही लक्ष्मी को बैठे देखा और सूटकेस तथा ब्रीफकेस जो अभी भी ड्राइंगरूम में रखे थे, देखा तो पूछने लगी, "बहनजी! नमस्ते। कब तक की सास से छुट्टी लेकर आई हो ?"

लक्ष्मी ने मुस्कराते हुए कह दिया, 'जब तक भाजी रहने की स्वीकृति देंगी।"

कौमुदी ने समीप बैठ कह दिया, "मतलब यह कि जब तक तुम्हारा हमसे जी नहीं भर जाता ?"

'तो यह मुझपर निर्भर करता है ?"

"और तुम्हारे पति पर ?"

'उनसे मैं खुली छुट्टी ले आई हूं।"

इसपर कौमुदी गम्भीर हो गई और चिन्ता में पूछने लगी 'क्या मतलब ?"

'शारदा बहनजी के आने का कारण भाभी को पता चला है अथवा नहीं ?"

"हां। इन्होंने रात बताया था।"

'बस, वही कारण मेरा है। मेरे तलाक की याचिका भी दायर हो चुकी है।"

'परन्तु तुम तो हिन्दू हो और ।"

'देखो भाभी! जिस अदालत में बहनजी को तलाक की याचिका दी गई है, उससे एक ऊंची अदालत है। उसमें सब मज़हब वालों की तलाक की याचिकाएं जाती हैं। वहां ही मेरी याचिका गई है और

मैं उस अदालत मे डिफेंस' उपस्थित करने के स्थान पर मैदान से भाग आई हू।"

"कौमुदी ने कहा तब तो बात आपके भाई साहब की अदालत म पेश होगी।"

वहा किसलिए ?"

"यह घर उनका है और वह इसे सराय बनाना नही चाहते। सुना है कि दामोदर की पत्नी काहनी भी पति से लड इस घर से पनाह लेना चाहती है।"

लक्ष्मी ने अभी बात टालने के लिए कह दिया "ठीक है। सुन्दर भैया को आने दो। मैं उनसे बात कर लूगी।"

इस समय सरस्वती कमरे से निकल आई। उसने कुछ कहने के लिए ही पूछ लिया कौमुदी ! आ गई हो ?"

"हा माताजी ! अपने विचार से साग भाजी ले आई हू, परन्तु शारदा बहनजी के लिए अण्डे नही लाई।"

सरस्वती ने पूछा "परन्तु तुम्हे यह लाने के लिए किसीने कहा था क्या ?"

नही कहा तो नही था, परन्तु यह खाती तो है।"

हमारे घर मे और खाने के कमरे मे यह नहीं खा सकतीं।

इतनी बात कर कौमुदी अपने कमरे मे वस्त्र बदलने चली गई। सरस्वती ने शारदा और लक्ष्मी को अपने पति से हुई बात बता दी। उसने शारदा को सम्बोधित करते हुए कहा, हम तो लक्ष्मी के ससुराल गई थी और पीछे दुकान पर जाने से पूर्व सुन्दरदास अपने पिता से कह गया है कि यह कोठी सराय नहीं बन सकती है। दो चार दिन तक मेहमान रह सकते हैं। सदा के लिए तो सराय और होटल भी खुले नहीं होते।

"इस कारण सुन्दर के पिता कहते हैं कि शारदाजी को शीघ्र ही यहा कोई मकान भाड़े पर ले लेना चाहिए।"

"मैंने एक स्थान अपने रहने के लिए विचार कर लिया है।" शारदा ने बताया।

"कहा ?" सरस्वती ने पूछ लिया।

"अभी इतना बता सकती हू कि किसी पहाडी स्थान पर जा रही हू। यहा मैदान मे नही रहूगी।"

"तो वापस शिमला जाओगी ?"

"नही माताजी ! शिमला के अतिरिक्त भी अनेक पहाडी स्थान है। मैं आज सायकाल ही उपयुक्त स्थान देखने चली जाऊगी। मैं यह चाहती हू कि रामू और सोनी यहा मेरे सामान के साथ कुछ दिन रहने दिए जाए। कोठी के आउट हाउस में वे रहेगे और मेरा सामान भी वहा ही रहेगा और तब तक का भाडा उस स्थान का दे दिया जाएगा।"

सरस्वती मन ही मन बहुत दुःख अनुभव कर रही थी। इसपर भी उसने कुछ कहा नही। लक्ष्मी ने कह दिया, "माताजी ! मैं बहनजी के साथ जाऊगी।"

"कहा ?"

"इनके लिए मकान ढूढने।"

"परन्तु यह तो पहाड पर कोई स्थान देखने जा रही हैं।"

"तो क्या हुआ ! मैं भी चली जाऊगी।"

"अपनी सास से पूछकर जा सकती हो।"

"उनसे सास-पुतोहू का सम्बन्ध अब कुछ नही रहा। हां, मा-बेटी का सम्बन्ध है। और फिर अब तो आपके घर से जाऊगी। इस कारण आपसे ही कह रही हू कि मैं बहनजी के साथ जा रही हू।"

"सुन्दर को आने दो। उससे बात करने पर जाने का विचार कर लेना।"

"परन्तु तब तक तो बहनजी चली जाएगी।"

इसपर सरस्वती शारदा का मुख देखने लगी। शारदा ने कह दिया, "माताजी ! आप निश्चिन्त रहे। लक्ष्मी को कुछ भी कष्ट नहीं

होगा । हम पाच बजे की गाडी से मुरादाबाद और वहा से बरेली तथा कल सायकाल तक अलमोडा पहुच जाएगी । वहा मैंने एक स्थान देखा हुआ है। तब वह स्थान खाली था और बिकाऊ था। मेरा विचार है कि अभी भी खाली ही होगा । यदि वह मिल गया तो मैं वहा अपना मकान बना रहूगी । वहा एक छोटा-सा स्कूल भी चलाऊगी ।"

"परन्तु तुम्हारे पास इतना धन है ?"

"हो जाएगा । आशा है कि उधार मागने की आवश्यकता नही पडेगी।"

लक्ष्मी ने कहा "मा ! मुझे बहनजी के साथ जाने दो ।"

सरस्वती अपने को निस्सहाय पाती थी। केशवदास ने कुछ बताया था और वह अपने मन मे अपने पति की विवशता का विचार कर रही थी ।

लक्ष्मी ने अपना सूटकेस नही खोला और अपने कमरे की चाबी भी नही मागी । वह देख रही थी कि माताजी की कुछ विवशता है ।

भोजन के समय केशवदास अपने कमरे से आया और खाने के कमरे मे चला गया। वहा केशवदास, सरस्वती लक्ष्मी, शारदा और कौमुदी ही थे ।

लक्ष्मी की दोनो छोटी बहनो का विवाह हो चुका था और वे ससुराल मे थी । सरवन स्कूल गया हुआ था । उन दिनो स्कूल दस बजे का था ।

कौमुदी के अभी तक भी कोई सतान नही थी और वह पति पर शासन करती प्रतीत होती थी ।

खाने के समय कोई बात नहीं हुई। जब भोजन समाप्त हुआ और सब मेज पर से उठने लगे तो सरस्वती ने अपने पति को सम्बोधन कर परन्तु वास्तव मे कौमुदी को सुनाने के लिए कह दिया, "शारदाजी आज पाच बजे की गाडी से बरेली जा रही हैं और लक्ष्मी उनके साथ जा रही है।"

'क्यों ?" केशवदास जाते-जाते रुक गया और पत्नी से पूछने लगा।

"यह शारदा को मकान ढूढने मे सहायता देना चाहती है।"

"तो सुन्दर से मिलकर नही जाएगी ?"

"वहा से लौटकर भैया से मिलूगी।" लक्ष्मी ने कह दिया।

कौमुदी ने इसमे कोई सम्मति नही दी। वह चुपचाप हाथ धोने 'सौंक' पर चली गई। लक्ष्मी ड्राइगरूम मे ही बैठी रही। वह सोफा पर लेट विश्राम करने लगी।

शारदा को तो रात सोने के लिए कमरा मिल गया था। उसने कहा भी, "लक्ष्मी ! उस कमरे मे आ जाओ।"

"नही बहनजी ! आप चलने की तैयारी करिए। मैं साथ चलने के लिए तैयार हू।"

शारदा ने अपना सामान सोनी और रामू को सौंप कोठरी मे रखवाया और उनको पचास रुपये दे दिए। यह कह दिया कि यदि वह न आ सकी तो वहा से तार कर देगी। जहा से करेगी, उन्हे वहा चले आना चाहिए।

घर से चार बजे ही दोनो स्त्रियो ने तागा मगवाया और उसपर सवार हो रेल के स्टेशन पर जा पहुची।

रात सुन्दरदास आया तो कौमुदी ने लक्ष्मी की सब बात, जितनी वह समझ सकी थी, बता दी। उसने बताया, "आपकी बडी बहन अपने पति से लडकर यहा चली आई है और अब उस मास्टराइन के साथ मकान ढूढने गई है।"

"कहा गई है ?"

"माताजी बता रही थी, वह कही पहाड पर रहने का विचार रखती है। शारदा कही गई है तो लक्ष्मी भी साथ चली गई है।"

"परन्तु उसका पति से अब क्या झगडा है ?"

"सब बात तो पता चली नहीं। मैं समझती हूं कि आपने बहन को

एम० ए० तक पढा इस योग्य बना दिया है कि वह कहीं स्कूल में नौकरी कर सके। मेरा विचार है कि शारदा उसे इस कारण साथ ले गई है। वह स्वय भी बेकार हो गई है और अपने लिए भी काम ढूढ रही होगी।"

सुन्दरदास माता-पिता के कमरे मे चला गया। सरस्वती अपने पति को लक्ष्मी की बात बताती हुई रो रही थी। सुन्दर जब वहा पहुचा तो उसने अपनी बात बन्द कर आखें आचल से पोछनी आरम्भ कर दी।

"मा! क्या बात है?" सुन्दर ने पूछ लिया।

"तुम्हारे पिता कह रहे हैं कि हमे अब किसी तीर्थस्थान पर चलकर रहना चाहिए।"

"परन्तु यहा कुछ कष्ट है क्या?"

उत्तर केशवदास ने दिया, "शारीरिक कष्ट तो कुछ नहीं, परन्तु मानसिक कष्ट तो हो ही रहा है।"

"वह क्या है?"

"मैं समझता था कि यह कोठी मेरी है, परन्तु आज समझ आया है कि यह भ्रम था।"

"हा, यह तो है ही। यह कोठी दुकान की है। यद्यपि हमने कौमुदी के पिता की भाति कोई प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी नहीं बनाई है, परन्तु है तो दुकान ही सब कुछ की मालिक। हम उसमे नौकर हैं और यह परिवार की है।"

"और मैं परिवार में हू अथवा नही?"

"आप पेंशनयाफ्ता हैं। काम नहीं करते, परन्तु पहले किए काम के प्रतिकार में दुकान आपको पेंशन देती है।"

"और यह कोठी?"

"दुकान मालिक है।"

"सरवन की क्या स्थिति है?"

"वह अभी वजीफा पाता है। जब पढाई समाप्त करेगा, तब वह दुकान पर भी काम कर सकेगा। तब उसका वेतन लग जाएगा। यदि उसने कहीं अन्यत्र नौकरी की तो वहां से वेतन पाएगा। उसका विवाह दुकान करेगी और उसकी सन्तान हुई तो उनकी परवरिश तथा उनके विवाहादि पर व्यय दुकान करेगी।"

"और लक्ष्मी के बाल-बच्चों के लिए ?"

"वे परिवार का अंग नहीं। वे जिस परिवार का अंग हैं, वह परिवार ही उनका पालन-पोषण करेगा।"

इस प्रकार बात समाप्त हो गई।

केशवदास विचार करता था कि लक्ष्मी के लिए सतीश तथा उसके पिता का टेलीफोन आएगा, परन्तु नहीं आया। सरस्वती विचार करती थी कि भगवती अपनी पुतोहू का समाचार लेने आएगी, परन्तु वह भी नहीं आई।

इस प्रकार दो सप्ताह के उपरान्त अलमोड़ा से पत्र आया। पत्र सोनी और रामू के नाम था। शारदा ने लिखा था कि उनको सब सामान बन्द कर रेल द्वारा काठगोदाम के लिए बुक करवा देना चाहिए। बुक उसके नाम करवाना है और वे दोनों बरेली से काठगोदाम और वहां से टट्टू कर अलमोड़ा में आ जाएं। वे वहां 'पाइन व्यू' होटल में ठहरी हैं।

रामू इसी बात की आशा करता था और उसने सब सामान भली भांति 'पैक' कर रखा था। अतः पत्र मिलते ही वह सामान तांगे में रखकर स्टेशन को चल पड़ा।

जाने से पूर्व सरस्वती ने सोनी को कहा, "लक्ष्मी को कहना कि उसने अपना कोई समाचार नहीं भेजा। आखिर उसके माता-पिता ने क्या अपराध किया है, जो वह उनको भी अपना समाचार नहीं भेज रही ?"

इस सन्देश का उत्तर लक्ष्मी की ओर से पत्र में आया। उसने

लिखा :

'मां ! हमने यहां से किसी अन्य स्थान पर निवास-स्थान ले लिया है। वहां दो हजार गज़ भूमि भी ली है। उसपर मकान बनवाने का विचार है, परन्तु बहनजी की सम्मति है कि हम अब लाहौर से सम्बन्ध-विच्छेद कर लें। किसीको भी नहीं बताएं कि हम कहां विलुप्त हो गई हैं। इस कारण बता नहीं रही कि कहां मकान बना रहे हैं। वह यहां नहीं। इस पहाड़ पर भी नहीं।

'अब आप अपनी कुरूप लड़की को भूल जाएं। मोहिनी और सोहनी तो सुखी हैं। उनपर ही सन्तोष कर लें।'

८

जिस दिन लक्ष्मी भगवती से छुट्टी ले आई, उसी दिन उसके घर में भारी विस्फोट हुआ। सतीश रात के नौ बजे उस दिन भोजन के समय से कुछ पूर्व ही कोठी पर पहुंच गया था। वह नित्य की भांति सन्तुष्ट और प्रसन्न था। वास्तव में वह भूल ही गया था कि प्रातः लक्ष्मी अपनी मां के घर जाने की छुट्टी ले गई थी। यह उसे घर पहुंचकर ही स्मरण आया।

उसने लक्ष्मी की अनुपस्थिति के साथ ज्योत्सना की भी अनुपस्थिति देखी। खाने की मेज़ पर उसका भाई नरेन्द्र, उसकी मां भगवती और पिता अतुल बैनर्जी ही थे। सतीश डाइनिंग हॉल में प्रवेश हो वहां खाली कुर्सियों को देख एक क्षण तक प्रश्न-भरी दृष्टि से मां के मुख पर देखता रहा। तदनन्तर वह भीतर आ कुर्सी पर बैठ गया। बात मां ने ही बताई। उसने कहा, "ज्योत्सना का समाचार आया है कि उसकी तबीयत मां के घर जाकर ठीक नहीं रही। इस कारण वह एक-दो दिन वहां ही रहने का विचार रखती है।"

इसपर नरेन्द्र जो दिन-भर मित्रों के साथ पिकनिक करता हुआ

आया था, मा से पूछने लगा, 'और बड़ी भाभीजी कहा हैं ?"

"वह भी अपनी मा के घर गई है।"

"ला भैया !" नरेन्द्र ने व्यग्यात्मक भाव मे कह दिया, "तुम्हे भी छुट्टी मिल गई है।"

"तो पहले मैं चक्की पीस रहा था ?" सतीश ने व्यग्य का उत्तर व्यग्य मे ही दिया।

नरेन्द्र इसका उत्तर देना चाहता था, परन्तु मा ने बात बीच मे रोककर ही कहा, "सतीश ! तुम्हारे पिता तुम्हारे व्यवहार से प्रसन्न नही।"

'मुझे बहुत शोक है, परन्तु मा, यह भाग्य का चक्कर है। मैं चक्र के इस फेर से प्रसन्न हू। मैं दो चक्की के पाटो मे पिस रहा था। अब उससे मुक्ति पा रहा हू।"

'परन्तु वे पाट तुम्हारे अपने ही निर्माण किए हुए थे। बाल्यावस्था के नही वरन् एक ज्ञानवान अवस्था के है।" पिता ने कहा।

'परन्तु मैं इससे मुक्ति पा प्रसन्न हू।"

'ठीक है, परन्तु तुम्हारी मा ने मेरी अप्रसन्नता की बात कही है, तुम्हारी प्रसन्नता की नही।"

'तो इसमें मैं क्या कर सकता हू पिताजी ? बताइए, मैं उसे पूरा करने का यत्न करूगा।"

'तुम्हारे वश मे एक ही बात करने की है। वह यह कि तुम इस घर को तुरन्त छोड दो। तुम अब इस पवित्र घर मे रहने की योग्यता से हीन हो चुके हो।"

बहुत अच्छा पिताजी ! कब तक घर छोडने का नोटिस है ?"

'तो तुरन्त शब्द के अर्थ भी तुमको शब्दकोष मे से निकालकर दिखाने होंगे ?"

सतीश के सामने भी प्लेटें लगा दी गई थी और वह उसपर चावल, भात, मछली इत्यादि रख रहा था। पिता के कथन का अर्थ समझ वह

रुका। एक क्षण तक मां के मुख पर देखता रहा और फिर उठ खड़ा हुआ। वह एक भी शब्द कहे बिना कमरे से बाहर निकल गया।

भगवती ने पति की ओर देखकर पूछा,"यह आपने क्या किया है ?"

"ठीक किया है, परन्तु करने में कुछ देर कर दी है। यह बात कुछ दिन पहले होनी चाहिए थी। तब इस नालायक लड़के के स्थान एक वृद्धावस्था की लाठी इसकी पत्नी का आश्रय तो रह जाता; परन्तु अब वह सदिग्ध है।"

"परन्तु वह तो स्वेच्छा से घर छोड़ गई है।"

"इसलिए कि इस घर को तुम्हारे इस पुत्र ने गन्दा कर रखा था।"

" शोक तो मुझको भी है। मैं आज दिन-भर विचार करती रही हूं कि लक्ष्मी की मां से मिलकर किसी प्रकार का समझौता कर लक्ष्मी को ले आऊं, परन्तु किसी प्रकार का भी समझौता, जिसमें सतीश न हो, कैसे उचित हो सकता है!

" मैं दिन-भर के विचार से अभी भी अनिश्चित मन थी और अब आपने यह एक नई उलझन उपस्थित कर दी है।"

"मैं एक-दो दिन में कचहरी के कार्य से अवकाश पा बर्दवान चला जाना चाहता हूं।"

"वहां अब क्या है ?"

"वहां बाप-दादाओं का निवास रहा है। बचपन उस नगर में व्यतीत किया है और जीवनान्त भी वहां ही समाप्त करना चाहिए।"

"इससे क्या लाभ होगा ? मैं तो कल ही लक्ष्मी को मिलने जाना चाहती थी और उसमें तथा सतीश में किसी प्रकार का समझौता करा उसे यहां ले आना चाहती थी, परन्तु आपने समस्या में यह नया पेच घुमा दिया है।"

"मैं समझता हूं कि ठीक ही हुआ है। यद्यपि कुछ दिन पहले करता तो अधिक ठीक था। तब सतीश यहां ज्योत्सना के साथ रहता और

समझ रही हू ।"

यह सब व्यर्थ की भावना है । प्रशसा अथवा निन्दा मूर्खों के लिए होती है । बुद्धिमान निर्लेप भाव से रहते हुए इस ससार मे विचरते हैं ।"

तो ऐसा करिए यह कोठी ज्योत्सना और नरेन्द्र दोनों के नाम कर जाइए । यह दोनों में एक कडी का काम देगा ।"

ठीक है । नरेन्द्र को कहो कि वह ज्योत्सना से विवाह कर उसे यहां ले आए ।"

यह तो हमारे चले जाने के उपरान्त होगा । आप अपने विषय मे क्या विचार कर रहे हैं ? '

"जहा तुम कहो चल दूगा । हा लक्ष्मी का पता करना चाहिए । यदि वह हमारे साथ चलना चाहे तो उसके भी जीवन भर का प्रबन्ध कर दूगा ।"

आपको लक्ष्मी की बहुत चिन्ता लगी हुई है ? '

उसमे एक गुण है । वह है युक्तियुक्त बात करना और फिर उसके अनुसार व्यवहार । ऐसा करने वाले विरले ही देखे जाते हैं । प्राय मूर्खता की बातें सब करते हैं और फिर उसी मूर्खता के अनुरूप अथवा उससे भी अधिक मूर्खतापूर्ण व्यवहार अपनाते है । कचहरी में नित्य यही तो देखता रहा हू । पहले तो झगडते हैं और फिर मुकद्दमा करने लगते हैं । यह बात लक्ष्मी मे नहीं है ।'

' परन्तु एक पत्नी मे व्यवहार युक्तियुक्त हो अथवा प्रयुक्ति-सगत हो यह कोई आवश्यक गुण नहीं । पत्नी में तो शारीरिक आकर्षण मुख्य वस्तु है ।

यही भूल सतीश ने की थी । उसने समझा कि घर का बेडरूम भी बार कौंसिल का चैम्बर है जहा युक्ति प्रतियुक्ति करनी होती है । इसी कारण उसको एक पत्नी जो वकीलों की भाति बहस कर सकती थी उसे एक वकील साथी तो मिला, परन्तु सुन्दर पत्नी

नही मिली। इसी भूल का परिणाम ज्योत्सना है। लक्ष्मी अपने पति की भूल समझ गई थी और उसने पति को पत्नी प्राप्त कराने का यत्न किया था, परन्तु ज्योत्सना तो पशु ही निकली। अपने छोटे भाई समान देवर को ही पति के स्थान पर बिठा रही थी।"

"ये दोनों मूर्ख हैं। इनके साथ मेरा वृद्धावस्था मे निर्वाह नही हो सकता। हा, लक्ष्मी की बात दूसरी है। वह वृद्धावस्था मे मेरा बार-कौंसिल का प्रभाव पूरा कर देगी।"

भगवती भी कुछ ऐसा ही समझ रही थी। वह समझती थी कि एक पत्थर से दो लक्ष्य सिद्ध हो सकते हैं। लक्ष्मी को भी शेष जीवन का आश्रय-स्थान मिल जाएगा और कभी सतीश की बुद्धि ठिकाने पर आई तो उससे सुलह की सम्भावना भी रहेगी। कम से कम वृद्धावस्था मे एक स्वस्थ मस्तिष्क का सहायक तो मिलेगा ही।

अत उसने अगले दिन केशवदास की कोठी पर टेलीफोन कर दिया। यह सोनी और रामू के चले जाने के अगले दिन था। अभी लक्ष्मी का अलमोडा से पत्र नही आया था।

टेलीफोन सरस्वती ने सुना। उसने पूछा, 'कौन बोल रहा है?"

"भगवती बोल रही हू।"

"बहनजी, नमस्ते।"

"नमस्ते। मैं लक्ष्मी के विषय मे जानना चाहती हू। अब क्या हाल-चाल है? उसका रोष अभी मिटा है अथवा नही?"

'प्रत्यक्ष रूप मे तो कोई रोष प्रतीत नहीं होता था, परन्तु वह तो उसी दिन ही, जिस दिन आपके यहा से आई थी, शारदा बहनजी के साथ कहीं चली गई थी। कल शारदाजी का पत्र नौकरों के नाम आया था और वे भी कल सायकाल ही यहां से अलमोड़ा के लिए चले गए हैं। लक्ष्मी का कोई समाचार नहीं आया।"

"तो वह आपसे भी रूठकर चली गई है?"

"उसकी भावज ने उसकी अध्यापिका के साथ ठीक व्यवहार नहीं

किया था और वह लक्ष्मी के अनिश्चित काल के लिए घर आने पर गम्भीर हो गई थी। साथ ही वह यह समझती थी कि लक्ष्मी की शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध बहुत भली प्रकार हो जाने के उपरान्त उसका इस घर पर कोई दावा नही रहा।"

"तो उसका कोई पता नही ?"

"इस समय वह अलमोडा मे 'पाइन व्यू' होटल मे रहती प्रतीत होती है।"

भगवती ने पन्द्रह दिन उपरान्त फिर पता किया और समाचार मिला कि गुरु और शिष्या ने किसी अज्ञात स्थान पर मकान ले लिया है। वहा वे शेष जीवन व्यतीत करने का विचार रखती है। दोनो को ससार का बहुत ही कटु अनुभव हुआ है।

"और आप उसे खोजने का प्रबन्ध कर रहे हैं क्या ?" भगवती ने पूछा।

"कुछ नही। जब उसका मन एकाकी जीवन से ऊब जाएगा तो अपने-आप आ जाएगी।"

भगवती ने निराश हो चोंगा रख दिया। बैनर्जी ने लक्ष्मी की बात सुनी तो वह बोला, "देखो प्रिय ! मैंने वसीयत कर बैंक मे जमा करा दी है और बैंक वालो को यह हिदायत कर दी है कि मेरे मरने पर मेरे उत्तराधिकारियो को यह दे दी जाए और इसकी एक प्रति अदालत में दे दी जाए।"

"और अब ?"

"तुम कहती हो कि हरिद्वार चलकर रहना चाहिए।"

"अभी वहा चलिए। वहा से ऋषिकेश, फिर जोशी मठ। कहते हैं कि वह स्थान बहुत स्वास्थ्यप्रद और रमणीक है।"

"तो कब चलें ?" पति ने पूछ लिया।

"यह तो आप बताइए। यह कोठी किसके हवाले किए जा रहे हैं ?"

"नरेन्द्र को रहने के लिए दे रहा हू। यदि उसके बहन-भाई आएं तो वे भी यहा रह सकेंगे ।"

"नरेन्द्र अब कालेज तो जाता नही। क्या करना चाहता है ?"

"मैंने उसके लिए तीन सौ रुपया महीना मिलने का प्रबन्ध कर दिया है, परन्तु वह किसी व्यापार मे लग जाना चाहता है। मैंने उसे कहा है कि पहले किसी जानकार के पास 'ऐपरेण्टिस' बन काम सीखे, पीछे अपना काम आरम्भ करे। वह इस दिशा मे विचार कर रहा है।"

"सतीश के लिए क्या किया है ?"

"वह मेरी सहायता की अपेक्षा नहीं रखता।"

"मेरे पास आपका दिया हुआ ही 'फिक्स्ड डिपाजिट' मे बीस हजार है। उसकी 'ड्यू डेट' जनवरी बीस है।"

"एक पत्र बैंक वालों को लिख दो कि तुम्हारा 'डिपाजिट' एक वर्ष के लिए और चालू रखा जाए और उसका सूद तुम्हारे चालू खाते मे जमा कर दिया जाए।"

"यह ठीक है। कहीं पक्का स्थान रहने का बनाकर इस विषय पर विचार करेंगे। मैंने कुछ नकद, कुछ पोस्टल सर्टिफिकेट मे साथ ले लिए हैं।"

इस प्रकार प्रबन्ध कर एक दिन उनका बेडरूम नरेन्द्र और ज्योत्स्ना को खाली मिला। ये अपनी कार मे कहीं चले गए थे।

यह बात सबसे पहले बेड-टी देने आई सेविका ने ज्योत्स्ना को बताई। उसने कहा, "बहू! पिताजी का कमरा खाली है। वहां कोई नहीं।"

"तो वे कहा हैं?"

"मैं कैसे जान सकती हू ?"

ज्योत्स्ना ने नरेन्द्र को जगाया और उसे माता-पिता द्वारा घर छोड जाने की बात बताई। नरेन्द्र तुरन्त माताजी के कमरे की ओर लपका। कमरे का द्वार खुला था और भीतर बिस्तर इत्यादि कुछ नहीं

था। नरेन्द्र के साथ ज्योत्सना भी वहां आ गई थी। उसने कहा, "मैं समझती हूं कि ठीक ही किया है।"

"क्या ठीक किया है?"

"हमें बताकर नहीं गए।"

"तो यह ठीक किया है क्या?"

"जी, अन्यथा हम उनके पीछे जाकर वृद्धावस्था में उनको कष्ट ही देते।"

"अब हम सेवा करने से तो वंचित रह गए हैं।"

"परन्तु ड्राइवर की पत्नी से पता करना चाहिए कि ड्राइवर कितने दिन की उससे छुट्टी लेकर गया है।"

हां, पता करते हैं।"

दोनों 'आउट हाउस' में, जहां ड्राइवर तथा चपरासी रहते थे, जा पहुंचे। उनकी कोठरी भी खाली थी, अर्थात ड्राइवर भी अपनी पत्नी को साथ ले गया था।

नरेन्द्र और ज्योत्सना वहां से शोक अनुभव करते हुए लौट आए।

९

केशवदास ने जिस दिन सुना कि उसकी पुतोहू ने उसकी लड़की को घर में रखने पर नाक-भौंह चढ़ाया है तो वह एक स्वप्न से जागने के समान भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। यह बात उसे लक्ष्मी और शारदा के जाने के अगले दिन पता चली थी। सायंकाल वह अपनी मोटरगाड़ी में माल पर घूमने के लिए निकला तो उसके मन में विचार आया कि लक्ष्मी को भी साथ लेता चले। उसने पत्नी को कहा, "लक्ष्मी को भी साथ ले चलो।"

सरस्वती ने बताया, "वह तो अपनी अध्यापिका के साथ कहीं चली गई है।"

"कहां ?"

"बताकर नहीं गई। कहीं लाहौर से बाहर गई है।"

शारदा के विषय में सुन्दरदास की बात वह जान चुका था। उसके जाने को तो वह समझ रहा था, परन्तु लक्ष्मी पिता से मिले बिना क्यों चली गई है, वह समझ नहीं रहा था।

सरस्वती ने बताया, "लक्ष्मी के कमरे में शारदा को टिकाया हुआ था। कौमुदी यह विचार कर रही थी कि शारदा उस कमरे को खाली करेगी तो लक्ष्मी उस कमरे में ठहर जाएगी। यद्यपि वहां भी लक्ष्मी का सदा के लिए रहने की वह कल्पना नहीं करती थी। उसने कहा था कि इस विषय में वह लक्ष्मी के भाई से सम्मति करेगी।

"लक्ष्मी को ये दोनों बातें पसन्द नहीं थीं। वह इसका अर्थ समझी थी कि उसके आने पर शारदा को यहां से निकाला जा रहा है। इस कारण उसने शारदा को कहा कि वह भी उसके साथ ही जाएगी। मैंने कहा था कि पिताजी से बात कर ले। इसपर उसने कहा था कि वह अपने लिए पिता-पुत्र में झगड़ा कराना नहीं चाहती।"

केशवदास के हृदय में एक टीस-सी उठी और उसी रात सुन्दरदास से बातचीत हो गई। जब सुन्दरदास ने अपनी पत्नी से सीधी युक्ति सुनाई कि उसे पढ़ा-लिखा योग्य बना दिया है, अब उसे अपना प्रबन्ध स्वयं करना चाहिए।

इसपर केशवदास ने पूछा था, "और सुन्दर, तुम लक्ष्मी की पढ़ाई का कितना दाम लगाते हो ?"

सुन्दरदास ने कुछ अधिक ही दाम लगाकर बताया। उसने कहा "बीस हज़ार से कम क्या हो सकता है ! साथ ही आपने सबा सात दहेज का दिया था।"

"और इसपर कितना अधिक सूद इत्यादि लगाते हो ?"

"तो आप स्वयं ही हिसाब लगाकर जान लीजिए कि बहन को उचित से अधिक दे चुके हैं अथवा नहीं।"

"उचित कितना समझते हो ?"

"पिताजी ! लड़कियों और लड़कों के उचित भाग में अन्तर होता है। इस कारण कि लड़के परिवार चलाते हैं और परिवार की सम्पत्ति में अपना अर्जित जोड़ते रहते हैं।"

"यह सब ठीक है, परन्तु मैं इसकी सीमा पूछ रहा हूं। संसार में कुछ भी असीम तो नहीं होता।"

सुन्दरदास इसका अर्थ नहीं समझ रहा था। उसने कह दिया, "अब इस जल मथने से क्या लाभ होगा ? जब सरवन बड़ा हो जाएगा और उसका विवाह हो जाएगा, तब विचार कर लेंगे।"

"परन्तु मैं भी तो अभी जीवित हूं। मेरा भी कुछ अधिकार है अथवा नहीं ?"

"आपका तो सब कुछ है।"

"तो फिर सुनो। कल से दुकान और सब सम्पत्ति का चिट्ठा बना दो। देखो, मैं सब कुछ जानता हूं। यदि बीबी के कहने से कुछ हेरा-फेरी की तो सबको ताले लगवा दूंगा। परिणाम यह होगा कि व्यापार ठप्प हो जाएगा। बताओ, कब तक सब तैयार कर दोगे ?"

"दस-पन्द्रह दिन तो लगेंगे ही।"

"कल से सरवन तुम्हारे साथ दुकान पर जाएगा और तुम्हारी देखरेख करेगा।"

"परन्तु आप क्या करने वाले हैं ?"

"घर और सम्पत्ति का बटवारा।"

"क्यों ?"

"जिससे कि तुम्हारे भाग पर तुम्हारी पत्नी का अधिकार हो और किसी अन्य के भाग पर उसका कोई अधिकार न रहे।"

सुन्दर मुख देखता रह गया। केशव ने सरवन को आवाज़ दे दी। सुन्दर इसका अर्थ नहीं समझा और सरवन के आने की प्रतीक्षा करता रहा। सरवनकुमार आया तो पिता ने उसे कह दिया, "कल से तुम

स्कूल नहीं जाओगे। तुमको दुकान पर जाना होगा और वहां चुपचाप सब कुछ देखते रहना होगा। तुम्हारा भाई दुकान से चोरी भी कर सकता है। यह नहीं होने देना।"

मरवन कुछ न समझता हुआ मुख देखता रह गया। पिता ने समझाया, "मैं तुम्हारे बड़े भाई और तुममें बटवारा कर स्वयं हरिद्वार जाकर रहना चाहता हूं। इस कारण मैं चाहता हूं कि तुम देखना, यह अपनी चतुर बीवी के कहने पर तुम्हारा और मेरा भाग चुराने न लगे।"

सरवन बटवारे की बात सुन समझ गया और बोला, "तो कल से स्कूल न जाऊं?"

"नहीं। तुम दुकान करोगे।"

सुन्दरदास ने चिट्ठा तैयार किया। चल सम्पत्ति और अचल सम्पत्ति सब प्रकार के देय निकालकर पच्चीस लाख रुपये थी। इसमें पारिवारिक आभूषण भी सम्मिलित थे।

यह उस दिन की बात है, जिस दिन भगवती का दूसरी बार टेलीफोन आया था और तब तक लक्ष्मी का किसी अज्ञात स्थान पर चले जाने का पता चल चुका था।

रात का भोजन करने के उपरान्त सुन्दरदास ने तैयार किया चिट्ठा पिताजी को दिया और कह दिया, "क्योंकि दुकान बन्द नहीं हुई, सम्पत्ति में वृद्धि हो रही है।"

"ठीक है। बनाओ, मुझपर विश्वास करते हो अथवा नहीं कि मैं न्याय करूंगा?"

"मुझे तो पूरा विश्वास है।"

"परन्तु तुम्हारी पत्नी को विश्वास नहीं।"

"यह तो वही बताएगी। मैं उसकी बात कैसे बता सकता हूं?"

"तो उसे बुलाओ।"

जब कौमुदी आई तो उससे भी केशवदास ने पूछा, "मैं सम्पत्ति का बटवारा करना चाहता हू । बताओ, मेरा फैसला मानोगी या नही ?"

"नही मानूगी तो आप क्या करेंगे ?"

"कल दुकान को ताले लगवा दूगा । बैंको मे हिसाब 'फ्रीज' करवा दूगा और अदालत मे बटवारे की याचिका कर दूगा ।"

"इस सबकी आवश्यकता नही ।" कौमुदी ने कहा, ' जितना आप हमारा अधिकार समझते हैं, वह हमे दे दीजिए ।"

" ठीक है । मैं यह निश्चय करता हू ।

" जो कौमुदी के पाच लाख के हिस्से उसके पिता की फर्म मे हैं वे कौमुदी के रहेगे । उनपर किसीका हक-हकूक नही होगा । साथ ही दो लाख हुआ लाभ भी उसीका रहेगा ।

" अब शेष सम्पत्ति अट्ठारह लाख की है । उसके तीन बराबर-बराबर हिस्से होंगे—एक तुम्हारे पति का, एक सरवन का और एक मेरा ।

" बताओ, है मजूर ? "

कौमुदी इतनी आशा नही करती थी । इसपर भी उसने पूछा, "मेरी तीन ननद हैं । उनको आपने क्या दिया है ?"

' वे मेरी लडकिया हैं । तुम्हारा तथा उनके भाइयो का इसमे कोई दखल नही । अत मेरे मरने पर जो मेरा बचेगा, वह उन तीनो मे बट जाएगा ।"

"तब ठीक है ।"

अगले दिन वसीका-नवीस बुलाकर लिखत-पढत कर दी गई । दुकान पूर्णत सरवन और सुन्दरदास मे बाट दी गई । सरवन को कोठी मिली और उसके स्थान पर सुन्दर को डेढ लाख रुपये नकद मिले । शेष सब नकद, जो छ लाख के लगभग था, वह केशवदास ने अपने पास रखा ।

सब प्रबन्ध करते-कराते अप्रैल मास आ गया और केशवदास

अपनी सम्पत्ति का न्यास कर हरिद्वार को चल पड़ा। उन दिनों बद्री-नाथ की यात्रा पर लोग जा रहे थे। केशवदास भी उसी यात्रा पर चल पड़ा।

यह सन् १९३० था। इन दिनों रुद्र प्रयाग तक पक्की सड़क बन चुकी थी और वहां तक यात्री बसों में जाते थे। उसके आगे पैदल रास्ता था। अभी तक रुद्र प्रयाग तक आने का पैदल मार्ग भी चालू था। जो लोग कुछ अधिक श्रद्धा रखते थे, वे हरिद्वार से ही पैदल चलते थे और पैदल मार्ग से आठ-नौ मील की यात्रा नित्य करते हुए बद्री-नाथ तक पैदल जाते थे।

केशवदास और सरस्वती भी पैदल मार्ग से ही गए थे। पैदल मार्ग से ही व्यास आश्रम की चट्टी पर ठहरने का पड़ाव था।

जब आश्रम के बाहर इन्होंने दुकानदार के पास सामान रखा तो उसने पूछ लिया, "भक्त! खाना आप बनाओगे अथवा आश्रम में खाओगे?"

"आश्रम में क्या देना होगा?"

"यदि आश्रम में खाना होगा तो जो श्रद्धा हो, वह आश्रम में दे सकते हैं। नहीं भी दे सकते। वहां तो क्षेत्र सेठों की ओर से लगा हुआ है। उस अवस्था में चट्टी का भाड़ा चार आने प्रति यात्री सोने का देना होगा।"

केशवदास ने भोजन आश्रम के लगर में लेना उचित समझा। वह स्वयं बनाने से बचता रहता था।

आश्रम में थी तो केवल दाल, भाजी और चपाती। पहाड़ी मार्ग होने से चार घण्टे की यात्रा के उपरान्त बनी-बनाई रोटी मिलने पर बहुत स्वाद आया। केशवदास ने लगर में बाहर रखे दान-पात्र में एक-एक रुपये के दो नोट डाल दिए और अति सन्तुष्ट हो बाहर चट्टी में आ चटाई पर बिस्तर लगा विश्राम करने लगे।

केशवदास अभी लेटा ही था कि आश्रम का एक सेवक आया और

पूछने लगा, 'महाराज! आपका नाम क्या है?"

केशवदास उठकर बिस्तर पर बैठ प्रश्नकर्ता की ओर देख पूछने लगा, "किसलिए पूछ रहे हैं?'

"छोटे स्वामीजी ने पूछा है।"

"किसलिए पूछा है?"

"महाराज! मैं नहीं जानता। आपके भोजन करते समय वह लंगर में आए थे। उन्होंने आपको देख पूछने के लिए भेजा है।"

सरस्वती को स्मरण आ गया कि जगन्नाथ साधु हो यहां कहीं ही रहता है। इस कारण उसने अपना नाम बताने के स्थान पर पूछ लिया "छोटे स्वामीजी का नाम क्या है?"

'स्वामी जगतानन्दजी गिरि।"

'और बड़े स्वामीजी का नाम क्या है?"

"ब्रह्मानन्दजी महाराज। परन्तु वह आजकल यहां नहीं हैं।"

"कहां हैं?"

'यहां से तो बम्बई गए थे, परन्तु सुना है कि वह किसी अपने सेवक के साथ वहां से अमेरिका चले गए हैं।"

"किसलिए?"

"माताजी! यह मुझे ज्ञात नहीं।"

केशवदास ने बात समाप्त कर दी और कहा, मेरा नाम केशवदास है और मैं लाहौर का रहने वाला हूं।"

सेवक चला गया। केशवदास लेटा तो सरस्वती ने अपने मन का सन्देह बता दिया, मैं समझती हूं कि यह स्वामी जगन्नाथ ही है।"

केशवदास को स्मरण नहीं आया कि कौन जगन्नाथ। इसपर सरस्वती ने पुनः बताया 'मैं समझती हूं कि वही, जिससे लक्ष्मी का विवाह होने वाला था।"

"वह भगोड़ा! उसने हमें पहचान लिया मालूम होता है।"

"ठीक है। आराम करिए। एक यात्री कह रहा था, मध्याह्नोत्तर

तीन बजे वह कथा किया करता है। तब चलेंगे और देखेंगे तथा सुनेंगे।"

"क्या लाभ होगा ?"

"तनिक देखूंगी कि वह इस भगवे बाने मे सन्तुष्ट है अथवा नही।"

'वह सन्तुष्ट प्रतीत नही होता। वर्तमान से सन्तुष्ट होता तो आज से दस-बारह वर्ष पूर्व की बात भूल गया होता।"

केशवदास ने जगन्नाथ ने सन्यास को हीन दृष्टि से देख कह दिया, परन्तु सरस्वती इस अनुमान मे दोष मानती थी। उसने समझा कि स्मरण रखना और राग-मोह मे लिप्त होना दो पृथक्-पृथक् बातें हैं। विस्मृति त्याग नही, यह पशुपन है।

इसपर भी उसने पति की बात का खण्डन नहीं किया और विचार करती रही कि जगन्नाथ ने पहचाना तो ठीक, परन्तु उसने उनका नाम किसलिए पुछवा भेजा है।

कथा के समय आश्रम मे घण्टा बज जाता था और लोग एकत्रित हो जाते थे। घण्टे की आवाज़ सुन केशवदास बिस्तर पर से उठा और खट्टी वाले को कहा कि वह कथा सुनने जा रहा है, सरस्वती सहित मन्दिर के प्रागण मे एकत्रित हुए लोगो मे जा बैठा।

जब लोग एकत्रित हो गए तो आश्रमवासी भजन गाने लगे :

प्रभु तेरी महिमा अपरम्पार।
पाय सकू नही पार॥

पन्द्रह मिनट तक भजन होता रहा। इस समय जगतानन्द तख्त-पोश पर बैठा आखें मूद मन मे कुछ चिन्तन करता रहा। आश्रम-वासियों की सख्या तो लगभग पचास थी, परन्तु एक सौ के लगभग यात्री थे। केशवदास और सरस्वती यात्रियो मे बैठे जगतानन्द के मुख पर ओज और ज्ञान की झलक देखते रहे। जबतक भजन होता रहा, वे उसे ही देखते रहे। उन्हें जगतानन्द मे विशेष आकर्षण अनुभव होने

लगा था।

कथा प्रारम्भ हुई। अवतार की व्याख्या होने लगी।

जगतानन्द ने कहा, "प्रत्येक जीव-जन्तु मे परमात्मा का वास है। परमात्मा उस जीव के कार्यों मे ही प्रकट होता है। कार्य तो एक बैल भी करता है। कदाचित् मनुष्य से अधिक परिश्रम करता है, परन्तु उसमें परमात्मा का अश बहुत कम है। मनुष्य मे यह सबसे अधिक होता है। इसी कारण मनुष्य सब जीव-जन्तुओं पर शासन करता है। जहा दूसरे जीव-जन्तु सख्या मे कम हो रहे हैं, वहा मनुष्य की वृद्धि द्रुत गति से हो रही है। यह इस कारण ही है कि मनुष्य मे परमात्मा का अधिक अश रहता है।

"मनुष्य-मनुष्य मे भी अन्तर है। भगवान् राम कृष्ण, विष्णु और शिव मे परमात्मा का अश बहुत अधिक था, परन्तु मुझमें और आपमें भी तो परमात्मा है। फिर परमात्मा का एक अश दूसरे अश की पूजा क्यो करता है?

"पूजा नही, यह मूर्खता है, परन्तु जिनमे अधिक ईश्वरीय सत्ता है, उनकी स्तुति गुण, कर्म और स्वभाव का गान तो करना ही चाहिए। इससे हम अपने मे और अधिक ईश्वर की सत्ता प्राप्त करते जाते हैं।

"महात्माओं की स्तुति ही परमात्मा की पूजा है। इसीसे अपना कल्याण हो सकता है। किसका कल्याण होना है? परमात्मा जो हममें है, उसका कल्याण तो पहले ही है। भला उसका और क्या कल्याण होगा? इससे परमात्मा के अतिरिक्त हममे कुछ है। उसके कल्याण की ही आवश्यकता है। वह जीव कहलाता है। जीव और परमात्मा साथ-साथ हममे हैं। उसके कल्याण की ही आवश्यकता है। यही तीर्थयात्रा का फल है।

"परमात्मा ज्ञानवान है। वह सब सद्गुणो से युक्त है। ये सब हममे हो।"

इस प्रकार पौन घण्टा प्रवचन हुआ। जगतानन्द की वाणी मे

अर्थ और प्रभाव था। केशवदास पूर्ण समय मन्त्रमुग्ध की भांति बैठा सुनता रहा।

१०

जगतानन्द उठा और सीधा अपनी कुटिया मे चला गया। केशवदास बाहर खडा था। वह भीतर जा उससे परिचय बढाना चाहता था, परन्तु भीतर जाने मे सकोच करता था।

सरस्वती ने पूछा, "अब यहा खडे क्या विचार कर रहे हैं?"

"यही कि भीतर जाऊ अथवा नही। इससे बात करू अथवा नही।"

"क्या बात करेंगे?"

"जो उस समय मन में आएगी।"

"सब व्यर्थ है। इसको पुरानी बात स्मरण कराना इसे ससार-सागर मे टाग पकड घसीट लने के तुल्य होगा।"

"तुम ठीक ।" वह आगे नहीं कह सका। वही व्यक्ति, जो उनसे नाम पूछने चट्टी मे आया था, कुटिया से निकला और केशवदास से बोला, "आप आइए।"

केशवदास की झिझक मिट गई और वह भीतर गया तो सरस्वती उसके पीछे-पीछे थी।

"सुनाइए लालाजी!" केशवदास के सामने आते ही जगतानन्द ने पूछ लिया।

केशवदास और सरस्वती सामने बैठ गए। तीन-चार अन्य व्यक्ति भी वहा बैठे थे। केशवदास ने कहा, "महाराज! मैं समझता हू कि आपने विवाह न कर ठीक ही किया।"

"हम भी यही समझते हैं, परन्तु आपने पुत्र को पृथक् कर ठीक नहीं किया। वह छोटे भाई का सब कुछ हजम कर जाएगा।"

केशवदास अपने मन की शंका सुन चकित रह गया। अनायास ही उसके मुख से निकल गया, "तो आपको वहां के समाचार मिलते रहते हैं ?"

"हां, परन्तु किसी मनुष्य द्वारा नहीं। ये तो भगवान् द्वारा मिलते हैं।"

केशवदास मुस्कराया और पूछने लगा, "तो वह आपका पोस्ट-मैन है ?"

"नहीं भक्त ! पोस्टमैन नहीं, वरन पोस्ट आफिस। वहां सब सूचनाएं रहती है। मैं जब भी और जिसकी सूचना चाहता हूं, पा जाता हूं। आपको मध्याह्न भोजन करते देखा था। माताजी को पहले पहचानता था। आपके विषय में अनुमान ही था। जब विदित हुआ कि मेरा अनुमान ठीक है तो उस सर्वव्यापक परमात्मा से पूर्ण जानकारी मिल गई।

"आप इस समय अपनी लड़की के विषय में पूछना चाहते हैं। वह अलमोड़ा से दस मील उत्तर की ओर एक अति रमणीक स्थान शिवपुरी में आश्रम बना रहती है। उसके साथ एक शारदा नाम की अन्य स्त्री है। उसे वह बहन कहती है।

"वह बहुत सुखी है। वह डूबती-डूबती बची है। अब किनारे पर खड़ी होकर वह रहे संसार को देख रही है। उसके लिए एक अन्य दम्पती भटक रहे हैं। वे आजकल ऋषिकेश में हैं।"

"वे कौन है महाराज ?" सरस्वती ने पूछ लिया।

"एक बंगाली महाशय हैं। लक्ष्मी उनकी पुत्रोहू है। परन्तु उनकी खोज स्वार्थवश है। वे उसे नहीं पा सकेंगे।"

"और हम ?"

"आपको मैंने पता बता दिया है। यत्न करेंगे तो पा जाएंगे। किसी ऊंचे स्थान तक पहुंचने के लिए यत्न करना पड़ता है।"

"तो आप उसकी टोह लेते रहते हैं ?"

"नहीं भक्त ! मैं जब चाहता हूं, तब परमात्मा से सम्पर्क बना पता पा जाता हू। वहा तो सबकी खबर रहती है।"

केशवदास इसे वाक्‌जाल समझता था। इसी कारण उसने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और आपके पिता तथा माता कैसे हैं ?'

"इस शरीर के जन्मदाता ?"

"हा।"

"पिताजी अति रुग्ण हैं और उनका शरीर छूटने वाला है। मेरा कोई भाई नहीं, इस कारण मेरा मामा उनकी सम्पत्ति पर अधिकार करने की आशा मे उनकी सेवा-सुश्रूषा कर रहा है।"

केशवदास को इस बात की सूचना नही थी। इससे अपने प्रश्न का उत्तर पा उसके सत्य अथवा झूठ के जानने का उपाय न जानता हुआ मौन रहा।

कुछ देर जगतानन्द आखें मूद विचार करता रहा और फिर आखें खोल बोला, "तो अब आप जा सकते हैं। मैं समझता हू कि मैंने आपका बहुत उपकार कर दिया है।"

'क्या ?"

"यह आपको स्वत ही विदित हो जाएगा।"

सायकाल सोने से पूर्व सरस्वती ने पति से कहा, "मैं यहा से लौट जाना चाहती हू।"

'क्यो ?"

"लक्ष्मी को मिलने जाऊगी।"

"और बद्रीनाथ की यात्रा ?"

'मैं और आप जिस कारण भटक रहे हैं, वह बद्रीनाथ नहीं, लक्ष्मी है।"

केशवदास चुप रहा और लेट गया। यात्री शाम होते ही सो जाते थे और बहुत प्रात काल उठ अगले पड़ाव को चल पड़ते थे। इसी विचार से केशवदास सोया था, परन्तु सरस्वती यात्रा समाप्त

करने का विचार करती हुई सोई थी।

अगले दिन दोनों उठे और बिस्तर बाध कुली को उठवाने लगे तो केशवदास ने ही कुली को कहा, "हम आगे नहीं जा रहे। वापस ऋषिकेश लौट रहे हैं।"

सरस्वती ने कुछ नहीं कहा और दोनों ऋषिकेश को लौट आए। उनका विचार था कि एक रात ऋषिकेश मे रहकर हरिद्वार और वहा से बरेली और फिर अलमोडा चल शिवपुरी चलेंगे।

ऋषिकेश मे सायकाल गगा-तट पर मिस्टर बैनर्जी और भगवती मिल गई। भगवती तो सरस्वती से वैसे ही गले मिली, जैसे सखी बनने के समय निर्मला के जन्मदिन पर ग्यारह वर्ष पूर्व मिली थी।

समाचार देते हुए सरस्वती ने बताया, 'हमारे लाहौर से चलने के चार-पाच दिन पहले सतीश आया था और लक्ष्मी का पता पूछता था। मैं जानती नहीं थी, इस कारण बता नहीं सकी।"

"पूछा नहीं था कि वह क्यों पूछ रहा है ?"

'इसमे पूछने की क्या बात थी ! एक पति अपनी पत्नी की खोज क्यों करता है, यह पूछने की बात नहीं।"

भगवती मुस्कराई और कहने लगी, "एक सप्ताह पूर्व आप तो बद्रीनाथ जा रहे थे। हमने आपको पजाब-सिन्ध क्षेत्र के प्रागण मे डेरा डाले देखा था।"

"और अब हम अलमोडा जा रहे है।"

'क्यो ?"

"लक्ष्मी के वहा होने का समाचार मिला है। इससे यात्रा से लौट आए हैं।"

"कब जा रहे हैं ?"

'कल गगा-स्नान कर हम हरिद्वार लौट जाएगे। वहा जाकर अगला कार्यक्रम बनाएगे।"

अगले दिन दो के स्थान चार व्यक्ति हरिद्वार को चल पडे और

वहा से बरेली की रेलगाडी मे बैठ गए।

काठगोदाम से अलमोडा के लिए बस मिलती थी। प्रात काल चलकर सायकाल तक वहा पहुचती थी। परन्तु अलमोडा से शिवपुरी जाना तो और भी कठिन था। शिवपुरी कोई तीर्थ अथवा स्वास्थ्य के विचार से विख्यात स्थान नही था। यह एक गाव था, जो किसी प्रकार भी विख्यात नही था। इस कारण बहुत पूछताछ करने पर वहा का पता चला और फिर वहा सामान ले चलने के लिए कुली तब मिले, जब कुलियो को वहा से लौटने के दिन का भी वेतन देना स्वीकार किया गया।

गाव मे पहुचे तो गाव वालो से जाकर शारदा और लक्ष्मी के नाम पूछने लगे। एक व्यक्ति ने पता दिया। उसने बताया, "मैं उन स्त्रियो के नाम तो नही जानता, परन्तु दो स्त्रिया गाव से आधा मील उत्तर की ओर एक मकान बना रही है। उसके पास कुटिया मे दो स्त्रिया रह रही हैं।"

सरस्वती समझ गई कि ये अन्य कोई नही हैं, अवश्य शारदा और लक्ष्मी ही हैं। आखिर ये वहा पहुचे तो रामू और सोनी को वहा देख समझ गए। सोनी तो सरस्वती इत्यादि को देखते ही समीप बनी लकडी की कुटिया की ओर भागी और रामू हाथ जोड सामने खडा हो गया।

"कहा है तुम्हारी मालकिन ?" सरस्वती ने पूछा।

"इस समय कुटिया मे हैं। वह देखिए, सोनी उनको बता बाहर ले आई है।"

शारदा और लक्ष्मी लम्बे-लम्बे पग रखते हुए वहा आई तो मा-बेटी गले मिली। तदनन्तर लक्ष्मी ने भगवती के चरण-स्पर्श किए और मुस्कराती हुई बोली, "विस्मय है कि आप इस विशाल पृथ्वी पर भूसे के ढेर मे गुम हुई सुई को कैसे पा गए हैं ?"

"हा। यह चमत्कार तो है, परन्तु यह सब ईश्वरेच्छा से ही हुआ

है।" बाहर एक विशाल बंगला बन रहा था और उसकी नींव भरी जा रही थी।

शारदा अभ्यागतों को लेकर कुटिया में चली गई। बैनर्जी इस सब घटना से भौचक्का हो सबको देखता हुआ खड़ा रह गया।

भगवती, सरस्वती और केशवदास भीतर गए तो भी वह बाहर ही खड़ा रहा। वह देख रहा था कि ये मधुमक्खियां अपना घर कैसे बना रही हैं।

आठ-दस व्यक्ति निर्माण-कार्य में लगे हुए थे। रामू उनकी देख-रेख कर रहा था। बैनर्जी ने रामू से पूछना आरम्भ कर दिया, "तुम लोग यहां कब से हो?"

"लगभग पांच महीने हो गए हैं।"

"तो पांच महीने में यह नींव खुदी है क्या?"

"यहां देहात में पत्थर की स्लेट के मकान बनते हैं,परन्तु शारदाजी का विचार था कि सीमेंट, रेत और पक्की ईंटों से मकान बनवाया जाए। इस सबकी तैयारी में चार महीने लग गए। अलमोड़ा से यहां निर्माणकर्ता लाने पड़ रहे हैं। फिर इमारती सामान मंगाना पड़ा है। ईंट तो पत्थर से ही गढ़ी जा रही हैं। सीमेंट अलमोड़ा से लाना पड़ा है। अब पन्द्रह दिन से कार्य आरम्भ हुआ है।"

इस समय सोनी कुटिया में से आई और बैनर्जी से बोली, "पिताजी! भीतर आ जाइए। चाय तैयार हो गई है।"

वास्तविक बात तो दो दिन विश्राम के उपरान्त हुई।

लक्ष्मी ने पूछा, "हमारा पता कैसे पा गए हैं?"

सरस्वती ने उत्तर दिया, "एक जगतानन्द स्वामी ने यहां से तीन सौ मील के अन्तर पर बैठे हुए तुम्हें यहां छुपकर बैठे देखा है। उसीने बताया कि हमें यहां आना चाहिए।"

"मैं विचार कर रही थी कि मैं बह रही नदी से निकल तट पर आ खड़ी हुई हूं। बहूजी भी यही अनुभव कर रही थीं। शिमला,

लाहौर तथा इस स्थान मे अन्तर भी तो प्रतीत होता है, परन्तु आपको भी इधर आते देख मुझे सन्देह होने लगा है कि हमे भ्रम तो नही हो रहा कि हम किनारे पर चढ और स्थिर भूमि पर आ खडी हुई हैं।"

बैनर्जी ने मुस्कराते हुए कहा, "परन्तु मैं इससे विपरीत अनुभव कर रहा हू।"

"पिताजी ! क्या अनुभव कर रहे हैं ?"

"यही कि हम भी नदी के बहाव को पार कर तट पर आ लगे हैं और लक्ष्मी बेटी का हाथ पकड किनारे पर आ खडे हुए हैं। मुझे यह भूमि अधिक सुदृढ, सुस्थिर और सुरक्षित समझ आ रही है। लाहौर तो रावी मे बहता हुआ अरब महासागर को जाता समझ आया था।"

"तो आप भी यहा रहने आए हैं ?" शारदा ने पूछ लिया।

"यह तो अभी नही कह सकता। साठ वर्ष से नदी के बहाव मे गोते खाते-खाते तो बुद्धि भी चक्कर खाती प्रतीत हो रही है। कुछ दिन रहेंगे तो बता सकूगा।"

सरस्वती को लाहौर की एक बात स्मरण आ गई। उसने कहा, 'एक दिन सतीश तुम्हारा पता पूछने आया था। उसने बीडन रोड पर एक भाड़े का मकान ले लिया हुआ है।"

लक्ष्मी ने कुछ देर मा के मुख पर देखा और कह दिया, "मा ! अब दोनो मे बहुत अन्तर आ गया है। वह बहाव में बहता हुआ इतनी दूर चला गया है कि मेरा हाथ उस तक पहुच भी नहीं सकता। उसे तो परमात्मा के आश्रय ही छोड़ना पड़ेगा।"

'परन्तु यह स्वार्थ नहीं क्या ?" बैनर्जी ने पूछ लिया।

"नहीं पिताजी !" लक्ष्मी का कहना था, 'यह विवशता है।"

वेदव्रतदास और सरस्वती ने इसम कुछ नहीं कहा। वे दोनों मौन ही रहे।

OOO